

हिन्दी-साहित्य और बिहार

(द्वितीय खण्ड)

[उन्नीसवीं शती पूर्वादि]

सम्पादक

आचार्य शिवपूजन सहाय

सहायक सम्पादक

श्री यज्वरंग वर्मा

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्

पटना

प्रकाशक
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्
पटना

Ⓜ

सबस्वत्व प्रकाशकापीन

प्रथम संस्करण २१०० : शकाम्ब १९८५ : विक्रमाम्ब २०२० पुण्याम्ब १९६३

मूल्य : छत्रिस्व ८००

छद्रक
मुनाहन्ड प्रस जिमिड
पटना ४



ॐ

आचार्य शिवपूजन सहाय

वक्तव्य

'हिन्दी-साहित्य और बिहार' नामक ग्रन्थमाला के इस दूसरे खण्ड का प्रकाशन करते हुए हम पितृभूषण और श्रुतिभूषण से आशिक शक्ति का अनुभव कर रहे हैं। यह ठीक सब सिद्धि है कि बिहार-राष्ट्रमापा-परिषद् आचार्य भीतिबपूजन सहाय के तपस्वक का एक सुमधुर एवं सुपक फल है। पर यह ग्रन्थ-गुच्छ ही उनक साहित्यिक जीवन की विराट् कल्पना थी, जिसका मुष्टु और मूल रूप देने का शकसर सग्रे ठक मिष्ठा, भव है बिहार राष्ट्रमापा-परिषद् के मन्त्री हुए। सग्रेने सन् १९५१ ई० में ही परिषद् क संघासक मण्डल के समक्ष इस मास के लेखन, सम्पादन और प्रकाशन कराने का प्रस्ताव रखा, जिसे मण्डल ने सग्रेप स्वीकार कर लिया। किन्तु, संयोग ऐसा कि उनके संघासकक काल में, इसका एक खण्ड भी प्रकाशित न हो सका। हाँ इतना अक्षय्य हुआ कि जब आचार्य शिबपूजन सहायजी सन् १९५९ ई० क अग्रस्त मास में परिषद् की सेवा से निवृत्त हुए, ठक इव ग्रन्थमाला की अक्षिकषि सामग्री एकत्र हो गई थी और कालक्रम के अनुसार विषयों का बर्गीकरण भी ही चुका था। साथ ही, सन् १९५९ ई० के अग्रस्त तक प्रथम खण्ड के कई फर्में भी छप चुके थे। उस समय इस ग्रन्थ क सामग्री-संक्षयन और लेखन में भीसहायजी की सहायता सुफ्यरूप से भोगवापरप्रसाद अम्बड और भीबजरंग बर्मा, एम्० ए० कर रहे थे। ग्रन्थ का प्रथम खण्ड सन् १९६० ई० में प्रकाशित हो सका, जिसमें अर्धी शती स १८५० शती तक के बिहारबासी हिन्दी-साहित्य-संविद्यों के विवरवारमक परिचय प्रकाशित किये गये हैं। इस प्रथम खण्ड के बलम्प और प्रस्तावना में इस ग्रन्थमाला के प्रथम की पृष्ठमूमि का रोचक इतिहास भीसहायजी स्वयं लिख गये हैं।

यह प्रस्तुत प्रकाशन एक ग्रन्थमाला का ही दूसरा खण्ड है। इस ग्रन्थ-गुच्छ में सश्रीसर्धी शती के पूर्वार्द्ध (सन् १८०१ से १८५० ई० तक) में बिन बिहारबासी हिन्दी साहित्यिकों का खग हुआ है, सग्रेों का विवरवारमक परिचय दिया गया है। उस खण्ड की सामग्री के संकलन तथा बर्गीकरण के लिए आरंभ में भीसहायपरप्रसाद अम्बड ने हाथ बँटाया था किन्तु प्रारम्भ से अग्रत तक सहायक रूप में काम करने का भेष साहित्यिक इतिहास विभाग के अनुसंधायक भीबजरंग बर्मा को है जिनका नाम भी सहायक सम्पादक के रूप में हम दे रहे हैं। भीबर्मा से सहायजी के निर्देशन में अन्वेषण, सामग्री-संक्षयन, लेखन तथा सम्पादन में अक्षी तरह योगदान किया है। परिषद् के कार्यकर्ता भीबम्ब्रेबरप्रसाद सिंह 'नीरव', एम्० ए०, डिप्ल० इन० एड्० स मो इसके लेखन और सामग्री-संक्षयन में पूरी सहायता की है। प्राचीन ग्रन्थ शोध विभाग के प्रणय अनुसंधायक भीरामनारायण शास्त्री तथा परिषद् के पुस्तकालवाध्य भीपरमानन्द पाण्डेय, एम्० ए० बी० एल्० से भी कई बहुमूल्य सूचनाएँ प्राप्त हुई हैं।

हम अपने इन सभी सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद शायन करते हैं। हमके अतिरिक्त और भी बिन सहजनों से इसके निर्माण में साहाय्य प्राप्त हुआ है, उन सभी का परिष्कृत है।

आचार्य शिवपूजन सहायजी के जीवन की या यात्री अभिलाषायें शेष थीं, उनमें से एक इस समयमात्रा का प्रकाशन भी था। उन्होंने अपनी इस अभिलाषा की कई बार चर्चा भी की थी। अपनी ऐसी मिठा के कारण ही परिष्कृत के संचालकत्व से सब विराम प्रवेश किया तब भी परिष्कृत में निवमित रूप से आकर इन ग्रन्थ का लेखन-सम्पादन करना उन्होंने नहीं छोड़ा। उन्होंने इस साहित्यिक इतिहास के निर्माण में अपनी अस्वस्थ अवस्था में भी जीवन के अन्तिम क्षण तक, जबतक वे होश में थे बिलत लग्नवता और परिश्रम से काय किया, वह सर्वथा अमिन्नन्वनीय एवं बन्धीय है। वह श्लोक सग्वती के सब बरब पुत्र के सिधे पहाँ समर्पित है—

अयन्ति ते सुकृतिना रसस्मिन्नाः फपीरधराः ।

मास्ति येषां यशाःकाये अरामरख्यर्जं मयम् ॥

निश्चय ही, स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहायजी की दिवंगत आरमा को इस प्रकाशन से परम प्रसन्नता प्राप्त होगी; क्योंकि यही उनके जीवन की शेष अभिलाषा थी।

पहले छण्ड की तरह प्रस्तुत छण्ड के भी प्रथम परिशिष्ट में साहित्यिकों का विवरण प्रकाशित किया गया है, बिनका अन्त-स्थान बिहार प्रान्त नहीं है; पर उनका साहित्य अन्त का कायक्षेत्र बिहार ही रहा है। ग्रन्थ के दूसरे परिशिष्ट में प्रथम छण्ड से सम्बद्ध कुछ और सामग्री संकलित की गई है, बिनका समावेश उसमें नहीं हो सका था तथा बिनका अन्वेषण अनुगन्धान समके प्रकाशन के पश्चात् हुआ है। प्रथम छण्ड का अब द्वितीय संस्करण छानने संगेगा, तब इस सामग्री का समावेश उसमें बयास्थान किया जायगा।

हिन्दी-साहित्य और बिहार' के प्रथम छण्ड के प्रकाशन की प्रशंसा बिशानी ने की है। इस दूसरे छण्ड में ऐसी कई बहुमूल्य शोध-सामग्री प्रस्तुत की गई है, जो अथक अथकार में पड़ी थी। अतः परिष्कृत का यह प्रकाशन बिहन्मण्डली में विशेष रूप से गवाहर प्राप्त करेगा, ऐसा हमें विश्वास है। इस समयमात्रा के शेष तीन छण्डों के प्रकाशन की भी व्यवस्था परिष्कृत कर रही है, बिनमें तीसरे छण्ड में अमीनजी शर्मा का उत्तराध होगा और चौथे छण्ड में बीनजी शर्मा का पूर्वाद्ध तथा पाँचवें छण्ड में बीनजी शर्मा का उत्तराध। मगवान् की मदती द्वारा स हो ऐस महबुजान निर्बिन्ध सम्पन्न होत हैं। हमें इनकी अर्देदकी महत्त्वमयी गवसमर्पे हुए का सश धारा है।

प्रस्तावना

आचार्य पं० रामधर शुक्ल के अनुसार, हिन्दी-साहित्येतिहास के उत्तर मध्य अथवा सीति-काल को अन्तिम सोमा सन् १८५१ ई० (सं० १९०० वि०) है। उनके मतानुसार हिन्दी-साहित्य के व्यापनिक अथवा गद्य-काल का आरम्भ उक्त ईसवी से ही होता है। 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' के प्रस्तुत द्वितीय खण्ड का सम्बन्ध सन् ईसवी को उन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध से है। इसमें मुख्यतः बिहार के उन हिन्दी-साहित्यसेवियों के परिचय, उनकी रचनाओं के उदाहरणों के साथ, संघरीत हैं, जिनके जन्म उक्त काल खण्ड (सन् १८०१ से ३० ई०) में हुए हैं।

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में जो बिहार के बारह सौ वर्षों का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, उसे कई कारणों से, 'अन्वकार-युग का इतिहास' कहा गया है। उक्त खण्ड में साहित्यकारों के जन्म-मरण-काल की अनिश्चितता के कारण, प्रत्येक शती में, साहित्यकारों के नाम अपरानुक्रम से ही रखे गये हैं। उन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध वाले प्रस्तुत खण्ड में हमें कुल ४३ साहित्यकारों की निश्चित जन्म तिथियाँ प्राप्त हो सकी हैं। इनमें अनेक ऐसे भी हैं, जिनके निधन की तिथियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। इन्हीं साहित्यकारों को पाठकों की सुविधा के लिए, प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में रखा गया है। इस अध्याय के ४३ साहित्यकारों में, ८ की रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले। द्वितीय अध्याय में उन साहित्यकारों के परिचय संघरीत हैं, जिनका जन्म-काल उन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध में ही अनुमित है। इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या ७१ है, जिनमें ३७ की रचनाओं के उदाहरण अनुपलब्ध हैं। इसी प्रकार, अन्तिम, अर्थात् तृतीय अध्याय में उन साहित्यकारों के परिचय आय हैं, जिनका जन्म-काल उक्त काल-खण्ड में ही अनिश्चित है। इस अध्याय के साहित्यकारों की संख्या ६९ है, जिनमें ३५ की रचनाओं के उदाहरण नहीं प्राप्त हो सके।

पुस्तक के अंत में, छह प्रकार के परिशिष्ट हैं। उनमें सामग्री विभाजन इस प्रकार हुआ है—परिशिष्ट १ में उन ६८ बिहारी साहित्यकारों के नाम और रचनाओं के उदाहरण दिये गये हैं, जिनके परिचय के विषय में विशेष बातें प्राप्त नहीं होती। परिशिष्ट २ में उन चौदह अल्पमान्तीय हिन्दी-साहित्यकारों की सूची है, जिनका कामक्षेत्र मुख्यतः बिहार ही रहा है। परिशिष्ट ३ में पुस्तक के प्रथम खण्ड से सम्बद्ध ३२ साहित्यकारों के सम्बन्ध में नवीन सूचनाएँ और २० नवीन परिचय भी हैं, जो नई सोस के क्रम में प्राप्त हुए हैं। इन २० नवीन परिचयों में कुल १० के ही उदाहरण उपलब्ध हो सके हैं। परिशिष्ट ४ में प्रस्तुत खण्ड से सम्बद्ध तीन साहित्यकारों के परिचय-मात्र हैं। परिशिष्ट ५ में एक परिचय-साक्षिका ही गई है, जिससे पाठक सुगमतापूर्वक प्रस्तुत खण्ड के मुख्य तीन अध्यायों का विहावलोकन कर सकें। अंत में, परिशिष्ट ६ में, मूल पुस्तक में संकलित उदाहरणों की प्रथम पंक्ति की, अकाराधिक्य से सूची भी गई है।

हम अपने इन सभी सहयोगियों का हृदय से धन्यवाद ज्ञापन करते हैं। इनके अतिरिक्त और भी जिन मन्त्रों से इसके निर्माण में साहाय्य प्राप्त हुआ है, उन सभी का परिपक्व कृतज्ञ है।

आचार्य शिवपूजन सहायजी के जीवन की वां धोड़ी अमितायाए शेष थीं, उनमें से एक इस ग्रन्थमाहा का प्रकाशन भी था। उन्होंने अपनी इस अमिताया की कई बार चर्चा भी की थी। अपनी ऐसी निष्ठा के कारण ही परिपक्व के संचालकत्व से जब विराम प्रश्न किया तब भी परिपक्व में नियमित रूप से आकर इस ग्रन्थ का लेखन-सम्पादन करना उन्होंने नहीं छोड़ा। उन्होंने इस साहित्यिक इतिहास के निर्माण में अपनी अस्वस्थ अवस्था में भी जीवन के अन्तिम क्षण तक, जबतक ये होश में थे जिस तन्मयता और परिभ्रम से काय किया, वह सर्वथा अमिनाम्हनीय एवं बन्धनीय है। यह श्लोक सरस्वती के सस बरह पुत्र के लिए यहाँ समर्पित है—

अयन्ति ते सुकृतिनः रससिद्धा कवीरवरा।
मास्ति येषां यशाःकाये जरामरणञ्च भयम्॥

निश्चय ही, स्वर्गीय आचार्य शिवपूजन सहायजी की दिवंगत आत्मा को इस प्रकाशन से परम प्रसन्नता प्राप्त होगी; क्योंकि यही उनके जीवन की शेष अमिताया थी।

पहले छण्ड की तरह प्रस्तुत छण्ड के भी प्रथम परिशिष्ट में साहित्यिकों का विवरण प्रकाशित किया गया है, जिनका जन्म-स्थान बिहार प्राप्त नहीं है; पर उनका साहित्य यजन का कायसेत्र बिहार ही रहा है। ग्रन्थ के दूसरे परिशिष्ट में प्रथम छण्ड से सम्बद्ध कुल और सामग्री संकलित की गई है, जिनका समावेश सममें नहीं हो सका था तथा जिनका सम्बन्ध अनुसन्धान उनके प्रकाशन के पश्चात् हुआ है। प्रथम छण्ड का जब द्वितीय संस्करण छपान लागेगा, तब इस सामग्री का समावेश सममें समास्थान किया जाएगा।

दिल्ली-नादिरक और बिहार' के प्रथम छण्ड के प्रकाशन की प्रस्ता विद्वानों ने की है। इस दूसरे छण्ड में ऐसी कई बहुमूल्य शोध-सामग्री प्रस्तुत की गई है, जो अकथक अल्पकार में पड़ी थी। अतः परिपक्व का यह प्रकाशन विद्वत्सङ्घटी में विशुद्ध रूप से समाहर प्राप्त करेगा, ऐसा हमें विश्वास है। इस प्रथमाहा के शेष तीन छण्डों के प्रकाशन की भी व्यवस्था परिपक्व कर रही है, जिनमें तीसरे छण्ड में सप्तोत्तवीं शती का उत्तराव होगा और चौथे छण्ड में बीसवीं शती का पूर्वार्द्ध तथा पाँचवें छण्ड में बीसवीं शती का उत्तराव। मगधान की महती ज्ञान से ही ये सब महदुर्लभ निर्दिष्ट सम्पन्न होते हैं। हमें उनको अर्धदृष्टी मण्डलमको सबनमर्ष ज्ञान का सदा महारा है।

प्रस्तावना

आचार्य पं० रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार, हिन्दी-साहित्येतिहास के उत्तर मध्य अथवा रीति-काल की अन्तिम सीमा सन् १८४१ ई० (सं० १९०० वि०) है। उनके मतानुसार हिन्दी-साहित्य के आधुनिक अथवा गद्य-काल का आरम्भ उक्त ईसवी से ही होता है। 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' के प्रस्तुत द्वितीय खण्ड का सम्बन्ध सन् ईसवी की सन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध से है। इसमें सुछन्द बिहार के उन हिन्दी-साहित्यसंक्षिप्तों के परिचय, उनकी रचनाओं के उदाहरणों के साथ, संघटित है, जिनके जन्म उक्त काल खण्ड (सन् १८०१ से १० ई०) में हुए हैं।

इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में जो बिहार के बारह सौ वर्षों का इतिहास प्रस्तुत किया गया है, उसे कई कारणों से, 'अन्यकार-युग का इतिहास' कहा गया है। उक्त खण्ड में साहित्यकारों के जन्म-मरण-काल की अनिश्चितता के कारण, प्रत्येक शती में, साहित्यकारों के नाम अप्परानुक्रम से ही रखे गये हैं। सन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध वाले प्रस्तुत खण्ड में हमें कुल ४४ साहित्यकारों की निश्चित जन्म तिथियाँ ज्ञात हो सकी हैं। इनमें अनेक ऐसे भी हैं, जिनके निधन की तिथियाँ भी उपलब्ध हुई हैं। इन्हीं साहित्यकारों की पाठकों की सुविधा के लिए, प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम अध्याय में रखा गया है। इस अध्याय के ४४ साहित्यकारों में, ८ की रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले। द्वितीय अध्याय में उन साहित्यकारों के परिचय संघटित हैं, जिनका जन्म-काल सन्नीसवीं शती पूर्वार्द्ध में ही अनुमित है। इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या ७१ है, जिनमें ३७ की रचनाओं के उदाहरण अनुपलब्ध हैं। इसी प्रकार, अन्तिम, अर्थात् तृतीय अध्याय में उन साहित्यकारों के परिचय आये हैं जिनका जन्म-काल उक्त काल-खण्ड में ही अनिश्चित है। इस अध्याय के साहित्यकारों की संख्या ६६ है, जिनमें ३५ की रचनाओं के उदाहरण नहीं प्राप्त हो सके।

पुस्तक के अंत में, छह प्रकार के परिशिष्ट हैं। उनमें सामग्री विभाजन इस प्रकार हुआ है—परिशिष्ट १ में उन ६८ बिहारी साहित्यकारों के नाम और रचनाओं के उदाहरण दिये गये हैं, जिनके परिचय के विषय में विशेष बातें ज्ञात नहीं होतीं। परिशिष्ट २ में उन चौदह अन्यप्रांतीय हिन्दी-साहित्यकारों की सूची है, जिनका काव्यक्षेत्र मुख्यतः बिहार ही रहा है। परिशिष्ट ३ में पुस्तक के प्रथम खण्ड से सम्बद्ध ५२ साहित्यकारों के सम्बन्ध में नवीन सूचनाएँ और २० नवीन परिचय भी हैं, जो नई खोज के क्रम में प्राप्त हुए हैं। इन २० नवीन परिचयों में कुल १० के ही उदाहरण उपलब्ध हो सके हैं। परिशिष्ट ४ में प्रस्तुत खण्ड से सम्बद्ध तीन साहित्यकारों के परिचय-आप्त हैं। परिशिष्ट ५ में एक परिचय-तालिका दी गई है, जिससे पाठक सुगमतापूर्वक प्रस्तुत खण्ड के मुख्य तीन अध्यायों का विहाससोपान कर सकें। अंत में, परिशिष्ट ६ में, मूल पुस्तक में उल्लिखित उदाहरणों की प्रथम पंक्ति की, अकाराधिकम से सूची दी गई है।

छायाक विवेचन से स्पष्ट है कि प्रस्तुत कण्ड के मूलांश में कुल १२२ विहारी साहित्यकारों के परिचय संश्लेषित हैं। इनमें अम्बारन निवासी साहित्यकारों की संख्या सर्वाधिक अर्थात् ४१ है। इसका कारण यह है कि अम्बारन में प्राचीन साहित्यानुसंधान की प्रगति गत दो दशकों में यही तीव्रगति से हुई है। इस विद्या में कई विद्वान् प्रवृत्त हैं। हिन्दी के सुपरिचित लेखक एवं कवि भीरमेठफण्ड का न तो 'अम्बारन की साहित्य छापना' की रचना कर अम्बारन को साहित्यिक प्रगति के सम्बन्ध में बहुत ही भावपूर्ण कामना पाठकों के सामने प्रस्तुत की है। अम्बारन के बाद एक काल-खंड में साहित्यकारों की संख्या की दृष्टि से, 'छारन' का नाम आता है, जहाँ ३५ साहित्यकार हुए। छारन में, साहित्यानुसंधान का काय अभी तक योजनाबद्ध रूप में नहीं हुआ है। किन्तु, जैसा कि एक संख्या से स्पष्ट है, यदि इस क्षेत्र में एक काम का आरम्भ हो, तो और भी अनेक साहित्यकारों के नाम सामने आयेंगे। अम्बारन और छारन के बाद विभिन्न क्षेत्रों का नामानुक्रम निम्नलिखित रीति से निर्धारित किया जा सकता है—छाहाबाद २७, हरमगा २४, पटना २३, गया १७, मुजफ्फरपुर तथा पूर्णियाँ ५-५, छोटानागपुर ४, मागलपुर ३ और मुंगेर २। एक क्षेत्रों में साहित्यानुसंधान का काय केवल हरमगा और गया में ही प्रचलनीय रूप में हुआ है जिसके परिणामस्वरूप डॉ० बबकांत मिश्र-कृष्ण 'हिन्दी अर्थात् मैथिली लिटरेचर' (दो खण्डों में) और भोहारकाप्रसाद गुप्त लिखित 'गया के लेखक और कवि नामक कृतियाँ हमारे सामने हैं। शेष कुछ क्षेत्रों के लोग इस विद्या में प्रवृत्त हैं और कुछ क्षेत्रों में तो इस विद्या में कुछ कार्य ही नहीं हो रहा है। इनमें पहली कोटि में छाहाबाद, पटना और मुजफ्फरपुर के नाम लिये जा सकते हैं। पूर्णियाँ छोटानागपुर, मागलपुर, मुंगेर आदि के नाम दूसरी कोटि में आयेंगे।

प्रस्तुत काल-खण्ड में सबसे अधिक संख्या उन साहित्यकारों की है, जिन्होंने काव्य-रचना द्वारा साहित्य की भीवृद्धि की है। इनमें अधिकांश कवियों ने ब्रजभाषा का सहारा लिया है। अबकी से जिन कवियों ने रसनाएँ की हैं, उनकी रचनाओं में भी ब्रज एवं ब्रजभाषा का ही पुट मिलता है। इसी कारण इस काल में निरुद्ध अरबी के उसने कबिक कवि नहीं मिलता। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि ब्रजभाषा की तुलना में अरबी काव्य-रचना के लिए हिन्दी-उत्तार में बहुत प्रचलित नहीं हुई। काव्य रचना के लिए ब्रजभाषा का जिनका देहलपना प्रचार आने नहीं हुआ, उतना छोड़ोकोली को छोड़कर अन्य किसी भी भाषा का नहीं। ब्रजभाषा और अरबी के बाद छोड़ोकोली,

१. भोहारकाप्रसाद गुप्त ने 'विहार के हिन्दी-लेखक खीरेख से विहार के साहित्यिक इतिहास के सम्बन्ध में कृष्ण साजवी १९२४ की थी। २१ जनवरी १९३२ ई० (मूल १९ अंक ८) के 'गूरत' (१ ई० ११) में अरबी विहार के हिन्दी-लेखकों के नाम-निर्देश प्रकाशित हुआ था, जिसमें उन्होंने लूँकट किया है कि अरबी अरबीमें ६०० कृत तथा अधिष्ठ साहित्यकारों के विषय में आजकाही बात कर ली है। विद्ये, पटना, तथा छाहाबाद के ७० लेखकों की अधिष्ठ 'गूरत' में 'विहार के हिन्दी-लेखक' के नाम से प्रकाशित ही सुधी है। छोड़ोका एक भिन्न १८ अंक १९३५ ई० (मूल ११ अंक १८, १०-१०४) तथा २६ अंक, १९३५ ई० (मूल २०, अंक २१ १०-११६) के 'गूरत' में भी प्रकाशित।

मैथिली और भोजपुरी की रचनाएँ मिलती हैं। इन छानों मापाओं में रचनाएँ प्रायः समरूप से हुई हैं। कुर्मांगवश, बिहार की अन्य मापाओं की कोई भी रचना इस काल खण्ड में नहीं मिली है। केवल गया के पाठकबिगहा निवासी हरिनाथ पाठक के विषय में यह उल्लेख मिलता है कि उन्होंने मगही में अनक गीतों की रचना की थी, जो आज नहीं मिलत। समझ है, मागी अनुसंधान के फलस्वरूप मगही, अंगिका, वज्जिका आदि अन्य मापाओं की रचनाएँ हमें प्राप्त हों तबसे तत्सम्बन्धी क्षेत्रों की साहित्यिक प्रगति का भी कुछ परिचय मिल सके।

मापा की सफाई, मात्र के मासुर्य एवं अन्वयबाह की सुगमता की दृष्टि से प्रस्तुत काल-खण्ड के उल्लेख्य कवियों के नाम इस प्रकार हैं—

(क) प्रज्ञमापा—मणोबानन्द, धनारण्य कुंभे, भगनारायण सिंह, बच्चू बुधे, राधाकृष्णम बायी, रामकुमार सिंह, नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह, रामबिहारी सहाय, रामलोकन मिश्र, अक्षयकुमार, बालगोविन्द मिश्र, रामकलराय ठग मिश्र, संसारनाथ पाठक, यशवन्त त्रिपाठी सुकप्रसाद सिंह, गोपीश्वर सिंह, जन्मेश्वरी राय, जगदम्बलाल यण्डी सुकुलाल मिश्र हुनीन्द्र, रामकवि रिपुमंजन सिंह, शालभाऊ, शिवप्रसाद अम्बिकाशरण, कृपानारायण, धनगोविन्द महाराज, शारदाप्रसाद मिश्र, माधवेंद्रप्रताप छाही, राधेन्द्र प्रसाद सिंह तथा शिवकविराय।

(ख) अक्षयी—ईमलता, मगधेश्वर, हरनाथप्रसाद खत्री, मगबानप्रसाद 'स्वकला', कामेश्वरी सहाय, कामदामि, टिम्बल ओम्का, मान्दक, मदनदेव स्वामी, माधवठनारायण सिंह हरिश्चरनदास और पबतराम।

(ग) खड़ीबोली—ईमलता, बनबारीलाल मिश्र सुबसहाय लाल, चतुर्भुज मिश्र, वैद्यर अली सुहम्मद, राधेन्द्रशरण तथा सीहनलाल।

(घ) मैथिली—बामोदर का, मामा का, अम्बा का, हर्षनाथ का, गोपीश्वर सिंह, अद्रीलाल, रत्नपति, जन्मेश्वरी बहुआशिन तथा शम्भुदत्त का।

(ङ) भोजपुरी—मगबानप्रसाद 'स्वकला', वैद्यर अली सुहम्मद, लक्ष्मीवती, ईनरराम, केशवदास, युलाचन्द्र, दरसनदास, योगेश्वरराम तथा सक्तराम।

प्रस्तुत काल की काव्य-रचनाओं के सिद्धान्तोक्त से यह स्पष्ट विशिष्ट होता है कि इस काल में भी, अद्यतनकों शरी की तरह मति और रीतिकाल की प्रवृत्तियाँ ही प्रमुख रहीं। चाप ही, आधुनिक काल की प्रवृत्ति के बीच भी अन्त-अन्त देखने को मिलते हैं। ऊपर यह कहा जा चुका है कि उक्त काल-खण्ड से ही हिन्दी-साहित्य के आधुनिक-काल का आरम्भ हो जाता है।

रस की दृष्टि से देखा जाय तो मति अथवा शान्त, शृंगार एवं नीर-रसों की प्रमुखता है। मति एवं शृंगार रस की रचनाएँ तो इस काल में मरी पड़ी हैं। नीर-रस की रचनाएँ मुख्य रूप से, अक्षिराम कर्मशापर मिश्र रामकवि तथा शिवकविराम की ही मिलती हैं। अक्षिराम के शिवाजीराज, शान्त रस के अक्षिराम, शृंगार रस के शिवकवि

नाम य हैं—नमदेवप्रसाद सिंह रामकृष्णराय, चरच विपाकी, चन्द्रेश्वरीराय, परमानन्दराय, चतुरीलास तथा धीरनलास ।

युग की महत्ता पर विचार करत समय निम्नलिखित बातें प्रकट हैं—

१ इस काल-युग से ही आधुनिक कथना गद्य-काल का आरम्भ होता है। अतः, स्वभावतः इस काल में गद्य-रचना की प्रवृत्ति में, प्रचरता बढीगी है। इस समय की गद्य-रचना के जो उदाहरण प्राप्त हुए हैं, उनमें पं० चम्पा का के गद्य को छोड़कर सभी खड़ीबोली के ही हैं। पं० चम्पा का की गद्य-रचना मैथिली में मिलती है। ऐसे प्रमुख गद्यकारों के नाम ये हैं—मिथुन मिश्र, अयोध्याप्रसाद मिश्र, इरनाथप्रसाद खत्री, नमदेवप्रसाद सिंह, भगवान्प्रसाद 'रूपकता', संसारनाथ बाबू तथा कल्पति मिश्र ।

२ इस काल में निम्नांकित नाटककार बड़े महत्त्व के हुए—

(क) माना का	—	प्रभावहीरथ ।
(ख) चम्पा का	—	अहिष्वाचरित-नाटक
(ग) प्रबन्धिहारीलास	—	(१) प्रबोधचन्द्रोदय-नाटक (२) रत्नावली-नाटिका (३) संगीत-हरिश्चन्द्र (४) विद्यातुन्दर-नाटक
(घ) इयनाथ का	—	(१) उपाहरण (२) माधवानन्द (३) रामकृष्ण मिशन-गीता
(च) कान्हाय्यभरात	—	मोरी-स्वयंवर
(छ) चरच मिश्र	—	काल-विवाह-मुद्रक
(ज) मदनदेव त्वासी	—	प्रसन्नरूप-रूपक
(झ) रत्नपालि	—	उपाहरण
(ट) मेघनाथ का	—	भारत भ्रम-योग

कविता एवं नाटक के अतिरिक्त इस काल में काव्य की अन्य विधाओं को विशेष प्राण्य नहीं मिला। जैसे, छन्दुद कुछ रचनार्थे अक्षय मिलती हैं। ऐसी रचनाओं में, खीबनी-काव्य के अन्तर्गत रामलोकान् मिश्र-कृत 'आत्मखीबनी' तथा मिश्रक मिश्र-रचित 'विद्यावती' काव्यात्म का प्रसिद्ध कविता का लक्ष्य है ।

३ इस काल-युग में निम्नलिखित अनुवादों में मुख्य रूप से हिन्दी-अनुवाद की गति को प्राण बढ़ाया —

(क) अयोध्याप्रसाद मिश्र—	भीमज्जामन्तगीताधमनिद्रिका (संस्कृत कीर हिन्दी में गद्य-अनुवाद)
(ग) चम्पा का	पुष्प-वरीषा (विद्यावती-कृत 'पुष्प-वरीषा' का मैथिली में गद्य-अनुवाद)
(घ) राधाकृष्ण खीबनी	'महिम्नसोत्र' का हिन्दी-अनुवाद

- (घ) मयबानप्रसाद 'रूपकला'— शरीर-पालन (बैंगला से अनुबाद)
- (ङ) रामलोकन मिश्र — (१) भीमत्पनारावधमत-कथा का हिन्दी पद्यानुबाद
(२) बहुसामय-कथा का हिन्दी-पद्यानुबाद
(३) छपट-सर्दारी (मोहसुन्दर) का हिन्दी-पद्यानुबाद
- (च) हरिनाथ पाठक — (१) कलित-रामायण (श्रीवाल्मीकि रामायण का पद्यानुबाद)
(२) कलित-भागवत (भीमद्भागवत का पद्यानुबाद)
- (छ) हरिराज द्विवेदी — बाल्मीकि-रामायण का हिन्दी-पद्यानुबाद (अपूर्ण)
- (ज) अम्बालिका देवी — 'रावपूठ-रमणी' का अनुबाद
- (झ) सुवन झा — सत्यनारायण-कथा का पद्यानुबाद
- ४ इस काल में निम्नलिखित प्रमुख टीकाकार हुए—
- (क) मयबानप्रसाद 'रूपकला'— (१) भीमवन्दनसनामृत (मगधद्वीप के बारहवें अध्याय की टीका)
(२) मऊमाल की टीका
- (ख) शिवप्रकाश शास्त्री — (१) विनयपत्रिका की टीका
(२) गीतावली-टीका
(३) रामगीता-टीका
- (ग) पुष्पहराज शास्त्री — (१) भीमवन्दनस्वामिनि (भीमवन्दन गीता के 'सर्वमूलमध्याय' श्लोक पर टीका)
(२) सप्त मनःछम्बनी (रामचरितमानस के भावकाण्ड की टीका)
- (घ) दिवाकर मजूमदार — (१) कविप्रिया (द्वैपाय) की टीका
(२) रघुकविता (,,) ,,
(३) बिहारी चतुष्टय ,,
(४) माया-भूषण (मठिराम) ,,
(५) रसराय ,, ,,
- (ङ) सुकुटुवाल मिश्र — बिहारी-चतुष्टय की टीका
- (च) हरनारायणदास — रामचरितमानस ,, ,,
- (छ) ज्ञानकीर्तव्यदास — 'मानस-अभिप्राय-दीपक' पर वास्तविक-टीका

(न) बासुदेवराय — रत्निक-प्रकाश (मरुमास की सुशोभिनी टीका)

५. इस काव्य-खण्ड की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह देखने को मिलती है कि इसमें विभिन्न शास्त्री से सम्बद्ध पुस्तकों के निर्माता भी हुए। काव्य मापा षय, वर्तन, आयुर्वेद संगीत, गणित, नीति, रामनीति कृषि विषय काम आदि विषय विभिन्न शास्त्रों पर भी लेखकों ने अपनी लेखनी बहाई है। सबसे अधिक पुस्तकें काव्य शास्त्र पर ही मिलती हैं। कुछ महत्वपूर्ण लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—

- | | | |
|-------------------------|---|---|
| (क) अयोध्याप्रसाद मिश्र | — | सुधाविन्दु (सूत्र-परिचय) |
| (ख) मंगलेश्वर | — | सुगन्ध-सुन्दार-भरण (अलंकार) |
| (ग) राधावल्लभ जोशी | — | श्रीग-रत्नाकर (नवशिक्ष) |
| (घ) गणेशानन्द शर्मा | — | (१) श्रुत-वचन
(२) नायिका-नायक-तन्त्र (नायिका-मेर) |
| (ङ) बैजनाथ द्विवेदी | — | (१) श्रीगीतारामामरण-मञ्जरी (अलंकार)
(२) नवशिक्ष
(३) रामरहस्य (रत्न)
(४) कृतनिर्देश-कदम्ब
(५) काम विज्ञान (नायिका मेर)
(६) पराधन-सुन्दार-मञ्जरी (रत्न)
(७) अनुमत्-रत्नाकर (रत्न)
(८) चित्रामरण (अलंकार)
(९) भूय-वन्द्यिका (अलंकार) |
| (च) नमदेवरायसाह सिंह | — | सुन्दार-वर्षण (नवशिक्ष) |
| (छ) रामलोकेश मिश्र | — | विज्ञान-सुन्दरवाष्टक-वर्षण (सूत्र) |
| (ज) रामवल्लभ | — | पावस-वर्षीणी (रत्न एवं नायिका-मेर) |
| (झ) विद्याकर भट्ट | — | (१) नवशिक्ष
(२) नवोदारल (नायिका-मेर)
(३) वैश्या विज्ञान |
| (ञ) परमानन्दराय | — | वारहमासा (श्रुतवचन एवं नायिका-मेर) |
| (ट) विहारी निह | — | (१) विहारी मन्त्रिशिक्ष-सूचन
(२) इती-वचन (नायिका-मेर) |
| (ड) जययोगिन्द्र महाराय | — | अलंकार आकर (अलंकार) |
| (ण) महादेव प्रकाश | — | नवशिक्ष रामचन्द्रजी |

काव्य शास्त्रों के प्रमुख लेखकों और उनकी कृषियों के विवरण इस प्रकार हैं—

मापाशास्त्र—

- (क) राधावल्लभ जोशी — मापाभूतशास्त्र

- (ख) हरनाथप्रसाद खत्री — व्याकरण-नाटिका
 (ग) अक्षयकुमार — बलबोध (सुदीनद्वय हिन्दी-व्याकरण)

धर्मशास्त्र—

- (क) लक्ष्मणदास शास्त्र — अगोपकारक
 (ख) विशाकर मठ — (१) धर्मप्रमदिवेक-सहिता
 (२) धर्म नियम
 (ग) बापिदास — मठ-विवेक
 (घ) मधुसूदन रामानुजदास — मंगलद्वय-श्रीपिका

दशरथाक्ष—

- (क) सुब्रह्मण्य शास्त्र — (१) सत्यन विज्ञान (सत्यय मन्त्रिणोम सम्बन्धी विचार)
 (२) निर्वाणशतकम् (एक सौ अम्बाली की मुक्तिपत्ति)
 (३) भीरुब्रह्म विज्ञान (ब्रह्मयोग, प्राणायाम, श्वेदरी-पट्कर्म, समाधि आदि का बयन)
 (४) पारतन्त्र्य योग-वर्णन (केवल पञ्च सूत्रों का भाष्य)
 (५) परतर-अभिधानम् (भुक्ति-सुक्ति के प्रमाणों के साथ योगादि के गुरु रहस्यों का बयन)

आयुर्वेद-शास्त्र—

- (क) बामोदर का — (१) निधिला आयुर्वेद शब्दकोश
 (२) आयुर्वेद-संग्रह
 (ख) अयोध्याप्रसाद मिश्र — (१) आरोग्य-शिक्षा
 (२) मत्स्य मन्त्र-मीमांसा
 (३) ऋषि जीवन सिद्धान्त
 (४) ब्रह्मयज्ञ-दर्पण (कौम)

संगीत-शास्त्र—

- (क) कच्छु बुधे — (१) सुर-प्रकाश
 (२) रस-प्रकाश
 (३) लगीत-प्रकाश
 (४) मौरव प्रकाश
 (ख) सुब्रह्मण्य सिंह — भारत-संगीत

गणित-शास्त्र—

(क) समानाय मिश्र	—	(१) गणित-बत्तीसी
		(२) गणित-कृतीसी
		(३) गणित-सार
		(४) रेखागणित

मीतिशास्त्र—

(क) नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह	—	धर्मप्रदेशनी
(ख) ब्रजबिहारी साह	—	(१) नीतिदृष्टांत रामायण
		(२) नीति-दृष्टांतमाता
(ग) जनकचारी साह	—	मुनीति-संग्रह

राजनीति-शास्त्र—

(क) गुरुप्रसाद सिंह	—	राजनीति-रत्नमाता
---------------------	---	------------------

व्यैक्तिक-शास्त्र—

(क) अयोध्याप्रसाद मिश्र	—	स्वप्न विचार
-------------------------	---	--------------

कामशास्त्र—

(क) रामोदर का	—	कामरूप
---------------	---	--------

उक्त शास्त्रों के अतिरिक्त तीन विज्ञान विषयक पुस्तकों (शैल विदाली-बल, रगड़ विदाली-बल और वायु विद्या) के रचयिता सोहनसाह और एक कृषि-संबंधी पुस्तक (कैतीबाटी) के लेखक समानाय मी इस युग में हुए। दो-तीन इतिहास और भूगोल विषयक पुस्तकों के रचयिता मी इस युग में हुए। उदाहरणार्थ, शिवप्रकाशसाह तथा अम्बिकाप्रसाद उपाध्याय-द्वारा 'इतिहास-सहरी' एवं 'निपास का इतिहास' और गणपत सिंह रचित 'भूगोल-बचन' नामक पुस्तकें ही जा सकती हैं।

६ इस काल के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में मगधानप्रसाद 'स्मरता', चन्दा का, श्रीलक्ष्मणकविता (अयोध्या) के श्रीमुगलानन्दशरबती 'सिमरता', लक्ष्मीचण्डी तथा सोहनसाह के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मगधानप्रसाद 'स्मरता' अखिल भारतीय हरिनाम-यज्ञ-संकीर्तन-सम्मेलन के संस्थापक एक प्रमुख संत-कवि थे। इन्होंने मीरपुरी और अन्य मापाओं में मी बहुत मार्मिक रचनाएँ की हैं। चन्दा का आधुनिक मैत्रिणी-साहित्य के जन्मदाता माने गये हैं और अपनी बहुसूत्री प्रतिभा के कारण मित्रिता में वे अपर-विद्यापति के रूप में समाए हैं। मुगलानन्दशरबती 'सिमरता' इस काल के सर्वाधिक प्रबंधों के रचयिता हुए। करते हैं, इन्होंने निमित्त किरणों के पौराणी प्रबंधों की रचना की थी, जिनमें पंचहण्डर आज भी इनके आभ्रम में बचमान हैं। काशी नागरी-प्रचारिणी सभा में मी इनके अविनाश प्रबंध सुरक्षित हैं। लक्ष्मीचण्डी ने एक नये पंच 'सखी-सम्प्रदाय' को अपनी रचनाओं द्वारा विशेष रूप दिया। इस सम्प्रदाय के प्रमुख उन्नायक के रूप में श्रीकामठावली आज भी छपरा में बचमान हैं। इसी प्रकार, लक्ष्मी

बोली के प्रमुख ज्ञापक अयोध्याप्रसाद खत्री के मठानुसार सोहनलाल हिन्दी की 'मूठी-शली' के बन्दक थे।

७ इस काल की शोभा-वृद्धि में तीन महिषाओं का भी सक्रिय सहयोग है। उनके नाम हैं—(क) सुभासिनदाई, (ख) अम्बालिका बेबी तथा (ग) अनेश्वरी बहु-भासिन। इसमें केवल अंतिम क ही कुछ ललित पद उपलब्ध हो सके हैं।

८. जहाँतक आभयदावाओं का प्रश्न है इस काल में हुमरौब, स्यपुरा, बगदौशपुर, टेकारी, रामगढ़, नरहन, भीनवर, मकौलिया, सीतामढ़ा, दरमंगा, बनेली, बेतिया, हनुआ, मौफा, रामनगर आदि रिपासतों के राजा एवं जमींदारों ने कवियों एवं कलापतों को आभय प्रदानकर अपनी साहित्यिक अभिवृद्धि का प्रयत्नशील परिश्रम दिया। एक रिपासतों में खान भी बोननाबद रूप में यदि साहित्यानुसंधान कराया जाय, तो निश्चय ही और भी अनेक साहित्यिक-रत्न प्रकाश में आयेंगे।

परिशिष्ट १ के १८ साहित्यकारों की रचनाओं में अविशेष की काव्य रचनाएँ मैथिली में मिली हैं। अतः, यह सहज ही अनुमेय है कि वे मिथिला या उसके आसपास के निवासी रहे होंगे। इन मैथिली कवियों की रचनाएँ सुस्पष्ट मक्ति रत्न की हैं। राधा कृष्ण के प्रसंग में, अनेक स्थलों पर नृगार-रस भी आ गया है। इस परिशिष्ट में आये ब्रजभाषा के कवियों के नाम ये हैं—आद्याशरण, जानकीशरण, बनुपधारी सिंह, मंगलाप्रसाद सिंह, रघुवीरनारायण सिंह तथा बृन्दावनविहारेशरण सिंह। इनमें दो-एक को छोड़कर सभी की गणना ब्रजभाषा के साधारणतया अच्छे कवियों में की जा सकती है। वे सभी कवि वटोड़ी (सारन) के निवासी प्रसिद्ध व्यक्ति भीनवनारायण सिंह के समकालीन और समकालः सारन अथवा उसके आसपास के निवासी थे। इनकी रचनाएँ बिहार राष्ट्रभाषा-परिषद् के इस्तित्कृत ग्रंथ-अनुसंधान विभाग में संप्रदित इस्तित्कृत पाथो 'दुर्गाप्रतिभारंगिणी' से प्राप्त हुई हैं। इस परिशिष्ट में, एक अक्षरी और एक खड़ीबोली के भी कवि हैं। अक्षरी-कवि 'अभयदास' नाम के कई कवि हिन्दी में हो गये हैं। अतः इनके विषय में निरिच्छत रूप से कुछ कहना अभी संभव नहीं। यही बात खड़ीबोली के कवि 'मनुवरदास' के सम्बन्ध में भी है।

परिशिष्ट २ के १४ अल्पप्रामाण्य साहित्यकारों में कुल १ की रचनाओं के उदाहरण उपलब्ध हैं। इनमें दो—बामोदरशास्त्री समे और बिहारीलाल चौधे—की छोड़कर शेष सबकी काव्य-रचनाओं के ही उदाहरण मिले हैं। एक लोचकद्वय ने खड़ीबोली में कवलय गद्य-रचना की थी। अतः, इनकी गद्य-रचना के ही उदाहरण प्राप्त हुए हैं। इस परिशिष्ट के ब्रजभाषा-कवियों में कुछ अस्तित्कनीय नाम ये हैं—बिहारीलाल चौधे, मारकण्डेयलाल, सरसीमनोहर तथा हुनेरसिंह साहबबाबे। अक्षरी और खड़ीबोली के केवल एक एक कवि ही इस परिशिष्ट में हैं। उन कवियों के नाम हैं—रामशरण तथा रामानन्द। इस परिशिष्ट के कवियों ने विशेषतः राधाकृष्ण की आर्त्तबन बनाकर नृगार-रस की रचनाएँ की हैं। इनमें बोर-रस के कवि के रूप में एकमात्र मारकण्डेय लाल की ही गणना की जा सकती है। इनमें मक्ति ब्रजवा शास्त्र-रस का कोई भी कवि अस्तित्कन नहीं पाया।

इन अल्पप्रामाण्य साहित्यकारों में सबसे अधिक संख्या अनुवादकों की ही शीखती है। प्राकृतिक विषयों के साथ कुछ लक्ष्मण नाम और रघुनाथ इस प्रकार हैं—

- (क) रामोदरशास्त्री छप्रे — 'राजतरंगिणी' (कल्प) का अनुवाद
- (ख) बालरामदास — पार्लमन्ट रशॉन प्रकाश (पार्लमन्ट शीय रशॉन का अनुवाद)
- (ग) बिहारीलाल चौबे — (१) लैम्प-टेल्स (शेक्सपियर के नाटकों की कहानियों का अनुवाद)
- (२) बरकुमारधरित (दण्डी) का अनुवाद
- (घ) मूदेन मुखोपाध्याय — (१) चीठा (बैंगला) का अनुवाद
- (२) बैंगला की अनेक पुस्तकों के अनुवाद
- (ङ) सुमेरसिंह साहबजादे — (१) विषयनामा (सुफोबिन्स विह-कृत 'अफरनामा' का अनुवाद)
- (२) अविषल नयर-भाहात्म (अष्टपुराण में वर्णित पुण्योदक' सीर्यस्वत की कथा का रोहा-चोपाई में अनुवाद)

शेप लक्ष्मण नाम विषयानुसार ये हैं—

- (क) रामोदरशास्त्री छप्रे —
- (ख) शीतलप्रसाद त्रिपाठी —

काव्यशास्त्र—

- (क) बिहारीलाल चौबे —
- (ख) सुमेरसिंह साहबजादे —

इतिहास—

- (क) रामोदरशास्त्री छप्रे —
- (ख) सुमेरसिंह साहबजादे —

बासकेल का मुखधरित
बानकीमंगल-नाटक

बिहारी लक्ष्मी भूषण (अर्थकार)
अर्थकारण का सुमेरभूषण (")

- (१) चितौरगढ़ का इतिहास
- (२) लखनऊ का इतिहास

(१) शिक्षण-सम्मन्त्राय की मुख्य मुख्य
पठनाओं का संस्कृत बचन

यात्रा—

- रामोदरशास्त्री छप्रे — (१) मेरी पूर्व दिग्वात्रा
- (२) मेरी दक्षिण दिग्वात्रा
- (३) मेरी अग्निभूमि-वात्रा

भाषाशास्त्र—

- रामोदरशास्त्री छप्रे —
- सुमेरसिंह साहबजादे —

आदर्श बाल व्याकरण
(१) शीतलप्र-धरित-वाक्य धरितिका (भाष की टीका)

टीका—

- (२) अगत अय-अनकारी (,)
- (३) अयजी की टीका

परिशिष्ट २ क साहित्यकारों में तीन-चार बड़े महत्त्व के मिलते हैं। इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति एच. नूरेव मुखानाम्पाव का रंगाली थे। कहते हैं, बिहार को अराजकों में फारसी और कैथे लिपि के स्थान पर नागरी लिपि का प्रचलन कराना का भेद्य इन्हें ही है। कुछ विद्वान् तो बिहार में हिन्दी-भाषा के प्रचार का भेद्य इन्हें देते हैं। उनका कहना है कि बिहार में बाबू रामश्रीनसिंह के सहयोग से इन्होंने विविध विषयों को अनेक पाठ्य-पुस्तकें नागराजपुर में पहले-पहल प्रकाशित कराई थी। ये हिन्दी के अनन्य समकालीन और आज से लगभग सौ वर्ष पहले ही इन्होंने यह मतिभ्यक्तानी की थी कि हिन्दी एक समय राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होकर ही रहेगी। इन्होंने महत्त्वपूर्ण व्यक्ति हैं रामलाल मायूर। ये उन लोगों में प्रमुख थे, जिन्होंने हिन्दी में पहले-पहल पाठ्य-पुस्तकें तैयार की थीं। इनका सबसे महत्त्वपूर्ण काम हुआ 'हिन्दी शब्कोश' का निर्माण, जिसे इन्होंने प्रसिद्ध काशिकार फैज़ल साहब के आदेश पर तैयार किया था। इन्होंने विभिन्न बिहारी लोकभाषाओं के शीतों, कथाओं, लोककृतियों आदि का भी एक बृहद् संकलन तैयार किया था। पं० शैलप्रसाद त्रिपाठी इनमें तीसरे उल्लेख्य व्यक्ति हुए। इन्होंने ही उस प्रसिद्ध नाटक 'बानकी-मंगल' की रचना की थी, जिसे हिन्दी का सबसे पहला अनिर्दिष्ट नाटक माना जाता है। कहते हैं, इनके समान कोई भी दूसरा शैयाकरण इनका समकालीन नहीं हुआ। कदाचित् इसी कारण महाराजकुमार बाबू रामश्रीन सिंह इनसे हिन्दी-भाषा का एक बृहद् स्पाकरण लिखवा रहे थे जो इनके निधन के कारण पूरा न हो सका। अन्त में, मुमैरसिंह साहबराजे का नाम आता है, जिनकी यचना बिहार के वस्त्रालीन सुप्रसिद्ध कवियों में जाती है। इन्होंने सन् १८८७ ई० में, पटना में एक काबि समाज की स्थापना की थी, जिसकी आरंभ से बाबू ब्रजनन्दन सहाय 'ब्रजवन्दन' के सम्पादकत्व में 'समस्थापूर्ति' नामक एक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती थी।

उपसंहार

उन्नीसवीं शती पूर्वार्ध के केवल उन्नीं साहित्यकारी के विवरण ऊपर दिये गये हैं, जिनकी रचनाओं के उदाहरण अथवा पुस्तकों के नाम उपलब्ध हैं। जिनकी रचनाओं के न तो उदाहरण ही प्राप्त हुए, न कृतियों के नामोल्लेख ही, उनके सम्बन्ध में प्राथमिक रूप से कुछ कहना कठिन है। मतिभ्य में प्राचीन साहित्यसुसुधान के परिणामस्वरूप यदि कुछ कामों सामने आगयीं तभी उनके सम्बन्ध में कुछ कहना स्यात्-संभव होगा।

अर्थात्क हो सका है, साहित्यकारी के सम्बन्ध में जो बातें प्राथमिक होख पड़ीं उन्नीं का उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है। प्राथमिकता के लिए स्वभावतः हमें मित्य मित्य सूची पर निर्भर रहना पड़ा है। अतः, यदि किसी परिषद में कहीं कुछ अप्रामाणिक कामों का समावेश भी हो गया हो, तो कुछ आश्चर्य नहीं। पुस्तक के छत्र चामे पर एक ऐसी भूल हमारी दृष्टि में आई है जिसका उल्लेख यहाँ कर देना अप्रासंगिक न होगा। बाबू त्रिपुरानन्द सिंह के परिषद में कहा गया है कि सन् १८७७

की क्रांति में, इन्होंने सैनिकों का साथ दिया था। किन्तु, ऐतिहासिक दृश्य तो यह है कि ये कुछ क्रांति के प्रमुख विद्रोही सरदारों में एक थे।^१ इसके अतिरिक्त पू० १० पर मगवानप्रसाद के परिचय में उनके निधन का काल सन् १९१२ ई० के पहले सन् १९१२ ई० होना चाहिए। संभव है, अन्य परिचयों में भी कुछ ऐसी अप्रामाणिक सामग्री आ गई हो। आशा है सुबूत पाठक उन्हें यथायोग्य सुधारकर देंगे।

बिहार-राष्ट्रमाषा-परिषद्
बिचबादरामी, किष्कमाख्य २ २० }

सजदगं घर्मा



१—देखिए, 'Biography of Kunwar Singh and Amar Singh' (Dr K.K. Dutta), P 94 114 Appendix (III) अथवा 'Eighteen Fifty-Seven' (Dr Surendranath Sen) P 259 सिद्धीचंद्रसिंह की निम्नलिखित शीर्षक में लिखे हुए हैं—“Among the Principal Lieutenants of Kunwar Singh were his brother Amar Singh, his nephew Ritbhanjan Singh (Ripubhanjan Singh) his Tahsildar Harkishan Singh and his friend Nishan Singh, then a man of sixty”

विद्ययालुप्तमद्विष्का

प्रथम अध्याय

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
१	अमृतनाथ	१
२	सुभासिन बाई	२
३	द्वितनारायण सिंह	२
४	कृष्णदत्त पाण्डेय	३
५	बशीदानन्द	४
६	छपस्वी राम	५
७	हैमकृता	८
८	धनारंग बुधे	१२
९	नगनारायण सिंह	१६
१०	दामोदर झा	२०
११	माना झा	२१
१२	चिरंजीवी मिश्र	२४
१३	बच्चू बुधे	२४
१४	अयोध्याप्रसाद मिश्र	२८
१५	अक्षिराम	३०
१६	चन्द्रा झा	३१
१७	मंगलेश्वर	३६
१८	राधाकृष्णम जोशी	३८
१९	हरिनाथप्रसाद खत्री	४३
२०	यशेशानन्द शर्मा	४५
२१	रामकुमार सिंह	४५
२२	रामचन्द्र ठाकुर	४८
२३	बैजनाथ द्विवेदी	५०
२४	नर्मदेरवरप्रसाद सिंह	५१

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
२५	अथप्रकाश शास्त्र	
२६	मयबानप्रसाद	५७
२७	रामबिहारी सहाय	५७
२८	रामसोपन मिश्र	६७
२९	अक्षयकुमार	६९
३०	शिवप्रकाश शास्त्र	७१
३१	हरिनाथ पाठक	७५
३२	वासुदेवबिन्दु मिश्र	७५
३३	रामफल राव	७५
३४	ब्रजबिहारी शास्त्र	७५
३५	समानाथ मिश्र	७५
३६	ठग मिश्र	७५
३७	बनबारीशास्त्र मिश्र	७५
३८	गुरुसहाय शास्त्र	७५
३९	अक्षय मिश्र	७५
४०	सेनर अली मुहम्मद	७५
४१	हर्यनाथ झा	७५
४२	संसारनाथ पाठक	७५
४३	यशवन्त त्रिपाठी	७५

द्वितीय अध्याय

१	अक्षयदास	१०७
२	कमलाकर मिश्र	१७
३	करमर्याम	१८
४	कान्हाजी सहाय	१०९
५	कान्हारामदास	१११
६	कामरुमिनि	११२
७	कालिकाप्रसाद	११५
८	कालीचरण	११५
९	कालीचरण पुने	११५
१०	कुल्लुदास	११५
११	केदारनाथ सपाध्याय	११५
१२	गणपत सिंह	११५
१३	गुरुप्रसाद मिश्र	११५

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
१४	दुन्दुबय सात	११७
१५	शुलावचन्द्र सात	११७
१६	गोपी महाराज	११८
१७	गोपीश्वर सिंह	११८
१८	गोविन्ददेव	१२१
१९	शतमुख सहाय	१२१
२०	चन्द्र शर्मा	१२१
२१	चन्द्रेश्वरी राय	१२२
२२	सुकनसात	१२५
२३	छोटक पाठक	१२६
२४	जगदम्बसात बन्धी	१२६
२५	जगदेवनारायण सिंह	१२८
२६	जगन्नाथ ठिबारी	१२९
२७	द्विम्बल शोभा	१२९
२८	ठाकुर	१३०
२९	देवदत्त मिश्र	१३२
३०	नान्दक	१३२
३१	नारायण	१३३
३२	नारायणदत्त जगन्नाथ	१३३
३३	परमानन्ददास	१३३
३४	फरूरी सात	१३६
३५	बदरीनाथ	१३७
३६	बसुन्त झा	१३८
३७	बहादुरदास	१३८
३८	बिहारी सिंह	१३९
३९	कुशुराम	१३९
४०	कोविदास	१३९
४१	मगवानप्रसाद शर्मा	१४
४२	मदनदेव स्वामी	१४०
४३	मदानीश्वरय मुखोपाध्याय	१४२
४४	मागधत मारायण सिंह	१४२
४५	मधुसूदन रामानुजदास	१४४
४६	महाश्वर चौबे	१४६
४७	महेशदास	१४६

क्र० सं० साहित्यकारों के नाम

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
४८	मुकुन्दलाल मिश्र	१४५
४९	मुनीश्वर	१४६
५०	रघुवंश सहाय	१४७
५१	रत्नपाणि	१४८
५२	राजेश्वरदास	१४९
५३	राम	१५०
५४	रामचरणदास	१५१
५५	रामकृष्णदास	१५२
५६	रामसेनशेखर	१५३
५७	रघुमन सिंह	१५४
५८	राधामीनारायण	१५५
५९	राधोगोवर्धनी	१५६
६०	राधिका	१५७
६१	विभवगोविन्द सिंह	१५८
६२	रघुमनसुन्दर	१५९
६३	रघुमनसुन्दर मिश्र	१६०
६४	शिवप्रसाद	१६१
६५	शिवबल्लभ मिश्र	१६२
६६	सोहनलाल	१६३
६७	हरनाथ सहाय	१६४
६८	हरनारायण दास	१६५
६९	हरसहाय मह	१६६
७०	हरिधरदास	१६७
७१	हरिराज द्विवेदी	१६८
तृतीय अध्याय		
१	अम्बालिका देवी	१६९
२	अम्बिकाप्रसाद सपाध्याय	१७०
३	अम्बिकादास	१७१
४	ईनरराम	१७२
५	समानाथ बाबुदेवी	१७३
६	करठाराम	१७४
७	कबीर	१७५
८	कारीराम	१७६
९	केशवदास	१७७

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
१	कौशिकर बाबा	१८६
११	कुमानारायण	१८६
१२	कृष्णप्रसाद शाही	१८७
१३	कवचन मिश्रा	१८७
१४	गंगाधर उपाध्याय	१८८
१५	गुलाबचन्द	१८८
१६	गोकुल मिश्र	१८९
१७	गौरीदत्त	१८९
१८	जगन्नाथ सहाय	१९०
१९	जनेश्वरी बहुष्मामिन	१९०
२०	जयगोविन्द महाराज	१९१
२१	जयनाथ झा	१९५
२२	जवाहर प्रसाद	१९५
२३	जानकी प्रसाद	१९६
२४	ठाकुर प्रसाद	१९६
२५	श्रीहराम	१९६
२६	श्रीफाराज	१९७
२७	दरसनदास	१९८
२८	दीनदयाल	१९९
२९	दीक्षितराम	१९९
३०	द्वारकाप्रसाद मिश्र	२०१
३१	दशराम	२०३
३२	धुवदास	२०४
३३	नवरत्नी सिंह	२०४
३४	परमेश्वरबाबा	२०४
३५	पूरनराम	२०५
३६	प्यारेलाल	२०५
३७	प्राणपुरुष	२०६
३८	पुस्तोबाबू	२०६
३९	सुबल झा	२०७
४०	सैफनाथ झा	२०८
४१	मनसाराम	२०८
४२	महादेव प्रसाद	२०९
४३	माधवचन्द्रप्रसाद शाही	२१०

क स० साहित्यकारों के नाम

	पृ० सं०	
४४	माधाराम चौबे	२१०
४५	मिथनाथ	२११
४६	मितरीदास	२११
४७	मुगलकिशोर	२१२
४८	योगेश्वरराम	२१२
४९	रमाकान्त	२१२
५०	रमापति	२१३
५१	राजेश्वरकिशोर सिंह	२१३
५२	राजेश्वरप्रसाद सिंह	२१३
५३	रामचनराम	२१४
५४	रामनेवास मिश्र	२१४
५५	रामस्वरूपराम	२१५
५६	रामेश्वरप्रसाद नारायण सिंह	२१७
५७	लक्ष्मणदास	२१७
५८	वासुदेवदास	२१८
५९	शत्रुघ्न मिश्र	२१८
६०	शम्भुदास का	२१८
६१	शिवकविराज	२१९
६२	शिवेश्वर शाही	२१९
६३	शिवसत लपाध्याय	२२०
६४	श्रीवत्तराम	२२१
६५	श्रीधर शाही	२२१
६६	सनायराम	२२१
६७	सबतराम	२२२
६८	हरिनाथ मिश्र	२२२
६९	हीरासाहब	२२२
		२२३

परिशिष्ट—१

१	अमरदास	२२५
२	अमिनक	२२६
३	अनन	२२६
४	आद्याशरण	२२७
५	आद्यादास	२२७
६	ईश्वरपति	२२८

क्र० सं० साहित्यकारों के नाम

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
७	कलानाम	
८	काम्हरदास	२२६
९	कँवर	२३०
१०	काङ्गपाणि	२३०
११	गुपनाथ	२३१
१२	चन्द्रनाथ	२३१
१३	चन्द्रमणि	२३२
१४	चिरंजीव	२३३
१५	जयदेवस्वामी	२३४
१६	जयानाम	२३५
१७	जज्ञापर	२३६
१८	जज्ञपादस्य	२३७
१९	जानकीशरथ	२३७
२०	दत्त	२३८
२१	दत्तगणक	२३९
२२	दास	२३९
२३	दिनकर	२४०
२४	दीनानाम	२४१
२५	दुर्गाहरन	२४१
२६	दुरमिता	२४२
२७	धनपति	२४२
२८	धनुषधारी सिंह	२४२
२९	धर्मदास	२४३
३०	धर्मेश्वर	२४३
३१	धैरवपति	२४४
३२	नम्बलास्य	२४४
३३	नरसिंहदास	२४५
३४	नाथ	२४६
३५	परधमनि	२४६
३६	प्रेमलास्य	२४७
३७	बदरीविष्णु	२४७
३८	मैत्रनि देवी	२४८
३९	संगलाप्रसाद सिंह	२४८
४०	मसिहास्य	२४९
		२४९

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ सं०
४१	मधुकर	२५०
४२	मुक्तिराम	२५०
४३	मोदनाथ	२५१
४४	बहुनाथ	२५२
४५	यशुवरदास	२५२
४६	रकमणि	२५३
४७	रघुबीरनारायण सिंह	२५३
४८	रत्नलाल	२५४
४९	रत्ननाथ	२५४
५०	सोकनाथ	२५४
५१	बंशीधर	२५५
५२	विग्र	२५६
५३	विन्धेश्वरनाथ	२५६
५४	बृन्दावनबिहारीलालशंकर सिंह	२५७
५५	शम्भुदास	२५७
५६	शिबदत्त	२५८
५७	श्याम	२५८
५८	भक्तसिंह	२५८
५९	छनाथ	२५९
६०	साहसराम	२६०
६१	सुकवि	२६
६२	सुकविदास	२६१
६३	सुजन	२६२
६४	सुवैद्यलाल	२६२
६५	संनकानन	२६३
६६	हरिदत्तसिंह	२६३
६७	हरीशंकर	२६४
६८	हेमकर	२६४

परिशिष्ट—२

१	दामोदरशास्त्री छप्रे	२६५
२	प्रेमदास	२६७
३	बासुराम स्वामी	२६८
४	बिहारीलाल चौधे	२६८

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
५	भूदेव सुखोपाध्याय	२७१
६	भारकृष्णेश	२७४
७	सुरसीमनोहर	२७८
८	राधाकाल भागुर	२७९
९	रामचरित तिवारी	२८१
१०	रामशरम	२८२
११	रामानन्द	२८४
१२	शीतलप्रसाद	२८५
१३	श्रीवल्लभदास त्रिपाठी	२८६
१४	सुमेरसिंह साहबजादे	२८६

परिशिष्ट—३

१	सुकुपा	२९१
२	समापति सुपाध्याय	२९२
३	सपदेश	२९३
४	साक्ष्यदास	२९३
५	सतवीर	२९४
६	सूक्ति सिंह	२९४
७	सद्मीनारायण	२९५
८	सिमकवि	२९५
९	अनन्तदास	२९६
१०	अनन्त कवि	२९८
११	बलेश सिंह	२९९
१२	बामोदर दास	२९९
१३	पद्मदास	३००
१४	प्रभाकराह	३००
१५	मयवतीदास	३०१
१६	रामचरणदास	३०१
१७	शंकर श्रीवे	३३
१८	हलधरदास	३०५
१९	सुरकिशोर	३०५
२०	अनन्तदास	३०
२१	अनूपचन्द्र सुवे	३०
२२	अनन्तकिशोर सिंह	३०८

क्र० सं०	साहित्यकारों के नाम	पृ० सं०
२३	हरपमकाश सिंह	३०६
२४	केशव	३०६
२५	कृष्णपति	३०६
२६	कृष्णसाध	३१०
२७	दुमानी तिकारी	३१०
२८	गोपाल	३१०
२९	गोपाक्षशरण सिंह	३११
३०	गोपीनाथ	३११
३१	कृष्णपति	३१२
३२	कामनाथ	३१२
३३	कामनाथ	३१२
३४	कौटिल्य	३१३
३५	कवानन्द	३१३
३६	कॉन किर्तिषयन	३१३
३७	कौबनराम	३१३
३८	कौशाराम कौशे	३१४
३९	देवीदास	३१७
४०	देवीप्रताप	३१७
४१	दन्वीपति	३१७
४२	दशरथकिशोर सिंह	३१८
४३	प्रतापसिंह	३१८
४४	दशरथदास	३१८
४५	मंगल कवि	३१८
४६	मङ्गल	३२०
४७	मिनकराम	३२०
४८	मन्मथदास	३२१
४९	मनबोध	३२१
५०	महावीरप्रताप	३२१
५१	महीपति	३२२
५२	रघुनाथदास	३२२
५३	रमापति ज्ञानप्रदा	३२२
५४	रामदास तिकारी	३२२
५५	रामप्रताप	३२३

क्रम सं० साहित्यकारों के नाम

पृ० सं०

५६	रामरूपदास	१२३
५७	रामेश्वरदास	१२३
५८	राष्मिनाथ परमहंस	१२४
५९	शास का	१२४
६०	बेदानन्द सिंह	१२४
६१	बृन्दावन	१२५
६२	शंकरदास	१२६
६३	शिवप्रकाश सिंह	१२६
६४	शेखारतराय	१२७
६५	साहबरामदास	१२८
६६	हरतालिकाप्रसाद भिवेदी	१३०
६७	हरिश्चरनदास	१३१
६८	शोमानाथ	१३१
६९	हवदस	१३२
७०	प्रभागदास	१३३
७१	राष्मिनाथ डाङ्कर	१३३
७२	सरसराम	१३६

परिशिष्ट—४

१	मिन्नक मिश्र	
२	जनकपारीशाल	१३७
३	दिकाकर मद्र	१४०

परिशिष्ट—५

परिचय-तलिका	१४२
-------------	-----

परिशिष्ट—६

मूल पुस्तक में संकलित उदाहरणों की	
प्रथम पंक्ति की अकारारिकम से सूची	
व्यक्तिनामानुक्रमणी	१६४
प्रथम एवं पत्र-पत्रिकाओं की नामानुक्रमणी	१७८
महायक ग्रन्थों की सूची	१८३
सहायक पत्र-पत्रिकाएँ	४०९
	४१२

हिन्दी-साहित्य और बिहार

प्रथम अध्याय

[४ साहित्यकार, विनय जन्म-मरण ज्ञात है ।]

अमृतनाथ

आप मुन्शीसेनरा (रामगढ़वा, चम्पारन) क निवासी प ।^१ आपक वंशज भीष्महराई का क मतानुसार आपका जन सन् १८२१ ई (सं० १८५८ वि) में हुआ था । उन्हीं क कथनानुसार आपकी मृत्यु सन् १८८६ ई० (सं० १९४३ वि०) में हुई ।

आपका सम्बन्ध मतिषा राज (चम्पारन) के दरबार स था । एक बार स्व० भीरूपनाथ मिश्र क पिठानह भीरुंगी मिश्र का वंश-परिचय लिखकर आपने बेठिया के उत्कालीन महाराज को प्रेषण किया था, जिसक पुरस्कार-स्वरूप भीरुंगी मिश्र ने अपनी आर स आपको पाँच बीघ जमीन दी थी, या आज भी आपक वंशजों क अधिकार में सुरक्षित है ।

साहित्य क अतिरिक्त संगीत क प्रति मो आपका विशेष अनुराग था । आपकी भारत रचनाएँ हस्तलिखित रूप में उपलब्ध हुई हैं । आपकी सैकड़ों रचनाएँ आपके गाँव क खोला में प्रचलित हैं । आपकी अधिकांश रचनाएँ शिष्यमन्त्रि-सम्बन्धिनी हैं ।

उदाहरण

महादेव त्रिभुवन के ठाकुर काहे कहत मिसारी ।
परम दयाल दया संजन पर शिव सम को उपकारी ।
गरस ज्वाम निज कठहि गखत त्रिभुवन लेत उवारी ।
जाको नाम लेत भवसागर पार करत अथ भारी ।
ताको कहत खातर वरजोरी सो तुम परम गवारी ।
ध्यान लगाय जोगी सब हारे कहत वेद सब हारी ।
'अमृतनाथ' मिले नगपुर म प्रकट मिले त्रिपुरारी ।
महादेव त्रिभुवन के ठाकुर काहे कहत मिसारी ।^२



^१ चम्पारन की साहित्य-शाखा (श्रीमैत्रक्य का प्रथम सं०, सं० २ १३ वि) पृ० २४ ।
^२ पृ० ६ २२ ।

सुवामिनदाई

आपका जन्म सन् १८०१ ई० (सं० १८५८ वि०) में पकुमकेर (बम्बार्न) में हुआ था।^१ आप सुबीसेमरा (बम्बार्न) में ब्याही गई थी। सुबीसेमरा के प्रसिद्ध कवि 'अमृतनाम' के पदों का जो प्रचार मिथिला में हुआ, उसका उद्भूत भेष आपको ही है। आप सन् १८८६ ई० (सं० १९४३ वि०) में परलोकगामिनी हुईं। आपने स्वयं भी हिन्दी में अनेक पदों की रचना की थी, किन्तु वे सहाहरणार्थ उपलब्ध नहीं हुए।

हितनारायण सिंह

आप पटना जिले के 'पुनपुन'-नदी तटस्थ छारणपुर नामक ग्राम के निवासी नरहरिदा क्षत्रिय थे। आपका जन्म सं० १८२० वि० (सन् १८०३ ई०) में हुआ था।^२ आपके पिता का नाम बाबू तपोहर सिंह था। आपके तीन पुत्र हुए—बाबू ग्याहर सिंह, बा० ठाकुरदयाल सिंह और बा० रामचरण सिंह।

आप एक अच्छे समाज-सुधारक थे। आर्यवेद में आपको अमिदधि विशेष रूप से थी। कहते हैं, आपने आर्यवेद-सम्बन्धी एक पुस्तक की रचना भी सामान्य जनता के लाभ के लिए की थी, जो अब उपलब्ध नहीं होती।^३

हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत और फारसी भाषाओं पर भी आपका अच्छा अधिकार था। अँगरेजी का भी आपकी आधारण ज्ञान था। हिन्दी में आपकी कुछ लोकोपदेशपूर्ण काव्य-रचनाएँ भी हैं, किन्तु कहा जाता है कि वे आपकी वास्तविकता की कृतिप्राँ हैं।

आप सन् १८८६ ई (सं० १९२३ वि०) में परलोक विभारे।

उदाहरण

(१)

क्षत्री कुल में जनम ली, बिमो नहीं उपकार ।
मात-पिता-कुल को भ्रष्ट, तात तुम्हें विफार ॥
साज न सागत कहन मैं, क्षत्री शब्द विचार ।
नाम भयं को पाइ वै, करु जग में उनकार ॥
ना तो प्रिय कहियो करो, तात मली सहाय ।
भव क्षत्रिय के बहन में, गइ मरजाद विसाय ॥

१ 'बम्बार्न की तटस्थ-नामका' (पदी) पृ १० ।

२ 'विहार-दर्शक (सामयिक विहारीय सं सन् १८८६ ई), पृ १०० ।

३ पदी ।

क्षत्रिराजकुल जो भ्रष्ट, सोचो मन ठहराय ।
गो-हत्या को देखि के, क्यो न तरस उर भाय ॥
बनी यहाँ वो वस्तु जो, लाकर कर सनमान ।
अपर देश के वस्तु से, होत यहाँ प्रति हान ॥

(२)

दारु सम या देस में, ताडी जान सुजान ।
नसा वोऊ में तुल्य है, कहत सकल मतिमान ॥
घर जोरु के वस्त्र को, बदले मे धरि देत ।
पो करके अनुराग-वस, गाली सबको देत ॥
बमन करत जहँ-तहँ रहत, बकत भूत अस भाड ।
याहू पर छोडत नहीं, तो भी श्रेष्ठ कहाइ ॥
भाप गये कर सोच नहि, संग शौर को सेत ।
जा मन में आवत रहे, वक्त कछुक नहि चेत ॥
या से मैं बजत प्रहो, सुना सकल द कान ।
प्यारी ताडी त्यागि वे, रालो घर धनवान ॥

✽

कृष्णदत्त पाण्डेय

आपका जन्म शाहाबाद जिले के मांभपुर ग्राम में, सन् १८०५ ई० (सं० १८६२ वि०) में, हुआ था ।^१ आपका मृत्यु-काल सन् १८५९ ई० (सं० १९१६ वि०) बतलाया जाता है । आप एक प्रसिद्ध सिपमछ कहे गये हैं । 'कृष्णन्यासो' और 'भारत का गदर' नामक दो पुस्तकों की रचना आपने की थी, जो जमिन्दारों में बलाकर नष्ट हो गईं । आपका एक कविता भी 'मिथकण्ठ विनोद' में है, पर वह बिलकुल बेतुका है ।

उदाहरण

संबोदर की मानु के पति जो भजनहार,
पर जोरे सेहि विनय करु जिनन मारा मार ।^२

१. 'विहार-वर्ष' (वरी), पृ० २ ।

२. वरी ।

३. 'मिथकण्ठ-विनोद' (मिथकण्ठ, एपीव ध्यय, शिरीष सं० सं० १९०५ वि) पृ १०१० ।

४. वरी । जो के रकाज पर जन्म होता वो सर्वत्र ररता । शिष्ट, वह दूसरे परय के श्रेष्ठ के सेत में शीक हो है ।

सुवासिनदाई

आपका जन्म सन् १८०१ ई० (सं० १८५८ वि०) में पशुमकेर (बम्बारन) में हुआ था।^१ आप सुखीसेमरा (बम्बारन) में ब्याही गई थीं। सुखीसेमरा के प्रसिद्ध कवि 'अमृतनाथ' के पदों का जो प्रचार मिमिहा में हुआ, उसका सम्पूर्ण भेष आपको ही है। आप सन् १८८३ ई० (सं० १९४१ वि०) में परलोकगामिनी हुईं। आपने स्वयं भी हिन्दी में अनेक पदों की रचना की थी, किन्तु वे उदाहरणार्थ उपलब्ध नहीं हुए।

हितनारायण सिंह

आप पटना जिले के 'पुनपुन' नदी तटस्थ सारनपुर नामक ग्राम के निवासी नरहरिया क्षत्रिय थे। आपका जन्म सं० १८३० वि० (सन् १८०३ ई०) में हुआ था।^२ आपके पिता का नाम बाबू ठाकुर सिंह था। आपके तीन पुत्र हुए—बाबू गदाधर सिंह, बा० ठाकुरदास सिंह और बा० रामचरण सिंह।

आप एक अच्छे समाज-सुधारक थे। आपुर्वेद में आपकी अभिरुचि विशेष रूप से थी। कहते हैं, आपन आपुर्वेद-सम्बन्धी एक पुस्तक की रचना भी सामान्य जनता के काम के लिए की थी, जो अब उपलब्ध नहीं होती।^३

हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत और काशी भाषाओं पर भी आपका अच्छा अधिकार था। मैगरेजी का भी आपको साधारण ज्ञान था। हिन्दी में आपकी कुछ लोकोपदेशपूर्ण काव्य-रचनाएँ भी हैं, किन्तु कहा जाता है कि वे आपकी वास्तविकता की छवियाँ हैं।

आप सन् १८९३ ई० (सं० १९२३ वि०) में परलोक विभारे।

उदाहरण

(१)

क्षत्री कुस में जनम लै, कियो नहीं उपकार ।
मात-पिता-कुस को भ्रष्टे, तात तूम्हें विचार ॥
साज न सागत कहन में, क्षत्री शब्द विचार ।
नाम भय को पाइ सँ, कहु जग में उपकार ॥
ना तो त्रिय कहियो करो, ताते मली सहाय ।
भय क्षत्रिय के कहन में, गइ मरजाद विनाय ॥

१ बम्बारन की उचित-भाषना (पदी) १ २७।

२ 'विहार-दर्शक' (प्राचीन विद्व, द्वितीय सं० भाग १८७३ ई०), पृ० १००।

३ पदी।

क्षयिराजकुल जो ग्रह, साचा मन टह्राय ।
 गो-हत्या को देखि के, कथान सग्न रर भाय ॥
 वनी यहीं का वस्तु जो, साकर कर सुनमान ।
 प्रार दग के वस्तु के, हीन यही प्रति जान ॥^१

(३)

दारु मन वा के है, साहं जन नृजान ।
 नसा दोह नै तुल्य है, कथन सग्न रर भाय ॥
 घर जग के शक्त हो, जग के हीन जान ।
 पां कहे सुगुण्य, कथन सग्न रर भाय ।
 वमन कर्न के है, कथन सग्न रर भाय ।
 पाहू पर संकट नै, कथन सग्न रर भाय ।
 भाव गने का संकट नै, कथन सग्न रर भाय ।
 जा मन नै साकर नै, कथन सग्न रर भाय ।
 या व नै कथन सग्न, कथन सग्न रर भाय ।
 प्यारी ताही त्यागि के, कथन सग्न रर भाय ।^२

*

श्रीगणेशाय नमः

भारत का कर्न शहीसरी शरी (पुस्तक) का प्रथम अंक (पृ. १-१०) में, दुष्का वा ।^१ भारत का मृत्यु-काल का १०१३ ई. (१६०१ ई.) का कथन है ।
 भाय एक प्रसिद्ध ग्रन्थक कह गत है । 'कथन सग्न रर भाय' का १०१३ ई. का कथन
 ही पुस्तक की रचना का १०१३ ई. का कथन है । 'कथन सग्न रर भाय' का
 एक कविच भी 'मिथकस्यु कथन' में है, कथन सग्न रर भाय है ।

संवाद की कथा के भी जो भजनहार,
 कर गार के शहीसरी शरी शहीसरी शरी ।^२

१. मिथकस्यु कथन (पुस्तक) का १०१३ ई. का कथन है ।
 २. वही ।
 ३. मिथकस्यु कथन (पुस्तक) का १०१३ ई. का कथन है ।
 ४. वही ।
 ५. वही ।

यशोदानन्द^१

आपका जन्म शाहाबाद जिले के अस्तिवारपुर नामक ग्राम में सं० १८७० वि० (सन् १८१३ ई०) में हुआ था ।^२

आपके पिता सुन्धी रघुवंश सहाय सारन जिले के नन्दपुर ग्राम के निवासी थे, जो किसी कारण आपन अशुर सुन्धी हनुमान सहाय के यहाँ (अस्तिवारपुर में) आकर, सं० १८३५ वि० (सन् १८०८ ई०) से, रहने लगे थे। सम्तानहीन होने के कारण सुन्धी हनुमान सहाय ने अपने नाती (अर्थात् आप) को ही गोद ले लिया।

आपने अस्तिवारपुर नासरीगंज (शाहाबाद) तथा आबमगढ़ (उत्तरप्रदेश) में रह कर फारसी, हिन्दी और कुछ-कुछ संस्कृत की भी शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् एक बेष को साथ रखकर आपने वैद्यक ग्रन्थों का भी अध्ययन किया। इसी अध्ययन के आधार पर आप निर्भन रोगियों की चिकित्सा भी करने लगे। आपने सरकारी नौकरी पन्द्रह सोलह बप की अवस्था से आरम्भ की। सबसे पहले आबमगढ़ में आप मिष्ठान-नबीस हुए। कुछ दिनों तक प्रवाग में कन्दीकस्ती के डिप्टी-डेप्यार भी रहे। फिर, इन दोनों स्थानों में कुछ दिनों के लिए ठहरीकदार और डिप्टी-कलक्टर भी हुए। मई सन् १८५० ई० (सं० १२०७ वि०) से सरकारी काम-बाम छोड़कर अस्तिवारपुर में ही रहने लगे। आपके चार पुत्र थे।^३

आप नानकपदी थे। पर सर्वथा मगकतीभी का पूजन किया करते थे। हिन्दी में आपके द्वारा रचित स्फुट मञ्ज आदि काव्य-रचनाएँ उपलब्ध होती हैं।^४

उदाहरण

(१)

कर्म-सुभाव की पाप-प्रभाव धर्यो बहु जन्म जहाँ अब से ।
आस-भरोस सदा हमरो पद लागि रहै तुमरो तब से ॥
रीभूत राम भहो सुखधाम करो सुखिया जग में सब से ।
खीभूत मोर यसाव नहीं 'असुदानन्द' जन्म न ल्यो भव से ॥^५

१ आपका करिबन बालू मितकमल सहाय (सं०) छाप में लिखे सूत्रनामों के आधार पर तैयार किया गया है।

२ वही।

३ आरों के नाम इस प्रकार हैं—कन्देवालाय, विहापीलाय, बागोपलाय तथा कन्देवालायक। इनमें प्रथम के बतारर नाम भी हैं।

४ कर्म में भी आपने कई पुस्तकों की रचना की थी, जिनमें एक प्रकाशित भी हुई थी। आपकी कर्म-पुस्तकों की विवेचना यह है कि कर्मों का-जग हिन्दी के दोहे भी समाविष्ट है।

५ कर्म विषयक सहाय (वही) से प्राप्त।

(२)

स्व न रख न भेष कोई नहिं जम न कर्म कहे श्रुति चारो ।
सोई कृपाल कृपा करिकै दुखिया भवला बहुतेक उवारी ॥
ऐसो गरीब-निवाज तुहीं रघुनाथ कहीं मुख चाहि पृकारा ।
साज रखो सब सोक हरो 'जसुदानंद' साल गुपाल हमारी ॥'

(३)

चन्द्र मलाट भभूति लसै जिहि तेज की एक कसा न विभाकर ।
हाथ तिसूल गले मुंडमाल उडै मृगछाल चडै वरदा वर ॥
कौन कहे तुमरो छवि को मध-अंग सिवा भरग जटा पर ।
नाम निहास करो 'जसुदानंद' दीनदयाल कृपाल कृपाकर ॥'

*

तपस्वीराम

आप 'तपस्वीराम' क नाम से प्रसिद्ध थे ।

आप सारन जिला क मुखारकपुर^१ नामक ग्राम के निवासी थे ।^२ आपका जन्म सन् १८७५ ई० (सं० १८७२ वि०) में हुआ था । आपके पिता का नाम था मुन्शी केवल कृष्णजी । वे आत्ममार्ग (इसाहाबाद) की नील-कोठी में मीर मुन्शी थे । आप अपने पिता क द्वितीय पुत्र थे । आपके बड़े भाई तुलसीरामजी एक प्रसिद्ध संत थे । छोटे भाई का नाम था बख्शीरामजी । आपकी दो शादियाँ हुई थी, जिनसे आपके तीन पुत्र और दो कन्याएँ हुईं । स्वनामधेय भगवद्गुरु महारमा श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसाद 'स्मकता' की आपके ही द्वितीय पुत्र थे । आपके प्रथम पुत्र का नाम था सारसप्रसाद और द्वितीय पुत्र का सीतारामभद्रप्रसाद ।

१. १९०० सिविलसदर लखन (बरी) से प्राप्त ।

२. बरी ।

३. यह ग्राम आपरा नगर के बजार-पूर्व छात्र पीठ पर 'श्रीका' परचमे में स्थित है । प्राचीन काल में यहाँ मुखारकपुर नाम के एक प्रसिद्ध शेर हो गये हैं । इनका सम्प्रति-रक्षक मही-बरी के छत्र पर भाद्रकाल में आन भी वर्तमान है । इस सम्प्रति श्रीका भी यही प्रसिद्ध है । क्या किन्तु, क्या सुसलमान सभी जगदी मन्त्रकर्मका सिद्ध होने पर बलवर खीरजी कहते हैं । इस ग्राम में श्रीकृष्णदासजी के प्रतिष्ठित और श्री कई हरिपद हो गये हैं, जैसे श्री ब्रह्मरूपजी, शिवरूपजी, कनकविहारीरामजी आदि ।

४. 'श्रीसीतारामशरण भगवानप्रसादजी की जीवनौ' (सिविलसदर लखन द्वितीय सं सं० १९६० वि)

आप स्वयं भी एक भर्मात्मा सद्यस्स रामोपासक संत थे। साधु-संतों की सेवा के लिए आपने गंगासागर और मधुरा के बीच अनकारोक स्थानों का भ्रमण किया था। महाराज भीखीठारामजी 'युगलप्रिया' (चिरान, छपरा), भीरामदासजी (बबनपुर, इलाहाबाद) तथा भीरामचरणदासजी (प्रमोदवन कुटिया, अयोध्या) के आप बड़े हुना पात्र थे। कहते हैं, एक दिन स्वप्न में भीखीठाराम ने आपको दर्शन देने की कृपा की थी और उनके चरण-कमल के लेंगूटे को बाहक के समान घाट-चाटकर आपने अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव किया था।

आप बड़े विद्यानुरागी और फारसी तथा अन्य कई भाषाओं के पंडित थे। मित्रकण्ठुओं ने आपका रचना-काल सं० १६९५ वि (सन् १८६८ ई०) बताया है।^१

आप हिन्दी के एक अच्छे कवि थे। आपकी कविताएँ स्वभावतः मफिरसात्मक होती थीं। आपने हिन्दी में कई पुस्तकों की रचना की थीं, जिनमें केवल पाँच के नाम प्राप्य हैं—(१) भीमागवतसूची, (२) भीअबोप्या-माहारम्भ, (३) कषामाहा, (४) प्रेम-वर्ग सरयू और (५) भीखीठाराम-सरयू चिह्न।^२

आपका निधन ७० वर्ष की आयु में, सन् १८८५ ई (सं० १६४२ वि) की बैशाख-कृष्ण नवमी (बुधवार) को, छपरा नगर के समीप गंगा-सरयू-संगम पर हुआ था।

१ मित्रकण्ठु-विमोद, (बही, पृथिव भाव द्वितीय सं सं १६८५ वि) कम-सं० २१२ पृ० ११६२।

२. इसपर पाठकेन्द्र बन्धु हरिश्चन्द्र और डॉ मित्रसंय की सम्मतिवाँ कवराः इस प्रकार थीं—

(क) 'यस्य बच-रत्न (प्रोबल भाषा) में लिखा गया है। मझें क्य सर्वत्र ही है। प्रत्यक्षर की अन्त्य प्रथम से इष्टिभेदक होती है।'—दक्षिण, श्रीशैलारामराज भयभक्तमहाशय की बीरबी (बही) पृ १२।

(ख) "Owing to the number of books sent to me for criticism I have been obliged to make a rule to refuse to give my opinion on any I however make an excoption in favour of 'Premgang-Tarang of your (Rupkala-Jee's) father (M. Tapasvi Ram) It is a book I have read with pleasure both on an account of simple and graceful style of its prose and on account of the many excellent poems scattered through it proving a pleasing anthology of the story of Ram"—बही।

३ मित्रकण्ठुओं ने आपके पिछे दो फारसी ग्रंथों की भी बर्ण की है—(१) बसने मैरीनरु और (२) बसने देरली।—दक्षिण 'मित्रकण्ठु-विमोद' (बही), पृ ११६२। आपने प्रकामल की एक बर्ण-बीका भी प्रकाशित कराई थी।

उदाहरण

(१)

जय जयति जय सीतारमन, जय जय रमापति सुखसदन ।
 जय राम संसृतिदुखसमन, भवभयहरन असरनसरन ॥
 जय भवधपति रवुकुलमनो, निजदासवस त्रिभुवनधनो ।
 भानन्दकन्द कृपायतन, भवभयहरन असरनसरन ॥
 अव्यक्तमेकमगोचरम्, विज्ञानघन धरनीधरम् ।
 मगहनमही निश्चरदमन, भवभयहरन असरनसरन ॥
 लावण्यनिवि राजिवनयन, कस्मिमलदहन मंगलमवन ।
 'तपसी' सुखद कल्याण-भयन, भवभयहरन असरनसरन ॥'

(२)

ध्यावहि मुनिन्द्र सीयपदकंजचिह्नराज,
 सन्तनसहायक सुमगल सैदोहर्ही ।
 ऊर्द्वरेखा, स्वस्तिक औ अष्टकोन, लक्ष्मी, हल,
 मूसल औ मस, सर, जनजिय जोहर्ही ॥
 भ्रम्वर, कमल, रघ, वज्र, जव, कल्पतरु,
 भ्रंकुस, ध्वजा, मुकुट मुनिमन मोहर्ही ।
 चक्रजू, सिंहासन औ यमदह, चामर,
 ल्यो छत्र, नर, जयमाल वामपद सोहर्ही ॥
 सरजू दक्षिनपद, मही, कलस,
 औ पतान, जम्बुकल, भद्रचन्द्र राजर्ही ।
 संख, पटकान, तीनकोन, गदा, जव, विन्दु,
 शक्ति, साधुकुण्ड, त्रिवली, सुभ्यान काजर्ही ॥
 मीन, पूर्णचन्द्र, वीन, बंसी औ धनुप, तून,
 हंस, चन्द्रिका विचित्र चौविस धिराजर्ही ॥
 एते चिह्न जनकविशोरी-पद-पकज के,
 'तपसी' मंगल-मूल सब सुख साजर्ही ॥'

ॐ

१ श्री सीतापुत्ररस आशानमसादवी श्री श्रीश्री (पद्य) पृ० ११ ।

२ पद्य पृ० ११ १२ ।

हेमलता'

आपकी रचनाओं में आपका उपनाम 'पुगलानम्पशरण' मिलता है।

आपका जन्म पटना बिले के इस्तामपुर नामक ग्राम के एक प्रतिष्ठित ब्राह्मण परिवार में, सं० १८७५ वि० (सन् १८९८ ई०) की कार्तिक शुक्ल सप्तमी को, हुआ था।^१ बाल्यापत्वा में ही माता का देहान्त हो जाने के कारण आपको केवल अपने पिता का ही स्नेह मिला। आपके दो भाई और दो बहनें थीं। आरम्भ में आपने कृष्णजी नामक एक विद्वान से विभिन्न शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की। इसी समय आपने संगीत और मूक विद्याओं का भी अभ्यास किया। लगभग पन्द्रह वर्ष की अवस्था में आपने संत मुगलामियाली^२ का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। तत्पश्चात् आपकी प्रवृत्ति लीर्याटन की ओर हुई। सप्तमम आप कारी गये। वहाँ एक वर्ष रहकर आप चित्रकूट चले गये। चित्रकूट में आपने बिलकुल बिरक्त का बेश चारण कर लिया। इसी बेश में आप फिर अयोध्या आये और 'सहमन किला' में रहने लगे। वहाँ पं० समापतिनी तथा परमहंस शीतलनिधी से आपकी बड़ी परिचयता हो गई। इसी बीच आप अयोध्या से चौबीस मील दूर पृथाजी कूट पर लगभग बीसह महीने के लिए मौन व्रत की स्थापना करते रहे। वहाँ से आने पर आपकी अच्छी ख्याति हो गई। उसी समय रसिकों के विशेष आग्रह पर आपने श्रीमधुराचार्य विरचित 'मगधदृश्य-वर्णन' की कथा कही थी। अयोध्या से जब पुनः कुछ दिनों के लिए आप चित्रकूट गये, तब जानकीघाट पर ठहरे। आपकी ख्याति सुनकर रीनों के महाराज किशनाथ सिंह^३ आपके दर्शन के लिए गये थे। कहते हैं, महाराज ने आपको अपने वहाँ आमंत्रित भी किया था, किन्तु कुछ कारणवश आप न जा सके। इस बार चित्रकूट से अयोध्या वापस आकर आप निमलकुण्डी पर एक कुटी बनाकर

१ अण्णक प्रस्तुत परिचय की अवस्थीमस्यसिंह-कृत "उपमर्षि में उल्लिख-सम्बन्ध" नामक ग्रन्थ (प्रथम सं० सं० २ १४ वि०) में इसके रूप परिचय के आधार पर स्थान बताया गया है।—देखिए, वही, पृ० ४११-१२।

२ वही पृ० ४११।

३ वही ग्रंथता अपने 'मल्लभारती' नामक एक संत से सुनी थी। इसीसे ही अण्णक नाम 'पुगलानम्पशरण' रखा था।

४ महापद्म बिलवाच सिंह के प्रवचन में लखे 'भारत-पुनरुत्थन नामक श्री माटेनुषी से हिन्दी का सबसे पहला काव्यकाला है और अण्णक ही की सबसे हिन्दी के सर्वप्रथम साहित्यकार के रूप में परिचयस्थित कहा है। अण्णक का सं० १८४१ वि० (सन् १८६६ ई०) में, सिहासवादीहय सं० १८६१ वि० (सन् १८८६ ई०) में और साधुवाच सं० १८६१ वि० (सन् १८८६ ई०) में हुआ था। उनके पुत्र महापद्म खुशवाच सिंह का जन्म सं० १८८० वि० (सन् १८९९ ई०) में, उन्मत्तौष सं० १८९१ वि० (सन् १८९४ ई०) में तथा साधुवाच सं० १८९१ वि० (सन् १८९६ ई०) में हुआ था। वे भी प्रसिद्ध साहित्यकार थे।

—देखिए 'निमल-कुण्डली' (वही, एतिस भाग द्वितीय सं० सं० १६८ वि०) पृ० १०४ और 'कथितोपुत्री' (पं० उन्मत्तौष विद्यापीठ प्रथम भाग, खण्ड सं०, सन् १९४९ ई०), पृ० ४०१।

रहने लगे। सन् १८५७ ई० की क्रान्ति में आप उस स्वान की झोड़कर फिर 'सन्मति' में ही चल बान की बाध्य हुए और अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक वहीं रहे।

आप एक प्रसिद्ध राम भक्त थे। राम भक्ति शाखा में वा रसिक-सम्प्रदाय बता, उसके आप एक प्रसिद्ध सन्त हुए। आपके ही प्रभाव से रसिक-सम्प्रदाय का बहुत व्यापक प्रचार हुआ। एक संत के रूप में आपको अपने जीवन-काल में ही परम प्रतिष्ठा मिल चुकी थी। कहते हैं, मोलाना इम तथा अन्य सूफ़ी संतों के कलाम पढ़ने और कुरान के बहुत-से गूढ़ स्थलों को समझने के लिए मोलानी लोग भी दूर-दूर से आपके पास आया करते थे। आप रहते भी वे सृष्टिवाना रंग थे। लम्बा लम्बीला शोभा, ऊपर लठी हुई चमकीली टोपी और हाथ में एक सन्धी माला—ये चीजें बराबर आपके साथ रहा करती थीं।

आप संस्कृत और हिन्दी के प्रकांड विद्वान् तो थे ही, अरबी और फारसी में भी आपकी गहरी पैंठ थी। आपकी काव्य-रचना मक्तिमान-पूर्व होती थी। प्रयोग की संख्या की दृष्टि से सम्प्रदाय के पूरे इतिहास में इसकी अधिक पुस्तकाकार रचना और किसी की नहीं मिलती। आपके रचे हुए कुछ चौरासी ग्रंथ बरलाये जाते हैं, जिनमें निम्नलिखित पत्राक्षर आज भी आपके आभम में वर्तमान हैं—(१) सीतारामस्नेहवागर, (२) सुन्दर-गुण-वर्णन, (३) मधुर मंथनासा, (४) सीताराम-नाम-वचन प्रकाश,^१ (५) प्रेम परत्वप्रभा बोहावली, (६) विनय विहार, (७) प्रेम-प्रकाश, (८) नाम प्रेम प्रार्थिनी, (९) सत्यंग-सतसई, (१०) मऊ-नामावली, (११) प्रेम-सर्मग, (१२) सुमति-प्रकाशिका, (१३) इत्य-सुसाविनी, (१४) अम्याश प्रकाश (१५) उपदेशनीति शतक, (१६) अमृत अलंकार विद्या, (१७) मंथनोद चौंतीसी, (१८) बचविहार, (१९) मनबोधशतक, (२०) विरसिगतक, (२१) बचबोध, (२२) बोधार्थ, (२३) पंचरशी-वच (२४) चौंतीसा वच, (२५) इत्य-प्रकाश, (२६) अनन्य प्रमोद^२, (२७) मन्त्र-नाम-सिंहामणि, (२८) संत बचन विद्याविका, (२९) वच सर्मग, (३०) कपरहस्य-वदावली, (३१) कपरहस्यामुच्य, (३२) संतसुख-प्रकाशिका, (३३) अक्षयवासी-परत्व, (३४) रामनाम-परत्व-वदावली, (३५) सीताराम-सत्य प्रकाशिका, (३६) अक्षय विहार, (३७) सुखसीमा बोहावली, (३८) अमृत उपदेश-वचिका, (३९) नाममय एकाक्षरकोष, (४०) वाग्यसिधु-सर्मग, (४१) पुगल-वच विद्या, (४२) प्रबोधदीपिका बोहावली, (४३) दिव्यदण्ड प्रकाशिका, (४४) प्रमोदवाचिका बोहावली, (४५) बचविहारमोद चौंतीसी, (४६) कपरचरित्रमोचरी,

१. रोज-नरो महाप्राय सुदुर्लभ आपके कृत्यग्रन्थ थे। इसके बीजाय में अनेक विद्या-स्वान (कपरवचिका, प्रमोद) पर भी विशाल मंदिर बनवाया था, पर आप भी वर्तमान हैं।

२. उपमान की बहिष्कार पर यह सर्वविध सामाजिक धर्म कोकमिन् इन माना गया है। इसका वास्तविक-सर्वत्र प्रचार सन् १९२३ ई० में लखनऊ के प्रथम प्रेस के प्रकाशित हुआ था। — वैदिक 'अमृत-वचिका' में मधुर वचन (वा अमुकदेवराम मिल आया, अथ सं०, सन् १९२३ ई), ई० १९२३-२४ ।

(४०) अष्टादश-रहस्य, (४८) ज्ञानकीस्नेह-बुलासशतक, (४९) मामपरत्न-पंचाशिका,
 (५०) वर्षविहार दोहा, (५१) संतबिनब शतक, (५२) विरक्ति शतक, (५३) विश्ववस्तु
 बोधावली, (५४) उत्सवपदेशप्रथ, (५५) बारहराशि सातवार, (५६) मणि माला,
 (५७) अर्थपंचक, (५८) मन-नसीहत, (५९) फारसीदुरुक्तदखीबार मूलतना, (६०) शिवा
 शिव अगस्त्य-सुतीह्य-संवाद, (६१) वैष्णवोपयोगिनिर्णय, (६२) पंचामुप-खोज,
 (६३) मूलतन-फारसी-दुरुक्त, (६४) मूलतन हिन्दी-वर्ण, (६५) नीरवतीची, (६६) पन्द्रा-वच,
 (६७) अष्टयाम ककहरा, (६८) अनन्य प्रमोद^१, (६९) प्रीति-पंचाशिका, (७०) नाम
 विनोद-असावन-बरबै, (७१) राम-नबरत्न, (७२) एव महिगा, (७३) संत-वचनावली,
 (७४) पारस भाग और (७५) विनोद विलास ।^२

आप सं० १९३३ वि० (एन् १८७६ ई) की मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी को वाकेत
 वाली हुए ।

उदाहरण

(१)

रे मन निशिदिन नाम मुद-धाम जपन उत्कंठ ।
 करत रह्यो पुसकित वषुप निदरि आस-वैकुण्ठ ॥
 कौन काम की मुक्ति से जहँ न रटन सियराम ।
 नाम-राग विन निवरिह्यौ सोउ दिन अति अमिराम ॥
 जगमग पग-पंकज परम प्रेम-प्रवाह निहारि ।
 हँ रहिहै बेरी सुमति सुरति सोहाय विचारि ॥
 ललित लसन लोने युगस पद-पंकज प्रिय अंक ।
 अति अनूप नव रंग से रँगिह्यौ विगत कसक ॥
 अलन हरन-भन नल-अमा राकापति शठ-तूल ।
 मृदुस सचिकन चाहि कव हँ जैहौं भवमूल ॥
 अमल ललित अँगुरीन-छवि मधुर आभरन-संग ।
 कव जोह्यत युग जाइहै निमिप समान सरंग ॥^३

१ इनमें कई रचनाएँ सम्पन्नित भी हो चुकी हैं । पद्यरहित रचनाओं में अधिकांशतः सत्यवक के रचित
 गेस में प्रयोग हैं । कुछ रचनाएँ एकमत गेस (अनोप्य) और कुछ वर्ष विगत गेस (गीत्युत्तर) से
 भी सम्पन्नित हुईं हैं ।

२ 'उत्सवपदेशप्रथ' में मधुर कथन (वही), पृ० २१० ।

(२)

निराकार सब में बसत, भक्तन हिय साकार ।
युगल अनन्य विचार विनु, भटकहि भन्व गवार ॥
निराकार में सुख नहीं, केवल व्यापक रूप ।
सरस रहस साकार मधि, श्री श्रुति शेष निरूप ॥^१

(३)

रटन-रस-रसिया विरले देखे ।
जिनके प्राण-भधार नाम-सुख सार न तजहि निमेखे ॥
विमल धरन हिय हरन हार करि परिहरि विषय विशेषे ।
भगुन सगुन युग रूप एक जिय लखहि अनेख सुवेखे ॥
पगे प्रेम पन प्यार पीन तन भतन होन विन देखे ।
युगल-अनन्य शरन तिनकी सुधि सोहवत चाह परेखे ॥^२

(४)

राम-रस पीवत जौन सुभागी ।
तिनके भाग अदाग सराहत सुर मुनीश अनुरागी ॥
साय साय सय सगन मगन मन भतन तीन सम त्यागी ।
होय रहे मदहोश जोश छकि परा प्रीति मति पागी ॥
युगल-अनन्य-शरन सधि सद शौकी विमल विरागी ।^३

(५)

कोइ वाम रूप भजि शाक्त हुए कोइ अस्मृति शासन प्रसे हुए ।
कोइ निर्गुण ब्रह्म समझते हैं सुपमाना भासन कसे हुए ।
काइ महाविष्यु को जाप किये उर माल छाप भुज लसे हुए ।
जासिम ! हम हाम कहाँ जावें तेरे जुल्फ-जास में फँसे हुए ॥^४

१ 'उपनिषद्-सटीक में मधुर बराहदा' (परी) २१३ ।

२ परी १० २७३-७४ ।

३ परी, १ २७४ ।

४ 'उपनिषद् में शक्ति-सत्यदा' (परी), १० ४१६ ।

(६)

ससन कैसे निबहैगी मोरी-सोरी प्रीति ।
जो भासत हिय थीष प्राणप्रिय तेहि पथ चसत समीत ।
महा मसीन मूल परगट षषु तासन नेह प्रतीत ।
पसमर कह्यो न मानत मम मन रचत रीत विपरीत ।
'युगल-अनन्य दारण' तापित मन कीजिय सपदि सुसीत ॥'

(७)

होरी के रंग जंग में क्या मौज नई है ।
हर चार तरफ वाग बहारों से छई है ॥
खेले उर्मग सग सजन सोहनी लिये ।
हर तान आसमाने तलक होश हुई है ॥
मोहर मरोरदार मधुमास मई है ।
श्री जानकी-जीवन से सगन होरो में खगी है ।
सब तीर 'युगल-अनन्य' असा मौज मई है ॥'

✽

घनारंग दुबे'

आप 'घना मसिक' के नाम से भी प्रसिद्ध थे ।

आपका जन्म स० १८७६ वि० (सन् १८२६ ई) में शाहाबाद जिले के बनवाई^१ नामक ग्राम में हुआ था ।^२ आप गौड़ ब्राह्मण थे । आपका जीवन अत्यन्त

१ 'उममसि में उदिक-सम्मरण' (बही) पृ० ४६६ ।

२. वही ।

३. आपका मूल्य दरिद्र मुक्त रूप से शैवगणेश उल्लस (पूर्वपुत्र शाहाबाद) द्वारा लिखित लेख के आधार पर तैयार किया गया है ।—देविद, 'नरनाथ' (साहित्य, वर्ष १ अंक ७ अक्टूबर, सन् १९५६ ई०), पृ० ७५ ।

४. संगीतज्ञानों का यह प्रसिद्ध ग्रन्थ शैवपुर की प्राचीन राजधानी कुर्णोल से जब अस्त रहित में आया भी लिख है ।

५. 'नरनाथ' (बही) पृ० ७५ । आपने स्वयं ही लिखा है—

'शाहाबाद जिला मन्थे, पुर्वि मन्थे बगवार ।

बनवाई नामा बगट, बनारंग आकार ॥

किन्तु, रिपोर्ट १-२ इह के मतने ११ में बगटवा (सुबकरपुर)-मिर्जापुरी श्रीमदुबेरी से आपका निवास-स्थान शाहाबाद (शाहाबाद) बज्जया है क्योंकि वे भी यह स्वीकार करते हैं कि आपके बगट नाम बनवाई में है । जबसे बगटवा-नगर आया तो आपके बगटवा के पाल आपके द्वारा लिखित ग्रंथों की इत्यतिथि प्रतियाँ सुरक्षित हैं ।—सं

करता था। बाहरी ठाटबाट और ठडक-मडक से बहुत डर था। आपकी पगड़ी एक बार बैचती, तो महीनो चहती थी। शूटा तो कमी पहनते ही न थे। सवारी पर भी चलने की शक्त नहीं थी। कोसों पैदल ही चला करते थे।

वास्तव में आप एक पहुँचे हुए कृष्णमठ थे। अतः आपका मन मगवान् कृष्ण की मक्ति-माया में ही बराबर डूबा रहता था। संगीत के आप एक अपूर्व शाता थे।

आपके साथ सगमग पचास अन्य संगीतज्ञ एवं कवि थे, जिन्हें आपने संगीत की शिक्षा दी थी।^१ प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं कवि प्रकाश मलिक (बक्यू मलिक)^२ आपके ही शिष्य थे।

आपका सम्बन्ध मुख्य रूप से 'हुमरौब' (शाहाबाद) के राज-दरबार से था। यों तो सूफपुरा (शाहाबाद) के राज-दरबार से भी आपका सम्पर्क बराबर रहा। हुमरौब-नरेश महाराजा सर महेस्वरमण्डलसिंह आपका बहुत आदर करते थे। उनके निम्न के परचात् आप सब दरबार से बिदा होना चाहते थे, किन्तु उनके सचराधिकारी महाराजा राधाप्रसाद सिंह के विशेष अनुरोध पर आपने अपनी यह इच्छा कुछ काल के लिए त्याग दी। महाराज का आदेश-पालन करके कुछ ही दिनों के बाद आप अपने गाँव चले आये और इस वर्षों तक वहीं रहे। इसी अवधि में आपका सम्पर्क सूफपुरा रिवाजत के तत्कालीन स्वामी शीवान रामकुमारसिंह^३ से हुआ। उनके स्वर्गवासी हो जाने के पश्चात् स्वभाषत आपका सम्पर्क उनके पुत्र राजा राजराजेश्वरीप्रसादसिंह से हुआ। कहते हैं, वे आपका बड़ा सम्मान करते थे। आपका अन्तिम समय मगधमदन एवं चतुर्ग में बड़े ही आनन्द के साथ व्यतीत हुआ। आप सं० १९४४ वि० (सन् १९८७ ई०) में परलोकगामी हुए। उस समय आपकी आयु अड़सठ वर्ष की थी।

आप निमग्नान्तन थे। आपके निम्न के पश्चात् आपकी धर्मपत्नी श्रीमती राज कुमारी को हुमरौब-दरबार से आजीवन वधि मिलती रही।^४

आप एक कुशल कवि भी थे। कहते हैं कि आप अपनी कविताएँ अविच्छन्न कोचले या कंकड़ से बीवार अथवा बमीन पर ही पहले लिखत और पीछे बँधवा कायज पर सवार छोटे थे। इस कार्य में कभी-कभी आपकी सहायता आपके शिष्य प्रकाश मलिक भी करते थे। स्रुट रचनाओं के अतिरिक्त आपकी एक ही प्रमाकार रचना मिलती है—

१ डबोसही में उपलब्ध नोही (मिथिलान) एमबरीज शिवाजी हुमरौब कवि मूलक मलिक कपरीनर शहा, एमलात कथापान (सले मलिक) और कंकड़नी सहाय प्रमुख थे।

२ राजा हरिकृष्ण शही तुलक में बचरवान इत्यादि।

३ राजा परिचय शही तुलक में बचरवान इत्यादि।

४ आपके वर्तमान बंशपर औरहदेव कुंभे, श्री सूफपुरा के राजासाहब के दरबार में पालक थे, राजकीय संगीत के सर्वज्ञ थे। वे अत्यन्त बड़ी उम-वर्षीयुव में संगीतज्ञातक थे। इनके सुपुत्र मनाकरनी भी बड़े अच्छे पदक हैं।—सं०

'कृष्ण-रामायण'।^१ इस ग्रन्थ की रचना आपने अपने प्रसिद्ध आभयशता महाराजा सर मोहरमरकशसिंह के आदेश पर की थी।

उदाहरण

(१)

कंचन की परी कैंधों कृसुम की छरी कैंधों
मोक्ति की सरी कैंधों थीर भई दामिनी ।
कैंधों करतार सुधा साँचै माँह ढारि काद्यों
कैंधों प्रगटी है भाज शुभसपक्ष यामिनी ।
कैंधों हीरा-खानि कैंधों खन्द्रमा-सख्य कैंधों
संतन के हृदय-पयोनिधि-विश्रामिनी ।
जाके रूपरासि में तिसोलासा भई है तिल
कृष्ण डिग राजे 'घनारंग' की सो स्वामिनी ।^२

(२)

चंचल चलाके सब कसा के हैं भरे दोऊ
साज के पताके खंज मीन के कताके हैं ।
धूँघट उठा के भ्रू घड़ाके ताके जाके और
सो गिरे तडाके घबडा के मुरझा के हैं ।
सब उपमा के क ज मृगा के दवा के साके
ऐसो ना उमा क ना रमा के सारदा के हैं ।
दैं जब ससाके सुरमा के 'घनारंग' सुख
छाके हैं सुधा मीन वाँके राधिका के हैं ।^३

१ इसका प्रथम अंक श्रीरामचन्द्र सखि (प्रथम अंकिक) में बहुत बड़े करवाया था । इसकी रचना कवि ने ४२ वर्ष की अवस्था में की थी । इसकी रचना मोरनामी सुनहरीदास के प्रमुकरण पर दोहा-श्लोकों में हुई है । कवियज्ञ को 'भावत से बहुत कुछ मिलता-जुलता है । मोरा दरिद्रता यह है कि पार्लोमी को जब शिवजी रामायण की कथा सुनाने लगते हैं, तब उनके बीच में कृष्ण-कथा भी आ जाती है । देवताओं की धारणा पर जब कृष्णलक्षण होता है तब एक दिन बरौदा में वाक्य कृष्ण की रामायण की कथा सुनाने लगती है । इसी में वे 'उमरचित-ग्राम्य' की सारी कथा सुना जाती है । कृष्णकी की सुनाने जाने के कारण ही इसका नाम 'कृष्ण-रामायण' रखा गया । अंत में पार्लोमी के पूछने पर (रामजी ने संपूर्ण कृष्ण-कथा भी सुना ली है । इसमें बलकांत से कतर काँच एक लगी कंच तो है ही, अंत में 'जबकिनास' नामक एक कठकरी काँच की ओर विद्य गया है । इस काँच का अन्तिम अंग लंगीत-शाक का मनोहर दर्पण है।—'जबकिनास' (पद्य), पृ ७४ और ७७ ।

२ 'जबकिनास' (वर्ष १० अंक २ दिसम्बर, सन् १९४२ ई) पृ ६२ ।

३ 'पद्य', पृ ६२-६३ ।

(१)

कल्प-मृग मारिवे को वही गग बन्वाकार
 भसी और वरुना घाट बाँध्या अचला-सी है ।
 मूठ मनिकर्णना भहेरी अचल विस्वनाथ
 चुके ना निसाना यह तारक-भत्र छासी है ।
 योन सम सोसारक सुकवि कहे 'धनारग'
 जानत जहान यह महिमा सुप्रकासी है ।
 इहि प्रकार से उदार खेलत सिकार नित्य
 भापै भविनासी सिव भानैद-वन कासी है ।'

(५)

सान्तरस-तलत पै बिचार स्वेत गादी राखि
 बुद्धि मसनन्द प्रेम-चादर विछाये हैं ।
 सुकृत-मनोरथ भा बैठेगे मुसाहिव-चून्व
 संयम और नेम चोवदार ये दिखाये हैं ।
 ग्यान-ध्यान धामर सै सवासी मे पुन्य साप
 छमा-सील पखा मनकिकर हुमाये हैं ।
 चरन विहार भस निभुवन-वादसाह कव
 घौं हमारे हिय-महफिर में भाये हैं ।'

(५)

नचत त्रिमङ्ग ए
 ब्रजचन्द्र र्धसीघट जमुनतट प्रचुर मनसिञ्ज-मान-खंडन,
 करन कुयहस धमक मानों उदित जु ताल पठङ्ग । नचत०—
 नख ज्योति मनि इव धरन अम्बुज सहस्र तूपुर ताल गति रव,
 जघन रम्भा धम्म उमट्यो कटि निरक्षि मृगराज मुङ्गी दङ्ग । नचत०—
 दामिनि छटा सम पीत पट दुति नचत कटि अब नचत गति वर,
 मेखला धुनि करत मानों द्रुत्तुमी निजले बजायो विस्व जीति अनङ्ग । नचत०—
 नवजसद सम सर्वाङ्गसुन्दर सिपज मासा हृदय कपर,
 मध्य रोमावलि जमुन मनु नीसगिरि ते धार इ हृदय सी छिति पर गङ्ग । नचत०—
 सिर मुकुट रत्नावलि अरित धृत कृटिस कच भसि भवसि मानो,
 भौह बाँके इगरसोले अघर विद्रुम मुरसि धारे उठन तान-सरङ्ग ।' नचत०—

१ 'अरवाट' (परी) १ ११ ।

२ वही ।

३ वही, (पर्व १० अंक ५, अक्षर ६, पं. ११२६ (०), १ ७०-७५ ।

नगनारायण सिंह^१

आप सारन जिले के पटेड़ी-ग्राम^२ के निवासी एक प्रतिष्ठित कायस्थ जमीन्दार थे।^३ आपका जन्म सन् १८०३ वि० (सन् १८१६ ई०) की ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थी को हुआ था।

आपके पिता का नाम ब्रह्मलालसिंह और पितामह का कर्तारामसिंह था। आप अपने पिता के ज्येष्ठ पुत्र थे। आपका विवाह सुम्बरपुर के एक कुलीन परिवार में हुआ था, जिससे आपके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं।^४ आपका शरीर गौर वर्ण का, बड़ा हृष्ट पुष्ट और सुन्दर रूप बड़ा आकर्षक था। बन्धवार मिर्चई, वैषी पगड़ी, चूनदार पोती और शास-ब्राह्मण आपकी पौरुषाक थी। गर्मियों में केवल मलामस की पोशाक पहनते थे। पूजापाठ के समय केवल पीठाम्बर धारण करते थे और गो-पद की तरह मोठी शिखा रखते तथा सटाट पर त्रिपुष्ट लगाते थे। प्रातःकाल से बड़े बड़े तक पूजापाठ करके दो बजे दिन तक कचहरी करते और पार बजे नित्य मोजन से निवृत्त होते थे। आप कमी भ्रमणा नहीं खाते थे, सदा सधर-पचहछर व्यक्तियों के साथ मोजन करने बैठते थे। मोजनोपरान्त 'नबरबाग' में टहलते और सही समय दरबार भी होता। फिर, रात में सो सभा में साहित्य-सर्चा काफ़ी बेर तक होती रहती और रात का मोजन भी दो बजे तक समाप्त हो पाता था। आपकी बाँह पर यंत्र के रूप में एक नीलक रँगा रहता था, जिसपर सिंह-बाहिनी मगजती तुर्गों की छाप थी। उसकी भी पूजा आप नित्य किया करते थे। आप परम भद्राष्ट्र शासक थे और जगदम्बा की उपासना-आराधना बड़ी मत्कि से करते थे।

आप बड़े शाहकर्म्य थे। त्योहारों के दिन विशेष उत्सव करते और आसनों तथा बँदितों को पर्वोत्त खान देते थे। कंगाली को भी कपड़े और अन्न बाँटते थे। आपको एम्बान देने का भी श्रम्यार था। विवाहादि में मुकहस्त हो खज करते रहे, पर कावस्थ-महासभा में जब विसक-बहेन की प्रथा छटा देने का निर्णय किया, तब आप भी उसके अनुकार काम करने लगे। समाज-सुधार की भावना भी आपमें भरपूर थी। अठिपि सरकार, एभिषी और कलाकन्तो का सम्मान, दीन-सुखियों की सेवा-सहायता आदि आपके विशेष गुण थे। आप सनातन-धर्म के भद्राष्ट्र अनुयायी और बड़े शीसकान् रहें थे।

१. आपका प्रारम्भिक परिचय डॉ. रामचन्द्र चन्द्र-सिंह जी के आधार पर किया गया है।

—वेदिक, पंजा (साहित्य, प्रकाशक, वाराणसी, सन् १९३३ ई.) पृ. ३०३—०४।

२. वह एक बहुत दिनों से जमीन-माली कर्मियों की बली होने के कारण जिले और प्रान्त में खबर की शक्ति है। करते हैं अपने कुल की जमीन-माली में चार ही बौद्धों गति थे और बाकि अन्य सम्पन्न राज कान की थी।

३. पंजा (परी) पृ. ३०३।

४. आपने एक बँदर श्रीमुरारी नारायणसिंह जी की थीं।

आपको बाग-बागीचे का बड़ा शौक था। आपका काम में तरह-तरह के फूल फल थे। काम में जाने पर आप सभी फलों का लागी में बाँट देते थे। पाशुपत पशु-पक्षियों के पालन पोषण में आपकी बड़ी ममता थी। हाथियों को प्रतिदिन अपने सामान खाना खिलाते थे। तीतर, बंदर, बुलबुल, सुई, कबूतर, बघल आदि आपके चिड़ियाखाने में सदा शोभा पाते थे। कमी-कमी आप इनमें से लड़ाकू चिड़ियों को लड़ाइयाँ देख मनोरंजन किया करते थे। हाथियारी के भी आप बड़े शौकीन थे, और सासकर आपको तलवार की बड़ी अच्छी परख थी। आपके निजी पुस्तकालय में विशेषतः इस्तिलाखित ग्रंथों का समग्र था। उन ग्रंथों को प्रतिस्तिपिर्वा तैयार कराने के लिए आपने कितने ही मुलेखकों को नियुक्त कर रखा था। आपके समग्र में अमक अमम एवं सुखम ग्रन्थ थे।

अपनी बड़ी जमीन्दारी के प्रकल्प में आप ऐसे कुशल थे कि कुछ ही दिनों में आपने अपनी रियासत को उत्तम बर्या में पहुँचा लिया। आप बड़े प्रजासत्तल और उदारराशु व्यक्ति थे। अपने अवागिर्बी को सन्तान-रूप्य मानते थे। गरीबों से बाकी लगान वसूल करने में आप काफी झूट दिया करते थे।^१ बकाया लगान वसूलन के लिए रियासतों पर कमी नालिय नहीं करते थे। किसी प्रजा से न कमी आप दण्ड लेते और न दण्ड रही-थो मोंगते। तलामी में मिले हुए रुपये को भी आप समान में कटवा देते थे। बिना उचित मूल्य दिये कमी किसी अगामी की भेंट नहीं स्वीकार करते थे। अपने नौकरों से कमी नाराज होत, तो यही दण्ड देते कि उनसे काम नहीं लभे, पर कमी किसी को कार्यमुक्त नहीं करते थे। आपका मुँह से कमी किसी के प्रति कोई अपशब्द नहीं सुना गया।

आपने काम्यशास्त्र के अतिरिक्त आयुर्वेद, ज्योतिष और संगीत शास्त्री का भी गहन अध्ययन किया था। बैद्यक के अनुसार उच्चमोचम दवाई बनवाकर आप गरीबों को निशुल्क वितरित किया करते थे। ज्योतिष-सम्बन्धी शास्त्रार्थ में आप पंक्तिों से भी सोहा लभ थे और उनकी निरिबल को हुई लगन-बसा में मीन मेप निकालना आपके बापें हाथ का खेल था।

आरम्भ में आपने अरबी-फारसी की शिक्षा पाई थी। उसके बाद आपने संस्कृत और हिन्दी को भी स्वाध्याय के बल से अभिवृत्त कर लिया। आप हिन्दी, संस्कृत, फारसी और उर्दू में अच्छी कविता करते थे। आपने हिन्दी में देवी-देवता-सम्बन्धी बेङ्ग-बा इबारतों एवं गीतों की रचना की थी। उनमें आपके राग रागिणियों के विशुष

१ एक बार एक अदरालय किताब से मुकरनेवाली में आप लखनऊ-दार्डकोर्ड ल बीत गये। पर, जब वह आपकी शरण में आकर निहविणता, तो आपने बर्सेस हजार की जियाई भ्राक कर दी। इसपर अगले पारथी सुपरन्धी मुकरनेवाली बक लखनऊ भेज दी जो आपके बरगरी में आरुप-दवाली काम से अतिरुत रही। तबना ही बरी किस दिन वह आकिक कर गया, आपने उन में जोबन नहीं किया। —सं०

२ कमी संस्कृत-रचनाओं के निर दक्षिण—सं०१११ (त्रैकामिक बरें १ अंक १) द्वायेन सन् १९२२ ई) १० ४८ तथा बरी (अंक २) सुपर्य, सन् १९२२ ई) १ ३८।

ज्ञान का भी परिचय मिश्रता है। संस्कृत में रचित 'श्रीदुर्गावार-संग्रह'^१ के अतिरिक्त आपने अजमाया में 'श्रीदुर्गाप्रेमवर्गिणी'^२ नामक पुस्तक रची थी। इस 'वर्गिणी' में एक और भी छोटी हिन्दी-रचना सम्मिलित है—'दुर्गानामार्थ दोहावली'। इसके अतिरिक्त आपकी कुछ विविध विषयक स्पृष्ट हिन्दी-रचनाएँ तथा आपके समकालीन और दरबारी कविता की भी दो चार रचनाएँ मिलती हैं, जो आपकी ही प्रशंसा में लिखी गई हैं।

सन् १८८० ई० में, अयोध्या में, इकहत्तर वर्ष की आयु में आप छत्रहथी रोग के शिकार हो गये और सती वर्ष आपका स्वर्गवास हो गया।^३

उदाहरण

(१)

जय देवि दुर्गे अमितरूपिनि भ्रलख-गति भद्रभुक्तस्वरूपिनि
 अक्षय-महा माया अनूपिनि ब्रह्मरूपिनि हे ।
 अक्षर-धर-जग-जीव-योपिनि अपर सुर-मुनि-भक्त-तोपिनि
 कल्प-कल्प-सिन्धु-शोपिनि दनुज रोपिनि हे ।
 विधि-हरि-पुरारि-हृदय-रंजिनि कृमति-मोह-गस्तीम-नांजिनि
 पाश-यम-भवमाप्ति-भंजिनि नयन-रञ्जिनि हे ।
 दनुज-सुर-सुख-राशि-मंदिनि अस्ति प्रचंडिनि हे ।
 अति मयंकर रूपधारिनि अगड-मुगड-अचयड-वारिनि
 सुरन के सन्तापहारिनि अभयकारिनि हे ।
 दुसह-दुख-अघ-धौध-नासिनि सकलसुखगुणज्ञानरासिनि
 भक्तजन 'नग'-हृदयवासिनि विन्ध्यवासिनि हे ॥^४

१. आपने शिव दुर्गा राम कृष्ण आदि के अनेक स्तोत्र संस्कृत में ही रचे हैं।—देखिए 'साहित्य' (पृ०) ६ ४४ तथा ३४ ।

२. विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के इस्तिक़बत-संघ अमुसंवाज-विभाग में मुद्रित ।

३. अस्मिन् समय में आपने अयोध्या पहुँचने ही बर होहा क्या था—शेरि अस्त असी बसे मनुष्य अल्प बचत एक विभिन्न तरह बसे, तुझे न तुझनीयात । बरते हैं, बरों जाने के दुसरे ही दिन आपका शरीरपात हो गया।—सं

४. विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के इस्तिक़बत-संघ अमुसंवाज-विभाग में मुद्रित इस्तिक़बत 'दुर्गाप्रेमवर्गिणी' (पृथक् ४(१) स ।

(२)

सखि री देखु भ्रमरज वात ।
 भ्रंग भ्रंग विचित्र साभा जगजननि के गात ॥
 राहु सखि निसिपति डरत निसिपति निरखि जलजात ।
 त्यागि सरवर वास लीन्हो मृदुल युवती-गात ॥
 घनुप लखि सुक भति हि डरपत सुक निरखि तत्काम ।
 दाडिमो फल विहँसि भन्तर दसन खोल्यो लाल ॥
 मृगहि सखि फल विभ्र डरपत मृग निरखि मृगराज ।
 सिंह लखि गजराज डरपत यह भ्रमम्मा काज ॥
 वीर करत न नाहु रिपु सन करत एक सँग वास ।
 कहत 'नग' जगदम्ब-महिमा सत्रु से नहि प्रास ॥'

(३)

सोभा कैसे कारे धुंधरारे लखि हारे कवि
 जैसे विषु पूरन निसंक राहु घेरे हैं ।
 कैसे विषु पूरन निसंक राहु घेरे कहि
 जैसे ससि पास स्याम मेघ चहुँ फेरे हैं ।
 कैसे ससि पास स्याम मेघ चहुँ फेरे कहि
 जैसे चन्द्र चूसत मिलि छौना भहि कारे हैं ।
 कैसे चन्द्र चूसत मिलि छौना भहि कारे कहि
 जैसे मुख ऊपर कैसे कारे धुंधरारे हैं ॥'

(४)

सुन्दर सुरग सुचि सारी जरतारी भारी
 मोतिन किनारी धारी भासर जरकारी है ।
 जाके सखे ते वरनारी पनिहारी भई
 पद्मगीकुमारी दसा देह की विसारी है ।
 वारी है कुमारी धारी सारी सुकुमारी सखी
 भति ही भहारी सन सुधि ना सम्हारी है ।
 विनती हमारी सुनु सैल की कुमारी वारी
 सखि के तव सारी सब हारी देवनारी है ।'

१ विहाय-राजपुत्र-परिवह के दल-भिक्षु-पंक-भद्र-संग-न-विनाम से सुरजित 'दुर्गा-विक्रम-विशी' (पद्य ४२) से ।

(५) गीतावली, (६) मिथिला आयुर्वेद शब्दकोश और (७) आयुर्वेद-संग्रह। इन छात्र प्रबंधों में प्रथम (देवीगीत शतक) को आपके देहान्त के बहुत दिन परन्तु भीमरेश मल, न्यायध्याकरनाचार्य ने प्रकाशित कराया था।

उदाहरण

हम अति विचल विषय रस मातल भगवति तोर भरोशे ।
 अशरण शरण हरण-दुख-दारिद्र्य तुम पद-पङ्कज-कोशे ॥
 विवि-हरि शिव शनवादिक सुरमुनि पावि मनोरथ दाने ।
 तुम गुण यश धरणत कर अनुद्धन वेद पुरान बखाने ॥
 जे तुम साधक पुरल तनिक मन अषसर आएल मोरा ।
 अरु अभिसास सतत वरदाइनि करिय विनय किछु तोरा ॥
 'आदिनाथ' पर कृपायुक्त मैं निशिदिन कर कल्याने ।
 सुत सम्पति सुख मुद मङ्गल दै चारि पदारथ दाने ॥'



भाना भद्र

आपकी रचनाओं में आपका नाम 'भानुनाथ' मिलता है।

आप हरमया मिले के पिलासवाइ नामक ग्राम के निवासी थे।^१ आपका जन्म सं० १८८० वि (सन् १८२३ ई०) में हुआ था।^२ आपके पिता का नाम था महामहोपाध्याय पं० शीनकधु का।^३ प्रसिद्ध नैयायिक एवं कवि महामहोपाध्याय पं० बसुवन का^४ आपके ही अनुज थे।^५

आप सखवसाकुल के प्रसिद्ध महाराज महेश्वर सिंह (सन् १८५० ई०) के दरबार में राज-क्योतिपी थे। कहते हैं, उक्त महाराज के यहाँ आपके अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उक्त दरबार से आपका सम्बन्ध महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (सन् १८८०-८८ ई०) के काल तक बना रहा।

१ A History of Malhili Literature (J Mishra Vol 1 1949) P 432.

२ 'मैथिली-टीठ-रत्नामली (५ बहीनाथ भद्र, प्रथम सं सं २ ६ वि) पृ ८६।

३ 'मिथिल-विमोह (बही एतीव-भाग द्वितीय सं सं १६५ वि) पृ १ ६०।

४ वे 'जन्म का वा 'मेकल भद्र' के नाम से प्रसिद्ध थे। इन्होंने अपनी विद्वत्ता के पुरस्कार-स्वरूप नेपाल के लक्ष्मीश्वर राजा से सन् १८५४ ई में नेपाल में ही एक ग्राम प्राप्त हुआ था।—A History of Malhili Literature (बही) P 348

५ कविराजपचार्य बं बहीनाथ का ये बंधु का कलेज आपके पिता के वृत्त में किया है।

६ 'पुस्तक-संस्कार एवम-अकली-रत्नाकर-ग्रंथ' (उत्पादक-संस्कार सन् १९४२ ई०), पृ २ ।

आपने अनेक प्रयोगों की रचना की थी, जिनमें 'प्रभावतीहरण' नाटक प्रसिद्ध है। आपके इस नाटक की रचना मिथिला के कोचनिषा नाटकों की परम्परा में होती है; क्योंकि इसके योंत मैपिली में लिखे गये हैं। मैपिली में रचित आपके कुछ स्कुट पर भी मिलते हैं, जो बड़े ही मार्मिक हैं।

उदाहरण

(१)

खल्लल क्षयन-गृह मतमथ रे नागरि कर सागी ।
जसद विजुलि अनि वियकुल रे निज-निज तनु भागी ।
सुमन सुवासल परिहन रे कुसुमित घर धारे ।
भावित गोत समित पद रे तेहि गमन गँभीरे ।
सिन्दुर रेहू चिकुर-विष रे अनुस्प अकारे ।
उदगत भेल यमुन विष र अनि भारति धारे ।
धवल बसन शिर शोभित रे युत प्यामस माले ।
नागरि पगु नूपुर-रव रे अनि पूरधि वाले ।
हृदयिक प्रेम वेकत करु रे कर-मल्लव जाँतो ।
नागरि विट्टेसि-विट्टेसि रहू रे अभिनव क्य काँती ।
'मानुनाथ' कहू मन गुनि रे बसि नूपक समाजे ।
पावपु ससत एहन सुल रे मिथिलापति राजे ॥'

(२)

आज देखल पथ कामिनि रे दामिनि सम स्पे ।
इन्दुवदनि मृगलोचनि रे गति परम अनूपे ॥
कुन्तल सचिर विराजित रे मुखमयबस पाए ।
अमिष सोम दासि चौदिश रे फणि रहू सपटाए ॥
अधर दसन छवि कि कह्य रे अनुपम तसु काँतो ।
नथदल निकट बइसाभोस रे दाबिम विज पाँतो ॥
कनक-सता भुज उपमित रे कुच युग निरमाई ।
मदन अगत जिति राखल रे हुन्दुमि उनटाई ॥

अथन उपर रोमावलि रे छवि वृष्ण संगोपे ।
गुपुत नीधि जनि विसरय रे लत मनमथ रोपे ॥
'भानुनाथ' मन मन दय रे कत क्यल वखाने ।
कवि गुन वृष्ण्य नृपति भावे रे अपनहि अनुमाने ॥'

(१)

जदुपति वृष्णिभ विचारी । अभिनव विरह वेष्माकुल नारी ॥
नखिन सयन नहि भावे । तनि पथ हेरइत दिवस गमावे ॥
केभ्रमो चानन कर लेपे । केभ्रमो कहए जनि रहल सँछेपे ॥
कोन परि करति निवाहे । सितकर किरन सतत कर दाहे ॥
तप जनि करए सकामे । निसदिन जपइत रह तसु नामे ॥
'भानुनाथ' कवि भाने । रस वृष्ण महेश्वर सिद्ध सुजाने ॥'

(५)

माधव ! कि कहव तनिक विशेषे ।
जनिक बदन देखइत चतुरानन चानहुँ देखि परिवेषे ॥
चिफुर निकर बेणीकृत सम्बित एहन देखल अभिरामे ।
सोहित विन्दु सुरुज समुद्रित जनि तिमिर पाछु परिणामे ॥
दशन बसन नासा रद सोचनु निरखि लाग अनरीती ।
बन्धुव वील कुन्द सरसोइह एकहि समय परतीसी ॥
सरस मृणाल वास चक्रवा युग शैवल गिरिवल झूले ।
सतत अभिभ सन वचन-सुसञ्चित ते नहि हो उनमूले ॥
केहरि समाज राज-गज कर-युग तसु तनु पल्लव भासे ।
कामिनि-पुश्य-प्रसाप-दाप तहँ न करए तुरित गरासे ॥
'भानुनाथ' मनहुँस-गमनि छवि रस-विन्दक नहि भाने ।
खण्डवलाकुल-कमल-दिवानर महेश्वर सिद्ध सुजाने ॥'

१ प्रथमदीर्घप (वही एतिस अंक), पृ २३ ।

२ Journal of the Asiatic Society of Bengal [Vol LIII Part I, Special No 1884] P 86

३ प्रथमदीर्घप (वही) पृ सं० ८० पृ ५१ ।

चिरजीवी मिश्र

आप सिरिबाबों (गया) निवासी शाकरीपीय ब्राह्मण थे।^१ आपका जन्म सं० १८८३ वि० (सन् १८२६ ई०) में और मृत्यु सं० १९६८ वि० (सन् १९११ ई०) में, पचासी वर्ष की आयु में, हुई थी। आप सस्कृत हिन्दी और आयुर्वेद के विद्वान् होने के अतिरिक्त एक सफल चिकित्सक तथा गृहस्त्री कवि भी थे। आपकी रचनाएँ प्रायः 'साहित्यसरोवर', 'साहित्यचन्द्रिका' आदि उत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ करती थीं। अपनी रचनाओं की सरसता और प्रमत्तचित्तता के कारण आपने युग के साहित्य-जगत में आप बड़े प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध थे। आपने आयुर्वेद-सम्बन्धी कई निष्कर्ष तो लिखे ही थे, विविध विषयों की छोटी-मोटी पुस्तकें भी लिखी थीं; पर वे दुष्प्राप्य हैं।

आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।

✽

वच्छू दुबे

आप 'प्रकाश मसिक' के नाम से प्रसिद्ध थे। आपकी रचनाओं में आपका नाम 'प्रकाश' ही मिलता है।

आप शाहाबाद जिल्ले के धनगौर नामक ग्राम के निवासी गौड़ ब्राह्मण^१ थे। आपका जन्म सं० १८८४ वि० (सन् १८२७ ई०) में हुआ था।^२ आपके पिता का नाम

१. 'पद्मा के लेखक और कवि' (श्रीधरदासदास पुत्र प्रथम सं सन् १९३५ ई) पृ ६०।
२. आपका विस्तृत जीवत-चरित्र अपने जीवत-काल में ही से अज्ञानत मिलने लगा था।—देखिए, 'देवनागर' (साहित्य, सन् २-२६ अक्टूबर, सं० १८६४ वि ५५२२) पृ ३१७-४१। अपने कथनक वही चरित्र पद्मा में किन्तु परिवर्तन के साथ प्रकाशित हुआ।—देखिए, 'पद्मा' (साहित्य, अक्टू २ तरंग ६ अक्टू, सन् १९१२ ई) पृ ७७०-७१। एकर श्रीधरदासदास पुत्र (पद्मा) तथा श्रीधरदास पुत्र (शाहाबाद) द्वारा लिखित आपके चरित्र में अन्तर है।—देखिए, 'गृहस्थ' (साप्ताहिक मास १६ अक्टू २, १४ अक्टू १ सन् १९११ ई) पृ १४ तथा 'नरैनाथ' (साहित्य, वर्ष १ अक्टू २२ अक्टू, सन् १९११ ई०), पृ ५१।
३. 'देवनागर' (वही) पृ ३१५। आपने स्वयं अपनी कविता की उत्पत्ति लिखी है जिसमें वराहच तथा साप्ताहिक जैनिक मूर्तों के इतिहासों का अन्तर्भाव कर आपने जन्मे की प्रशंसा लिख किया है। इन दोनों में साप्ताहिक की ही कविता दुबे मिश्र पाठक, वराहच विजयजी अर्द्ध वरुणिका काव्य के साथ जगाई जाती है, किन्तु सर्वसाधारण में वे लोग 'मसिक' नाम से ही प्रसिद्ध है। वे स्वयं अपने को 'गौड़ पाठक' (अर्थात् आपने देश में रहनेवाले गौड़ ब्राह्मण) कहते हैं। इनकी कविता वे लोग प्रकाश से पूर्व और देवनागर-अंग्रेज से अक्षय में बहुत है।—देखिए, वही।
४. या शिवकामल लहाण (श्रीधरदासदास, शाहाबाद) ने भी आपका जन्मकाल वही बताया है। किन्तु श्रीधरदास पुत्र (मूर्तपुत्र शाहाबाद) आपका जन्म-काल सन् १८६४ ई अर्थात् सं १८६१ वि बताया है।—देखिए, 'पद्मा' की साप्ताहिक कविता (विहार-हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रथम सं सन् १९३६ ई) पृ ६१ तथा 'नरैनाथ' (वही), पृ ५१।

पदारथ हुये और पितानह का जगन हुआ था।^१ प्रसिद्ध कवि 'बनारस' (पना मलिक)^२ आपक पितृम्य थे। आप स्वयं निःसंतान हुए। आपक अतुल्य पूतत्वं हुआ^३ था, जिससे आपका बंध बना।

बाल्यकाल से ही आपकी प्रवृत्ति संगीत शिक्षा की ओर थी। आरम्भ में आपन पमा मलिक, कासी मलिक, ठाकुर मलिक और श्रीकृष्ण मलिक स इत विषय की शिक्षा प्राप्त की। आगे चलकर काशी निवासी प्रसिद्ध गायक अक्षीवन्द्य जी क भी आप शिक्ष्य हुए। परिचान-स्वरूप आपकी प्रसिद्धि संगीत शास्त्र क एक प्रख्यात पंडित क रूप में हुई। एक प्रकार से आप अपन युग क तानसेन ही थे। एक ही गीत में अनकानक राग-रागिनियों को प्रदर्शित कर देना आपक कार्ये हाथ का खेल था। आभार-स-आभार गीतों को भी आप इस प्रकार गाया करते थे कि बड़े-बड़े संगीतज्ञ आश्चर्य-चकित रह जाते थे। उस समय की भारत प्रसिद्ध बनारसी गायिकाएँ 'तौकी' और 'मैना' भी आपके गान सुनकर दाँतों टेंगली दबाकर रह जाती थीं। आपक संगीत से प्रसन्न होकर आपक आभयदाताओं ने आपको भूमि, वाटिका, मकान आदि देकर चिरंतन काल तक के लिए सुखी कर दिया।^४

एक बार मारुतेन्दु हरिश्चन्द्रजी के समक्ष भी आपन अपनी संगीत विद्या की सिद्धि प्रकट की थी, जिसपर सुन्न हाकर उन्होंने आपको 'संगीताचार्य' की उपाधि से विभूषित कर आपको पुरस्कृत^५ किया।

आपक मंत्रमुक्त श्यामलखानी थ। आप एक सच्चरित्र, सहृदय, सरल और निरमिमान व्यक्ति थे। स्वाध्याय से आपन हिन्दी क अतिरिक्त संस्कृत और उर्दू में भी अच्छी गति प्राप्त कर ली थी।

१. ये लोग भी गान-नियम में स्वयं प्रवीण थे। इसी कारण एकदलीय योग्युर-जरीश ने उन्हें अपनी उपाधी (इमरान) में चुनाकर एक सिपा था। —सं

२. इनका दीक्षण इसी युगक में बनावतान प्रपन्न।

३. ये शिष्य, इतरास शूर्य अर्थात् बनाने में बड़े ही निपुण थे। इनका स्वर्गनास बहुत ही अस्वाभाव्यता में ही था। —सं०

४. एक बार महाराज श्यामलखान सिंह (सन् १८८१ ई.) के दरबार में आपने सेवा विधेयी पुस्तक बनी जाहूँ के आनक पर को दो बरतों में बिज-मिज राधो में इस प्रकार गहर सुनाया कि महाराज ने हुन्न होकर आपको बरतें भूमि दे ली। —सं०

—'अभ्युदय-कल्प' (श्री कल्पवट मित्र, प्रथम सं० सं० १९१४ वि.) पृ ११।

५. मारुतेन्दु हरिश्चन्द्रजी ने आपको बड़े ही निराले रूप से पुरस्कृत किया था। उन्होंने एक लिखाके में पुरस्कार के लक्ष्मी मोट कर करके आपको देते हुए कहा—'यौनिकी इस लिखाके में बहुत महत्त्व है बने आप बाद कर लीजिएगा। अगर राग-नाम में कुछ पणती हो तो क्या आकर पत्रा दीजिएगा। अपने देरे पर आकर धन का रूप आपने लिखाका खोला, एवं पीठ के बरते मोट पाकर लग्न रह गये। आपने समझा कि ये मोट मूल से आपको दे दिने गये है। इस मूल के मार्जन के निरु बाद दूसरे दिन पुन. उनके समुक्त बरतेंकट होकर आपने इन मोटों को वापस करवा कहा एवं मारुतेन्दु हरिश्चन्द्रजी ने हँसकर हठर दिया—'मैंने इच्छित कर मोट लपटे दिनाकर आपको दिया कि वह आपके पुत्र के दीप्य बनी है। अपने सामने रहना कल्प अर्थलौकिक देने में मुझे बचना पार।

आरम्भ में आप हुमरौब-राज्य के महाराज जयप्रकाश सिंह, महाराज जानकी प्रसाद सिंह और महाराज मोहरवरबख्श सिंह (सन् १८७३-८१ ई०) के दरबार में, आपने पितामह तथा पिता के साथ, आया-जाया करते थे। आगे भक्तकर, महाराज राधाप्रसाद सिंह (सन् १८८१-८४ ई०) ने तो आपको अपने दरबार में स्वामी रूप से रख ही लिया। एक महाराज के परलोक-गमन के पश्चात् आप कुछ दिनों तक महारानी बेनीप्रसाद कुमारी और महाराजकुमार भीनिवासप्रसाद सिंह के दरबार में भी रहे। आपको अनेक राज-दरबारी सन्निभ भ्रमों, किन्तु हुमरौब-दरबार छोड़कर आप कहीं नहीं गये।^१ आपके जीवन-काल में ही आपके अनुभूत फूलसन्ध मस्तिष्क का देहान्त हो गया, जिससे आपके हृदय पर बहुत बोट पहुँची। किसी किसी प्रकार आपने उनके दो पुत्रों को देखकर भ्रम नश्वर किया। किन्तु जब कुछ ही दिनों के बाद उनमें से भी एक जगदीश्वर प्रसाद का देहान्त सन् १९३३ वि० में हो गया तब आप संसार से विशिष्ट निरल होकर ईश्वर मन्दि में लाग गये।^२

हुमरौब-नरेश महाराज राधाप्रसाद सिंह के आदेश पर ही आप हिन्दी-काव्य-रचना की ओर प्रवृत्त हुए थे। उनकी का आदेश प्राप्त कर आपने काशी जाकर श्रीकाशी-नरेश के आभित सुविख्यात 'सरदार कवि' से काव्य-रचना की शिक्षा प्राप्त की और कुछ ही काल तक अभ्यास करने पर आप सुन्दर रचना करने लगे। संगीत के सम्मिश्रण से आपकी कविता में और भी निहार आ गया। हिन्दी में आपकी लिखी संगीत-काव्य विषयक चार पुस्तकें हैं—(१) सुर-प्रकाश, (२) रस-प्रकाश, (३) संगीत-प्रकाश और (४) मैत्रव्य प्रकाश।^३ आप सन् १९३३ वि० (सन् १९०९ ई०) में बनारसी बर्ष की आयु में, परलोकवासी हुए।^४

१. वे जगदीश्वर (राधाप्रसाद) के इतिहास-ग्रन्थ और बाबू कुंवरसिंह के एक लेखिका से। हुमरौब की महारानी बेनी कुमारी (महाराज राधाप्रसाद सिंह की विधवा) ने इनको पौर सिद्ध था। राजी के बचक पुत्र होने पर बालक में उन्हें प्रोफेसर बख्शबख्श सिंह ने राजी में इनके साथ रहकर पढ़ना था। इनके साथ हुमरौब-राज्य के बाबू जगतप्रसाद सिंह ने राजासिंह के लिए सुकामा लखा था। उनकी विधवा होने पर उन्हें लखनऊ में कई साल बस्ने मिलीं थे।—सं
२. श्रीमन्मोहण सुन्दर का कल्प है कि आपका सम्पूर्ण पुत्र-दरबार से भी था। इनके कव्यसुन्दर श्रीमन्मोहणसुन्दर राजा राधाप्रसादसिंह सिंह 'आरौ' आरौ बहुत मानते थे। 'आरौ' कवि का भी बरेलू नाम 'कचभूषी' था, इसी कारण पर वे अथवा भी गीत कहा करते थे।—देखिए, 'नरेश' (बरी) पृ. ५१।
३. वे श्री बाले-बाले में बड़े ही कुशल थे। इनके अनुभूत का नाम कल्पे मालक था।—सं
४. बनारस में आपके बनारस वा देवदेव (एक शिक्षक और एक विष्णु-मंदिर) का नाम भी वर्तमान है।—सं
५. इनमें केवल अंतिम (मैत्रव्यप्रकाश) ही मन्मथसिंहिये मेल (लखनऊ) से सन् १९३२ वि० में प्रकाशित हुई थी। यह पुस्तकें अबच्छातिन है जिसकी इच्छासिद्धि प्रतिष्ठा करिषु ने इच्छासिद्धि मन्मथसुन्दर-विभाग में सुदक्षित है।—सं
६. श्रीमन्मोहण सुन्दर का कल्प विषय-काल सन् १९३२ ई० कर्ण्य सं १९३३ वि० मानते हैं।—देखिए, 'नरेश' (बरी), पृ. ५१।

उदाहरण

(१)

रजनी बरसे बरसे जा कही बर सजा रघों तव लीं सजनी ।
सज नीक पुसाफ करों तन को तनको मत देर भवौ करनी ॥
करनी घरि भंक करों पिय को पिय को भधरामृत होव घना ।
बधनी नहि जोग सर्व भधला भध सावहु पी पग लू रजना ॥^१

(२)

पूरव सुकृत-फल मनुज-सरीर होत द्विपद कहाय वृषा फिरस जहान में ।
व्याहिषाम चौपद वनत पसु मुद्रि भ्रष्ट शोडत मन-ज-र-रुधिर न गहान में ॥
सुख सहि पटपद और वन-वन छोले लेह सुख भूल परो रस के दहान में ।
भ्रष्टपद मकरी लीं फँस्यो परिवार-जाल भजत न राम सठ कहत महान में ॥^२

(३)

ह्रँ कर प्रचंड जग जाय खंड-खंड कीन्हो,
वनुज नसाय सब सुरन बधाये तू ।
बड़े-बड़े पापी श्री सुरापी सर्व दोषी कहे,
दुख हरि क्षीने कासिनम में पठाये तू ।
तन-हीन बन-हीन जन-हीन मन-हीन,
जेते दीन-हीन गनि सके न भयाये तू ।
दीन कोतवासी शिव जग पासिवे के हेतु,
मेरी धोर हेरि लघरुज ते सजाये तू ।^३

१. 'बैरव्यास' (वही) पृ. १४० तथा 'पूरव' (वही) पृ. १४१। इस बालकालक कव की सुकृत की कल्पे भक्त भक्तवत्सल्य बरारण्य शपाकालर सिंह से मयूष पुराणर माध मिक था। —१०

२. 'बैरव्यास' (वही) पृ. १४०।

३. 'बैरव्यास' (वही, वर्ष १, अंक १२, मार्च १९१० ई.), पृ. ४४।

(५)

गिरिजापति को नर भजे तो तरि जा सब पाय ।
 मिरजा इनके टहल में टरिजा सकल वसाय ॥
 टरिजा सकल बसाय लाय हृदये महुँ जे हर ।
 करें सदा प्रतिपाल पिता जिमि पुत्र छोड़कर ॥
 इत उठ फिरि क्यों मरे अभागे जिम घट धिरिजा ।
 सिरजा इन सब जगत साहि चरनन पर गिरिजा ।'

(५)

जोई सीतानाथ साईं राधानाथ मानत,
 जोई धनुषारे सोई मुरली संवारे हैं ।
 जोई रघुपति सोई जदुपति प्राणप्यारे,
 जोई काकपल सोई मोर-पक्षवार है ।
 अक्षय बिहारी जोई सोई वृष के बिहारी,
 जोई सोभा देख सोई उन-मन वारे हैं ।
 जोई राम साईं कृष्ण रूप नाम है 'प्रकाश',
 एकई प्रभाव सब जग रक्षवारे हैं ॥^१



अयोध्याप्रसाद मिश्र

आप मया नगर के 'नई गीराम सुहाले के निवासी थे ।' आपके पिता का नाम था पं० गोपीनाथ मिश्र । आपके एक पुत्र आनन्दीप्रसाद मिश्र^२ भी साहित्यिक हुए ।

आपका जन्म सन् १८३० ई० (सं० १८८० वि०) में हुआ था । सन् १८५२ ई० में, अस्सी वर्ष की आयु में, आप परलोक विहारे ।

आपको पटना स्थित संस्कृत-पाठशाळा में संस्कृत हिन्दी की शिक्षा प्राप्त हुई थी । तेरह वर्ष की उम्र में पितृ विधोम हो जाने पर आर्थिक संकट के कारण विद्यापी-जीवन समाप्त कर आपको पटना-स्थित टेकारी-राम-मंदिर में पुजारी का काम करना पड़ा ।

१ 'नईगाछ' (वही), पृ ४२ ।

२ वही, पृ ४३ ।

३ 'गद्य के लेखक और कवि' (वही) पृ २ ।

४ 'सत्य धीरज' अपने लेख में प्रकटित होता ।

उसी समय आपन संस्कृत-साहित्य और आयुर्वेद के अध्ययन का काम चालू रखा। स्वाध्याय के द्वारा अर्जित पाण्डित्य के प्रभाव से टिकारी (गया)-नरेश महाराज श्रीकृष्ण सिंह के साथ हुआ-यात्र बन गये। फलतः, पुसारी का काम छोड़ने के बाद आपन जीवन के अंतिम काल तक आप उक्त महाराज के दरबार में राजप्रेष रहे।

प्रसिद्ध भाषातत्त्व-वेत्ता डॉ० प्रियसन^१ आपके समय में गया के जिलाधीश थे। वे भी आपकी साहित्यिक सुश्रुति के बड़े प्रशंसक रहे।

आपकी रचनाएँ हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत में भी मिलती हैं। कहते हैं, धर्मशास्त्र में आपकी अष्टांगी गति थी और उक्त विषय पर तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में आपके जो विचार प्रकट होते थे वे, प्रमाण-रूप में गृहीत होते थे। आपकी हिन्दी-कविताओं का प्रमुख पुत्र था माधुर्य^२। श्री, विनयकाव्य के भी आप सफल रचयिता माने गये हैं।

आपकी रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं—(१) सुभा विष्णु (सुन्दर-परिचय), (२) स्वप्न विचार, (३) आरोग्य शिक्षा, (४) संध्या-भोजन, (५) मति-मक्षण-मीमांसा (६) जीव-जीवन सिद्धान्त, (७) द्रव्य-गुण-वर्णन (आयुर्वेदीय कीष) तथा (८) भीमदमगणद-गोतार्य-त्रिभिरका (संस्कृत और हिन्दी में गद्यपद्यानुसार)।^३

उदाहरण

(१)

जो पृथ्व कर्मेन्द्रियों को विषय की ओर जाने नहीं देता है उनको रोके रहता है परन्तु इन्द्रियों के भोग के वस्तु का ध्यान करता रहता है सो मूख निर्वियेकी और पापन्धी कहलाता है।^४

१. इनका परिचय पहले अध्याय में प्रकाशित होगा।

२. अंतिम की ओरकर उन्ही रचनाएँ पुस्तकाकार में प्रकाशित हैं, पर दुर्लभ। अंतिम रचना की आपके पुत्र वि आनन्दीप्रसाद विन ने प्रकाशित करवाया था। उक्त रचना की 'प्रस्तावना' में उन्होंने लिखा है— 'शुक्ल ब्रह्मण्य बरय पूषबीज मेरे पिता श्रीकृष्ण संवित् ज्योत्स्नाप्रसाद विन महाराज की वे उक्त ग्रन्थ के प्रकट करने में पूर्ण परिश्रम किया था। खेद है कि ग्रन्थ प्रकाश होने के पूर्व ही आप विन स्वर्गवास पश्यत आशाकेतविराही श्रीमन्महाशय श्रीउमकान्तजी के वरय कर्मत रेशु में जीव हो गये। शरीरगत होने के एक सप्ताह पूर्व अपने एक पत्र लिखकर श्रीमन्महाशयजी में उक्त विधा था कि उन्हीं वह लिखा था कि 'शुक्ल ब्रह्मण्य में विलम्ब हुआ और अब वह ज्ञाता नहीं कि 'श्रीमन्महाशयजीवित्तिका' की मित्रों के प्रकृतन में उचरल से मैं अर्पण करूँ'।"

—द्वैत, श्रीमन्महाशयजीवित्तिका (५ ज्योत्स्नाप्रसाद विन, प्रथम छ, ए १२४६ वि)

—प्रस्तावना।

३. कर्मोन्निवर्धक संवत्स व आत्मे प्रकटा रमरम् ।

इन्द्रियार्थविभूतत्वा मिध्याकार. ए उचरते ॥

—द्वैत श्रीमन्महाशयजीवित्तिका (५ ज्योत्स्ना १ लोक ६) ए १४ ।

(१)

जिसका योग भ्रष्ट हो गया है सो जीव उस लोक में जाता है जहाँ
अश्वमेधादि यज्ञ करके पुरुषात्मा जन सुख का भोग्य करते हैं (अर्थात् स्वर्ग में)
और बहुत वर्ष वहाँ निवास करके फिर इस लोक में पवित्र और धनी
पुरुष के गृह में जन्म लेते हैं ।^१

(२)

हे राजन् एक मेरे ही में मन लगाकर सदा सब काल में जो पुरुष
मुझको स्मरण करता रहता है और बराबर मेरी भक्ति ही में बना
रहता है ऐसे योगी को बिना परिश्रम ही में मिल जाता हूँ ।^२

(५)

जिस प्राणी से साँगों को क्लेश नहीं पहुँचे तथा जिसको लोगों से दुःख न
होय और जो हर्ष, ईर्ष्या, मम और उद्वेग से छूट गया हो सो मेरा प्रिय है ।^३

(३)

काम (अप्राप्त का चाहना) क्रोध और लोभ ये तीनों मरक के दरवाजे हैं
जीव को धिगाडनेवाले हैं इसलिए इन तीनों को त्याग देना उचित है ।^४



अलिराज*

आप शाहानाह बिले क इमरान नामक खान के निवासी मूमिहार ब्राह्मण थे ।
आपका जन्म सन १८३० ई में हुआ था ।^१

- १ ग्रन्थ पुरुषार्थसौख्यमुक्तिरा टाटवर्णः सप्तः ।
दुर्गोवा नीवता येने कौशलेयोरिवावते न
—द्विष्य, कौशलेयोरिवावते (११) अथवा १ श्लोक ११), १० ११५ ।
- २ अकल्पयेत् सततं यो यो रमति त्रिषुतः ।
सप्तार्धं सुखतः यत् तिलमुत्तरव कौशलेयः ॥
—वही (अथवा ५, श्लोक १५), १० १५५ ।
- ३ अकल्पयेत् सततं यो यो रमति त्रिषुतः ॥
सप्तार्धं सुखतः यत् तिलमुत्तरव कौशलेयः ॥
—वही (अथवा १२ श्लोक १२), १ २२५ ।
- ४ त्रिषुते अकल्पयेत् इतः अकल्पयेत् ॥
काम औषधत्वा लोभमदामरिजयत् त्रिषुतः ॥
—वही (अथवा ११ श्लोक ११), १० १११ ।
- ५ अकल्पयेत् सततं यो यो रमति त्रिषुतः ॥
—द्विष्य, 'पुरुषार्थ' (वही, भाग १२, पृष्ठ ४२, उपार १० रिक्तपद,
सन् १९११ ई०), १० ११ ।
- ६ वही । कलौ कल्प-रत्नम् के विषय में आपने सप्त में पंक्तिमें लिखा है—
महत् तरोता कय विद्वान्, वीर्यपुट परिवार इत्यादि ।
एकदमर कल्प के वासी कैलसत इमरान निवासी ॥

आपका जन्म हो घन् १८३० ई० में खैर-रामनगरी की दरमंगा बिले क पिंहाइस ग्राम में हुआ था^१, किन्तु आगे चलकर जब बुढ़ों में आपको बड़ा कष्ट दिया, तब आप उस ग्राम को छोड़ 'ठाढ़ी' (दरमंगा) में जा बसे।^२

आपके पिता का नाम था पं० मीला सा, जो एक प्रकाण्ड पंडित एवं सरल जीवन व्यतीत करनेवाले धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। आपको प्रारम्भिक शिक्षा अपने नानिहाल 'बड़घाम' (सहरसा) में मिली थी। कुछ ही दिनों में आपने ग्याब ब्याकरण, इयन और ग्राहिस्य में एक साथ दक्षता प्राप्त कर ली। इसी समय आप काशी चले गये। जिस समय आप काशी से मिथिला वापस आये उस समय तक आपकी कीर्तितता फेल चुकी थी। उसी समय (अप्रैल, घन् १८६० ई० के लगभग) नरहन विवाह (दरमंगा) के बाबू साहन ने आपको अपने यहाँ आमंत्रित किया। आप उस आमंत्रण को स्वीकार कर यहाँ चर्चये गये ही नहीं, पंद्रह बपों तक रहे थी। पीछे जब घन् १८७८ ई० में महाराज लक्ष्मी शर तिह दरमंगा के आसीसर हुए, उस उनके आमंत्रण पर आप उनकी सचकावा में दरमंगा चले आये। यहाँ महाराज न आपकी अपने सप्रहास्य के साहित्य विभाग का अध्यक्ष बना दिया। अपने जीवन के अंतकाल तक आप लक्षी पद की शोभा बढ़ाते रहे। महाराज लक्ष्मीशर सिंह के प्यारान् महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह बहादुर गरी पर बैठे। इनके हृदय में भी आपके प्रति अपार भक्त थी।

आप एक बड़े शिष-मक एवं आत्महानी ठो से ही, मौलिक चिन्तक, इतिहास के समक अनुसंधानक, समाज-सुधारक तथा गम्भीर दार्शनिक भी थे। आपका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक था। शील और पैर्य आपके व्यक्तित्व के प्रभाव शून्य थे।^३ जिस दिन

१ 'बामनी उपाधि-सिक्का' (बैनालिक, वर्ष ५४ अंक ४ पृ २०६ मि), पृ २६० तथा 'अध्यात्म' (दैनिक, खैर हावा १० ताके १८८१, उरुलाल सुबराट, ६ अप्रैल, घन् १९११ ई) पृ ४।
 २ कहेते हैं, आपने अपने प्राम-संविधान के सम्बन्ध में कई पत्रों की रचना की थी। कर्मों से निम्नलिखित पर बहुत प्रसिद्ध हैं—

शिव शिव मोहि लीवर क अत
 भल पैल कल पैल राखक बल कुटि गेल और मज दुरकन घस।
 मात्र धन लोकक बैलन घस सपनहीं सुभर न कल कपनात।
 मन न रसत और कलहीं क्हास टिन शिव रसत बलन परि स्वात।
 सुखहि में बिलय वातर मात्र क्खर सुकल परि कलहीं हरास।

—दैनिक, 'अध्यात्म-सचरिणी' (वरी) ३० १९११।

३ कहेते हैं, दरमंगा-सामकीन संस्रत-महाविद्यालय की वसत के अपने आवास में आपने एक सुन्दर वादिका लगा रकी थी। उस वादिका में बस और बहनों-कुल भी था। जब कभी विद्यालय के छात्रों और कर्मचारियों को बैने के पत्तों की आवश्यकता होती थी, तब वे वस कुल में बसत सुपदै-से पत्रे क्खर लिवा करते थे। जब उस वस की लूकना आपकी मिली तब जब बने हुयी हुए। फिर भी आपने विद्यालय के अधिकाधिकों के वसत रसत की विद्यालय वसतिव यहाँ की कि कर्तव्य उन्हें तस क्खर कुल ही। काले बैनन करती के वसत में वर वेवापनी लिखकर दीव ली—

“बाबू के लखन क्खार वस।
 तमिका वर में ईत क्खरत अ” — 'अध्यात्म' (वरी) १० ०।

आपके एकमात्र पुत्र का देहान्त हो गया था उस दिन मो आप शान्तमात्र से एक सत अतिथि का उत्कार कर रहे थे ।

आप संस्कृत, मैथिली, ब्रजभाषा, अवधी और खड़ीबोली—इन सभी भाषाओं के विद्वान् थे । मैथिली तो आपकी मातृभाषा थी ही, अतः उसके विकास में आप सतत पलरगीत रह । विद्यापति साहित्य के प्रसिद्ध अनुसंधायक भीमगेन्द्रनाथ घुम एवं डॉ० प्रियवन के पयप्रशस्तक आप ही थे । आपने मिथिला के क्रमबद्ध इतिहास की भी खोज की । इन विषय के आपके अनुसंधान मन्विष्य के अनुसंधायकों के लिए आधारशिला बन ।

आपने मिथिला के गाँवों के नामों की व्युत्पत्ति ऐतिहासिक आधार पर दूँदन के मो प्रथम किये थे, जिससे अनेक नवीन तथ्य सामने आये । मिथिला के गाँवों में घूम घूमकर आपने अनेक पौधियों एवं वास्तुओं का भी संकलन किया था । कहते हैं, वर्तमान दरभंगा राज्य-पुस्तकालय में तुलाम ग्रन्थ-संग्रह के पीछे भी आपका ही अध्यवसाय था ।

आपने जीवन के अंतिम दिनों (मन् १६०६ ई०) में आप पक्षाघात के शिकार हो गये । अंतिम परिदृषी में आपकी इच्छा के अनुसार आप काशी ले जाये गये जहाँ आप ७७ वर्ष की आयु में सुरलोक सिधारे ।

अतिथि स्मृति रचनाओं की छोड़कर आपकी सारी रचनाएँ मैथिली में ही मिलती हैं । आपके द्वारा रचित ग्रन्थों में प्रमुख ये हैं—

(१) मैथिली-भाषा-रामायण', (२) विद्यापति-कृत 'पुरुष-परीक्षा' का मैथिली गद्य-पद्यानुवाद', (३) अन्नपचावली', (४) महेशबली गीतिमुखा' (५) अहस्याचरित नाटक, (६) वासाह्वान काव्य तथा (७) भीमस्मीश्वर विज्ञात ।"

आपके इन सारे प्रकाशित ग्रंथों के अतिरिक्त आपकी बहुत सी ऐसी रचनाएँ भी हैं, जिनके प्रकाशन की व्यवस्था अब हो रही है । उनमें प्रमुख हैं—(१) रस-कौमुदी और (२) मूलग्राम । साथ ही, आपके असंख्य गीत एवं अनेक गणपनात्मक निबन्ध भी (जो 'सिध्या बही' और 'धोष' के रूप में हैं) अभी प्रकाश नहीं पा सके हैं ।"

- १ इसकी रचना आपने १८०० ई० के अन्तिम तुलस १४ शुक्र की महाशय भीमस्मीश्वर सिंह की आज्ञा से की थी । इसका प्रकाशन बरली वार फरवरी सन् १२६६ में मूनिबन संभालय (अध्या) से हुआ था ।
- २ इसका प्रकाशन बरली वार फरवरी सन् १२६६ में राजदरभंगा-संभालय से हुआ था । —सं०
- ३ इसका प्रकाशन सं १६०० ई० में श्री रामेश्वर-संभालय (दरभंगा) से हुआ था । —सं०
- ४ इसका प्रकाशन बरली वार अमरनाथ म्या ने किया था । श्रीमन्मार्दन म्या का कहना है कि 'हर-नीर पशावली' नामक आपकी एक पुस्तक का० संशोधन म्या के संशोधन में बंदिबन प्रेस (अध्या) से प्रकाशित हुई थी ।—देखिए सुरा' (बरी, वर्ष ६, खंड २, सं ५, मूल सन् १९६३ ई०) पृ ४६० ।
- ५ श्रीमन्मार्दन सिंह 'अनुब ने आपके एक और ग्रंथ 'भीम-सम्राज्य' की खोज की है । इनका कहना है कि आपने विद्यापति की एक पदावली का भी संकलन और सम्पादन किया था ।
—देखिए 'अध्या' (बरी प्रकाश १, सं० ५, मूल, सन् १९६३ ई०) पृ ४ २-४६ ।
- ६ श्रीमन्मार्दन तुलस के अनुसार आपने मिथिला-पुराणालय निकल कर भी कुछ किया था जो संभवतः 'मिथिला-उत्सव-वर्षा' के रूप में प्रकाशित हुआ है । मैथिली में 'मिथिला-उत्सव-वर्षा' नामक एक पुस्तक लोको (दरभंगा) ग्राम मिथिली पं परमेश्वर म्या के नाम पर मिलती है । —सं०
—देखिए, 'कापुरी' (बरी, वर्ष ६, खंड २, संख्या ५, मूल सन् १९६२ ई०) पृ ६६२ ।

उदाहरण

(१)

जय जय निर्गुण सगुण महाशय जय जय विश्व निवास ।
 जय जय दक्षयशक्षयकारक सुरनायक निष्वास ॥
 जय जय करुणा कव शिव शङ्कर निजजनपालनदक्ष ।
 गिरितनयामुल्लसदसिजदिनकर पुरहर कृतसुरपक्ष ॥
 जय जय देव निरीह निरञ्जन हृतमनसिजगुरुगर्भ्य ।
 जय जय सकसाशापरिपूरक जय सर्वेश्वरशब्द ॥
 चन्द्रसलाह बितर मयि निजपद भक्ति स्मरहर नाथ ।
 परिपालय श्यामुतमिधिलंश श्रुतितकृतगुणगाथ ॥'

(२)

परिहर मानिनि असमय मान ।
 मनकर वचन सुनिम जनु कान ॥
 प्रबल नवसधन गगन सधन अछि ।
 पातक शिखिगण करइछ गान ॥
 मारिगमपधिति इ घर धुनि सुनि सुनि ॥
 मुनिहुँक हठमठ हटइछ गान ॥
 नवकदम्ब नवकेतक वन सो ।
 परिमस बहुल धनिस सय भान ॥
 मतिका सपटि-सपटि नव मधुकर ।
 मधुर मधुर मधु करइछ पान ॥
 प्रिय सन्नि प्रियतम नम फिकर सम ।
 छपि भनुकस बहुत भगवान ॥
 श्यालक्ष्मीस्वर सिंह नृपतिवर ।
 करपालित मन चन्द्र महान ॥'

शिवदी-साहित्य-विहार (कत्र कवि और कव्य विहार) १०१ पृ. १ ।

प्रयोग-श्री, (श्रीलक्ष्मी-विहार, प्रथम सं, सं० ११०५ दि), १२-सं १२२ पृ० ९ प ।

(१)

दखसनि एक अनि जुगल-कुमार, हरपहि रहल न देह संभार ।
 गल छस छपि से सखि सँग फूटि, तनिक भेल अनु मन धन लूटि ॥
 कहू की देखल कहू को भेल, पृथलहु क्षण नहिँ उतार देल ।
 किछु न उपद्रव किछु नहिँ ध्याधि, सहजहि लागल मदन समाधि ॥
 सम उपचार करधि भरि पोष, चेतए कहल भ्रान नहिँ दोष ।
 विद्रयमान एत युगलकुमार, देखल तनि शोभा-विस्तार ॥
 रहितहुँ देवि सरस्वति शेष, कहि सकितहुँ सौन्दर्य विशेष ।
 विश्व मनोहर वयस किशोर, अति सुन्दर वर श्यामल गोर ॥
 औँ गिरिनन्दिनि होधि सहाय, देधि जनकगृह योग्य जमाय ।
 देखल न एहन सुनस नहिँ कान, नहिँ परतक्ष विषम परमाण ॥'

(५)

सीता भरपस रामक हाथ, रमा जलधि जकेँ जनक सनाथ ।
 सक्षमणकाँ निज कन्या देल, नाम उमिला हृषित भेल ॥
 विख्याता श्रुतिकीर्ति कुमारि, देल भरत काँ जनक विचारि ।
 माण्डवि प्रस्थित वयस जमाय, श्रीशत्रुघ्न समय शुभ पाय ॥
 चारु कुमार दारसम्पन्न, लोकपाल सन लोकप्रसन्न ।
 जनक कहल हरपित तहिँ ठाम, सीता लाभ जेना एहिँ धाम ॥
 सुनु वसिष्ठ मुनि विश्वामित्र, कहइतछी कन्याक चरित्र ।
 भूमि-विशुद्धि यज्ञ करवाक, नृपतिहुँ काँ भेल हर घरवाक ॥
 देखल तत हम जोलइत भूमि, यहराइसि कन्या काँ घूमि ।
 चारि वरस वयसक परमान, कन्या एहन देखल नहिँ भ्रान ॥
 के इ थिकधि कोना के जान, हुत भेल ज्ञान हिनक जेल ध्यान ।
 भ्रानस घर में पुत्रा भाव, उपमा हिनक भ्रान के पाव ॥'

(५)

छस यमुनातीर में योगिनीपुर नाम नगर । तसय अत्लावहीन
 यवनराज छलाह । ओ एक समय फोनहु कारण महामहिमसाहि
 सेनाधिपक उपर अस्यन्त कोप करइत भेलाह । महिमसाहि तनि स्वामी

१. 'शैक्ली एम्बु' (५ कन्या का ११७ साल) १ १० ।

२. वही, १ २१ ।

का क्रोधानुर जानस । प्राणहरण प्रकारण कगसाहे ई मन मानि की-करख्यि
चिन्ता करइस भेल, विचारस, क्रोधानुर राजा क विश्वास नहीं ।^१

(३)

छलि गङ्गातीर म कपिला नाम नगरी । ततय हेमाङ्गद नामक
राजा छलाह । न स्वर्ग प्राप्त सन्ता मयिलोक तनि राजा क पृथ
रत्नाङ्गद नाम कुमार काँ राजा कयल । से पुन राज्य पावि पितृघन
सी गर्वित ओ मोवनमद सी अन्याय प्रवृत्ता होइत भेसाह ।^२

•

भगवतगरण

आपका उपनाम 'भगवती' था । आपकी प्रतिमा इसी नाम से थी ।

आप सारन किले के मौफ्ती याने के अन्तर्गत शीतलपुर नामक ग्राम के प्रसिद्ध
पाण्डेव (कायस्थ, -वंश में ११८७ वि० (सन् १८६३ ई०) में आपका जन्म हुआ था ।^१
आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अरबी और फारसी में हुई । हिन्दी आपने स्वाभ्यास से
सीखी । बचपन से ही आपमें ईश्वर-भक्ति के लक्षण बोक पड़ते थे और कदाचित् इसी
कारण बड़े होल पर विवाह करना नहीं चाहते थे । किन्तु अपने पिता की आह्वान मानकर
आपको एक ही नहीं, दो-दो विवाह करके पड़े । सब आपकी दुसरी पत्नी का बेहान्त
हो गया, तब आपने घर से बिरह होकर संन्यास ले लेना आह्वान । किन्तु, अपने अनुज
भाबू रामसिंहासन साह के आत्मनिक अनुरोध के कारण आप बैठा नहीं कर सके ।
आपको पुनः सांसारिक प्रयत्न क संन्यस में मोहन की दृष्टि से आपके अयुक्त से आपकी
सीसरी शारी करा थी । सब से आप करावर घर पर ही रहकर भजन मात्र में अपना
जीवन व्यतीत करन लगे । बीच में तीन-चार वर्षों तक बीजिका की तसारा में आपने
पंजाब क प्रमुख स्थानों का भ्रमण भी किया । किन्तु, कोई बीजिका-साधन न मिलने पर
आप आरा फले आये, वहाँ कुछ दिनों तक आपन वैठवारी की अमीनी की । अन्त म
ईश्वर भजन में बाधा पड़त देखकर वह मौकरी भी छोड़ दी । आपक वो पुत्र हुए, जो
अब जीवित नहीं है ।

१ 'अन्तर क कथा का' (वही सूचिका) १ २ ।

२. वही ।

३ 'पंजा' (वही अन्त ३ तरंग ३ सूत्र, सन् १९३३ ई) १० ७७७ । एवं वाबू रामसिंहर तसारा सिद्ध
'कथकिकर (शीतलपुर, सारन) के अन्त लयीव थे । उनोंने तसारा के अन्त पा क में प्रकाशित
अपनकी वही 'अन्तमयान संभार' एकेक अपने लेख में आपके अन्तकाल पर इस प्रकार प्रकाश काल है—
" भगवती मेरे लयीव की हीने थे । इच्छित काले मिलने-मुलने का सुने सब-सब अन्तक
विषया था । आप बड़े अन्त और वैदिक वैश्वर थे । मैं सब कभी आपने पास थाता, तब बाक
आपकी आसन पर टपकावा वही प्रकाश करते हुए थाता था । आपके वीने ललाट में भीरा अन्त
पुत्र तसारा कमावा करण था । आप कर के काने और कुछ लुलकाव थे । आपके शरीर का रंग
गुलाबा था । आपकी धरि वही और बाक कभी तसारा लुलकी थी । आपकी शीतल मुलाहति से
समस्त कथको वहाती थी । बाकी मयुर तथा रसमय मितुल और कोमल था । आपका अन्तक सन्त
अन्त-अन्त में वीकता था । आप सन्त और सुकवि वीने थे, क-सु वीक-वीक में आप तावितक-
सेवा करते थे तिर भी कुछ समय विपन्न त्रिवा करते थे । —देखिए, वही ।

आप रामानन्धी सम्प्रदाय के वैष्णव थे। आपके आराध्य देव थे मगवान् भीरामस्वर। श्रीहनुमान्जी में भी आपकी बड़ी भक्ति थी।^१ आपके गुरु थे छपरा निवासी श्रीमुगलानन्द स्वामीजी, जिनमें आपकी अपार भक्ति थी। उन्हीं के साथ आपने चारों भाम की यात्रा पैदल ही की थी। आप एक भक्तानन्धी उदारस्थ थे थे ही, दान-युग्म करने में भी आपकी अपेक्षा प्रवृत्ति थी। कहते हैं, आपके दरवाजे से कोई यात्रक हताश नहीं लौटता था। संगीत में भी आप प्रेमी थे। संगीत विद्या के अभ्यासी न होने पर भी संगीतज्ञों का बड़ा आदर-सत्कार किया करते थे।

आप एक सन्त-कवि थे। आपकी तीन पुस्तकों का पता पता है—(१) अष्टात्म ज्ञान मंत्रो, ^२ (२) युगल-नृ गार मरण^३ तथा (३) संसार विटप-नारायणी। इनमें प्रथम दो पुस्तकें प्रकाशित भी हो चुकी हैं।

आप सं० १६६० वि० (सन् १६०३ ई०) के वैशाख में, ७३ वर्ष की आयु में, परलोक गामी हुए।

उदाहरण

(१)

बन्दों यानी युद्धिवर वैदेही वर नाम।
 वरवस वस जाके रहत, ब्रह्म निरंजन राम ॥
 वारन-वदन कृपा-सदन, कदन-विषादि-कलेस।
 विधन हरन संसय-दरन, बन्दों चरन गनेस ॥
 युधिवर स्रुतिधर वरनवर, वरनायक वर दैन।
 बन्दों द्विजवर भद्रवर, वरनाच्छर वर दैन ॥^४

१ छपरापुर गाँव के बाहर आपका बसवाया श्रीहनुमान्जी का मन्दिर आज भी विराजमान है। मन्दिर के एक ताल पर यह श्लोक सुरा है—

‘अर्धसप्त शो विंशत्यं शुभ संवत् अनुष्मन्। इत मन्दिर भवतः शरयः परनाथि हनुमान्॥’

इस मन्दिर के निकट श्रीराम, कालकी श्रीर कर्मण्य का एक मन्दिर पहले से बना हुआ था। ये दोनों मन्दिर भी एक सुन्दर वातावरण के निम्न अंग वर्तमान हैं।—सं

२. इस पुस्तक को एक प्राचीन शक्ति, जो सन् १७७२ ई में लीची में जूरी की एक बालू शमोहर सहाय ‘अधिकार को मिली थी। इसी प्रति का अध्ययन कर उन्होंने अपना एक लेख ‘गंगा’ में लिखा था। इस पुस्तक का सम्पादन कनिष्कजी ने भी किया था जो प्रकाशित नहीं हो सकी। इस पुस्तक का विषय उमावत को क्या है जो अनोखा से प्रारम्भ व होकर लक्ष से प्रारम्भ होती है। इस विषय के सम्बन्ध में विस्तृत विवेचन के लिए देखिए, ‘गंगा (वही) पृ ७७२-७७३।

३. इस पुस्तक को श्रीरीश्वर ज्ञान नामक एक सचिव ने प्रकाशित करवाया था। इसे भी लेखने का लीमाय ‘अधिकारजी को प्राप्त हुआ था। उनका कमानासारा इस पुस्तक में ‘सुखेहो जगत्’ और वारों अक्षरों का बसव बड़ी सुन्दर कविता में किया गया है। —देखिए, वही, पृ० ७७७।

४. वही, पृ० ७७१।

(९)

सुनि आशा हुंकार राम विधिनायक निशिचर ।
 इरपा तेल बटोरि योरि सठसाई बससर ॥
 साहस लूम विराग निशाचर रचि रचि बांधे ।
 चहुँ दिशि नगर फिराड बहुरि विरहानस सांधे ॥
 सायो मनस गढ़ लक वपुष भावरन समेता ।
 सहित ईपना भट्टा ऋरोसा मन्दिर जता ॥
 पंच कोस सट कोस जठित कंचन मनि कचि ।
 जरे सकस पी एक प्रीव भातम-गृह बांधि ॥'

✽

राधावल्लभ जोशी

आपका जपनाम 'विद्यकस्तम' था। आपकी रचनाओं में आपका वही नाम मिलता है, कहीं-कहीं 'कस्तमनिर्म' और 'कस्तम' नाम भी मिलते हैं। अपने निवास-स्थान पर आप 'काकाजी' के नाम से प्रसिद्ध थे।

आप हुमरौन (शाहाबाद) निवासी गौड़ ब्राह्मण थे। आपका जन्म सं० १८८८ वि० (सन् १८३१ ई०) में ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्विंशती (शुक्रवार) को हुआ था।^१ आपके पितामह का नाम पुष्करराम जोशी और पिता का नाम काशीराम जोशी था।^२ काशीरामजी महाराज महेश्वरप्रसाद सिंह (सन् १८४३-८१ ई०) के निजी शिष्यालय के पुजारी थे। आप अपने पिता के कनिष्ठ पुत्र थे। आपके अग्रज अजकिशोर जी 'महाबाग' के शिष्यालय

१ 'वर्षा' (वरी), पृ ७७४-७७५।

२. आपका विलुप्त जीवन-वर्णन आपके जीवन काल में ही कलकत्ता से प्रकाशित 'देवनाथर' (मासिक, पुष्पा, ५० व. कस्तम सं १११४ वि, कस्तम १ भाग ७ में, सं० अक्षयवत् मित्र में लिखा था।—देखिए, वरी, पृ० २१०-२१२। श्रीधरनामदार गुप्त ने भी आपका अतिरिक्त जीवन-वृत्त में प्रकाशित कलकत्ता का 'देखिए, 'गृहस्थ' (वरी भाग १६, भाग २१ पुष्पाट, १० सन् सन् १११२ ई.) पृ ११४-११५।

३ 'देवनाथर' (वरी), पृ २१२।

४ आपके पूर्व-पुत्र अच्युत से यह श्रेष्ठ अर्थात् काल नामक ग्रन्थ के निपटारी व। वही कारण से 'अच्युत

के पुत्रारी के रूप में निरुक्त है ।^१ आप की दो बहनों की पौ—सुरीलादेवी^२ और छलिता देवी ।^३ आपके एकमात्र पुत्र मयुराप्रसादजी^४ ज्योतिष के प्रकांड विद्वान् थे ।

आपने अपने बाल्यकाल से ही वेदों का अध्ययन आरम्भ किया । वेदों के अध्ययन के पश्चात् आप व्याकरण, कोश, काव्य, छन्द, अलंकार आदि का अध्ययन करते रहे । आपका आरम्भिक अध्ययन आपके पिता काशीराम के निर्देशन में हुआ । आगे चलकर व्याकरणादि के अध्ययन में प० धंशीधरजी आपके सहायक हुए । आपको हिन्दी में कविता करने की परिपाटी मगध के प्रसिद्ध कवि गोकुण्डदेवजी^५ न सिखलाई । उन्हीं से आपने नागराज-कृत 'प्राकृत विंगल' का अध्ययन किया ।

आप संस्कृत, प्राकृत और ब्रजभाषा के मुख्य विद्वान् थे । आपका प्राकृत ज्ञान तो इतना विशाल था कि अनेक छात्र दूर-दूर से आपसे पढ़ने आया करते थे । आपके छात्रों

इन्हें बालादेवे । आपसे प्रविणामर प० विजयराजजी ने जो एक ज्योतिषी के रूप में विख्यात थे । बबनुर के प्रसिद्ध शाका बबसाह ने इन्हें प्रचुर कृति देकर अपना पुरोहित निरुक्त किया था । प० विजयराजजी ने तीन पुत्र हुए —प० सुकदेवराज, प० पुष्करराज, और प० विष्णुदेवराजजी । कहते हैं पुष्करराज जी की आपसे पितृमृत्यु ने अपने पुत्र काशीराजजी को लेकर अपनी बन्धभूमि से जयसीराज-नाम (पुठौ) की जगह के लिए पैरल ही निकल पड़े । जब वे जयज्वालाजी के दर्शन कर इमरानि होते हुए लौटे जा रहे थे तब जेठपुराणीय महाशय महेश्वरराजसिंह (सन् १८४१-८९ ई) से उनकी भेंट हो गई । पुष्करराजजी राजाह्वय के अन्तर्गत लखे । एकदाय सेकर वने प्रेम से ज्योत्सव मयुर भजन करते थे । महाशय उनके शरी पर सुख हो गये और उन्हें भूमि, मदन, वादिबा मंथिर आदि अनेक प्रकार के वीदिबा-साधन देकर अपनी राजधानी (इमरानि) में रक्ष किया । आपने अपना ज्योत्सव शरीरक इस प्रकार लिखा है—

महाशयजी के सुगोत्र विने आदि गौड वेर कजु शाका मन्व्यमिदिनि शुचि खादिने ।
बहुराजनीय मन्व राजत प्रवर तीन, सत है सुख देन देत ही सुयजिने ।
शुभ कुचरेवी पर्वराशिनी विविध वैभ आरिषत की दूषिय में पूजम प्रमनिये ।
रखतन वनबहु परवी है बीवली की परिषव हमारी आप बाही विषि बादिने ॥

—देवीय, 'अष्टमशरीर-कन्' (परी) १० ४४ ७३, तथा ७४, और 'देवनागर' (परी), पृ० १११-१२ ।

१. इनके दो पुत्र हुए—राजकिशोर मट्ट और कृष्णकिशोर मट्ट । इनमें प्रथम की कवि भी थे, विवरहित होकर कुछ ही दिनों के पश्चात् स्वर्गलासी हो गये । द्वितीय का देहांत बचके बाद ही हो गया ।—सं०
२. वे प० स्वामनाजबख्शी से ब्याही गई थी जो सुरीराजपद की राजी स्वयंमयी के दरबार में ज्योतिषी थे ।—सं०
३. राजा विहार कशी के मारठे-शु बाबू हरिहरका के सुहर प० महाकाशजी ने, जो गरी खंर के विश्वरत कवि थे । द्वितीय पुत्र ब्रजमसाह ज्योत्सव के साथ हुआ था ।—सं०
४. एशोने ज्योतिष के अनेक ग्रंथ लिखे थे किन्तु प्रकाशपत्रान प्रसिद्ध है । कहते हैं अपने एक ग्रंथ में उन्होंने जो श्लो के महलों का काल तथा पुस्तोपम माछों का लाल-संगत् तो बच पड़े ही लिख किया है । वे दो 'जयपद मित्र विवरका' के विषय प० राजेश्वर मित्रजी के ज्योतिष मित्र थे ।—सं०
५. राजा परिषव शती बुलक में बबाल्पान इच्छय ।

में प्रमुख थे—पं० अम्बिकादत्त झा^१, अमानकवि^२, ठगमित्र^३, रामकिशोर मह^४, प्रो० अक्षयचट मिश्र^५ आदि ।

आप सचमुच एक महापुरुष थे । महापुरुषों में जो भी गुण अनिर्धार्य होते हैं, वे सभी आपमें वर्तमान थे । आपका चित्त सरा बेबारावन, वैशमतिक, समाज-सुधार, वीन रक्षा तथा परोपकार में लगा रहता था । छदार भी आप एक ही थे । शम्बागढ-बस्सकठा तो आपमें पूषकपथ वर्तमान थी । विचार-स्वातंत्र्य आपका एक प्रमुख गुण था । इस जग में आप बड़े निर्भीक थे । जिन महाराजाओं के आश्रित और प्रतिपादित थे, उनसे भी उचित कहने में आप उनिके भी संकोच का अनुभव नहीं करते थे । आपसे जीवन-भर आप हुमरौब-दरबार में ही रहे । केवल एक बार जब आपसे पूर्वपुस्तके की सम्मूहि (बनरु-बनपुर) की यात्रा के विस्तारितों में निकले, तब सबह दिनों के लिए बनोष्वा-नरेश महाराज प्रतापनारायण सिंह के आग्रह पर उनके वहाँ ठहरें थे । उन्होंने भी आपका आशाहीन सत्कार किया था ।

आप हुमरौब-नरेश महाराज सर राधाप्रसाद सिंह (सन् १८८१-१५ ई०) के आश्रित थे । पहले आरक्षी निपुक्ति विहारीजी राधाकृष्ण-मंदिर के पूर्व-भाग स्थित शिवालय के पुजारी के रूप में हुई थी । बादगे चलकर आप दरबारी कवि और पंडित के रूप में भी निपुक्त हुए । आरक्षी कविता बहुत ही सरस एवं सुन्दर होती थी । इसी कारण महाराज में आपकी पुरस्कृत भी किया था ।^६ समस्त्यापूर्ति करने में भी आप बड़े सिद्धहस्त थे । कहते हैं,

१ इनके जिन १० पुस्तकें की के लिये मरेरे मरि होने के कारण मर एनके विरुध होते थे ।

२. स्वका करिकर इस पुस्तक के समने अंत (११वीं शरी अंतर्गत) में सम्भव है ।

३. इसका करिकर इसी पुस्तक में बनरुकाव इत्यम् ।

४. वे आपके समय अम्बिकादत्तजी के क्लेश पुत्र और कवि भी थे, पर तुलनात्मा में ही इसका वैशम्य हो गया ।—सं

५. रणवि जपनी "अम्बिकादत्त" में रण ही लिखा है—“धीर लीनों की देखतेकी हिन्दी-अम्ब लीखने की येरी अधिभाषा हुई । सर महापुरुष के दरबारी कवि १० राजपञ्चम बीवती (मित्रसत्य कवि) से मुनयेव विन (संस्कृत-मंत्र) बनविपीर, मनापुष्प, वानरक-रिध वीरुपियका ली । अम्ब-नकप की प्रकिया की रणवि विखरि ।” —“अम्बिकादत्त कम्” (वही) १ ४४ । “मुने भी मना विन का जो पुत्र काव है, पर सर रणों के करक-कमली की रविन हूनि की महामहिमा का कम है ।” —“वेदमन्त्र” (वही), १०२३२ ।

६. एक बार आपने एक कविता पर पुरस्कार प्राप्त किया था, जिसकी शीर्षकें इस प्रकार हैं—

अपन के अपन भी शीरुपरी के निपन,
सुखया के मकर परोर मन मीन के ।
वेर के निवाम भी निवाम पल्लेवन के,
गुन के बनीर भी सुनीन विरु लीन के ।
शोचन के राम शिखार हरिभिनन के,
पल्लव मयन के शवान पति-धीन के ।
काव के कदार कदरान सुन कर्मन के,
सुवन के नाथ सुसर्जन ममांन के ॥

—“अम्बिकादत्त-कम्” (वही), १ १० ।

हुमरौक-राजधानी में आपके द्वारा हिन्दी-कविता का पचास प्रकार हुआ। आपने निम्न लिखित ग्रंथों की रचना की थी, इनमें से अधिकांश आपके जीवन-काल में ही प्रकाशित हो चुके थे—(१) रचित-रंजन-रामायण^१, (२) रतिकौस्तुभभागवत^२, (३) अंगरत्नाकर^३, (४) विजयास्तव^४, (५) कृष्णलीलामृतमणि^५, (६) अमृतसाधिका^६, (७) रंगमृततरंगी (८) कलम-भुवोष, (९) कलम विनोद, (१०) यक्षमोत्साह, (११) जैपुर-कल्ल, (१२) सङ्गवली और (१३) मापाभुवोष^७।

आप सं० १८५८ वि० (सन १८०१ ई०) में परलोक विचारे।

उदाहरण

(१)

कालिंदी के कलनि कर्दवन की डारन मे
 डारयो है सुरंग भूलो रसम के डारे में।
 कहै 'विप्रवन्तम' यो सावन सुहावन में
 घाय गई घाली छोटी बूदन-भूकोरे मे ॥
 सै लै मकरदन को सुमन सुगधन को
 वहे पुरवाई सुखवाई कुज कोरे में।
 हँसा-हँसा घाली हूँ मूलावे मोद फँसि फँसि
 स्यामा-स्याम भूलें तहाँ हेम के हिडोरे मे ॥^८

१. इसमें कवि की अपनी कविताओं के साथ अन्य कवियों की कविताएँ भी इस प्रकार संगृहीत हैं कि कथा-
 भंग नहीं से नहीं दृष्ट्या। शेष बात पक्का है कि सभी कवियों से सम्मिलित रूप से इसकी
 रचना की है।—सं।

२. रचित रंजन की 'रतिकौस्तुभ-रामायण' की तरह ही है।

३. इसमें कविता के लीर के सभी भागों का वर्णन दोहा-श्लोक में किया गया है।

४. इसमें श्रीरामायण की विजयास्तवों के अलावा का कर्मण बोधा और श्री सुवर्णमाला श्लोकों में
 किया गया है।

५. इसमें अमृतमणि-श्लोकों में श्रीकृष्णलीला बखित है।

६. इसमें रंजने, रत्ना, रंग और श्रीकृष्ण की स्तुतियाँ हैं।

७. अंगरत्नाकर ग्रंथ में एक शब्दों के अतिरिक्त आपके लीर की शब्दों की कथाएँ भी हैं। उनके नाम इस
 प्रकार हैं—(१) महिम्नलोक का हिन्दी-अनुवाद, (२) श्रीरत्नाकर और (३) रंग कल्ल।

—रेडिक, 'पुराण' (परी), पृ० ११२।

८. 'कलममणि' (सुधा १५२७) पृ० १७।

(२)

उदधि मथैया कासोनाग का नथैया प्रभु,
 दुपदसुता को वर चोर बड़वैया है ।
 ब्रज उधरैया कर छिगुनो धरैया गिरि,
 इन्द्र को मरैया मद बल को सुभैया है ।
 मुरली ररैया मोर मूकुट मसैया सीस,
 पाप को हरैया, धर्मधुर को धरैया है ।
 नन्द को कन्हैया नन्दरानी को पियैया दूध,
 विश्व को भरैया 'विप्रबल्लभ' सहैया है ॥^१

(१)

सोवत झटा पै इक नागरि नवेली भति,
 रूप तिसउलमा ते उलाम सुसै रह्यो ।
 उधरे उरोजन पै जास सो प्रकाश पेखिवे,
 भमित भसी को भ्रमबल्लभ सो मिटै रह्यो ।
 वदन भयंक भकसंक सखि गोखन तें,
 भमरप तें कूखो भरी मेरे मन ठै रह्यो ।
 कठिन कुचोपरि भकि दूर तें गिर्यो यारें,
 देखि यह चंद ताते टुक-टुक ह्वै रह्यो ॥^२

(१)

कहाँ धरभ्रुन भीम युधिष्ठिर जीवित हैं इतते सुपतीजे ।
 साह भकम्बर विक्रम धो बनि वावन पावन की सुध कीजे ॥
 'बल्लभ' खान महान जहान सबै मिलि या विनती सुन सीजे ।
 कीरति के विरवा कवि हैं इनका कवहूँ कुहिलान न बीजे ॥^३

१ 'जलधर-कणू' (१०), पृ० १०० ।

२. वही पृ० १००-१०१ ।

३ 'शैरवज्ज' (१०), पृ० २११ ।

(५)

सुन्दर स्याम सुमेध सो गात सुबिज्जु सो पीत पितांबर छाजै ।
 सीस लखी धनुहन्द्र किरिटी, गरे बक पाँति-सो मास सुभ्राजै ॥
 बाज्रत किकिति नूपुर की घुनि ज्यो घन मद सुमंदहि गाजै ।
 'वत्सम' के हग में यह बल्लभ पावस सो नैव नन्द विराजै ॥^१



हरनाथप्रसाद खत्री

आपका जन्म सन् १८११ ई० में, पटना जिले के बिहारशरीफ नामक नगर (सहस्त्रा बाधानगर) के एक कमी-परिवार में, हुआ था ।^२

आपके पिता का नाम बाबू पुष्पलाल था । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बिहार शरीफ में ही हुई । पटना के मामल-ट्रेनिंग स्कूल से पाठ होने के बाद क्रमशः छपरा, साहगंज, रोसड़ा तथा दरभंगा के मिडिल स्कूलों में कार्य करते हुए सन् १८८० ई में आप मधुबनी के एक मिडिल स्कूल में हिन्दी-अध्यापक के पद पर आये और जीवन-पर्यन्त वही पर कार्य करते रहे ।

आपमें शैशव से ही विद्यामिर्चिणी थी । किन्तु साहित्य-रचना की सखी प्रेरणा आपको मधुबनी आने पर ही मिली और ठमी से जीवन भर आप निरन्तर लिखते रहे । हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, फारसी, बँगला और अँगरेजी भाषा का भी आपको अच्छा ज्ञान था ।

आप एक बड़े ही लोकप्रिय और सवाशय शिक्षक थे तथा अनुशासन के दृष्ट में आदर्श माने जाते थे । धार्मिक प्रवृत्ति के होने के कारण बड़े ही विनम्र तथा मृदुभाषी भी थे । आपके दो पुत्र हुए—सहनीनाथ प्रसाद और शशिनाथ प्रसाद ।

१ 'वैदिकान्त' (पृ०), पृ० २५३ ।

२ आपके जन्म की तारीख के सम्बन्ध में कुछ मतभेद हैं। कुछ लोग इसे १८११ ई. के अन्त में ही मानते हैं, जबकि अन्य लोग इसे १८१२ ई. के अन्त में ही मानते हैं।—देखिए, 'आत्मचरित-सम्राट-श्री' (पृ०), पृ० ३३७ ।

(३)

हे सबके भ्रोर सबकियो ! तुम्हे दो बातों का नित अभ्यास रखना चाहिये, एक विद्या पढ़ना, दूसरा परिश्रम करना, क्योंकि नित विद्या पढ़ने से ज्ञान भ्रोर बुद्धि बढ़ती है भ्रोर मेहनत करने से देह निरोग भ्रोर बलवान रहती है ।^१

(४)

मनुष्य को उचित है कि अगर भाई बन्धुओं में झगडा हो तो उस भापस में ही मिटा लें न कि नाभिष करके दोनो घर विगाडे ।^२

✽

गणेशानन्द शर्मा

आप सुरार (गया) के निवासी भोजिय ब्राह्मण थे ।^३ आपके पिता का नाम पुनरपाठ शर्मा था । सं० १८६० वि० (सन् १८३३ ई०) में आपका जन्म भ्रोर सं० १९४० वि० (सन् १८८३ ई०) में माधवराज दासजी की देहावसान हुआ था । आपका रचनाकाल सं० १९१२ वि० (सन् १८९५ ई०) माना गया है । आप संस्कृत भ्रोर हिन्दी के कवि थे । आपकी दो पुस्तके हैं—(१) स्रष्टवचन भ्रोर (२) नाबिका-नायक-उत्पत्ति । स्रष्टवचन भ्रोर रचनाएँ भी हैं । आपकी रचनाओं का कोई छाहरण नहीं मिला ।

✽

रामकुमार सिंह^४

आपकी रचनाओं में आपका उपनाम 'कुमार' मिलता है ।

आप शाहाबाद जिले की सूरपुरा रियासत के अमीरपुर भ्रोर उसी जिले के हुमराँव-राज्य के शोबान थे ।^५

१. अतिब्रह्मण्य सहाय (बही) के माध (भाल-बनौर से) ;

२. कही से ज्ञान ('कथा-दर्शन' से) ।

३. 'गया के लेखक और कवि' (बही) पृ. ३१ ।

४. आपका मरुतुप परिचय श्रीवकीरत हुसैन (सूरपुरा शाहाबाद) द्वारा लिखित परिचय के आधार पर किया गया है ।—पश्चिम, 'नरेश्वर' (बही), वर्ष १०, अंक १०, अक्टूबर सन् १९६० ई., पृ. २४-२६ ।

५. "सूरपुरा हुमराँव-राज्य की शोबानों का सम्बन्ध मरुतुप जिलों के अनेक पूर्वजों में बना गया था, शरीर अनेक और अनेक पूर्वजों के नाम के रहते 'शोबान' की उपधि अनेक सिद्धी जाती थी ।"—श्रीवकीरत (श्रीवकीरत-श्रीवकीरत) (श्रीवकीरत शोबान सिंह 'श्रीवकीरत' प्रथम सं० सं १९२४ वि०) पृ. ६ ।

आपका कर्म शाहाबाद जिले के 'सूर्यपुरा' नामक प्रसिद्ध ग्राम में, सं० १८९० वि० (सन् १८३३ ई०) में हुआ था।^१ आपके माता पिता तथा अप्रथ का देहान्त आपकी बाल्यावस्था में ही हो गया। आपको अष्टहाय एवं अक्षता जानकर आपके शत्रुओं ने आपके प्राण भी लेने के अनन्त प्रयास किये, किन्तु अवफल रहे।^२ आपके एकमात्र पुत्र रामा राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह ('भ्यारे' कवि)^३ मजभाषा के परमीतकृष्ण कवि हुए। हिन्दी के वर्तमान प्रख्यात कथाकार रामा राविकारमन्प्रसाद सिंह^४ आपके ही पौत्र हैं।

आप बहुत ही गंभीर प्रकृति के एक विचारशील और धर्मनिष्ठ पुरुष थे। धर्म ही बड़े विद्यानुरागी और शिव-पार्ष्णी के अन्वय उपासक थे। प्राचीन काव्य एवं कवियों के प्रति आपके हृदय में अधिक आदर का भाव था। शास्त्र-रस की तथा मछिपरक रचनाएँ आपकी विशेष प्रिय थीं। आप स्वयं भी शास्त्र-रस एवं मछि-पद के एक बड़े ही मालुम कवि थे। आपकी पुष्पकाकार कोई इच्छि नहीं मिलती, केवल स्युद्ध रचनाएँ ही मिलती हैं।

सं० १९३८ वि० (सन् १८८१ ई०) की जैन शुकुल द्वारशी की अक्षयासीच वर्ष की आयु में आप पक्षाघात से आक्रान्त हो अकस्मात् परलोकगामी हुए।

उदाहरण

(१)

जुगलछवि हो निरखत चाके नैन ।

धृन्वावन रमनीय सरद-निधि कोमल मलय समीर ॥
 मधुकर-निकर कराकुल मधुकुल मुसूमित वकुल गैमीर ।
 माधवि-भासति-भास निकुजन कोकिल बस बहु रंग ॥
 विहरत जलत्र दामिनि-दुषि जुग कर कर मिसि सपटि सोहात ।
 मकैल-मनि-सख मनहुँ सपटि रहि हेम-वेसि विलसात ॥

१ 'नरैण' (वर्ष) ५ ३४ ।

२ अपने कर्णों पर निषिद्ध का बल्लेक धरणी रत्न शीतलों में किया है—

'मातु पिता वर बन्धु सभी सुरवास बने शीघ्र बसकि लखी ।

आदि ज्योष कथाय शीघ्र रिदु-जुगल बने वच में अनुप्रायी ।

सो रत्न नासि केनादि कुमार' कि शीघ्र लपान किन्ने कथनायी ।

आर बने कथा बह मनु की शक्ति बसक की सुनि लखी ।

— श्रीरत्नाशैलरी-प्रकाशनी (वर्ष), पृ० २२२ ।

३ रचना परिष्कृत रही पुस्तकप्रकाश में कथाप्रकाश इच्छम् ।

इसके पुत्र श्रीरत्नराज सिंह श्री हिन्दी के एक उत्कल कथानी-लेखक तथा कथाप्रकाशक हैं ।

नील जलज किसलय अस्नाकृत जुग मूल सरस सुरङ्ग ।
 पित्रत अलोल अनोन्य सरस्मित जुग सोधन जुग नृ ग ॥
 व्यापित ससि-दुति कवि द्रुम-रन्ध्रन जुगपद जुगल कूर्तक ।
 मनहुँ निरस्ति रवि छित बहु बपु धरि मिलत निसंक मयंक ॥
 मह सोमा राधा-भाषव की नूतन रहस विसास ।
 अति अमिराम 'कुमार' जुगल ससि वसि हिय करहु प्रकास ॥'

(२)

जयति गिरिकिसोरि मातु भवनिधि को तरनी ॥
 चन्द्रबदनि चन्द्रमाल सहस चन्द्र वास मास ।
 चन्द्रकला-सी रसास त्रिविध साप-हरनी ॥
 पन्मुख मुक्तपञ्च चार अनुलित महिमा विचार ।
 शक्ति शक्ति अमित सहससोस नमित धरनी ॥
 आदि-मध्य-अन्त-रहित वरनत गति वेद शक्ति ।
 भूमप्रकृति ज्योति-रूप देव-दनुज-सरनी ॥
 पन्मुख-हेरम्ब-अम्ब दारिद-कुल-कुल-कदम्ब ।
 मेरी अश्वसम्ब अम्ब शंकर-प्रिय-धरनी ॥
 हौं 'कुमार' अति अवोध नेकहुँ नहि पद-अवोध ।
 केवस पद-भास मातु सुख-अमोद-करनी ॥'

(३)

तन में मन में इन नैनन में कमला सुभ मूरति आह बसे ।
 कहिये सुनिषे गुनिषे में वही पद-पकज की महिमा दरसे ।
 घर माँगत हौं कर जोरि यही बिनसे दिल से मति धोर नसे ।
 सरसे बरसे रसना गुन का पद को खिर से कर से परसे ॥'

१ श्रीरघुपञ्चैतरी-अम्बाकरी (वही) पृ० २११ ।

२ वही पृ० २१२ ।

३ वही पृ० २११ ।

(५)

हरि ते न छुटो हर ते न मिटो विधि ते न घटो दुख दाख्त भारी ।
 बहु धाम भक्तयो हिय हारि गिरमो छुधितासुर द्वार तेरे हरि-प्यारी ।
 समु बासक द्वार पुकार करै करुणा-रस-सागर भायु विधारी ।
 पय अमृत-पान ते पाखिये मातु 'कुमार' हि गोद लगाय निहारी ॥^१

(५)

सेइ उमा-पद-पंकज को जग जीवन को सुख साहु सहो रे ।
 जो विधि बिस्तु महेसहि पासत सो पद को रज सीस धरो रे ।
 जोग न आप न ज्ञान बछू करुना रस के बस भास गहो रे ।
 मूस विमूर्तिनि ब्रह्मस्वरूपिनि रूप-सुधारस पाइ बियो रे ॥^२



रामचन्द्र लाल^३

आपका उपनाम 'दुनहवार' था, जो आपकी रचनाओं में मिलता है ।

आप शाहाबाद जिल्ल के 'हुमरौब' नामक नगर के निवासी थे ।^४ आपका जन्म सन् १८१५ ई० के अगहन में हुआ था ।^५ आपके पिता का नाम प्राबपति लाल और पितामह का मूंशी रामसहाब लाल था । आप सरल स्वभाव के एक बड़े ही कार्यरस पुरुष थे । आप हिन्दी के इतिहासकारों के भी एक अच्छे विद्वान् थे । आपने बर्मायों का भी अध्ययन किया था । हिन्दी में पुरतकाकार प्रकाशित आपकी कोई रचना नहीं है । कुछ म्यूट रचनाएँ ही उपलब्ध हैं ।^६ आपका निधन सन् १८०१ ई० के अगहन में हुआ था ।

१ 'बोधवटमेखरी-व्य वास्तवी (बरी) १० २११ ।

२. बरी ।

३ आपका परिचय वाजू शिवमन्त्र सहाब (बरी) द्वारा प्रेषित सम्प्रदाई के अन्वय पर देना किया गया है ।

४ आपके पूर्वज बभिसा (बटावदेठ) के इस्ती-राज्य में काम करते थे । उस राज्य की जयमठानावा के कारण सन् १८२० ई के ठीक शिरोह के समय आपके पिता सरफारत हुमरौब (टावलत) चले गये । वे बड़े ही बर्मायनक पुरुष थे और लच्छिकि जन्तु भीष्कर स्वर्दासी हुए । करते हैं, अतिव चब तक बबकी लच्छिकि लच्छि का इन्स बरी हुआ था ।—वाजू शिवमन्त्र सहाब द्वारा प्रेषित सूचना के अन्वय पर ।

५ आपके बचपने ही ही बचन आपके चौथे अंशकी को पाइ हुए है, जिन्हे ने प्रकाशित करवैवले है ।

६ वाजू शिवमन्त्र सहाब (बरी) द्वारा प्रेषित ।

उदाहरण

(१)

जग में सिव सम नहि कोउ कृपाल । ठरि जात सबक पर लखि बेहास ॥
रीमूत सम्भू दिए घतुर भाँग । होवत प्रसन्न बजाए गास ॥
कर जोरत भव हरत निमिप माँह । जन रन्धक शकर मुभाल ॥
हर भए दयास दुख गए पताल । करि दिए निहाल त्रिनेत्र भाल ॥
'गुनहगार' तजि संसय भपार । ममभोला भजु सर्वकास ॥^१

(२)

मूढ़ मन करत कठिन कठिनाई ।
यद्यपि सहस्र कष्ट भति दाखल तदपि न दुष्ट सजाई ।
कोटि उपाय करौ कल्पानिधि छुटत न हिय अडसाई ॥
जब सगि नेह निगाह छोह कर हात न नाथ सहसाई ।
जात न विषय वासना मन कर अधिक्-अधिक गरुमाई ॥
दोषक माँहि पतंग परं जिमि देह-दसा विसराई ।
तिहि विधि काम-दोष के ऊपर परत है यह वरिभाई ॥
'गुनहगार' त्रिपुरारि घरन भजु-सजु धित बी विकलाई ।
सिबसंकर जब कृपा करहिगे सकस तोर वनि जाई ॥^२

(३)

हे हरि सो सुधि वेगि हमारी ।
गोहरावत गए बीति बहुत दिन काहे मोहि विसारी ॥
कर जोरे पर द्रषहु पसक माँहि हरत कष्ट भव भारी ।
जानि पतित ओ हमहि विसारो और पतित किन तारी ॥
अगुन मोर छमिण कल्पानिधि भारत दीन विधारी ।
'गुनहगार' यह दास चरण के है वस सरन तिहारो ॥^३

१. यान् विषयजन महात्मा (शरी) इत्युच्यते ।

२. कहीं से प्राप्त

३. यही ।

वैजनाय द्विवेदी*

आपका जन्म सन् १८३८ ई० (सं० १८८४ वि०) के जनवरी अथवा फरवरी मास में टेकारी (गया) के विहारगंज छात्रालये में हुआ था ।^१

आपके पिता का नाम पं० दिनश द्विवेदी^२ तथा पितामह का पं० कश्यप द्विवेदी^३ था । आप जब कुछ ज्ञ बच्यं के थे, तभी आपके पिता की मृत्यु हो गई । अतः, आपका लाक्षण पाठन आपके पिता के शिष्य पं० गदाधर शुक्ल ने किया, जो आपके पुत्रों के बहनोंई व । आगे चलकर आपने उन्हें से रस, रीति, विंगल आदि का अध्ययन किया ।

आपको अपने पिता की तरह पूष रूप से टेकारी-बरभार का राज्याभ्यन्तरी प्राप्त था, किन्तु टेकारी-राज के एक राजा मीरीनारायण सिंह की विधवा रानी अश्वमेधकृषि की आवासे सिके 'गया-यदाधर-बास-प्रकाश' नामक आपके एक ग्रन्थ की रचना मिली है, जो आपका है । वस्तुतः, आपको बकुर्छा (गया) के बनी बमीरार बाबू सीताराम^४ का आभय प्राप्त था । आप कमी-कमी देव (गया) और मकसूरपुर (गया) के राजाओं के वहाँ भी आते-जाते थे, पर उन दोनों से सम्बन्ध आपका कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होता ।

आप 'हिन्दी की परबनी रीति-भारा के कवि थे', ऐसा कहा जाता है ।^५ आपने बसाहित इत्य ग्रन्थ रचे थे — (१) भीसीठारामाभरण-मंजरी^६, (२) नख शिखर^७,

१ आपका प्रस्तुत परिचय जो अमरनाथ सिन्हा (गया कालेज गया) लिखित 'कवि वैजनाय द्विवेदी' शैलेक लेख के आधार पर दिया गया है : जो सिन्हा को प्रस्तुत कवि से सम्बन्ध समझी या अवर्षनहाटी जाल लिखित 'द्विवेदी कवि और वैजनाय कवि का जीवन-परिचय (इत्तलिखित ग्रंथ) से प्राप्त हुई है । — देविप, 'एतलन' (अर्धवर्षिक वर्ष १ अंक २, जनवरी, सन् १९१२ ई० तथा वर्ष २, अंक ३, मार्च, सन् १९१२ ई०) पृ० ७५-८० तथा पृ० १२-५७ ।

२ वही पृ० ७५ ।

३ इनका आलोचक नाम पं० शिवरीन द्विवेदी था । इनका परिचय प्रस्तुत इतिहास के अन्त अंत में प्रकाशित है ।

४ इनके पूर्वज बलराम देवराजा के मित्राण थे ; वे ही कविता की कला में देवरी (गया) आकर बस गये थे ।

— देविप 'एतलन' (वैशाख, वर्ष ११ अंक ४ जनवरी सन् १९१२ ई०) पृ० २५ ।

५ इनके पूर्वज टेकारी-राज में राजा थे । इन्होंने बकुर्छा जातक नाँव सुर खरीया था । बाद अमरविहाटी जाल के अपनी काय-बुलक में इनके निच में जो लिखा है, वह यह अर्थ है— "The author's grand father B Sita Ram, resident of Mouza Baksanda was a big Zamindar of Gaya district, having properties in the districts of Patna and Monghyr also

— देविप 'एतलन' (वर्ष ११ अंक ३ जनवरी, सन् १९१२ ई०), पृ० ५३ ।

६ 'एतलन' (वर्ष ११ अंक २ जनवरी सन् १९१२ ई०) पृ० ७५ ।

७ यह ज्ञ वाणी में विभक्त एक जलकर ग्रन्थ है जिसमें कवि देवरी को सम्भार का अन्तर्भव किया गया है । इनको रचना आपने स १९२१ दि० में अपने आन्तराल बन्धु सीताराम को भेजा से भी ।

८ इतका वर्षों विचय पाठ-आविष्कार का अन्त-लक्ष्य है ; इसको रचना देवराज इत्या, (सुपचार) सं० १९२२ दि० को हुई थी ।

द्वितीय खण्ड : उद्योगों की (पूर्वाह्न)

(१) रामरहस्य^१, (२) हृद्य-निरोप कवच^२, (३) नाम विद्या^३, (४) सहीपन-शुभार
मंत्रो^४, (५) अमुगम-उत्था^५ (६) चिन्तामरु, (७) पंचवेदवा-बदन-धातोवा^६ तथा
(१०) सूक्तचक्रिका।

उदाहरण

चन्द्र चाँदनी चमक की, चूर-चूर ह्वं जात।
राम अगुलिन नप अमा, जब पूरन दरसात ॥
वोसि गयो दिन माक अच, तजहु मानिनी रोप।
अस्मर कर तरवार धरि, तोरत मानी कोप ॥*

*

नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह^१

आपका उपनाम 'शुभ' था।

आपका जन्म इतिहास-महिमा नाम कुंभारसिंह के रामबंस में उन्होंने की रामबानी
बागदोरपुर (शाहाबाद) में, सं० १८८३ वि० (सन् १८३९ ई०) की आरिबन-पूषिमा को,
अरिबनी नक्षत्र के प्रथम पहर (बनुसन्तोदय) में हुआ था।^{१०}

१. वह दो मिलनों में विगत एक रस-ग्रह है। वर्षों विगत राम-धरि से सम्बन्ध है।
२. वह तीन पक्षों में विगत एक रीति-ग्रह है जिसमें अम्ब-रोषों की चर्चा की गई है। इसके विगत
अरिबान में भी अम्ब की शक्त का वर्णन है। इसकी रचना सं० १९११ वि० की श्रवण शुक्ला
कृष्ण (दुबवार) की हुई थी।
३. यह पक्षों में विगत एक ग्रह में अम्ब-मेर से सम्बन्ध विगतों की चर्चा है। इसकी रचना
सं० १९३४ वि० में हुई थी। इसकी एक हस्तलिखित प्रति रत्ना के सम्बन्धित पुस्तकालय में है।

—लेखक, अम्ब ३१।

४. यह एक सहीपन-विगत से सम्बन्धित रीति-ग्रह है जिसमें रनेतर सहीपनों पर विचार नहीं किया
जाता है। इसकी रचना सं० १९१४ वि० की अम्ब शुक्ल दशमी (दोबवार) की हुई थी।
५. तीन चर्चों में विगत एक ग्रह में अमुगम उपाधेय तथा नुभारर का विशेष उल्लेख है। इसकी
रचना सं० १९१४ वि० की अम्ब कृष्ण दशमी की हुई थी।
६. यह आपकी अम्ब रचनाओं से भिन्न एक अम्ब-ग्रहणी रचना है। इसकी रचना आपने करने
का समय उपा के अम्ब पुन पुनकाल की मेरवा से थी थी।—सं०
७. 'उत्था' (शही) सं० १८८३।
८. आपका धरिबन शीतमयी अम्ब विगत (मवान मन्त्री बागदी-अम्बारी समा, धार) लिखित
रचनाओं की रचना के आधार पर तैयार किया गया है।

—लेखक, 'साहित्य' शही वर्ष २, अम्ब १ प्रथम सन् (१९३२ ई) ५ ६ १५।

९. इन नाम के एक और अम्ब रचना शही में हो गये हैं, जो अम्बिका-विवाहों की रचनाओं में
सिंह (सन् १८७४-७५ ई०) के दरवाजी अम्ब से। इसकी एक पुस्तकालय-रचना 'अरिब-विगत' नाम
से मिलती है।—लेखक, 'पिनी-साहित्य' अम्ब विगत (शही) सं० १०-१३।
१०. शही। नाम कुंभारसिंह से अम्बकी पुस्तकालय-रचना दशवार वर्ष दुसला प्राप्त हुआ था। शही
पुस्तकालय में शही के नाम अम्ब की चर्चा है।—सं०

आपके पितामह का नाम बाबू टेगबहादुर सिंह, पिता का नाम बाबू दलवी प्रसाद सिंह और माता का नाम श्रीमती पनवासकुंवरि^१ या। आप अपने पिता के द्वितीय पुत्र थे। आपके अग्रज का नाम सुमनरकरप्रसाद सिंह था। आपका विवाह चारन जिह्मे के 'पटारि' नामक ग्राम में श्रीमती पनवासकुंवरि से हुआ था। आपके तीन पुत्र^२ और दो कन्याएँ^३ थीं। जगदीशपुर के पास ही वसोपपुर में आपका गढ़ है।

आप बचपन से बड़े हीनहार और कुशाग्रबुद्धि थे। अमरकोठ, वारस्वतसन्धिका, सिद्धान्तकौमुदी आदि कईस्य करके के बाद आपने संस्कृत के काव्यों, पुराणों और पमशास्त्रों का अध्ययन किया। साय-ही-साय अरबी फारसी और हिन्दी की शिक्षा का श्रम भी प्रसूता रहा। इसके बाद आपने पिङ्गल, रघु, अलङ्कार आदि शास्त्रों के अनुशीलन का भी सम्पादन किया। विद्याभवन के अतिरिक्त आपने अस्व-शस्त्र-संभारान और कुश्तबारी में भी परीक्षा दत्ता प्राप्त कर ली।

जब आप नवपुत्रक थे, तभी सन् १८५७ ई० के सैनिक विद्रोह का आरम्भ हो गया। विद्रोह के पश्चात् आपने बीगरोनी भाषा एवं साहित्य का भी अध्ययन किया। आप एक विद्याभ्यसनी रईस^४ और एक कुशल चित्रकार भी थे। आपका बनाया हुआ रोम बम्बर का चित्र अबतक आपके बंशधरों के पास है।

प्राचीन ग्रंथों के संग्रह की ओर आपकी विशेष रुचि थी; इसी कारण आपका संग्रहालय बहुत ही महत्त्वपूर्ण था। हुमराव (शाहाबाद) के पण्डित मकडैरी ठिबारी को आपने अपने संग्रहालय से कई प्राचीन अमकान्तिष्ठ ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ प्रकाशनाएँ दी थीं।^५

आप हिन्दी के एक कुशल कवि थे। विवाही विद्रोह के बहुत दिनों बाद बेल में बूर्ध शांति स्थापित होने पर आप काम्ब-रचना करने लगे। यी ठी आप किशोरावस्था में ही काम्ब-रचना किया करते थे, पर छन दिनों की परिपाटी के अनुसार छन्द-शास्त्र

१. वे अग्रज (पण्डित) के अतिम तथा संभाव्यता के पुत्र राममुल्लह से बीरबनी कीर्ति में हुए थे। बड़े अक्षरनाटकीय विद्वान् थे। संस्कृत, हिन्दी, बङ्ग और फारसी भाषाओं पर अत्यन्त अच्छा ज्ञानिकार था।—सं.

२. वे इबिनी-बटौर प्रजा (तामनाम, रामनाम) के एक अतिप्रिय बन्धुपर भी कथा थी।

३. इनमें ज्येष्ठ पुत्र बाबू बिरनाबबहादुर सिंह के अग्रज पुत्र श्री हुण्टेरकरप्रसाद सिंह थे जिनसे ही संस्कृतपद साहित्याभ्युत्थान हुआ है।—सं.

४. जैसे अण्डा दरवार हुआ था। जब राजसी दरवार में अशिक्षितराज्यी विद्वान् और पुत्रों तथा अज्ञानियों का सम्बन्ध दर्शनीय था। मैं कबसे बड़े बन्धुओं भ्रष्टी कालिकावतार के पुत्र वं० पञ्चम पाठक के साथ अपनी किशोरावस्था में कई बार जापके बर्तन गया था। पाठकका अपने दरवाही बंशिक था। अन्धे दरवार में अविचार अण्डापाठ और लक्ष्मि-बर्तन हुआ बछी थी। अज्ञान-भ्रष्टी भी होती थी। राजवं का डेक, कमीन, बाबू अण्डा, राजीव प्रसन्न, अज्ञानरेत-काले शिष्टी-पराकरण का पाठ, काम्यकाल-विवेचन आदि बर्तन बाबू: हुआ करते थे।—सं.

५. सुबहक कवि के 'अण्ड-रत्न' और 'विश-रत्न' नामक अतिरिक्त काम्य-ग्रंथों की लिपाटीनी के अन्तरे ही लेखक अण्डाविवेचन प्रेत (अन्तरे) से लिखता था। भूमिका में क-बन्धि बन् लोकार भी लिखा है।—सं.

का अध्ययन-मनन कर लौन के बाद ही काव्य-सृष्टि करने की परम्परा थी । अतः, आपके बालविक्रम प्रौढ रचना-काल का भीगणेश सं० १६३२ वि० (सन् १८७५ ई०) से ही हुआ । इसी वर्ष की वसन्तर्षवमी (सोमवार) को आपका 'शिवाशिवराटक'^१ नामक काव्य की रचना समाप्त हुई थी और इसके एक बप बाद 'शृगारवर्षण'^२ की । इन रचनाओं के अतिरिक्त आपकी अन्य दो रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं—'वर्मप्रदर्शनी'^३ और 'पंचरत्न ।'^४ इन पुस्तकाकार रचनाओं के साथ आपकी बहुत-सी स्फुट शृगार स्वभावक रचनाएँ भी, तत्कालीन समत्वापूर्धि-सम्बन्धी पत्रिकाओं में छपसम्भ होती हैं । आपकी कुछ भांगपुरी-रचनाएँ भी पुराने कागजों में मिली हैं । आपके काव्य एक मुंशी ठाकुरप्रसाद 'जगदीशपुरी' थे । सं० १६७ वि० (सन् १६१५ ई०) की फाल्गुन शुक्ल छतमी की लगभग ७३ वर्ष की आयु में आपका देहान्त हुआ था ।^५

उदाहरण

(१)

सरद घटा के संग चपला छटा है
कंधों घनसार माँह कंधों केसर लकीर है ।
कंधो सत्ययुग माँह द्वापर को सीव सोहै
कंधो हास्य संग ही किरिन रसवीर है ।

- १ इस पुस्तक में शिव-दर्शनी-स्तुति-सम्बन्धी एक ही अधिष्ठ और छन्दे हैं । यह भाट्टेण्डु हरिकण्ठ की 'अधि-वचन-मुखा' नामक पत्रिका (आरो) में सं० १६३२ वि० में 'श्रीगणेश-वचन-दर्शनी' नाम से सर्वप्रथम प्रकाशित हुई थी । फिर, द्वापरौष (साहाय्य) के पं० बलदेवी शिवाजी 'मन्मथ कवि' ने इसे 'शिवाशिवराटक' नाम से सन् १८६८ ई० में आर्यों के भारतवीथन प्रेस से प्रकाशित किया ।—सं
- २ इसमें बरौं छन्दों के अन्त-श्लोक वर्णन है । इसे बलदेवीपुर निवासी पं० बलदेव दासक ने, जो आपके अंतर्गण करवासीओं में थे, सन् १८८६ ई० में आर्यापुर के सेंट्रल प्रेस से प्रकाशक निकाला था ।
- ३ समस्त ३० श्लोकों का यह एक अष्टौ श्लोक-मंत्र है । यह भारत-समाज सभ्य पत्रवर्ष के सम्पादित है । इसमें जिसे आपके मनीषैहात्मिक, सामाजिक, धार्मिक और साहित्यिक निरूपण बड़े अच्छे हैं । इसी ग्रन्थ से भाक्यी स्वाभाविकता, मनवर्गीयता तथा भात्म-भाष्य के विशेष अध्ययन का परिष्कार प्राप्त होता है । सं० १६ १ वि० (सन् १६६ ई०) में पहले-पहल यह पुस्तक कर्णर के शोधेन्द्रप्रसाद प्रेस से प्रकाशक प्रकाशित हुई थी; किन्तु इसकी रचना बसते बसते ही हो चुकी थी, जब दिल्ली में प्रकाशित निरूपणों की बड़ी कमी थी । इसके अंत के कधीस रूपों में आपकी पंथि वैराग्यपूर्वक अधिष्ठार^६ भी संशुद्ध है । —सं
- ४ यह ग्रन्थ की रचना करने करने जीवन के अंतिम दिनों में की थी इसी कारण इसका प्रकाशन नहीं हो सका । इसके अंतर्गत है—प्रथम तरंग में देवस्तुति शिष्य में रासविभाष-वर्णन, सुतीव में समस्त-पूण्ड्रि, क्युप में काव्य-वर्णन और दक्षम में मणि-वैराग्यपूर्वक मन्त्र है । प्रथम तरंग में शोधेन्द्राजी मन्मथ शोधक के अन्तर की अधिष्ठ है, वे नाम् एमठारस सिद्ध (सुखसागर कवि) की 'विश्वविमोक्षिणी' ग्रन्थक पुस्तक में भी सं० १६५७ वि० (सन् १६ ई०) में भारतवीथन प्रेस (आर्यों) से प्रकाशित हुई थी—संशुद्ध होकर रूप चुके हैं ।—सं
- ५ कुछ मित्रों के अनुसार आपका निधन सं० १६७१ वि० (सन् १६१५ ई०) की फाल्गुन शुक्ल अष्टमी को हुआ था ।—देखिए, 'शृगारी' (वर्ष २, अंक २, संख्या ४, १ सुवर्ण, सन् १९२७ ई०,) पृ० ७४४ ।

मलय सों मिसी है कंधों चम्पक का सतिका
 यों ईश्वर प्रसाद शिवा शिवकी न और है ।
 देवगुहदिति कला मसि पै परी है कंधों
 रजत भहा सों सगी कंधन-जंजीर है ॥^१

(२)

कंधो लोक-साक मं कपूर धूरि पूरि रही
 कंधों ए चमेसिन की धवली धरसति है ।
 कंधों सन्धी-हास को प्रकास दस दिसि फंसो
 कंधों यह छोरघि का छन्दै दरसति है ।
 ईश्वरप्रसाद हिममयी सब देखि परै
 कंधो चन्द्र-किरिन-समूह सरसति है ।
 कंधो अमीरस सो सिप्यो है पंचसूत
 कंधों गिरिजा विहारी प्यारी कोरति ससति है ॥^२

(३)

घारस में रस नीरस में पर के बस में सुबसं रहस में ।
 रोस में भौ अपसोस म जोस म होस महोस समय सहते में ।
 भास निरास अवास प्रवास में हास विभास हिये अहत में ।
 बासर रैन बितीस हों मेरे सदाशिव 'ईश' शिवा कहते में ॥^३

(४)

तुम पावनि का करनी हों अपावन ईश्वरी तू हम दीन खरो ।
 तुम तो जगतारनि हा जग में हम सोक भरो तुम सोक-हरो ।
 तिसु 'ईस' प्रसाद हौ अम्बिका तू अघमाधि हों तुम दाया धरो ।
 भव और कछू कहते न धनै सरनागत हों श्वे सोई करो ॥^४

१ 'शिवजीव शम्भु' के. —रेडिण्ड, सम्यक्त्य (वेदाङ्ग, वर्ष १, अंक १) पृ. १०, सन् १९२२ ई)
 २० १०५ ।

२ यरी ।

३ यरी ।

४ यरी ।

(५)

जग उपजैया मन मोद सिरजैया
 सद्बुद्धि प्रगटैया तिहुँ ताप वे रिटैया तू ।
 दारिद दरैया कर्म-रेख को टरैया
 मुनि-मानस रमैया पापी पावन करैया तू ।
 ध्यान के धरैया हिम कंज विकसैया
 प्रभा-गुञ्ज पसरैया तम-सोम को नसैया तू ।
 ए रो जग मैया कौन दूसरो सहैया
 परी भौर साज-नैया याको एक ही खेवैया तू ॥^१

(६)

जनु निय तनु नापन हिवमनासज धीर ।
 हास्य सिंगार रजद्रहि किये जैबीर ॥ (सर समुत बेणी)
 वेनी पीठ सहित यो सुन्दरि वाम ।
 ज्यों पुस्तराज-सिखा वै साँपिनि स्याम ॥ (पीठ संयुत बेणी)
 परि चिक्लो पटिया वै मन विछलाय ।
 झलक छोर गहि सटकै नट सौं भाय ॥ (माँग की पाटी)
 झल सेत कारे रज सत तम ऐन ।
 उषपति पासन सय के करता नैन ॥ (नेत्र-वर्णन)
 बल्ल बल्ल विच पूतरि सोहति स्याम ।
 मनहुँ मीन वाहन वै राजस काम ॥ (पुतली-वर्णन)
 रष्यो काम करिगरवा जवहि कपोल ।
 बसि गइ तासु पूतरिमा मनहुँ झडोल ॥ (कपोल-तिसक)
 यह सुसासिमा गोरो गालनि नाहि ।
 पिय अनुराग झलक है दरपन माहि ॥ (कपोल की लाली)
 नहि नागरि गर महियाँ हीरा हार ।
 करस प्रदम्बिन ससि को नयत कतार ॥^२ (हीरा-हार-वर्णन)

१ 'पिबप्रतिपद्यक'—(य) अमरित्तराजस्य सिद्ध प्रथम सं० उम् (२०२२ सं०) अधिपति २२ पृ० ७ ।

२ 'न-वार-दर्शन' (यही प्रथम सं० उम् (२०२२ सं०), १०२, ४, १, ११ और २१ ।

(७)

इस तुम्हारे धर्म में ब्रह्माण्डन के तोम ।
 ऐसे बिलसत हैं ससत ज्यो शरीर में रोम ॥
 अपने में देखत नहीं दूकृत धनन बजार ।
 बिलसत बालक गोद में डौंडी नगर मेंकार ॥
 करौ अपनेकन जोस जप तप मख पूजन दान ।
 वह जुलमा रीभूत नहीं विन भ्रापा बलिदान ॥
 ओ जानत सो कहत नाहि, कहत सो जानत नाहि ।
 वेद धरित हू नेति कह, धीर कहै को ताहि ॥'

(८)

१ मैं बहुत दिन तक रोया, फिर हँसानेका इगदा वही करता है जिसने रसाया । २ प्रेमियों की जुवानें आसमान पर धीर दुनिया-धारों के कान जमीन पर हैं, उनके प्रेम की धाता को ये कैसे सुन सकते हैं । ३ यह दुनिया अभी तक है जबतक परमेश्वर की प्रभा प्रेमियों के दिस में अगह नहीं करती जब वह प्रकाशित होता है तब रोशनी के साथ भँघेरा कौंस रह सकता है । ४ जबतक हम अपने दुश्मन को धर से नहीं निकालते दोस्त मेरा धर में नहीं धाता है । ५ जब धाराम चाहोगे तकसीफ सामने खड़ी है जब तकसीफ सहोगे धाराम से सामना है । ६ मैं बहुत दूर था, मेरे साथियों ने मुझसे दूर होकर मुझको उसके समीप कर दिया । ७ वही मैं हूँ कि पहले दोस्तों में भी दुश्मना का असर पाता था । अब दुश्मनों में भी दोस्ती को देखता हूँ । ८ सन्तोष से पराई चीज भी अपना हो जाता है और सालभ से अपनी हाथ की भी धसी जाती है दूसरों के हाथ में । ९ अपभ्य खाना और दवा हकीम से मांगते रहना मूर्खता है ऐसे पापकर्म करना और क्षमा मांगना ईश्वर से । १० हाथी का धिर पर धूस हासना स्पूस शरीर के मिट्टा में मिसने का उपदेश है । ११ ज्यों ज्यों सूर्य सीधा धिर पर आ जाता है अपनी छाया घटते-घटते अपने वदन में गायब हो जाती है ऐस ही परमेश्वर के सामने हो जान पर दुनिया की दसा है ।'

१ 'अनारकली' (या अर्धरेखज्जालर विर प्रथम सं०, ७० (१६३ वि०) पृ २८२, २८७ तथा २८८ ।
 २ वी. प० २६३, ३६६ २७० २७२, २७४ तथा २७७ ।

जयप्रकाश लाल

आप सारन-जिले के अण्डर नामक ग्राम के निवासी और हुमरौन (शाहाबाद) के महाराजा राधाप्रसाद सिंह के बेटे हैं।^१ आपका जन्म सन् १८४० ई० में आरा नगर में हुआ था।^२ कहते हैं, हुमरौन-राज में आपके बैसा प्रमाणशाही, प्रतापी, बानी, गुण प्राहक तथा प्रबन्ध-कुशल बोलान कमी कोई नहीं हुआ।^३ आपको सरकार से 'राधवहाबुर' और 'सी० आइ० ई०'^४ की उपाधियाँ मिली थीं। आप बिहार-बंगाल-कौशल के माननीय उपस्य भी थे। सख्तनऊ में जो अखिलभारतीय प्रथम कायस्थ-महासम्मेलन हुआ था, उसके समापति आप ही हुए थे। बर्मा प्रदेश में आपके समय में ही हुमरौन-राज की ओर से बहुत-सी भूमि खरीदी गई थी, जिसकी आबादी का प्रबन्ध आपने किया था। आपके एक अग्रज शिवप्रकाश लाल^५ ने अनेक ग्रन्थों की रचना की थी। आप एक प्रमत्त व्यक्ति थे। मारतेन्दु हरिश्चन्द्र से आपकी पत्रिण मैत्री थी। हिन्दी में 'जगोपकारक'^६ नामक प्रथम-विषयक आपकी एक पुस्तक सन् १८७२ ई० में प्रकाशित हुई थी। आपको रचना के आहार नहीं मिले। आप सन् १८८७ ई० में परलोक चिधारे।



भगवान प्रसाद^१

आप 'श्रीश्रीवाराणसीभगवान प्रसाद' के नाम से प्रसिद्ध थे। इससे भी अधिक आपकी प्रसिद्धि श्री 'रूपकता' जी के नाम से। आपकी रचनाएँ प्रायः इसी उपनाम से लिखी हैं।

आप निवासी तो थे सारन जिले के सुवारकपुर नामक ग्राम के, किन्तु आपका जन्म सं० १८८७ वि० (सन् १८४० ई०) में, भावव कृष्ण नवमी की, शाहाबाद के आलमगंज इलाके में, हुआ था।^२ आलमगंज की नील-कोठी में आपके पितामह श्रीकेवलकृष्ण जी मीरमंथी थे। आपकी माता का नाम या भीमती शिवमती देवी और

- १ 'मिलन-विनीत' (वही द्वितीय खण्ड, द्वितीय सं० सं० ११८२ वि), पृ० १११५।
- २ 'आइ० ई०' (साहित्य, सं० १ जनवरी सन् १९३३ ई०) पृ० १२।
- ३ 'जयप्रकाश-वन्दु' (वही) पृ० १११२।
- ४ इसका परिचय वही पुस्तक के परिशिष्ट में बशास्वत इष्टम्ब। मिलनकुण्ड ने इसके अर्थ का अनुवाद किया है। — देखिए, 'मिलन-विनीत' (वही) पृ० १११५।
- ५ इसका प्रकाशन सूर्यमल्ल नामक किसी व्यक्ति ने पटना से किया था। — देखिए 'हिन्दी-पुस्तक-साहित्य' (साधनसंग्रह गुप्त, प्रथम सं० सन् १९४२ ई०) पृ० ४२२।
- ६ अग्रज प्रमत्त हरिश्चन्द्र द्वारा सन् १८७२ ई० में 'श्रीश्रीवाराणसीभगवान प्रसाद जी की जीवनी' (वही) तथा 'हिन्दी-प्रथम-विषय-ग्रन्थ' (पृ० ११०-११) के आधार पर तैयार किया गया है।
- ७ श्रीश्रीवाराणसीभगवान प्रसाद जी की जीवनी (वही), पृ० १४। कुछ लेखकों ने आपका जन्मसं० सं० १८४७ वि० अथवा सूर्यमल्ल नवमी की बताया है। — देखिए, 'सरस्वती' (साहित्य, प्रथम सं०, जनवरी सन् १९३३ ई०) पृ० ४८२।

पिता का मुठी उपस्थी राम^१, जो एक बड़े विद्याभारती और रामोपासक सद्यःस्य संत थे। लगभग पौष कर्प की अवस्था में प्रयाग में ही त्रिकेरी-संगम पर सुष्यन-संस्कार के साथ आपका विद्यारम्भ मो हुआ और उसी समय आपका नाम भगवान प्रहार रखा गया।^२ किन्तु, पढ़ने की कोई अच्छी व्यवस्था न हो सकी। लगभग साठ वर्ष की अवस्था से ही आप अपने पितामह के साथ साधुओं के सत्संग में जाने लगे। विशेषतः वे आपको अपने साथ यचनपुर ग्राम में बाबा श्रीरामदासजी के पास कोचन और सत्संग में ले जाया करते थे। उसी समय आपके हृदय में भगवद्भक्ति का बीज संकुरित हुआ।^३ आठ वर्ष की अवस्था में आप अपने माता पिता के साथ सुबारकपुर (ठारन) चले आये। वहीं आपकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध हुआ। पहले दो-तीन वर्षों तक तो आपने घर पर ही श्रीरामपुर (ठारन) निवासी मौलवी अशरफ अली^४ से फारसी की शिक्षा प्राप्त की। इसके पश्चात् आप ग्यारह वर्ष की अवस्था में सुबारकपुर के सिद्धि बनारसपुर-स्कूल में भर्ती हुए। वहाँ आपने मौलवी वहाँगीरबख्श शाहपुरी से फारसी-उर्दू और बाबू बिनायक प्रसाद से हिन्दी की शिक्षा पाई। इसी समय के लगभग, सन् १८५८ ई० में, सुबर्कपुर^५ के मुंशी ठाकुरप्रसादजी की कन्या से आपका विवाह हुआ। किन्तु, आपके कोई संतति नहीं हुई।

सुबारकपुर में ही पं० प्रहादरस पाण्डेय और मुंशी शिवधरस मगत नाम के दो बड़े धार्मिक तथा सहायकारी रामानन्दी वैष्णव रहत थे, जिनसे आपको धार्मिक शिक्षाएँ मिलती रहीं। सन् १८५८ ई० में कार्तिक-पूर्णिमा को गोवना-सेमरिया क मेस्ते में आपने परछा (ठारन) ग्राम निवासी स्वामी रामचरनदासजी^६ से विधिपूर्वक धार्मिक शिक्षा ग्रहण की। आगे चलकर सन् १८८०-८१ ई० में बगूसराय (मुंगेर) के श्रीश्यामनायिकाजी ने गुरहदा (मायकपुर) के प्रतिष्ठ संत श्रीरामचरनदास जी 'ईशकला'^७ से आपका परिचय कराया। उक्त संत-महाराजों के अतिरिक्त आपके धार्मिक जीवन पर आपके चाचा लखीरामजी^८ का भी बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था।

- १ इनका परिचय वही पुस्तक में ब्याख्यायक ग्रहण है।
- २ आपका विद्याभ्यस श्रीरामदासजी और श्री सुभाषदास साहब ने करवाया था। इन दोनों की पालना प्रयाग के प्रतिष्ठ संतजनों और ब्रह्मचारियों में होती थी। —सं०
- ३ 'येस ही येस में प्यार करने प्राम के श्रीरामचरन साहू से सीखनेवाली एक बूटकी बड़े प्रयाग से सीखकर यहाँ तब कठकी बूबा करने लगे और इस समय में आपने गंगा-विद्या के सर्व सर्वोत्तम शिक्षा।' —'संक्षेप-सन्देह' (पृष्ठा १ पुष्प ७-८, विद्यारम्भ सन् १८६२ ई०) १०१।
- ४ कहते हैं मौलवी साहब फारसी के एक बड़े ज्ञान, विद्वान-शास्त्र में बड़े ही निपुण और अपने ध्यानशाही उत्साह थे।
- ५ 'संक्षेप-सन्देह' (वही १०१) में लिखा है कि सन् १८२७ ई० में आपका विवाह विद्यारम्भ (बगुण) के उद्योग वैद्य-ग्राम के निवासी श्रीठाकुरप्रसाद की कन्या से हुआ था।
- ६ साम्प्रदायिक प्रथा के अनुसार इन्होंने ही आपका नाम 'श्रीरामचरनदास' रखा था।
- ७ इन्होंने आपका नाम 'ईशकला' रखा, जो आपकी रचनाओं में सर्वत्र मिलता है।
- ८ इनका साधु-नाम 'धर्मदासदास' था। वे ज्योत्स्य के रामनाथ पर विरक्त होकर निवास करते थे। इन्होंने ही आपको एक इल्लैमिनिट पत्राचार की पीपी देकर निज साह करने का प्रस्ताव कर दिया था। —सं०

सन् १८५६ ई० में आप मिडिल परीक्षा में, चार वर्षों के लिए चार रुपये मासिक को छात्रवृत्ति लेकर लखीम और छपरा जिला-स्कूल में मरती हुए। स्कूल में आपकी गणना शबरीराम, श्याम और गंभीर लड़कों में होती थी। सन् १८६३ ई० में जब आप एंग्लो-बंगाल में आये, तब आपने एक पुस्तिका (सन मन की स्वच्छता) लिखकर तत्कालीन स्कूल-इन्स्पेक्टर डॉ० फेल्डन को समर्पित की, जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने आपको १०) मासिक वेतन पर सन् १८६३ ई० में १५ अगस्त को स्कूलों के सब इन्स्पेक्टर के पद पर नियुक्त कर लिया। उस समय आपकी व्यवस्था ठीक बर्ष की थी। कामचलापता के कारण आपकी तरफ़ी समाचार होती गई। सन् १८६७ ई० में आप डिप्टी-इन्स्पेक्टर होकर पूर्णिया गये और वहाँ से सन् १८६९ ई० में आप मुंगेर आये, वहाँ लगातार बारह वर्षों तक रहे। सन् १८८० ई० तक आप तीन सौ रुपये मासिक वेतन की भेरी और राक्षसित पदाधिकारियों में आ गये। सन् १८८३ ई० से आप लगातार पटना में रहे। इसके एक साल पहले ही आपके पिता का देहान्त हो गया था। पटना में रहते समय आप बाबा मीरमहास की बङ्कुरजारी (बाकरगंज) का ही मोग लगाया हुआ अन्न (महाप्रसाद) पाया करते थे।

सन् १८८० ई० में बैरागी पूर्णिया को आपकी सहपरिणी का स्वागतास अपने मायके में हुआ था। पटना से ही, सन् १८८३ ई० की ३१वीं अक्टूबर को, एक सौ छियासीठ रुपये की आने की मासिक पेन्शन पर, आपन सरकारी सेवा से अवसर-ग्रहण किया।^१ पूर्व निश्चयानुसार, सेवाकार्य से मुक्त होते ही, छठी बर्ष के नवम्बर मास में, आपने अयोध्या-वास के लिए पटना छोड़ दिया। सन् १८८३ ई० में ही ५ नवम्बर (रविवार) को आप, काशी में श्रीविश्वनाथजी के दर्शन करते हुए, पहले-पहल अयोध्या-वास करने पहुँचे थे।

अयोध्या पहुँचते ही आपने प्रमोद-वन कुटिया से कैंकला, लैंगोट, कमण्डलु इत्यादि प्राप्त करके विधि-पूर्वक एहस्वाभ्रम-स्वाग किया। इस समय तक आपकी केवल माता ही जीवित थीं, जिनके लिए आप नियमित रूप से प्रतिमास ५१) भेजा करते थे।

अयोध्या में आप पहले इन्द्रसू-निवास में रहे। पीछे जब बाबू बलदेवनारायण सिंह ७ प्रमोद-वन में आपके नाम पर 'कपकला-कुंज' नामक एक सुरम्य भवन बनवा दिया तब वही आपका स्थायी निवास हो गया। वहाँ निरूप आपका प्रबन्धन हुआ करता था। अयोध्या में जानकी-जन्मी के उत्सव को आपने ही प्रचलित किया था। आपके बरत रामरत्न-रंग में ही होते थे।

रामायण, गीता, भक्त्यास आदि धर्मग्रंथों का अध्ययन, संत-महात्माओं और पुण्यजी की संगति और विशेषतः एकान्तवास आपको बहुत ही प्रिय था। धर्म के मामलों में भी आप बड़े ही उदार थे। मस्जिदों और गिरजाओं के प्रति भी आपकी बड़ी भद्रा थी, जो मस्जिदों के प्रति।

१ 'संकीर्ण-सन्देश' (वही ६ ७) के अनुसार आने तक ईश्वरीय कल्याणार्थों को लौकिक बन्ना के कारण करने पर से त्यागपत्र दे दिया था, अवसर-ग्रहण नहीं किया था।

आपने किसी को अपना शिष्य नहीं बनाया। सभी को मित्र-सुख ही मानते रहे। अशोक्या में आपके प्रेमियों की संख्या दिन-बूली रात-बोझी बढ़ती गई।^१ आपके प्रेमी आपके सम्बन्ध में बसेकालेक पामत्कारिक घटनाओं की खोज किया करते हैं।^२

आपने सन् १९१२ ई० में ही हरिनाम-यश-संकीर्तन-सम्मेलन नामक एक अखिल भारतीय आध्यात्मिक संस्था की स्थापना की थी, जिसके आविर्देशन आज भी प्रत्येक वर्ष भारत के विभिन्न भागों में होते हैं।

पासाकी पर अक्षत समय आपके कहार भी 'मन्न सीठाराम अथ सीठाराम' कहते पसते थे और हबामत बनान के समय हबाम भी 'सीठाराम सीठाराम' बोलते हुए ही अपना काम करता था। आप नित्य निधमपूर्वक मारतम्बु हरिहरकन्ध-कृत एक सपैपा बडे अनुराम से पढ़ा करते थे।^३

मोजन में बाबाम का शर्बत और सधु आपको सबसे अधिक रुचिकर लगता था। पत्र में पसन्द या मीटिया और नमकहाट।

आप सन् १९१२ ई० में दिनांक ४ जनवरी को सभा तीन बजे रात्रि में साकेतवासी हुए।^४ कहते हैं आपको अपनी मुसु ठिथि की खूबना पसले से ही थी, जिसका संकेत आपने अपने कतिपय मकती की कर दिया था।^५ अपनी परमधाम-प्राप्ता की बेसा में आप भीरामपूजा की महाराज 'दिम्बकला' को अपना उत्तराधिकारी बना गये।^६

१ आपके बीमबी-सेखकी में अकसे प्रेमियों की एक समीची सूची प्रकटित की है।—देखिए, श्रीतीरतमसहाय पन्थान पसह की बीमबी (वही) पृ० १६—१२२ तथा श्रीरुपकला-जीवनचरित (सं० एमबीएन सारण प्रथम सं० सन् १९२२ ई०) पृ० १५५-१५६।

२ इस मन्तर की धर्मिक घटनाओं के विवर—देखिए, 'श्रीतीरतमसहाय पन्थान पसहकी की बीमबी (वही) तथा 'श्रीरुपकला-जीवनचरित' (वही)।

३ वही तमिरी सुटि मोरथी मूठि धर्मिकन को तमि अथ दिखाने।
 अठिक-ली मरे प्यासी बड़ी दन धर्मिक रुक-सुधा निव प्यासी ॥
 क्षिपि पीठ बनेक को धर्मिक-ली बरसा करिके सधु बनकानी।
 सधु मर जाके धर्मिक के वन मेह को मेह किया बरताने ॥

—'श्रीरुपकला के उत्तराधिकार' (प्रधान पसह बुकजट, प्रथम सं० सन् १९२० ई०)

४ श्रीरुपकला एक म्थी (१९१२) के अनुसार ३ जनवरी (एनिसर, रकसरी) को १५ वर्ष २ मास एक अठक-रात के पार अथ दन वाम सिधारे। सधु के समय अन्तिम वचन में आपने तीन बार वही दोहराया—'मनुवर्ष कन्धुमार वन वन सारक प्साववन बासु हरन आमार पसहि एम सधु पार पर।'^७

५ मन्तर, सन् १९११ ई० के अन्तिम सप्ताह में अपने परमा के अपने कुनाघरों के सधु अन्तिम वचन में लिखा था—'बासु जात बरनेरक हरन दौर वन सधु ली कपल मोहि टोहि पर रही तथा अनुकल।'^८

६ देखिए— श्रीरुपकला-पसह (श्रीरुपकला-पसह प्रथम सं०, सं० १९२२ वि.), श्रीरुपकलाजी—एक म्थी (कलीटी बासुरकला-पसह, प्रथम सं० सं० १९२२ वि.) 'Shree Rupkala and His life and teachings (A. B. N. Sloba First Edn. 1935) and Bhagwan Rupkala and His Mission (A. B. N. Sloba Second Edn. 1960)

उदाहरण

(१)

सुधि न लीन्हि पिय विरहिनि हिय की ।
 सखि ! माहि कत दिन तरसत यौत, सुधि न लीन्हि पिय विरहिनि हिय की ॥
 भाह घुमाँ मुक्त हिय विरहागो, ठाढ़ि जरीं जैसी जाती दिम की ।
 अधिक दाह चित खात्क कोकिल, विरह धनस जिमि भाहुति पिय की ॥
 सब उर व्यापक अन्तरयामी, जानत हूँ पिय रुचि तिय जिय की ।
 साँघहु सपनेहु बच सगि देखिहों, मधुर मनोहर छवि सिय पिय की ॥
 छमानिधान बिलोकिहूँ निज दिति, करिहूँहि खोज न मोरे किय की ।
 कृपानिधान दया-सुख-सागर, मनिहूँ सखि ! बिनती सधु तिय की ॥
 'रूपकला' बिनवति हनुमठ हा, चन्द्रकला अरु गिरिवर-धिय की ।
 एको उपाम न समत भाली ! मोहि भासा केवल श्रीसिय की ॥^१

(२)

नेहू नेहू सब कोउ कहै, नेहू करौ मति कोइ ।
 मिले दुखी बिछुरे दुखी, नेही सुखी न होइ ॥
 नेहू स्वर्ग वे उदरभो, भू पर कीन्हों गौन ।
 गली गली बूझि फिरै, बिन सिर को घर कौन ॥
 विरह भसा जा उर घसो, ससो रसीली प्रीति ।
 अहत न मरहम घाव पर, यहू प्रेमिन का रीति ॥
 प्रेम कठिन संसार मे, नहिं कौजे जगदीस ।
 जो कीजे तो दीजिए, उन मन धन अरु सीस ॥
 धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
 धनि वृन्दावन-रसिकजन, धनि धीस्यामास्याम ॥
 भाली ! होसी सुखद तेहि, जो श्रीसिय पद पास ।
 'रूपकला' फगुनहट सहि, भुरवति रहति उदास ॥^२

१ श्रीवचनाम (श्रीरूपकला-इत बलिभुवनरार-सिद्ध, कृष्ण सं० अन् ११११ ई) पृ० १२२ ।

२ वही, पृ ० १ ।

(३)

साजि लेसो भूपन सँवारि लेली बसन से हाथ लेली री ।
 कनक धार धारसी से हाथ लेली री ॥
 मोड़ी पहिरी मुन्दरी सहेली सखी सहचरी मोही बीचै री ।
 से विराजे श्रीकिशोरीजी ताही बीचै री ॥
 मिथिला जुवति गन गावेलो मुदित मन साथ लेली री ।
 ए सामग्रो गौरी पूजन से साथ लेली री ।
 हरियर फुलवरिया खलिता गिरजा-वरिमा सखिन बीचै री ।
 से विराजे श्रीकिशोरी जी सखिन बीचै री ॥
 सियाजो के पूजा से प्रसन्न भइलो गौरीजी असास देला री ।
 से सुफल मनकामना आसीस देली री ॥
 'स्वकमा' गावेलो श्रीस्वामिनो बुझावेली विनु जोगे-जापे री ।
 ए प्रीतमप्रेम पावेली विनु जोगे-जापे री ॥'

(४)

अथ अक्षर जानकि मुख अन्दा । मिथिला भुवतिवृन्द मन फन्दा ॥
 मोहि सव भौति तुम्हार भरोसू । समझौं पिय गुण अथ निज दोसू ॥
 जोरि पाणि वर माँगौं एहू । जन्म जन्म सियगम सनेहू ॥
 अहि विधि पिय प्रसन्न मन होई । कठणासागर कोजिम सोई ॥
 पिय सनेहू चितवन की प्यासी । स्वकमा श्रीसिय की दासी ॥
 मुख मयंक की माधुरी, मधुर वयन मुसुकान ।
 चितवनि जनमनहारिणा, जयति जानकोजान ॥'

१. लोचनुरी के अति और अन्ध (लौकिकीकृतप्रकार विर मन्थ सं० सन् १९२८ ई.) पृ० १११-११२।

२. श्रीतीव्यप्रदीप प्रथम पुस्तक (प्रथम सं०, सं० १९१८ वि०, सन् १९११ ई०), पृ० १४ १२।

(५)

चाहे कोई कैसे ही बड़े भक्तिमान हों, रात दिन हरिगुण गाया करते हों, संसार के पापों को हटव भी हों, भगवन्नाम जपा करते भी हो, उनका हृदय सद्गुणों तथा भगवद्ब्रह्म्यान से भरा भी हो, ज्ञानमान भी हों, (तनु कर्म और हिय सुख भी हों), श्रीहरि तथा सन्तों के सम्मान में भी सचि हो, और उसी में सुख मानते भी हों, रीति से नाम जपते भी हों, सांसारिक प्रपञ्च से बचे भी हों, प्रेम को ही जड़ या सार जानते हों, सलाट में तिलक और उर में मासा भी सुशोभित हो, यह सब ठीक है सब कुछ हो, तथापि भक्ति की आराधना कठिन ही है, ओह ! कोई किस प्रकार से आराधना कर सकता है ? भक्ति की विसफण सूक्ष्म गति समझ में नहीं आती, मन कांप उठता है, हृदय धूर-धूर हो जाता है। सारांश यह कि "श्रीभक्तमासम्बी" को पढ़े समझे और मनन किये बिना, श्रीभक्ति महारानी की आराधना और उनके स्वल्प का जानना अतीव दूर तथा असम्भव है।^१

(६)

भगवत् क जितने अवतार हैं, वे सबही सुख के समुद्र हैं, जिनका वार-वार (धोरछोर) कौन पा सकता है, प्रत्येक की सीला का विस्तार-पसार, आवों के ही उद्वार के निमित्त है। जिस भक्त का जिस अवतार के रूप नाम सोसा घाम में मन सर्ग, और उसमें वह रंगी परग, उसके हृदय में वही भाव ऐसा जाग उठता है (प्रकाशमान होता है) कि कहीं तक उसकी प्रशंसा की जाय, उसका अस्त नहीं। सबही अवतार नित्य हैं, सबही ध्यान करन से चित्त को प्रकाशकारक; और सबही ऐसे सुखद हैं कि जैसे दरिद्री को धन का मिलना सुख देता है। हाँ, इतना बात तो अवश्य है कि यदि सारांश तत्त्व का ज्ञान होव, तब सुख की प्राप्ति होती है ॥ जिस प्रकार स 'टिढ़ापन' रूपी दोष भी बाला (किशो) के सम्बन्ध में सुखद गुण ही होता है, वैसे ही मीन वाराह आदि तिर्यक् शरीर भी भगवत् की प्रभुता के सम्बन्ध से अति सुखदायी ही हैं।^२

१. श्रीभक्तमास (पृ०) १ ११ २०।

२. वही १ ४८ २०।

(७)

(क) प्र०—बंध्याव के क्या लक्षण हैं ?

उ०—“बंध्याव वही है जो अपने त्रिज दुःख के प्रति उठना कठिन हो जैसे भ्राम को गुठली, और पराये दुःख के लिए जिसका हृदय इतना कोमल एवं सुमधुर हो जसा भ्राम का गूदा और रस । बंध्याव वही है जो घास की तरह नम्र हो और किसी के पाँव तले कुचले जाने पर भी हरामरा सहसहाता ही रहे । मन, बुद्धि, इन्द्रिय जिसकी परसेवावृत्ति में लगी रहे । किसी का भ्रूलक्ष्म भी अनिष्ट न करना । भ्रासस्यहीन होकर अपने कर्तव्य को नियमपूर्वक करते रहना । विलासिता को अपने पास फटकने न देना । सदा सावधान रहना । सात्विक भाव से, भावश्यकता से अधिक वस्तुओं का ग्रहण न करना । किसी की निन्दा न करनी और न कानों से सुननी !”

(ख) प्र०—परमात्मा को देखना क्यों कठिन है ?

उ०—जो सुँपने की वस्तु है उसे सूँघकर ही आप जान सकते हैं । जो खाने की वस्तु है उसका स्वाद खाकर ही जान सकते हैं । गाना सुना ही या सकता है । स्वाद जिह्वा ही द्वारा जाना जा सकता है । इसी प्रकार परमात्मा को देखने के लिए किसी विशेष नेत्र की भावश्यकता है ।”

(८)

(क) ज्ञान, योग, भक्ति वास्तव में कोई असंग वस्तु नहीं हैं । जैसे अनक प्रकार का ध्वंजन तैयार किया जाता है, मुख से उसका स्वाद भी असंग असंग मिसता है, पर पेट में जाकर सब एमट्टा होकर शरीर के

१ 'भक्त्या-बंध्याव' (वही) पृ० ३३ ३४ ।

२ 'भीष्मकृत-अध्याय' (वही), पृ० २० ।

रोम-रोम को परिपुष्ट करते हैं उसी प्रकार वैज्ञानिक दृष्टि से ये तीन मार्ग निश्चित किये गये हैं, पर वास्तव में सब मिस ही कर अपना कार्य करते हैं। इन तीनों को भ्रमण करना उन पर वाद-विवाद तथा मायापर्षा करना केवल भूल है।'

(ख) भाव, महाभाव, तब प्रेम। व्यक्तिगत विचार रहत भा ईश्वरप्रेम का सञ्चार होना, उसमें मान होना, उसके लिए व्याकुल होना 'भाव' कहा जाता है। महाभाव उसे कहते हैं जिसमें देहबुद्धि का भेषमात्र न हो, अपने भाव की सुधि ही न रह जाय, अपने प्रेमदेव में ही सोन रहे। प्रेम को कैसे बताया जाये। प्रेमी तथा प्रेमदेव में कोई भ्रन्तर ही नहीं। जैसे जल का कण जल में मिल जाय।'

(ग) प्रेम का दूसरा पहलू है विरह। प्रेम विरह एक दूसरे के साथ इस तरह भोक्षप्रोत हैं कि उन्हें बिसगाया नहीं जा सकता। अग्नि और उसकी दाहक शक्ति वैसे ही प्रेम और उसका विरह। यदि प्रेम विरह की अग इस हृदय में नहीं उठती तो प्रेम का भोल ही नष्ट हो जाता। विरह का अर्थ है अपने प्रेम के लिए पूर्ण अनुराग तथा अस्य वस्तुओं से प्रभुर वराग्य। विरह तो प्रेम की कसीटी है।'

(घ) भगवान मनुष्य को रोग-शोक में डालकर नाम-स्मरण-चिन्तन का सुभवसर दिया करते हैं।'

(ङ) जिसे आत्मसमर्पण नहीं आता वह निर्भीक नहीं हो सकता।'

(च) भगवान जिसमें प्रसन्न हा वही कर्म है और जिससे हरि में भक्तिभाव हो वही विद्या है।'



१ 'करकण-कर्मण्य (११) (१) ११०, (२) ११० (३) १११ (४) १११ (५) १११ (६) ११०, (७) १० (८) १ १०।

ग्यान-मारसण्ड उदै दिवस प्रकास भास
 रामनाम रामजस यही साजबाज है ।
 वेदपाठी सास्त्र के जर्नया पत्ररानिक है
 सोई मुदमंगलमय संत को समाज है ॥^१

(३)

सासे ससखाने में विरचित सुरंग सेज,
 भाभा विकास दीप दिनकर ते दौगुनो ।
 फहरें गुलाब के फुहारे चहुँ ओरन ते,
 फँले सुचि गन्व घोघा चन्दन ते चौगुनो ।
 कहै 'बिहारी' कवि तुलै ना छपाकर छवि
 छाये हैं कलक जाके रोम रोम औगुनो ।
 सोभा है अपार रूप राधिका वखानै कौन,
 गिरिजा ते गिरा ते रूप रम्मा ते सौगुनो ॥^२

(४)

सरके बराह-दन्त भरके दिगदन्ती रद,
 पञ्चकी गति कूर्मों की कमठ पीठ दरके ।
 चरके सुमेरु मेरु धरके दिग देवन के,
 फरके फलीस तेज ठरके नाग नर के ।
 कहत 'बिहारी' कवि खरके भूप देसन के,
 भासन सिहासन पाकसासन के सरके ।
 करके सरासन भाग भरके गजेन्द्र धार,
 सरके सान सूरों के हरके बँस हर के ॥^३

(५)

धोड़े भृगुछासा कर डमरु है विसासा
 सोहे ससिभासा उर भूपण वर ध्यासा है ।

१ श्रीगणेशाय नमः (बही) द्वारा साठ बरती बीर-श्रीचं साधुशक्ति से ।

२ बिहार-हिन्दु-साहित्य-सम्मेलन के १४ अधिवेशन (मुम्बई-१९३९) के समारोह तथा श्रीरत्नकर सिंह बहादुर के अध्यक्षत्व से । —दैनिक, 'बिहार की साहित्यिक प्रगति' (बही) पृ १६७।

३ वही ।

करत विप नेवाला साथ भैरव विकराला
 पीवत मंग-प्याला घर रहत मठवाला हैं।
 भूत-प्रेत के रसाला नाच नाचत बँताला
 कहत 'विहारी' सब देवन मे भाला हैं।
 देवन प्रतिपाला रिद्विसिद्धि देने वाला
 भतिसय किरपाला सो बसह वैसवाला हैं ॥^१

(१)

संतन सों भाव नीको, दाव नीको दुर्जन सों
 बन्धु सों बनाव नीको, चाव नीका राम को।
 गोता को ज्ञान नीको, सवन पुरान नीको
 दीनन को दान नीको, गौठन को दाम को।
 सेवा पितु-मातु नीको, लायक सो नास नीको
 कहता 'विहारी' बात, नीको परिनाम को।
 गंगा-जल-पान नीको, गुरुजन का मान नीको
 सुमिरन सदा ही नीको, राधा के नाम को ॥^२



रामलोचन मिश्र^३

आप का उपनाम 'मछमुषक' था।

आपका जन्म सं० १८८८ वि० (सन् १८४१ ई०) में, वैश्व शुद्ध ५ (शनिवार) को, सारन-जिले के बनिवापुर-पाने के मकजली धाम में हुआ था।^४ आपके पिता का नाम था सं० रोहिणी मिश्र। आपकी स्वार्थि एक प्रत्युपज्जमति रामायणी के रूप में थी। आप एक अनन्व राममछ और आशुकाचि थे। हिन्दी में आपकी निम्नीकृत कृतियाँ प्रकाशित हुई थीं—

(१) श्री सत्यनारायण-कथा का हिन्दी-पद्यात्मक अनुवाद, (२) बहुसा-प्रव-कथा का हिन्दी-पद्यात्मक अनुवाद, (३) चण्ड-संखरी (मोह-सुदगर) का हिन्दी-पद्यात्मक अनुवाद, (४) रामायण महत्त्व, (५) रामनाम-महिमा, (६) श्रद्ध-संयीतावली, (७) पुण्यपत्र-वचन,

१ श्रीकमलेश्वर का उल्लेख (वरी) द्वारा प्रथम।

२ वरी।

३ अज्ञात परिचय आपके कल्पित पुत्र सं० श्रीवर्मनाथ ठारसी (ठारसेय श्रीवास्तरमहीवनाथ, ठार नामार, ठारपुर वैरद, अबा) द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर तैयार किया गया है।

४ वरी।

(८) राम-भक्ति मजनाबली, (९) पिगला-गीत, (१०) गंगा-सरयू-महिमा, (११) लमस्या पूर्ति, (१२) पत्र-पद्यावली, (१३) आत्मजीवनी, (१४) स्फुट कवितावली, (१५) हनुमत्प्रार्थना, (१६) प्राथमिक कवितावली, (१७) पिङ्गल-सुन्दरपाद्यक-वर्णन, (१८) शाकडीपीयडिख-वचन ।

आपका बेहदत सं० १९७० वि० (सन् १९१३ ई०) में, भाषाशुद्ध ११ वृहस्पतिवार को, ७२ वर्ष की आयु में, हुआ था ।

उदाहरण

(१)

राम नाम कहा करो पाप से बरा करो तू
भरा करो कान मे सदा हो राम नाम को ।
घर में रहो वा गिरि-कन्दरा वसो तू जाय
बिता राम नाम मुख धाम कौन काम को ।
नाम को प्रभाव धारो जुग में प्रचंड जान
कलि में प्रधान राम नाम तरु-काम को ।
कहे रामसोचन दुखमोचन राम नाम ही है
ताते राम नाम में बितावो भाठो याम को ॥^१

(२)

पिता यदि दीजे तो श्री दशरथ महाराज ऐसो
बन्धु यदि दीजे तो श्रीराम धारो भैया सो ।
माता यदि दीजे तो श्रीकौसल्या सुमित्रा जी सो
भार्या जो दीजे तो धरन्धती सुकन्या सो ।
पुत्र यदि दीजे तो सुपुत्र श्रीश्रवण एसा
मित्र यदि दीजे तो सुदामा जी कन्हैया सो ।
कहे रामसोचन जीने ही योनि जम दीजे
रामभक्ति दीजे भर प्रीति रघुरैया सो ॥^२

१ विद्या-पट्टभवा-परिवृद्ध के सपरिवार-रतिहास-विषय मे छापित श्रीरामनाम-कविता का प्रतिनिधि है ।

२ वही ।

(३)

भजु मन राम-सिया सुखरासी ।

रामचन्द्र रघुनन्दन रघुवर राघव भ्रमघ-निवासी ॥

रघुकुल तिलक सिया के स्वामी काटतु हूँ जम-फाँसी ।

मनमोहन मधुसूदन माधव ममथ मथुरा-वासी ।

माखनचोर मुकुन्द मुरारी भरिमर्दन भविनासी ।

चारो युग चतुरानन कर्ता चारि लाख चौरासी ।

चारि पदारथ करतल ताके जाकर माया दासी ।

पावत मुक्ति सुनावत शंकर मरत जीव जो कासी ।

रामलोचन एक भ्रमघ सरनमहँ राखु दुसह दुखनासी ॥^१

(४)

भवगुन जौ प्रभु हेरो हमारो ।

तो नहिँ कल्प कोटि कस्तानिधि यहि जन को निस्तारा ॥

वेद पुरान कहत कस्तानकर वर-वर भ्रमघ उवारो ।

पाप करत निसि वासर वोक्त भव सौँ हिय नहिँ हारो ।

मटकत फिरत न सूकत भारग सँ निज सिर भ्रम भारो ।

जनमत मरत दुसह दुख पावत तुम विनु कौन उवारो ।

गिद्ध न हौँ गनिकादि भ्रजामिल सब पतितन वे न्यारो ।

नाम पतितपावन तव शंकर कागभुसुगिह उचारो ।

रामलोचन पर करहु कृपा भव जातै कहीं तजि चरनतिहारो ॥^२

✽

अक्षयकुमार^३

आपका जन्म स १६०० वि (सन् १८४३ ई०) के माघ मास में, सुबफ्तरपुर जिले के 'बापी' नामक प्रसिद्ध स्थान में हुआ था ।^४

१. परिषद् के साहित्यिक-वर्तिहास-विभाग में मुद्रित श्रीरामनाथस्वामि की प्रतिनिधि स ।

२. वही ।

३. आपका परिचय मुख्य रूप से श्रीरामनाथस्वामि विचित्र (किरवरेट्टी परवा) से प्राप्त सूचना के आधार पर तैयार किया गया है ।

४. 'सैविन रैण श्रीरामजी जन्म वने एक ग्राम । बापी नाम प्रसिद्ध है तहाँ जन्म को ठाम स

—'सैविन रैण श्रीरामजी जन्म वने एक ग्राम (अक्षयकुमार प्रबन्ध स, सन् १९३३ ई) पृ १ ।

आपके पिता का नाम भीमन्वलाह सिंह और पितामह का भीमइवान सिंह था। आपके दो पुत्र हुए—भीकामलाप्रसाद और भीकाम्नाप्रसाद। इनमें द्वितीय भाग भी वीजित हैं। प्राचीन पद्धति से शिक्षित होने के कारण बाप हिन्दी के अतिरिक्त फारसी और उर्दू के भी एक अच्छे डाटा थे। आरम्भ में बहुत दिनों तक आपन हाजीपुर की मुन्सिफी अदालत में बकाहत की। इसके बाद आपन चपेरे माई की 'रियासत' में मैनेजर नियुक्त हुए।

आपके यहाँ फारसी-उर्दू के अतिरिक्त हिन्दी-संस्कृत-पुस्तकों का भी बड़ा विशाल संग्रह था। वस्तुतः, इसी संग्रह के कारण आप साहित्य के अध्ययन और पुस्तक-संग्रहण में मग्न हुए। बाप एक धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। साहित्य-क्षेत्र में प्रवेश के आरम्भिक दिनों में ही आपन भीराम के बाल-परिचय पर कुछ सुष्ठु कविताओं की रचना की थी। छठी के प्रकाश-स्वरूप आपने आगे चलकर अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'रसिकवितास रामानुज' की रचना अपने श्लेष भावा के आहातुधार की, जो प्रकाशित भी हुआ।^१ आपने 'वर्षबोध' नाम से एक छंदोबद्ध हिन्दी-व्याकरण की भी रचना की थी, जो दुर्भाग्यवश अभी तक अप्रकाशित ही है। आपको कुछ सुष्ठु रचनाएँ मिलती हैं।^२

आप सन् १९०१ ई० में २ मार्च को परलोकवासी हुए।

उदाहरण

(१)

राधो जी भनुज-सहित कौंसिक मुनि संग में
मैधिस-पति नम्र निवृत्त जैसे हि पधारे हैं,
शोर मयो शहर में भद्रमुत छवि छटा देखि
देखन हित धृन्द वृन्द भाइ के जुहारे हैं।
गिरत काहु भुक्त काहु सरसरात पांव धरत
देह को न खयर जानि परत मतभारे हैं,
निरखत बिदेह को ब्रह्मज्ञान विसरि गये
दुखे मन पेमनिधि मिसत ना किनारे हैं ॥^३

१ इस 'रियासत' के बालिक ने बिहार-विश्वविद्यालय के पूर्व अध्यक्ष अष्टलक्ष्मी और केन्द्रीय संसद-सदस्य जयबहादुर राममन्थन दाहाज के पूर्वज। —सं०

२ इस ग्रंथ का प्रथम संस्करण विशारदगु प्रेस (बाँधीपुर) से प्रकाशित सन् १९०१ ई० में आपके श्लेषपुत्र तथा सार्वजनिक शिक्षक (अध्यापक) के पूर्वज श्री कामलाप्रसाद दाहाज प्रकाशित हुआ था। सन् १९३६ ई० में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित हुआ। —सं०

३ आकथी रचनाओं की सुरदा के बिना बापके हीन श्रीगुणदाकरभगवतजी (बाँधी-विश्वविद्यालय, बाँधी) तथा श्रीजी श्रीमती मधिसनी (दरभकुर्छा अथवा) प्रकाशित हैं। —सं०

४ 'रसिकवितास रामानुज' (बाँधी) पृ. ४।

(२)

कामिनी को सैन आज जुर्गो है विदेह नगर
चितवन को तीर चढ़े मृकुटो कमानो पर,
सास-रूल आदि बहु भूपण संधारे सिर
सारी जरसारी लहरा रही निशानों पर ।
चाहती है वार करन देखति सब दाध-घात
खंचति कमान ताकि ताकि श्रेष्ठ यानो पर,
जैसेही रघुवीर की छूटी एक नैन वान
घायल-सो घुमी गिरि अपने ठेकानो पर ।^१

(३)

जनक-नन्दनि विलोकि रघुवर घनश्याम-ध्वज
नैन में लाय प्रेम-विवस पलक डार लो,
प्यारे के रूप को विलोके नहिं भीर कोठ
भीर रूप देखूं नहिं याही द्रत धार लो ।
वीली बहु काल सङ्ग सखियाँ सशक भई
वोली उठि हाहा यह करत काह साडली
निन्ही काहु टोना कि डिठौना काहु डारिदिन्हि
सुनि सङ्कोच लाज विवस नैन तव उधार लो ॥^२

(४)

कह केवट क्यों अनरीस करो हमको उत्तराई में जो क्रुध दैहो ।
कहूँ लेत हैं नाई से नाई कछू मोहि जाति के पातिनि ते निवसैंहो ॥
भवसिधु भगाध कि घाट तुम्हे यही घात कि जौ उत्तराई चुकैंहो ।
जब जाव तुम्हारे घाट प्रभु तब तो हमरे मुंह में मसि लैंहो ॥

१. 'सिद्धिजात उभयवर्ष' (पद्य) ३ ४२ ।

२. पद्य १०६ ।

३. पद्य, १ १२ ।

(१)

हरपे हनुमंत सुनत घानी । श्रद्धेश की सम्मति मन भानी ॥
घरि रूप विशास भये ठाढ़े । प्रजसित तन वेज प्रभा बाढ़े ॥
कहि वसहु इहाँ दुख सहि तबसौं । सोता-सुधि मैं लाऊँ जवसौं ॥
जय जानकि जीवन कहि धाये । गिरि गहन सिखर पर चढ़ि भाये ॥'



शिवप्रकाश लाल

आप छारन बिले के 'अपहर'-ग्राम के निवासी थे ।^१ आपका जन्म सं० १९०० वि० (सं० १८४३ ई०) में हुआ था ।^२ आप हुमरौन-राज के प्रतापी बीवान जयप्रकाश लाल के अतुल्य और एक नड़े ही धार्मिक प्रवृत्ति के स्वप्ति थे । आपके द्वारा रचित निम्नलिखित हिन्दी-पुस्तकों का पता पता है—

(१) भागवतसरस-संपुट, (२) भजन-रघामृतानुभव, (३) विनयत्रिका टीका, (४) गीतावली टीका, (५) रामगीता टीका और (६) इतिहास-सहरी ।^३ आपकी रचना का कोई उदाहरण नहीं मिला ।



हरिनाथ पाठक

आपका जन्म गया बिले के 'पाठककिगाहा' नामक ग्राम में, सं० १९०० वि० (सं० १८४३ ई०) में, मार्गशीर्ष कृष्ण-प्रतिपदा (मौनवार) को, हुआ था ।^४

१ वही पृ० १० ।

२ 'विजयपुर-विबोद' (वही पृथीव मूल) पृ० ११६० ।

३ डॉ० विमलेश्वर ने आपका जन्म-व्यक्त सं० १८४४ ई० बताया है । — देखिए, डॉ० विमलेश्वर-कृत 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (सं० विद्येश्वरनाथ ग्रन्थ प्रकाश सं०, सं० १९११ ई०), पृ० २७७ ।

४ 'विजयपुर-विबोद' (वही) पृ० ११६० ।

५ विजयपुर में आपकी रचनाओं में जयवारा हुमरौन के महाराज शिवप्रकाश सिंह की कई रचनाओं की सम्मिलित पर रिया है । देखा प्रथम और भी कई रचनाओं में होय सकता है । — देखिए, वही ।

६ आपके पूर्वज आप से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व सुनसरीवासी राजकुमार-नाथ में, जन्माचार-नीकित हो, अपनी वंशानुगत जन्मभूमि बनशीरापुर (छपराज) छोड़ पय-बिले में आ गये । यहाँ में अपने घर सरसे पहले जन्मी मुक्ताब्ज देवरी के राजा से हुई, जिन्होंने जन्मी निरहा से प्रसन्न होकर जन्माचार सन-विधीयन के 'किन्नर नाम (वरा) के निकट अर्पण ग्राम (परा) में १ १ कीये जमीन दे दी । अपने जन्मक उन्हें देववारा-राज्य (परा) से भी कुछ जमीन प्राप्त हुई । जन्मी जन्मी में 'पुत्रपुत्र वरी के वीर पर सर्वप्रथम जन्मी भस्मा विशास-स्वाय वनवा, किन्नर नाम रखा 'देवानीवा' । कुछ दिनों बाद जब वह स्वयं पुत्रपुत्र वरी के वर्ष में जन्म कवा तब पुत्रपुत्र से और भी पूरा दरदर फारोने 'पाठककिगाहा' ग्राम बसता । — श्री जन्मनाथ लाल (विद्या लक्ष्मण प्रसादपुर) द्वारा योनि लुप्तता के आधार पर ।

आपके पिता का नाम या पं० शिवराम पाठक । आप पाँच माईं से । पाँचों में आप तीसरे से ।^१ तेरह वय की अवस्था में 'बैद्विगहा' ग्राम के पं० शोभानाथ पाठक को कन्या से आपका पाणिग्रहण-संस्कार हुआ था । किन्तु, आप अल्पकाल में ही विधुर हो गये । सब से ईश्वर भक्ति की साधना में ही आपके दिन बीत । आपका व्यवसाय बहुत ही कष्ट में व्यतीत हुआ । पिता की आर्थिक स्थिति सशुद्धी न होने के कारण आपने गया जिले के मकसूरपुर नामक ग्राम में, अपने शूबके वहाँ रहकर प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की । कुछ दिनों तक विद्याध्ययन के लिए आपको कटक (छड़ीवा) भी जाना पड़ा था ।

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् आपका सम्पूर्ण जीवन एक प्रकार से, टेकारी-राज्य (गया) में ही व्यतीत हुआ । एक दानवीर के रूप में आपकी अशुद्धी ख्याति थी । गरीबों की सेवा करना आपका प्रधान कर्तव्य था । आप बराबर अहिंसापुर (गया) के रामाङ्गल मंदिर में रहकर कृष्ण-भक्ति का पथ बनाया करते थे । कहते हैं, रात में आपको मम्बान् कृष्ण के दर्शन भी होते थे ।

आप ज्योतिष, दर्शन एवं व्याकरण के गुरुराज विद्वान् थे । हिन्दी और संस्कृत-भाषाओं पर आपका अद्भुत अधिकार था । आपका अक्षर बड़े सुन्दर होते थे । संस्कृत में आपने अनेक पुस्तकों की रचना की थी । हिन्दी में आपने श्रीवाल्मीकीय रामायण और भीमदमायवत का जो पद्यानुवाद किये थे, वे 'सहित रामायण' एवं 'सहित मायवत' के नाम से प्रकाशित हुए थे ।^२ पुस्तकालय आपकी तीसरी हिन्दी रचना है—'वत्सनारायण विनीत' । इनके अतिरिक्त, आपने हिन्दी में विशेषकर मगही भाषा में, अनेक छन्द पद्यों की रचना की थी, जिनका अब पता नहीं चलता । सं० १९११ वि० (सन् १९०४ ई०) में आश्विन शुक्ल पक्षी (एकादश) को, कुंमलन में आप योसोकनाची हुए ।^३ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले ।



वाल्मगोविन्द मिश्र

ज्योतिष-गणना के अनुसार आपका नाम 'कमलेश' पड़ा था । साहित्यकारी के बीच आप इसी नाम से प्रसिद्ध भी थे । आपकी रचनाएँ 'कमलापति', 'वाल्मगोविन्द' और 'गोविन्द' नामों से भी मिलती हैं ।

१. सभी जातियों के नाम बराबर से एक प्रकार हैं—नेत्रनाथ भवनाथ, हरिनाथ देवनाथ और लक्ष्मीनाथ ।

२. वे दोनों पुस्तकें अर्धराज्य पुस्तकालय लौक, बरबाछिटी, के पत्रों से प्रकाशित हुईं थी, पर अब दुर्लभ हैं ।

—श्रीमतीप्रभारण्य सिद्ध (अदरारा बैद्विगहा, मुकलपुर) द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार ।

३. कहते हैं 'पद्मी पुरु के पूर्व करने तक पर बराबर एक दिवा या कितने जातों के शत्रु को विधि बंधन का बन्धक था । १४ १२ भी न मिला ।—सं०

आपका जन्म गया जिले के बहानाबाद सब डिप्टीमन में, अरबल माने के अन्तर्गत बिलबारा नामक ग्राम में, सं० १९०१ वि० (सन् १८८४ ई०) की चैत्र-शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था ।^१

आप शाकशीरीय ब्राह्मण थे । आपके पिता का नाम प० रामबचश मिश्र और पितामह का नाम प० बसुदिराम मिश्र था । आपका कुल विद्वा एवँ सवाचार के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था ।^२ आपने अपना विद्यारम्भ अपने पिता से किया । आप उन्हीं से लगा वार स्यारह वर्षों तक वेद, व्याकरण, ज्योतिष और काव्य-साहित्य पढ़ते रहे । इसके पश्चात् काशी जाकर आपने वहाँ ऊँ प्रसिद्ध पंडित श्रीधराराम मठ से व्याकरण एवँ बर्मशास्त्र का अध्ययन किया । फिर, आगे बढ़कर सुविख्यात विद्वान् भीरगाधर शास्त्री के पिता श्रीनृसिंहबच शास्त्री से भी काशी में ही आपने साहित्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की । इन्हीं दिनों आप मारकण्डेयी के सहाठी भी रहे । उनसे आपकी गहरी मित्रता थी ।^३

आपने अपने जीवन के बाईसवें वर्ष में अपनी पढ़ाई छोड़ दी । उसके बाद आप काशिराम के वहाँ, रामनगर-बरवार में पाँच वर्षों तक रहे । तत्पश्चात् लगभग तीन वर्षों तक विमलनगरम् के महाराज के संस्कृत विद्यालय (काशी) में आप साहित्य-अध्यापक थे । सं० १९३१ वि० से सं० १९५० वि० (सन् १८७४ से १८९३ ई०) तक आप सीपाटन और बेरी रजवाड़ों की राजधानियों में प्रमथ करते रहे । सं० १९५१ वि० (सन् १८९४ ई०) में आप भीमान् महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह के दरबार में नियुक्त कहे आये, और सन् १८८० ई० (सं० १९५४ वि०) तक रहे । नियुक्ते के दरबार से लौटकर आप स्वामी रूप से अपने जिले में ही रहने लग । वहाँ टिकारी के राज-द्वारस्कूल में हिन्दी का अध्यापन-कार्य करते रहे । इसी समय बंगाल की संस्कृत-परीक्षा में उत्तीर्ण होकर आपने 'काम्य निधि' की स्थापि प्राप्त की ।

आपके चार पुत्र हुए, जिनमें दो (भोप्रभाकर मिश्र और भीरामभूत मिश्र) का देहांत सं० १९५९ वि० (सन् १९०२ ई०) में हो गया ।^४ शेष दो पुत्र (भीनिस्वानन्द मिश्र और

१ 'मिथिला' (साहित्य, सं० २० वि०, जनवरी सन् १९४४ ई० वर्ष ३ सं० १०) पृ० १७७ ।

२. आपके पिता विद्वा एवँ बड़े ज्ञान व विचक्षण मिश्र बचन-विद्या और पाठ्य-नवीति के अनुभव विद्वान् थे । वे शेष जग में छात्रों का वैचकर पंचांग नियोज्य करते थे, विदे देहात के अग्रज सिधकर से जाते थे । जनजीनों के बचाने हुए पंचांग भाष्यक उनके वर्तमान बंशधरों के पास है । उन्हें देहात दर विद्या की विद्या समशीलता और अत्यन्त ही परिष्कृत मिल जाता है । आपके पितामह पतिव्रत-सिन्धु प्रयोग व बचनकार मठ के, शिष्य थे । आपके बड़े ज्ञान के छात्रों के राजानन्द विद्वान् श्री रामसिंहबच स्वामी से शिक्षा पाई थी । वे मिथिला-राज के प्रधान राज-पंडित और वेद, बर्मशास्त्र तथा ज्योतिष के पारंगत विद्वान् थे । हिन्दी, संस्कृत और ब्राह्मी में लक्ष्य लक्ष्य हुए बरिष्ठ हैं ज्ञानी हैं । अपने समय के वे पुराण बंशिक थे । —सं

३ इसके प्रमाण में आज भी मारकण्डेयी के सिन्धु जगजग जगदीश वर जगडे बंशधरों के दात वर्तमान है । इन वर्षों के देखने से बह बड़े ज्ञान का पूजा जगजा है कि मारकण्डेयी संस्कृत के वेद पर भी बचते थे । वे एक सुप्रसिद्ध हैं पर दुर्लभ हैं । —सं

४. आरंभ के दोनो पुत्र भी बचपों के विद्वान् थे ।

भीरुनाथ मित्र जावित है। इनमें प्रथम से कुछ मतभेद हो जाने के कारण अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप पड़ोस के हो 'बासस्टॉड' नामक ग्राम में जा गए।^१

आपका देहास्य बानस नथ की आशु में, सं० १९२२ वि० (सन् १९१५ ई०) की अमहन-सुदी एकारशी का हुआ।

आप संस्कृत, पासी^२, हिन्दी, अरबी, फारसी, बँगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु आदि कई प्रमुख भाषाओं के पंडित, संस्कृत हिन्दी के कुरुक्षेत्र कवि और एक सफल सम्पादक भी थे। आपने गजल, विहाग, दादरा, कजली आदि गीतों की रचना संस्कृत में बड़े उत्कृष्ट ढंग से की है। आपकी अधिकांश हिन्दी-रचनाएँ 'बिहार-बंधु', 'पाठशुभ', 'साहित्य सरोवर', 'प्रियंवदा' 'साहित्य चंद्रिका' आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं। अन्तिम दिनों का तो आपने सम्पादन भी किया था।^३ आपकी काव्य-रचना छ महाराज लक्ष्मीरत्न सिंह तथा महामना पं० मदनमोहन मालवीय^४ आत्मिक प्रभावित थे। पुस्तकाकार आपकी कोई हिन्दी रचना नहीं मिली।

उदाहरण

(१)

वारि पदारथ देन के हेत सुचारु सुचार भुजा धरती ही।
जो सुव भक्त ते वीर करै छिन में तेहि प्रानन को हरती ही ॥
र्यों 'कमलेश' दया करिके दुख दारिद दोनन को वरती ही।
भारथ घन पुकारत हौं जगदम्य विलम्ब कहा करती ही ॥^५

१ आपने दक्षिण चीन पं० मोहनराज विम (साहित्य-व्याकरणाचार्य, पत्रिकाधीन, अरबल तथा) से संवत् २०११ वि० (सन् १९१५ ई०) में आपके 'कमलेशविज्ञानः नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ को प्रकाशित किया था। ठीक उसी और अन्य पुस्तकों का वह हस्तित ग्रन्थ काव्य-ग्रन्थों के लिए दर्शनीय है। कहीं-कहीं परतेनुकी को एक चिट्ठी का पत्र और कहीं के बने संस्कृत के दो बने का प्रकाशित है। कालेराजी की बीवनी थी है। श्रीमोहनराज मित्र से ठीक पुस्तों में बने अपने 'सम्पादनविनियोग' में आपके बीवक और काव्य की विशेषताओं पर हिन्दी में बने सुन्दर ढंग से प्रकाशित काव्य है। कहीं-कहीं आपके सौंके संस्कृत-रचनाओं के ठीक प्रकाशनों की सूचना भी है। एक संस्कृत-रचनाओं में एक 'कविता-सुसुधांशु' है, जिसमें आपके 'ब्रह्मवाच-विराट' भी हैं।—सं०

२ अलि-व्याप के तो आप पूर्ण मर्मज्ञ थे। कहे हैं वीं मित्रों से कुछ भाषा पर भी कुछ किया है वह कालेराजी के हीन्य का ही परिचय है।—सं०

३ एक शिरो (एक-सम्पादन-ग्रन्थ में) अरब तथा मकर के भीमापुर हुएसे में अविद्यार रहते थे।

४ सं १९०५ वि० में इन्होंने आपकी कविताओं से प्रभावित होकर श्रीमद्याजीजीवराजकाव्य की एक कवि आपके द्वारा-अरब-नथ की थी।—सं०

५ 'समय-वर्षिका' (विमासिक, सं १९०६ वि० भाग १४, अंक २) पृ० ५२।

(१)

तेरे तास-मात उत धोखे ना पठाये मोहि,
 निज मन ते ये नाहिं भावनो सकतु हैं ।
 द्विज 'कमलेस' इतै गुरुजन मेर सर्व
 हाय इतहू त उठै नाहीं पठवतु हैं ॥
 तुव मय रंग रूप यौवन रखीले बोल
 सुमिरि-सुमिरि प्रात जीवन घरतु हैं ।
 एरी प्रात प्यारी ! तेरो विरह-पयोनिधि में,
 साख को अहाज भाज वूहन बहतु हैं ॥^१

(२)

भाई करि गोन पच दिवस रहा पो मीन,
 मुरत बिदाई ते जुदाई दुख देन भौ ।
 कहि ना सकत कछु लाज गुरु सागन तैं
 सुखद सुमौन सो कलेस ही को ऐन भौ ॥
 द्विज 'कमलेस' नेकु खैन दिन-रैन हू न,
 गत सुख-खैन भौ विनिद्र भुग-नैन भौ ।
 छी की सुधि रसिक वियोगी उपरोगी मयो,
 सखित सखा को भीम भोगी मनो मैन भौ ॥^२

(५)

ए अलि, अकेली चारु अम्पक की बारी बीच,
 भोड़ि पट पौड़ि में रही री परंजक में ।
 मंद मंद आय तित नन्द-सूनु भीषक ही,
 मैन-भवमाते मोहि सीमा गहि अंक में ।
 कहत वनेन, पै छिपावती न तोसों कछु,
 राख्यो रक्ति-रंग 'कमलेस' निरसक में ।
 वसिगो हमारो उर अन्तर सु वाके स्यास,
 गसिगो बसक बारहू भौ मन-भयंक में ।^३

१. श्रीमद्भागवत (५.१) द्वारा मात्र ।

२. कदा ते प्रात ।

३. बरी ।

(५)

मन्द मन्द घूँद बरसावै सरसावै पीर
उमडि घुमडि घूमि घेरि भासमानै री ।
बिज्जु छिटकावै चारु चोट घमकावै तैसो
विरह जगावै पिकी-फूक-बाम गानै री ।
हो तें कडि प्रानै करि खाहस पयानै वानै
वेधै 'कमलेस' वीर बैरी पंच वानै री
अरज न मानै नेकु हरज न बाको जऊ
गरज न जानै मेघ गरज न जानै री ॥'

(६)

मोरें भाजु भाये कित सु-निसु बिताये नाथ
विनु गुन मजु मोती-भास कित पाये हैं ।
पीक-पंक-बिह्वनि ससाये अलसाये नैन
उर्ज अरुनाये यवें हंडु प्रति भाये हैं ।
कवि 'कमलेस' भास आवक सगाये सास
कालिमा सुकज्जस की अघरनि छाये हैं ।
सुख सरसाये श्री विनोद बरसाये भाजु
मेरो मन भाये बर वानक बनाये हैं ॥'

(७)

सहज सुवासकों के संग सुख पावें श्याम
गोधन बरावें गुहरावें नाम टेरि टेरि ।
भावैं दिग जे ते नित्य विवुष विरोधी तिरुहैं
पकरि पछारि मारैं भूमि रज गेरि-जोरि ।
सारदा सुरेस संभु गिरिजा गनस आदि
गावैं 'कमलेस' जासु गुन-गन फेरि फेरि ।
कृज-वन जावैं, बर बांसुरी बजावैं राग
रागिनी सुनावैं श्री चित्तार्थ हंसि हेरि हेरि ॥'



१ श्रीमोहमररक मिम (बरी) अण अण ।

२ अणो के अण अण ।

३ बरी ।

रामफल राय

आपका जन्म सं० १९०१ वि० (सन् १८८४ ई०) की विजवाइली को, छारन जिसे के 'वाजपुर'-ग्राम के प्रसिद्ध जाति के एक परिवार में हुआ था। आपके पिता का नाम था मृगनाथ राय, जो बहुनाथ राय के नाम से भी प्रसिद्ध थे।*

आप दुर्गा के उपासक थे। कहते हैं, मृत्यु के कुछ काल पूर्व आपका मस्तिष्क विकृत हो गया था।^१

आपकी गवना हिन्दी के मुकबिलों में होती है। आपके काम्य-गुद से छारन-जिसे (बरोली-जाना) के पैचनेनिया-ग्राम निवासी अष्टशरीकवि।^२ छारन तथा उसके आसपास के माठ लोग आज भी अधिकतर आपकी रची कविताएँ सुनाते हैं। आपके कई छंदों की मापा पद्याकार की तरह सभी-संबरी हैं। अनुपास-योगना में भी आप सिद्धहस्त थे। हिन्दी में पुस्तकाकार आपकी दो ही रचनाएँ मिलती हैं—(१) विविध विनोद^३ और (२) पाषण-बलीची।^४

आपकी मृत्यु लगभग ४५ वर्ष की आयु में सं० १९४५ वि० (सन् १९२८ ई०) के आसपास हुई।

उदाहरण

(१)

लता सागें लख में लमालन में पाठ सागें
सोनो-सोनी छटा छिति पर दरसैं सगें।
घोसि-घोसि केकी मेकी द्वन्द्व हैं मचायें सोर
घाबा भुरवा के चहुँ ओर दरसैं सर्गें ॥
नाहक रिसानी में अजानी रितु पाषण में
'रामफल' प्यारे विना पीर सरसैं सर्गें।
दोऊ पद बँदि के गोविन्द गुहराता आज
मुँद-मारि मारिय मुसन्द वरसैं सर्गें ॥^५

१ ओसपदेव कवि (सीतलपुर-बरेल, उत्तर) द्वारा प्रेषित सूचना के अनुसार पर। यह नाम अक्षर-मपर से अक्षर १४ अक्षर परिवर्तन द्वारा कठोर के नाम से पर लिख है।

२ ओदुर्गाशरीकमण्डल विद्व (बरोलीपुर साहाय्य) ने इसका नाम 'बीजवाय' रखा था है।

३ कहा जाता है कि एक दिन एक दिन में मैं दुर्गा के आरके अन्तों में (कर्म-कर्म) पाँके कही—'वा एव ही के पर विद्या अने कर्मक क मूर। तभी से आरका अस्तित्व (विकल्प) हो गया। यदि वह कर्मको ही रचना कही जाय, तो वही अस्तित्व अस्तित्व रचना थी। इसकी वृत्ति बरेल (छारन)-निवासी उमरुअब निरौरी नामक किसी व्यक्ति ने एक दिन में की थी—'श्री ज्ञाना विज्ञान का अर्थ है आर मूर।'—सं०

४ ओदुर्गाशरीकमण्डल विद्व (बरोली) के अज्ञानानुसार वे आरके नाम से। इसका अर्थ-कर्म वही पुस्तक में अक्षर प्रकाशित है।

५ यह पुस्तक अभी तक प्रकाशित है। इसमें दुर्गाशरीक और दुर्गा-शुक्ति की कविताएँ संगृहीत हैं।

६ यह पुस्तक भी प्रकाशित हो है। इसमें बरोली रतो और दसों महाकवि-अर्थों पर बरसित बलापठि खर है।

७ ओसपदेव कवि (बरोली) द्वारा प्राप्त।

झोंगेबी-राज के कर्मचारियों के बीच आपकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। सन् १८५७ ई० के मद्र के बाद राज्यसूक्त होने के कारण आपने दरबारी की प्रतिष्ठा प्राप्त की और महारानी विक्टोरिया की पहली दुपत्ती^१ के दरबार (बाँकीपुर, पटना) में निर्मात्रित किये गये। बंगाल प्रान्त के तत्कालीन गवर्नर ने सन् १८७३ ई० में (२७ नवम्बर को) आपकी ऑनररी मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त किया था। इसी प्रकार सन् १८७५ ई० में आप रोड-सेठ-कमिटी के भी सदस्य बनाये गये।

आपका जीवन बहुत ही सांख्यिक और धार्मिक था तथा आप कट्टर सनातनी थे। विवाह की कल्पलक्ष्मी, तिलक-दोहय की कुपया, बाल विवाह, विधवा विवाह, समुद्र-यात्रा आदि के आप बड़े विरोधी थे, किन्तु हुआदूत, चात-पाँठ खान पान आदि में बहुत विचारवान् थे। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आप स्वयंपाकी भी हो गये थे और अपनी जमीन्दारी का कुल भार अपने ज्येष्ठ पुत्र ताराप्रताप को सौंपकर पुनः काशीवास करने चले गये। काशी में ही, ७७ वर्ष की आयु में, सं० १३७१ वि० (सन् १८१४ ई०) में वीम-कृष्ण १० को, १० बजे रात्रि में, पंचगंगा घाट पर आप कैलाशवासी हुए।

आप एक बहुत बड़े विद्याभ्यसनी थे। बह-वेदांग, दर्शन, पुराण, साहित्य आदि प्राय सभी विषयों का आप सानुराग अनुशीलन करते थे। संस्कृत और फारसी के ही आप मननशील विद्वान् थे ही, आपका विशेष प्रेम हिन्दी पर ही था और उसी की सहा में आपने अपना समय व्यतीत किया। आपकी रचनाएँ समय-समय पर 'हरिश्चन्द्र-चन्द्रिका' में छपा करती थीं। आपका हाग रचित १३ गद्य पद्यमयी पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं, जो अब दुर्लभ हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—(१) प्रबोधचन्द्रोदय (नाटक), (२) रत्नावली नाटिका,^२ (३) संगीत-हरिश्चन्द्र,^३ (४) संगीत-सता,^४ (५) संगीत-मुषा,^५ (६) नीतिछाया रामायण,^६ (७) नीति-उद्यानमाहा,^७ (८) बालबोध,^८ (९) कबली कल्पान (१०) आर्यमठ मासव्य (११) विद्यान्व-वर्षण,^९ (१२) बागमसी-माहरण^{१०} तथा (१३) विद्यामुन्दर नाटक। खैर है कि आपकी रचनाओं के अध्ये सदाहरण नहीं मिले।

१ यह सुपत्ती १ जनवरी सन् १८७७ ई० को जारी हुई थी।

२ यह एक बौद्ध-पद्य है।

३ यह भी एक बौद्ध-पद्य ही है। इसमें आपका जीवन-शीलक प्रकाशित है। हरिद्वार के प्राचीन प्रबोध-दोह-विभाग में यह सुपत्तित है।

४ यह एक बौद्ध-पद्य-संग्रह-ग्रन्थ है।

५ यह एक बौद्ध-पद्य-संग्रह-ग्रन्थ है।

६ इसमें रामायण पर टीका बोलियाव बोधे संपूर्ण है।

७ इसमें भी बोलियाव बोधे ही संपूर्ण है।

८ यह बहुत दिनों तक विना में पाठ्य-पुस्तक थी।

९ यह एक प्रसंग है। यह अजयपुरी ही पर पद्य। इसी में बाल-विवाह विधवा-विवाह आदि सामाजिक कुपत्तियों पर बह-विचार है।

१० इसमें काशी के टीपों की सूची है।

उदाहरण

(१)

नहिं आये कंठ हमारो रे सखिया ।
 जब सगि अमी कलि बिकसत नाहीं
 तब सगि पंथ निहारा रे सखिया
 निसि-दिन बिरह-अगिन तन जारे
 नैन भये अलधारा रे सखिया
 सबत नैन-अल अज-बिरहिन के,
 भरि गये नदिआ नारा रे सखिया ।^१

(२)

थानेपन से हौं रह्यौं, कासी माँहि स्वतन्त्र ।
 याके प्रति महिमा भयो, मो प्रति अद्भुत मंत्र ॥
 हुते असुर मम योग्यवर, श्री कासी परवाद ।
 गुन-निधान विद्या बिसद, यामे नहिं किछु वाद ॥
 तिनके हौं आधीन छूँ, सुनि बहु अचन विवेक ।
 आर्य-धर्म-अभ्यास सहि, प्रगट्यो विषय अनेक ॥
 अद्या बाढ़ी धर्म मे, इष्ट देव प्रति आव ।
 आदि भूमिका हद महे, सुधर्यो प्रकृत सुभाव ॥^२

*

उमानाथ मिश्र

आप समकुरा-श्राम (गारमपुर, पुनपुन, पटना) के निवासी धरयापीन ब्राह्मण थे ।^१
 आपके पिता का नाम था पं० शीनरवास मिश्र । आपका जन्म आपाठ शुक्र पंचमी को
 सन् १८७३ ई० में हुआ था । गाँव की पाठ्याला और एन के घर में आपने संस्कृत की

१ श्रीदेवाश्रमजी (बदौली) द्वारा प्राप्त ।

२ कहीं से प्राप्त ।

३ श्रीचरसनाथ सिंह (गारमपुर, पुनपुन, पटना) द्वारा प्राप्त संस्करण के आधार पर ।

(२)
 गूँघत है घेनी ठरि-ठरि जात वार-वार
 मानन पै मुकुता सटकि सरसै लगै ।
 बाई भाँख फरकि सर्गकि जात नोबा कुद
 बंधुकी बरकि कै उरोज सरसै लगी ॥
 गाय-गाय चातक जनावे कान्ह-भागमन
 सगुन सुहावन धनन्द दरसै लगै ।
 मूँदि मार्तंड को धुमडि करि घेरि घेरि
 बुंद वारि वारिद सुसन्द बरसै लगै ॥'

(१)
 सुरसरि अटान है छटान सों विराजमान
 गोरे गात पचमुख चभु त्रय लाले को ।
 घारे कठ गरस प्रभा सो कहै 'रामफल',
 मानौ जल विन्दु बँज जम्बु हू जमाले को ॥
 फुफ्फे सुभंग भंग धन्विना भरघंग माहि
 जारे है धनंग उपवीत गर डाले को ।
 धारो फल देनहार कृपानिधि है उदार
 मजु रे मन वार-वार चन्द्रमाल बाने को ॥'

(४)
 गज धर्म को दुकूल सोहै कर मे दिसूल
 अपै हिय मंत्र मूल घोड़े व्याघ्र छाले को ।
 मृगी टेरी भावे भो मसान छार सावे
 सर्व रागन को गावे रीके धुनि सुनि गाले को ॥
 भैरोगन घोरमद्र मयो संगी सैन साजि
 त्रिपुर सँहारि चढ़ि नृपम वृद्ध छाले को ।
 धारो फल देनहार कृपानिधि है उदार
 मजु रे मन वार-वार चन्द्रमाल बाने को ॥'

१. शब्दसौन्दर्य (पद्य) का एक अंश ।

२. शब्दसौन्दर्य (पद्य) का एक अंश ।

३. कवि से शब्द ।

(१)

पीत पटा छाजत छटा नीस निचोस भमोल ।
 तक-तकि छवि छकि-छकि दुठैनि झूसत रग हिंडोल ॥
 ज्यों-ज्यों धरसत मेह लखि त्यों-त्यों सरसत नेह ।
 पससत प्यारी के पिया प्यारी पिय को देह ॥^१

(२)

पीत वसन प्यारे पहिरि, प्यारी हरिष दुकूल ।
 रंग हिंडोलै रधि दियो, जानि समै मुद-भूस ॥
 झूसत झुभावत सखि-सखा, गावत राग मलार ।
 केलि भवन मन-झुंज मे, दम्भति बरस विहार ॥^२



ब्रजविहारी लाल

आप शाहबाद जिले के मट्टकपुर-ग्राम के निवासी थे ।^१ आपका जन्म उछ मास में ही, सं० १६०१ वि० (सन् १८४४ ई०) में, अमहन सुरी ६ को, हुआ था ।

आपके पिता का नाम था पं० पुरुषोत्तम पाण्डेय । आपक पूर्वज पहले मौजा रानीपुर परयना झमोड़ा, जिला गोरखपुर के निवासी थे ।^२

आपकी शिक्षा कारली और जू से आरम्भ हुई थी । आपका विवाह बचपन में ही हो गया । विवाह क परवात् आप अपने रबशुर बा० काशीप्रसादजी^३ के साथ कारली में ही रहने लगे । जूनी की प्रेरणा से आप लखनऊ और हिन्दी के अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए । एक प्रकार से वे ही आपक काम्य-गुरु थे । कारली में रहते समय आपका परिचय हिन्दी-सबन्ध मारतण्डु बाबू हरिश्चन्द्रजी से हुआ । उन्होंने साहित्य रचना की दिशा में आपको बड़ा प्रोत्साहन दिया । सं० १९१७ वि० (सन् १८८० ई०) में, आपन पिता की मृत्यु हो जाने क बरबाद, आपको पुनः मट्टकपुर वापस आकर परिवार का भार समालना पड़ा ।

१ श्रीकवचेल 'कवि' बरो) इउ पाण ।

२. श्रीपुत्रवत्सल विहार' (भारत विज्ञान-विद्यापी) इउ बाव ।

३ श्रीरंभा लाल (बचपनेपर, बगटी) इउा प्रेसिन् मुबमा के अचार बर ।

४ श्रीकेन चारकेक-उत्तमिवाी श्रीकालन दूनरे-अपनाथ थे । मुमसमाकी रतनन-अल मे रन बंठ की बरी बरिदा थी । श्रीकेन अमादा श्रीर कयके अमचान के नू-नाय के अन्तिक थे । बरैली के अउरकत के अरक अलका मे रहदारार-अिने मे दंकातर बर मट्टकपुर वापक अमन बरकर एवे लये —धं०

५ श्रीकेन कयके विज्ञान् नैर कवि थे । अगती मे अिस्तिवार थे ।

उदाहरण

(१)

अधुष अधीर छिन धीर न रहत नेक
वावरो सो चषस सुवास-रस पागै ना ।
सुमन सरोज जूही मालती का दूर करि
सेमर सो आसा भूरि पूरि कह्यै सागै ना ॥
बाने-बान ठौर 'ठग' कादर कपूत फँस्यो
करु हगकार जात विषम-राग रागै ना ।
धरन-सरोज विन्ध्यवासिनी तिहारे छोडि
मधुप हमारा मन और कह्यै भागै ना ॥^१

(२)

जेते जगतीसस मे प्रकट घराघर हँ
जिन्हँ निज जानि नेह भँखियाँ दरस तू ।
कहे 'ठग' स्वेत अस धायो सोक-सोकन म
जीवन के मूल यातें सवम सरस तू ।
आचक निहास करी पीरे-पीरे जाय-जाय
नेह भरे तैनन सो प्रोखिहू परस तू ।
करो करजोरे जगदम्ब या अरज तोत
निज-पद-भक्तन पै भक्ति ही भरस तू ॥^२

(३)

ननदी ओ जेठानी करै घर घेर कमोरिन मैं रंग बोरियो ना ।
इत भाई हँ सास की धारी भवै हम पाव परै भक्तभारियो ना ।
रस रंग सुढग करो हित सो 'ठग' नेह ते सो मुख मोरियो ना ।^३
मह मानिये मोरी तिहोर सखा सुम सास गुसास सा बोरियो ना ॥^४

१ 'आपकल-कानू' (परी), पृ. १० ।

२ परी ।

३ 'रस रंग के बरतल का बरतल' इत प्रकार लिखा है— 'वेह बडे मुख मोरेकी का'—देवर, 'दूरल' (परी) पृ. २ ।

४ 'माल-कल-कानू' (परी) पृ. १२ तथा 'दूरल' (परी) पृ. १२-३ ।

(५)

'ठग' पापी कपुत कलकी तऊ पर कंडक से ऋकभोरियो ना ।
 नित ही पट सद्रु जो मेरे अहँ तिनको निज कंद सों छारियो ना ।
 मम सारी कुवानिन को सुनिकै अब हाय हिये विप घोरिये ना ।
 जगदम्ब भरोसो यहा तुमरो भव वारिधि में हूमै धारियो ना ॥'

✽

धनवारीलाल मिश्र

आप भागलपुर के शास्त्रिक वरन्धे के निवासी काम्बुम्बर ब्राह्मण थे ।^१ आपका जन्म सं० १९०२ वि० (सन् १८५५ ई) में हुआ था । आप हिन्दी और देश के अनन्ध मछ थे । मृत्यु शय्या पर पड़े-पड़े मी हिन्दी की पुस्तक सुनते और देश की दशा पूछते रहते थे । मगधगोला, उपनिषदों और वल्लरी-रघुसई आपकी प्रिय पुस्तकें थीं । साहित्यकारों का सम्मान करने में मी आप अद्वितीय थे । आपने कई समार्यें सुनवाई थीं । कहते हैं कि आप एक अठापारण छाहती पुद्ग थे । जब आप कुल २८ वर्षों के थे, तमी आपन कवल साठो से एक बाय को मार डाला था । आपके पाँच पुत्र थे, जिनमें पं० शिवसुन्दारे मिश्र हिन्दी के द्वितीय-शुगीन कवि हैं, जो भागलपुर में आज मी बकासल करत हैं । आपक एक मिश्र मगलू तिवारी^२ थे, जो निकासी ग्राम (अथा) में निवास करते थे । उन्होंने ही आपका हिन्दी में काव्य-रचना की और प्रवृत्त किया । आपकी काव्य-रचनाएँ छोड़बोली और मत्रमाभा दोनों में ही मिलती हैं । आपकी पुस्तकाकार रचनाओं के नाम हैं—(१) ज्ञानविनोद (ज्ञानवाटिका), (२) नाटक, प्रहसन आदि ।

आप सं० १९७५ वि० (सन् १९१७ ई) को कार्तिक सुदी गोपाहनी को परलोक विपारे ।^३

१ 'बहोरपा (साहित्य वर्ष २, भाग २), पृ० ७२-७३ में प्रकाशित मी लखनऊ मिश्र के लेख से । —देखिए, 'पूरान (वही) पृ० ५०७ ।

२ 'विमलसु-विनोद' (वही, अनुर्ध भाग प्रथम सं० १९६१ वि०) पृ० २०४ ।

३ आपलपुर-मिकानी में टिपणविलमबी के बचनसुन्दार आपने अपनी साठो एकदा इनके नाम पर ही की थी । वे कुछ कविता करवा जो बनने से । लेखक श्रीकमल' (साहित्य) में लिखा है कि 'म नामे वचो भाप भनसुन्दर के नाम से ही अपनी कविता प्रस्तावे से ।'—देखिए, 'विमलसु-विनोद (वही) पृ० २०८ तथा 'कमल' (साहित्य, दिनकर, सं० १९१७ ई०, भाग २, सं० १२), पृ० ३२० ।

४ 'श्रीकमल' (वही) पृ० ४५ । विमलसु-विनोद में प्रकाश विमल-कमल सं० १९७१ वि० (सन् १९१५ ई०) प्रकाश है । —देखिए, 'विमलसु-विनोद' (वही), पृ० २०२ ।

शिष्टा प्राप्त की थी। लेखक के अतिरिक्त आप सफल गणितज्ञ भी थे। आपकी रचनाएँ हैं—(१) गणित-श्रीषी (२) गणित-श्रीषी (३) रेखागणित (४) गणितसार (५) रससार (निबन्ध) और (६) खेती-वारी।^१ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



ठग मिश्र^२

आप कुमरौं (शाहाबाद) के निवासी शास्त्रीय का रूप थे।^३ आपका जन्म सं० १६०२ वि० (सन् १८५५ ई०) में हुआ था।^४ आपके पिता का नाम था पं० बान्सी मिश्र^५ और पितामह का पं० गंगाधर मिश्र।^६ आपके एक अनुज भी थे, जिनका नाम था पं० सैमूह मिश्र। आपके पुत्र पं० विश्वनाथ मिश्र^७ अभी हाल तक जीवित थे।

आपने यज्ञोपवीत-संस्कार के पश्चात् आपने माधपुरेय क पुरोहित पं० ईश्वरदत्त मिश्र से प्रक्रिया स्वीकारण (सारस्वतचन्द्रिका) तथा काव्य का अध्ययन किया। इसके बाद आपने दलीपपुर (बगदीशपुर, शाहाबाद) के म० म० पं० रघुनन्दन त्रिपाठी, विद्यासागर से 'स्त्रोत्रोक्तार्थकार' और पं० राधाकृष्ण चौधरी ('विश्वकाम' कवि) से विमल तथा मयमाया के जनक ग्रंथों का अध्ययन किया। साहित्य का अध्ययन समाप्त कर आप संगीत की ओर प्रवृत्त हुए। इस विद्या में आपके गुरु हुए संगीताचार्य बन्धू मसिक। उनके निर्देशन में संगीत शास्त्र का अध्ययन कर आपने सितार और मूरंग बजाने का भी अभ्यास किया।

१. वे शशी रचनाएँ पुस्तकालय में अहमदाबाद प्रेस (बाँधीपुर, परना) से प्रकाशित हुई थीं। 'विन्दी पुस्तक-समीक्षा' (वही) पृ० ३८० में अतिरिक्त जगन्नाथ मिश्र का यह ही बात पढ़ते हैं, किन्ती 'खेती-वारी' नामक पुस्तक सन् १८८२ ई० में अहमदाबाद प्रेस से ही प्रकाशित हुई थी।—सं०

२. आपका अति संक्षिप्त परिचय श्रीविभूषणनाथ सिंह 'नाथ' तथा श्रीहरप्रकाशस्यार गुप्त ने भी लिखकर प्रकाशित किया था।—देखिए, 'मनूरी' (मसिक, वर्ष ६ अंक १, संख्या २ सितम्बर, सन् १९२७ ई०) पृ० २६५ तथा 'पूरण' (साप्ताहिक, अंक १५, अंक ३५, पुस्तक, सितम्बर, सन् १९३१ ई०), पृ० ३०।

३. 'विश्वकाम-विश्वर' (वही, द्वितीय अंक) अंक सं० २२२२ पृ० १२६०।

४. विश्वकामुर्ध्व में आपका जन्म अंक सं० १६०३ वि० (सन् १८५५ ई०) उल्लेख है।—देखिए, वही।

५. वे कुमरौं के महाराज महेश्वरप्रसाद सिंह के बरफरी पंडित थे।

६. वे श्री० अक्षयधर मिश्र से प्रियतम थे। उनकी प्रिय कन्या उनकी सुन्दर शरीरिणी के रूप में थी। इनके इसी पुत्र से सुप्रसिद्ध महाराज बख्तखान सिंह ने दण्डे अपने काल में रखा था। इनके दो पुत्र थे—बड़े से लखन मिश्र और छोटे से बाबूजी मिश्र—देखिए, 'अक्षयधर-कामु' (वही), पृ० १८ २६।

७. वे व्याकरण तथा कौटिल्य के अच्छे ज्ञाता थे।

आप पहले महाराज राधाप्रसाद सिंह के आश्रय में रहकर 'राजकुमारवी' की पूजा करते थे। कहते हैं, उक्त महाराजा के दरबार में आपका बड़ा सम्मान था। किन्तु, कुछ ही दिनों के बाद आप पराधीनता का बंधन ढीढ़कर देहाटन के लिए निकल पड़े। इस यात्रा-क्रम में आप सबसे पहले दरमंगा पहुँचे। उस समय महाराज लक्ष्मीधर सिंह साठ साहस से सिताम पाने के उपलक्ष्य में अपने दरबार में आनन्दोत्सव मना रहे थे। उस दरबार में उपस्थित होकर आपने अपने आशुकवित्त-गुण का परिचय दिया, जिससे महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने आपको प्रसुर पुरस्कार प्रदान किया। दरमंगा से आप गया जिले के मकसूरपुर के दरबार में पहुँचे। वहाँ के राजा ने आपको एक समस्वारी, जिसकी पूर्ति आपने बड़े ही अच्छे ढंग से की। इस पर राजा ने आपका सम्मान किया। इसी प्रकार अनेक वर्षों तक आप विभिन्न राज्य-दरबारों में भ्रमण करते और पुरस्कार प्राप्त करते रहे। देश भ्रमण से जो धर लौटे, जो फिर कहीं निकले नहीं। एक अच्छे कर्मकांडी शास्त्र की तरह आपका ठारा दिन पूजा-पाठ में ही व्यतीत होता था। आप प्रतिदिन ब्रह्म-संभ्रा-सर्पण और प्रति भ्रमावस्था को पिंडदान करते थे। अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक आप जगदम्बा की पूजा-आर्ति में ही मग्न रहे। बुर्यासस्यती का पाठ आपका निश्चय का नियम था। वात्सवी एवं शारदीय नवरात्रों में विन्ध्यवासिनी मंगलती की आराधना के लिए आप प्रत्येक वर्ष विन्ध्याञ्जल नाम लाया करते थे। मकर-संक्रान्ति में प्रयाग भी आप नियमित रूप से जाते थे।

आप फारसी और उर्दू के भी हाठा थे। हिन्दी और संस्कृत के तो आप एक अच्छे पंडित थे ही। प्राचीन कवियों की हजारी कविताएँ आपको कंठस्थ थीं। आप स्वयं भी मगमापा में बड़ी ही सरस, सुभास्य और रोचक कविताएँ किया करते थे। आप सं० १८५१ वि० (सन् १८८४ ई०) में परलोकगामी हुए।

१. उक्त दरबार में आपने जो बंदिशों पढ़ी थी, वे इस प्रकार हैं—

(क) महाराज पहले सब लोच के समक-भुत
 येण कियो सिठै जिठै जालो मज गालो है।
 सिधो है सिताम साठ साहस जू पटना में
 राजस समक 'अन' सुक से सुभायो है।
 लोच के समक लीके पुर की परारे बदे,
 उपरी ठे जालकम पाव तुल्यो है।
 आनंद बचारे पावे मकसीलरधनिहपुर,
 जानो राजसरी और भव सुभायो है।

—'जलनचरित-कानू' (वरी) पृ० ११।

(ख) कथविदुष सुभासती जार ली आनंदसुत सुभा सुभासत।
 वारी सुभास के लीग से सुप चीन में निरुप्य दे दिवहात्मक।
 वारी करे मूच बाहु की 'अन' निश्च हरी सुधिपा-पुल जालन।
 निश्च सुभास ठक करैल दे मीठि ली राज करी हम साधन ॥

—वही पृ० ११-१२।

सुझार थे। वहीं आपने अपने बहनोई मुशीसाहबों से फारसी पढ़ी और 'हरे कृष्णव मोविन्दाव बासुदेवाव नमोनमा' के रूप का पाठ अभ्यस्त किया।

बारह बप की अवस्था में आपकी इच्छा कि बिन्दू आपका विवाह महाशरा निवासी मुशी सुबंशसाह की पुत्री से हुआ। पर जब बार बपों के मार द्विरागमन हुआ, तब आपका मन सांसारिक माया प्रपञ्च से विरक्त-छा रहने लगा और आप साधु-संतों की खोज में ब्रह्मन्त रहने लगे। आप जिसे के 'बराबर पहाड़ पर भी महात्माओं के दर्शन और सत्संग के लिए बाबा करते थे।

एकाएक फारसी की पढ़ाई से भी आपका मन खिन्न गया। आपकी मनस्त्विति देख-समझकर आपके सुझार पिता ने आपको अपना 'ठाईर' (सहायक-सोपक) बना लिया। नवाश में ही आपने मौलवी काशी साहजमा खॉं से अरबी पढ़ी। फिर मुंशी रामचरण साह से पढ़ने लगे। अपने गाँव (नाविरा) में भी मकदुमपुर-सेताहाड़ा (बाढ़, पटना) के मौलवी शुजापठ अली से आपने अरबी का ज्ञान प्राप्त किया। इस तरह विद्याभवन से सत्रुराग बढ़ा, ही आपने पिता से विद्वत् और काम्य तथा पं० मतिरामजी से 'शारस्वत व्याकरण' पढ़ने लगे। पं० ठाकुरदत्तजी से आपने भीमदमगजदगीता पढ़ी। विद्यापुराण-वृद्धि कि इसी क्रम में आपने पुनः छ-महीनों तक बंगोक्षिपा (विहारशरीर) के एक नामी आसिम और कासिम फकीर मौलवी बकीर जहीन से फारसी भी पढ़ी थी। किन्तु आपके मन में बैराम्य का जो खरब हो चुका था, उसका प्रकाश दिन दिन बढ़ता गया। बाबा सोहनदास 'रामजी' नामक एक सिद्ध सन्त के सत्संग से प्रभावित होकर उन्हें अपना गुरु बना लिया। आपका मुकाम क्रमशः सन्त-समाज के सत्संग की ओर हीटा गया, इसीलिए जीवन निर्वाह के निमित्त कई स्थानों में रहने पर भी कहीं आपका मन टिका नहीं।

आपने जानपुर के महारमा विश्वम्भरदासजी से मांगाम्नास की बीषा मास की ओर फिर बाबा बीपकृष्ण भारती को अपना गुरु बनाया। सवमग दस बपों तक आप बीय साधना में ही लगे रहे। सं० १९३१ वि० में श्रीव-कृष्णपंचमी (१४ मार्च, सं० १९०३ ई०) को ३८ बप, ८ मास और २४ दिन की आयु में आप परम नाम विभारे।^१

आपकी लिखी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं—(१) सज्जन विज्ञास^२ (एक ही अक्षरठ रोरी में सत्संग मक्ति-योग-सम्बन्धी विचार और मजन), (२) निर्वाणशतकम्^३ (एक ही उशील रोरी में जुने हुए एक ही सम्वाओं की बुद्धिर्वा), (३) श्रीगुरुदम विनास^४ (गद्य में अष्टाष्टबोध, प्राणाश्रम, ज्येवरी, पदकम, समाधि आदि का वर्णन),

१ 'बराबर' कि लेखानुसार आप सं० १८८८ ई० में, जयबप सतर बपों की आयु में साहजसाही हुए।—देविद, वही पृ० ६२८।

२. सं० १९३१ वि० (मार्च १८०३ ई०) में प्रकाशित।

३. अश्वी सं० १९८२ ई० मद्रास (१२ अक्टूबर, सं० १८८३ ई०) में प्रकाशित।

४. सं० १९३३ वि० में प्रकाशित।

(४) भीमवृक्षचिन्तामणि (भीमवृक्षमगवद्गीता क 'ऊर्ध्वमूलमपम्याल' श्लोक पर घोसह पृष्ठों की टीका), (५) सत्सत्तरङ्गिणी (गद्य में लिखित पाँच तरंगों में सृष्टि कला, विमृति, कैवल्य आदि का वर्णन), (६) अनुभव प्रमाकर (गद्य में लिखित नव प्रकरण), (७) सन्त-मनः उन्मनी^१ (रामचरितमानस के भासकान्ठ की टीका), (८) पार्वतल बोगर्यन^२ (केवल पाँच श्लोकों का भाष्य) (९) भीमवृक्षसन्तवराज (दो खंड—एक में पद्योक्त श्रुत्य और दूसरे में दृष्टोक्त), (१०) मानस अमिराम^३ (रामचरितमानस की सङ्गठ गद्य प्रयोग विधियाँ—सं० १६६६ वि० में मुद्रित) और (११) परतर अमिषानम् (मुक्ति-स्मृति के प्रमाणों के साथ योगारि के गूढ रहस्यों का वर्णन)।^४

उदाहरण

तस्वों को दस्ता स्वांस में स्वर ल गये ब्रह्माण्ड में ।
 निःसत्त्व पद पाया नहीं स्वरोदय सधा तो क्या हुआ ॥
 कोई नासिका हिय विकृटी ब्रह्माण्ड हू जा जा धुसँ ।
 कुछ भी मरम अनुभव ना अनुभव हुआ तो क्या हुआ ॥
 भनवृद मे सुरती जा लगी भानन्द में जीती पगी ।
 निज राम की धुन को गम नहीं वाजा बजा तो क्या हुआ ॥
 पङ्क-पङ्क के नाना ग्रन्थ को वृत्ती अर्ह ब्रह्मास्मि ।
 अनुभव न मुरीयासीत का वकषक हुआ तो क्या हुआ ॥
 हिन्दू बने कोठ मुसलमान और पडित बने कोठ मोलवी ।
 पाया नहीं विरसम कभी मजहब मिसा तो क्या हुआ ॥
 पूजयो जो नाना देवता भौ व्रत तारय भी किया ।
 सतगुरु सरन पाया नहीं रच पच मुझा तो क्या हुआ ॥^५



१ कश्मिरात वेत (संशुद्ध, ११५) से प्रकटित ।

२ सन् १६०५ ई० में प्रकटित ।

३ सन् १६०९ ई० में प्रकटित और सन् १६१२ ई (सं १६६६ वि०) में मुद्रित—एडिण्ड, 'अथा के लेखक श्री (श्री) (श्री) पू० ४२ ।

४ कानची का पुस्तक कारखाने में भी प्रकटित है—सिरे कश्मीर विभाग १०० सेर है। 'गुप्तारव' नाम से जिसे पहले ४२ मदन भी है जो कश्मीर में प्रकटित है।—सं०

५ श्रीकृष्णस्यार नाम 'उत्तर' (श्री) से प्राप्त ।

चतुर्भुज मिश्र^१

आप गंगा जिले के हुमरिया-नामक स्थान के निवासी थे। आपका जन्म सं० १९०३ वि० (सन् १८८६ ई०) में, भीरामनवमी को, हुआ था।^२

आपके पिता का नाम थापं मधुगम मिश्र और पितामह का पं० देवराज मिश्र। आपके एक बहोदर श्रेष्ठ भाता भी थे, जो नूतन के नाम से विख्यात थे।^३ संस्कृत और हिन्दी की प्रारम्भिक शिक्षा आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। उत्तरात्तर आप लगभग तीन वर्षों तक स्कूल में पढ़े। स्कूली जीवन समाप्त करने के बाद आप कई वर्षों तक गया ट्रेनिंग-स्कूल और हमारीबाग हाई स्कूल में संस्कृत शिक्षक रहे। वही थे आपने अक्सर-महल में किया। लगभग पच्चीस वर्ष की उम्र से ही आप साहित्य-सेवा की ओर मत्त हुए। गया और हमारीबाग में रहकर आपने प्राचीन काव्य-ग्रंथों का बमकर अन्वयन किया, जिसके परिणामस्वरूप आपने हिन्दी में अनेक ग्रंथों की रचना करवायी। आप मछि-साहित्य के कवि थे। मछि के बीच आपकी रचनाओं को आप मो सम्मान प्राप्त है। आपके द्वारा रचित ग्रंथों के नाम इस प्रकार हैं—(१) आस्था-रामायण, (२) गंगाबाणी रामायण, (३) गंगाबाणी भागवत, (४) शरीर-रामायण, (५) उत्तर अज्ञान-कस्तुरिणी, (६) सुबोध-सुबोध (सम्पादन), (७) मनोहर रामायण, (८) सुबोध-सम्बोध (स्वामी ब्रह्मचर्य धरस्वामी के मठ का सम्बन्ध) (९) गीता-सार और (१०) बिरह-वर्षीवी। इनमें आपकी प्रथम रचना सौमिक ग्रन्थ है।^४

आप सं० १९७५ वि० (सन् १९६८ ई०) में हमारीबाग जिले के 'बोरी' नामक ग्राम में, ७२ वर्ष की आयु में परलोक सिधारे।

उदाहरण

(१)

समय का पायकर मनुष्या, तुरत घर से पधारा है।
मिली पुनि राधिका आकर, जहाँ यमुना किनारा है ॥
नहीं काइ तीसरा धर्तवा, मिले दोउ वीर हैं जहँवां।
विहरत सोर पै तछतर, मानो गोटा किनारा है ॥

१ इस नाम के एक और कवि १८वीं शताब्दी में हो सके हैं जो कविता के विद्यार्थी थे। उन्होंने अनेकों में एक काव्य-रचनाओं के अतिरिक्त लगभग-सुत नामक एक ग्रन्थ का अन्वयन भी किया था। कुछ और रचना दिव्य-काव्य (२३वीं शताब्दी) हैं।—देखिए, हिन्दी-साहित्य और विद्या (वर्ग) २० २४५।

२ उन नाम कवि पुनि अत्रुवा विद्यन संघर्ष कथार।

उपक्रम बरवी शिवी, कर्म शीत करदार ॥”

—देखिए, गंगाबाणी रामायण (६ चतुर्भुजमिश्र प्रथम सं० सन् १८९२ ई. दण्ड २४५), १ २४५।

३ “मधुगम मिश्रक देवराज मिश्रक।

नूतनके निकाली श्रेष्ठभाग सार ५

—(वर्ग) २० २४५।

४ रचना अद्यतन में दोहरा शीत श्रेष्ठ (वर्ग) में हुआ था। आपने यह ग्रन्थ भी सम्पादित है।

द्वितीय अध्याय : इक्ष्वाकु की गीता (पूर्वाह्न)

बहकते डार पं चिहियाँ,
 लग पुनि गूँजन भौरा,
 मिसी ज्या भ्राँख से भ्राँखे,
 बमाचम सीस प वेँदी,
 दई गल वाँह काहा न,
 सचक गइ भंग प्यारा के,
 भंधारो छा गई रातेँ,
 मयन के रग मे रातेँ,
 सुनो भुजधार भी वातेँ,
 चले पुनि गीत को गान,

मिने दस वास एक विरियाँ ।
 कुहुँक कोकिल क न्यारा है ॥
 भ्रघर रस चूमकर चाखें ।
 उगी जनु सुक्रतारा है ॥
 मुकाई सीस राधा न ।
 दिया बन्दुभा सहारा है ॥
 मय त्यो काम स ताठ ।
 मयो चन्दा उजारा है ॥
 भय रस रंग में राते ।
 वही यमुना किनारा है ॥'

(२)

सीता को सोच भारी,
 भूने मुके खरारी,
 भव प्रान ही को खोवें,
 भर नौद नाप सोवे,
 त्रिजटा ने देख पाई,
 पहरा तुरत उठाई,
 हनुमान ने विचारा,
 परतीस ह्वँ हमारा,
 भंगुठी तुरंत डारा,
 सीता कर विचारा,
 मन में विचार भाई,
 सई राम नाम पाई,
 बनवास का कहानी,
 यह बात मैं जानी,

रोने सगो बेचारा ।
 सुष ना लिया हमारी ॥
 मिलने की भास धोवें ।
 हम वाट बवसो जोवें ॥
 सपना तुरत सुनाई ।
 वैठी किनार जाई ॥
 कैम कइँ सहारा ।
 त्योँ मुद्रिका किनारा ॥
 मानो गिरा भगाग ।
 दूटा सरग से तारा ॥
 भंगुठी तुरत उठाई ।
 कैस यहाँ पं भाई ॥
 हनुमान ने बखाना ।
 सही है राम राना ॥'

✽

१. 'पधकली भागवत (बही बरम रत्न) १ २१ ।

२. 'यजोहर रामायण (१) चतुर्थ अध्याय, प्रथम सं १११ (४६०) १ २७ ।

सन् १८७१ ई० में आप काशी से फिर मिथिला चले आये। मिथिला में आने पर आपकी नियुक्ति, मिथिला-नरेश महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह (सन् १८८०-६८ ई०) के दरबार में, राजपंडित के रूप में, हो गई। अपने जीवन के अंतकाल तक आप उक्त दरबार में ही रहे। उक्त दरबार में रहकर आपने संस्कृत में अनेक ग्रंथों का प्रथमन किया। मैथिली में आपके द्वारा रचित व नाटक मिलते हैं—(१) छपा-हरण, (२) मायवानन्द और (३) राधाकृष्ण मिलन-सीता। ये सभी नाटक मिथिला के कोर्त्तनिया-नाटकों की परम्परा में आते हैं। इन्हीं नाटकों के कारण आपका स्थान उक्त परम्परा में अति उच्च माना जाता है। आपके नाटकों में 'छपा-हरण' और 'राधाकृष्ण मिलन-सीता' अत्यधिक लोकप्रिय सिद्ध हुए। 'राधाकृष्ण मिलन-सीता' ब्रह्म के रातपारिषों द्वारा ब्रह्ममापा में भी अमूर्तित होकर कई बार अमिनीत हुआ। उक्त नाटकों के मैथिली-गीतों के अतिरिक्त मैथिली में आपकी कुछ स्फुट रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। डॉ० प्रियसन ने आपको प्रथम कोटि का मैथिल कवि बतलाया है। आपका निधन, ५१ वर्ष की आयु में, सन् १८९८ ई० में हुआ।^१

उदाहरण

(१)

अबिरस जसधर गरजत धन रस वरिसत रे ।
 दादुस सङ्कुल रमसत दामिनि धमकत र ॥
 सङ्कित धमकत जसद गरजत करत दादुल सोर भो ।
 तिमिर सङ्कुल करत आकुस निसिय भादब घोर भो ॥
 धवतक देचभि नन्दन जन सुख चन्दन रे ।
 सुर ना मुनि किस मन्दन कन्स निकन्दन रे ॥
 उगल जदुनुस कमल तिनकर सकल जन सुत कम्द भो ।
 मन्द नयन चकोर सम्मद पुरन सारद चन्द भो ॥

१ अक्सर इसकी रचना महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के दरबार में ही की। उक्त दरबार में रहकर आपने अनेक ग्रंथों के सम्पादन में 'द्वैतभाव काव्य-प्रकाश' के सम्पादन किया है। — डॉ०

२ डॉ० प्रियसन-द्वारा 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम परिचय' (पृ०) १०-२० पर।

३ अक्सर इसकी रचना महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह के दरबार में ही की। उक्त दरबार में रहकर आपने अनेक ग्रंथों के सम्पादन में 'द्वैतभाव काव्य-प्रकाश' के सम्पादन किया है। उक्त ग्रंथों के सम्पादन में आपने अनेक ग्रंथों के सम्पादन में भी हाथ डाले हैं। — डॉ०

अमल कमल दस गङ्गान लोचन सञ्जन रे ।
 त्रिभुवन आपद मञ्जन जग अनुरञ्जन रे ॥
 जगत रञ्जन विपद मञ्जन बदन गङ्गित चान भो ।
 नवल जलधर रुधिर तनु भर विजित म्रिगमद मान भो ॥
 मनि मानिक मुकुता कत कञ्जन अमरन रे ।
 जत छस नन्द भयन घन पाभोल गुनि जन रे ॥
 तुरग, गज, रथ, कनक, मानिक, रत्न, मुकुता माथ भो ।
 पावि नट भट गनक घटपट भेल सकल सनाथ भो ॥
 सुर गन सहित पुरन्दर करि सुम अम्बर रे ।
 देखल जटुकुस सुन्दर आपण अम्बर रे ॥
 बरिस सुर गन क्रुसुम परसन मुदित पुलकित अङ्ग रे ।
 देब दुन्दुभि वजत अम्बर होत मङ्गल रङ्ग भो ॥
 नारि छिन्नाभोन दगरिनि कस घन पाभोल रे ।
 हरखित गोपयधु जन सोहर गाभोल रे ॥
 हरखि गावहिं नगर नागरि हरहिं सुर नर ग्यान भो ।
 सुनत अग म्रिग रहत निश्चल छुटत मुनि जन ध्यान भो ॥
 हरखनाथ मन मन दय हरि परसन भय रे ।
 करधु निपति सक्षमीस्वर घन जन उपधय रे ॥
 हरखनाथ सनाथ करि जटुनाथ त्रिभुवन धाम भो ।
 पुरधु मिषिला नगर नायक सकल अभिमत काम भो ॥^१

(२)

सङ्घित-विनिन्द सुन्दर बेस । गज गामिनि परवेश ॥
 अलक-कलित आनन अमिराम । जनि घन-यलित विमल हिम-धाम ॥
 अघर अलित नासा अति सोम । कीर बइसल जनि विम्बक लोभ ॥
 निरखि जुगल कुच पकज-काति । चलखि रोमावलि मधुकर पाति ॥

संसारनाथ पाठक^१

आप 'बाबा रामायणदास' के नाम से प्रसिद्ध थे।

आपका जन्म सं० १६०७ वि० (सन् १८२० ई०) के अग्रहन मास के शुक्लपक्ष में हुआ था।^२ आप शाहाबाद जिले के 'बड़का हुमरा' नामक ग्राम निवासी मारदाज गोत्रीय सरबूपारीय ब्राह्मण थे।^३ आपके पिता का नाम पं० काशीनाथ पाठक^४ और पितामह का पं० देवराज पाठक था।^५ आप घात मारें थे, जिनमें आप सबसे ज़ोटे थे।

आप जब कुल दो वर्षों के थे, तभी आपके पिता का देहान्त हो गया। अतः, आपके पालन-पोषण का भार आपकी माता पर आ पड़ा। आपकी माता न कुल घात पैसे में आपके लिए 'क्षातिक्रमारी' नामक एक फागती की पुस्तक खरीद ही, जिसके सहारे आपने शीघ्र ही फारसी पढ़ना सिखना सीख लिया। कुछ ही दिनों में घर्ष के विना संस्कृत और हिन्दी में भी आपने अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। वास्तव में आप बहुत ही तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति थे; आपकी स्मरण शक्ति भी बहुत तीव्र थी।

आरम्भिक शिक्षा प्राप्त कर लेना के पश्चात् आपने एक नौकरी पकड़ ली। किन्तु, उसे शीघ्र ही छोड़कर आप चारों धाम की यात्रा करने निकल पड़े। तीर्थयात्रा से लौटने पर लगभग पच्चीस वर्ष की अवस्था में, अर्थात् सं० १६३२ वि० (सन् १८०५ ई०) में, आप पुनः एक सरकारी नौकरी पर चले आये। इस नौकरी के सिलसिले में, सं० १६३५ वि० (सन् १८०७ ई०) से सं० १६५५ वि० (सन् १८२७ ई०) तक, आपने बिहार के कई महत्त्वपूर्ण स्थानों का भ्रमण किया। इस समय तक आपका विवाह हो चुका था। जब आप आरा में थे, तब एक दिन अपने मतीजे की पत्नी की एक छोटी-सी बाठ पर^६ आपको अपने घर से बिरक्ति हो गई। अतः, निश्चित समय के पूर्व ही, अर्थात् सं० १६५५ वि०

१ आपका प्रसंग परिचय हिन्दी में अग्रप्रतिष्ठ साहित्य-सेवी एवं श्रीवास्तोशर लखन सिंह 'अधिकार' (मैथिलपुर-बरोवा, आरा) द्वारा लिखित आपकी जीवनी के आधार पर तैयार किया गया है।—देविप, 'दुषा' (मासिक वर्ष २ खण्ड २ संख्या ६ सुन्दर सन् १९२६ ई.) पृ. २००-२१।

२ वही, पृ. २००। आरा-निवासी श्रीवास्तोशरकी प्रथमक जन्म सं० १६०२ वि (सन् १८२६ ई०) के अग्रहन मास के शुक्लपक्ष में हुआ बताया है।—'परिपट्ट' में उनके द्वारा रेवित साधनी के जन्म पर।

३ आपके पूर्व-पुत्रक वही कलिया-बिसे के 'सुरारण्डी' नामक ग्राम में जन्म करते थे। लगभग दस-बारह उम्र परते वे वहाँ से 'बड़का-हुमरा' चले आये।—देविप, 'दुषा' (वही) पृ. २५० तथा मैथिलपुरी के 'जी श्री बाण' (वही) पृ. ११३।

४ वे वही ही ब्राह्मिक कुल थे और आरा की श्रीवहारी बचरौ में जातिर थे।

५ ये भी एक वही ब्राह्मिक व्यक्ति थे। जिस समय रैत का नाम न था, तब समय इन्होंने देवराज गोत्र के छोटे छोटे-बच्चों के दर्शन किये थे।

६ —देविप, 'दुषा' (वही), पृ. २००।

(सन १९८८ ई०) में अपनी नौकरी से स्वायत्त^१ होकर आप पर सं निकल पड़े कहते हैं, जब आप जगन्नाथपुरी जा रहे थे, तब बाहोदर में बहुत बीमार हो गये किन्तु भीरुमानजी की कृपा से शीघ्र ही स्वस्थ हो गये ।

आप बड़े सरसहृदय निःस्वार्थ, परोपकारी और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे । मछि के क्षेत्र में आपको अविरोध सिद्धि प्राप्त थी क्योंकि भीरुतीरामशरण भगवानप्रसाद 'लपकला' और भीरुमाजी लैछेघोटी के संतमठ^२ में आपका अरबस्पर्श किया करते थे । संवार से त आपको इतनी विरक्ति हो गई थी कि जब आपके एकमात्र पुत्र के मृत हो जाने पर परिषदा के शोच फूट-फूटकर रां रहे थे, जब आप लौकरी बसाकर मजबूत मां रहे थे । यों से ठी आप वैभव, किन्तु आपका विश्वास था कि अपने धर्म के अनुकूल काम करनेवाला चाहे कि मी मठ वा सम्प्रदाय का कभी न हो, सबमान्य है । आप हिन्दू और मुसलमान दोनों के अपने-अपने धर्म के अनुकूल आचरण करने का अपेक्षा देखें । इसी कारण, आपका म कुन्त-बुद्ध कभीर से मिलता जुलता है ।^३

आपने हिन्दी में साहित्यिक रचनाएँ भी की थीं । साहित्य में निरक्षर आपकी अरखी पैठ थी, क्योंकि शीतलपुर-जरेबा (धारन) के लालकीर्ण साहित्यसे भीरुमोदरलहाज सिंह 'कविकर्कर' आपको ही अपना साहित्यिक पुत्र मानते थे । आपका रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं—(१) महामारी निवारण-स्तोत्र,^४ (२) अलिङ्गनामा,^५ (३) बोहावली, (४) कविता-कृत, (५) मज्जावली, (६) जानमीठावली, (७) शठ सिद्धा

१ नौकरी से स्वायत्त बड़े हुए अपने अस्मितापूर्ण संकल्पों की थी—

“मल किं अपि शोचन कचहरिवा ।

“अ” से काम “अ” से ठग किया “अ” से इति तदि अपरै बचरिवा

“ओ” से रिठ निव कारण देखन तदि कर्म मैं श्रीशै नचरिवा ।

किन्ति सज्जो लक्ष्मिण का बलक बल बरे मल बल मे रिकरिवा

बल रम्यम इति तदि ठेरी मल कदलोकहु राम सरिवा ॥”

—सुधा (बही) पृ० १०५

२ इन दोनों संत मठों में से प्रथम का परिषद रही पुस्तक में लक्षण देखिए । शीतल का परिषद प्रगते जगत्पट-अवध में रहेवा । —सं०

३ पद्य की शेरपुर (बड़बड़-जुनाग राजापुर) में अपनी स्मृति में विहित एक लक्ष्मण और लक्ष्मणन वर्तमान है । वहाँ एक रामायण विद्या-मंदिर भी है जो 'संगारवाला की मंडिर' नाम से प्रसिद्ध है । —सं०

४ रचका महाशय सन् १६०३ ई० में धारन से हुएवा ।

५ रचका महाशय सन् १६०४ ई० में ही धारन से ही हुएवा ।

विचार, १ (८) आत्माराम की नास्तिष्ठ, २ (९) भक्ति विनोद, (१०) संकीर्तन माहात्म्य, (११) तिलक-माहात्म्य-महिमा १ तथा (१२) विचार-पत्रिका ।^४

आपका निम्न सं० १९९८ वि० (सन् १९४२ ई०) में, फाल्गुन-शुद्ध पक्षी, शनिवार (२१ फरवरी) को, संध्या-समय, ६३ वर्ष की आयु में हुआ था ।

उदाहरण

(१)

हरि-हीरा हरदम हिय धारो ।

सोवत-आगत चक्षत फिरत निसि-वासर हरि-नाम उचारो ।

हरि-हीरा श्रुति नारद-सारद सेस-महेस गनेस पुकारो ।

मास्त-पूत दूत श्रीहरि के जसधि नाधि गढ़ संकहि जारो ।

जन प्रह्लाद स्वादि हरि-हीरा अचल धाम अजहूँ बैठारो ।

वारन-कारन देर न भायो मन-रथ चढ़ि हरि तुरत उचारो ।

सक्षा-गृह रक्षा करि सीन्हीं तनिक ताप नहि लागु ब्यारो ।

द्रुपदसुता-हित वसन-येप धरि सकल सभा मुख डारो छारो ।

कौन कहे हरि-नाम-महात्म नेति-नेति कहि वेदन हारो ।

सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग उभय लोक जन-सोक निवारो ।

धौर भुगन कछु धौर भरोसो कलि केवल हरि-नाम संभारो ।

दास रमायन नाम-सुधा तजि भटकि मरत कत खोजत हारो ॥^५

(२)

मैं हरि पापिन कर सरदार ।

सुरपुर नरपुर नाग तिहूँपुर छापि गई असवार ।

भावत छींक नीक बातनि सुनि अवनुन केर अगार ।

छापा तिलक माल गर डारयो विषय-विहंगम जार ।

१ वह एक गद्य-रचना है ।

२- वह एक गीति-नाट्य है ।

३. संख्या ३ से ११ तक की पुस्तकें सन् १९३६ ई में 'आत्म-प्रकाश' में प्रकाशित हुई थीं पर वे उपलब्ध न हो सकीं ।

४ श्रीज्योत्स्ना सराव सिद्ध 'कविकिष्क' की (बही)वे रसे अथवा 'अमृत' नाम कृतकथा है जो अभी तक प्रकाशित हो है ।

५ 'सुधा' (बही) १ ५५६-६ ।

सुन्यो अजामिस ब्राह्मण पापी सो सूई कहै फार ।
 नर्क निगोह मोहि मुख भागे सुनतहि नाम हमार ।
 हमसे तुमसे दाँव पढी है को जीतो को हार ।
 दास रमायन को जीतुगे ती जानौ खेलवार ॥^१

(३)

साग श्री सत्तू मिले खतरी तनि सिधु के सीन परे रगरी ।
 भोजन-यात्र को हो पधरी भर भोजन को कमरी-कधरी ।
 हासन को कुस को सधरी भर वासन चहाँ सरजू-कगरी ।
 दास रमायन माँगत है तुससी कर मास हिय में हरी ॥^२

(४)

टेक विवेक विभूति को, जानत आतक हंस ।
 कै जानै वाइ संतजन, भरु सब व्यर्थ प्रशंस ॥
 रुपया कवहुँ न लीजिए, रुपया रूप विगार ।
 चाह बदावत जगत में, मान विहारनहार ॥
 कनक कामिनी का लज्जै, संत जानिए सोय ।
 दास रमायन पीजिए, तेहि धरनन को घोय ॥
 धन के भागी चारि जन, धरम अगिन नूप खोर ।
 प्रथम भाग नहीं देहुगे, तब तीनों सह खोर ॥^३

(५)

दुनिया साबूद सराय मे कर्मचन्द बड़ई ने अष्टपातु का
 पचरंगा मकान कायागढ़ नामी बनाया है जिसकी दावारें

१ 'शुभा' (४०) पृ २६ ।

२ वही ।

३ वही पृ २६-२९ ।

तीनकोन हैं। इस चौदह मंजिला इमारत में महाराजा आत्माराम उर्फ जीवमालसिंह बागी सरकार रहते हैं जिनकी रानियाँ महारानी सुमति वी कुमति कुमरी वी दीवान लाला मनुलाल साहब मैनजर हैं। बाबू हरपू सिंह और विपादू सिंह दरवान पहरेदार हैं महारानी लोगो की कनासक (शौंठी) सुबुधिया और कुबुधिया हमेशा वास्ते फरमा-वरदारी के हाजिर रहती हैं। चुनाच्चे महाराज साहब के दिल बहलाने को छ शखस बबहदे समाजी, जो दर परदे नामागिरामी उकैत हैं। अपनी-अपनी नटिनी साथ लिये नाच को तान में मशगूल हैं। वी महाराज भोसूफ के भागे दुम अशुभ नामी दो मोतलें घरिं हैं जो भाठ किस्म की अठियो के अकू से खुसाये गये शवत से भरी हैं। इसस कुछ मद्यादार हो गये हैं। वी गान तान नाच साथ नशेवाजी ऐश अशरत के जारी हैं। इधर से उनके पोछे भेप बदलकर बाबू कासू सिंह कोतवाल यमूजिव एजाजत जनाब यमराज साहब बहादुर अफसर कसानी हाकिम मजाज अपने दोनों हाथों में स्याह वी सफेद रंग के मुरछल लिये हुए ह्यात रुपी सफेद मच्छल को उडा रहे हैं जो इन मच्छलों में हजार गुना छोटा मारीक है और जो इस मकान की चौदहवीं छत पर बैठा है। जरा नामी वाघिन सामने चिह्कार कर रही है। वी रोग नामा गोसा हर तरफ घहरा रहा है। तो भी हजरत अपनी ऐशवाजी से बेदार नहीं होते। उम्मीद है कि यह दरबार महाराजा बागी साहब का तभी तक है जब तक कि एक मटका इन मुरछलो का उस मच्छल को नहीं सगता। मसल मशहूर है कि वन का गीदह जायगा किधर।'

✽

१ 'यह मच्छल कपटी' के अन्वयक वी श्रीधरदेवमहाशय सिंह 'अधिकांश' (वही) से प्रायः कुछ वा। अन्वयक मरीरक में इसे 'विचार कबल उरिर्वक से पत्रकी के मनोरंजनार्थ 'लक्ष्मी में अन्वयक की किना वा।—द्वितीय, 'लक्ष्मी' (आसिक, अन्व १४ दरान १ कुपार, सन् १९१९ ई०), पृ २०।

सुन्यो भ्रजामिन ब्राह्मण पापी सो सूई कर्हें फार ।
 नर्क निगोड मोडि मुख भागे सुनतहि नाम हमार ।
 हमसे तुमसे दौव पढी है को जीसो को हार ।
 दास रमायन को जीसहुगे ती जानी खेलवार ॥^१

(३)

साग औ सत्तू मिले सतरी तनि सिंधु के लीन परे रगरी ।
 भोजन-पात्र को हो पधरी भर भोङ्गन को कमरी-कधरी ।
 ठासन को कुस को सधरी भर वासन वहाँ सरजू-कगरी ।
 दास रमायन मांगत है तुनसी कर मास हिय मे हरी ॥^२

(४)

टेक विवेक विभूति को, जानत चातक हंस ।
 कै जानै कोइ संतजन, भरु सब व्यर्थ प्रशंस ॥
 स्वया कबहुँ न लीजिए, स्वया रूप विगार ।
 चाह बढ़ावत जगठ में, मान बिठारनहार ॥
 कनक कामिनी को तजै, संत जानिए सोय ।
 दास रमायन पीजिए, तेहि धरनन को घोय ॥
 धन के भागी धारि जन, घरमभगिन नृप धोर ।
 प्रथम भाग नहीं देहुगे, तब सीनों सइ छोर ॥^३

(५)

दुनिया साबूद सराय में कर्मचन्द बड़ई ने प्रष्टघातु का
 पचरंगा मकान कायागढ़ नामी बनाया है जिसकी दीवारें

१ सुभा (११) पृ २६० ।

२ वही ।

३ वही, पृ २६०-२१ ।

यज्ञदत्त त्रिपाठी

आपका उपनाम 'बह' था। आपकी रचनाओं में कहीं-कहीं 'जगमोहन' नाम भी मिलता है।

आप सारन जिले के 'बलुआ' नामक ग्राम के निवासी एक कान्यकुम्भ ब्राह्मण थे। आपका जन्म सं० १९०० वि० (सन् १८५६ ई०) में हुआ था।^१

आप बचपने में बड़े ही सुस्मर थे। आपके शरीर की गठन निरासी थी। मूढमापी भी आप एक ही थे। गुच्छ होने के अविरुद्ध आप समा-चतुर भी थे। संगीत से आपका विशेष प्रेम था। सितार बजाने में ऐसे प्रवीण थे कि अचछे-अच्छे सितारियों को परास्त कर डालते थे। मझौली-नरेय राबा बह्मबहादुरमस्त^२ (छाछ कवि) तथा मारतेन्दु हरिश्चन्द्रजी से आपकी हार्दिक मित्रता थी।

हिन्दी के अविरुद्ध संस्कृत एवं फारसी में भी आपकी अच्छी योग्यता थी। आप शिक्षक के बड़े मक थे। वे ही आपके इष्टदेव थे और उन्हीं की भक्ति में रक्षित आपकी अधिकांश रचनाएँ हैं। पुस्तककार आपकी एक ही रचना 'यज्ञदत्तरी'^३ मिली है। आप सन् १९१४ ई के आत्मपाठ परलोक विभारे।

उदाहरण

(१)

एकटक हेरत न फेरत अनत नैन
मृदित अकोर जिमि अन्द्र छवि ब्यायेते ।
नटत मधुर जैसे मन में धानन्द भरयो
देखि-देखि गगन सधन घन छायेते ।
जैसे गजराज सुख-सिन्धु में मगन होत
भावत न जाने रेनु रेवा तन सायेते ।
जैसे 'यज्ञ' जन मन-मधुप प्रमोद भरयो
सन्मु - पद - पदुम-पराग-पुंज पायेते ॥^४

१ वं बलमुकुन्द चण्डेय कुण्ड'-लिखित परिचय से व्यक्त पर।—देखिए, 'अभि' (साहित्य, वर्ष ४ संख्या ४ वैशाख सं० १८८२ (१०) पृ० १४ १५।

२ बालमुकुन्द सिंह ने उन्हीं के नाम पर ब्रह्मविद्यालय प्रेस खोला था। पहले-पहल हमने बालु साहब को यैत बनार (राधाबाद) में हुई थी जब वे अपने मन्थ महाशय्य चण्डाप्रनार सिंह (ब्रह्मवि-नरेय) से निष्कार खाती जा रहे थे। वे प्रबन्धना के अचछे कवि और हिन्दी के मरुतकवर थे। रविभुमभानुष महाशय्य आरक, आरक-अधका कापी अरि इतकी लख ब्रह्मरुदुरादे पदपरिचित प्रेस से प्रकाशित हुई थी। बालु साहब से हमको प्रगत मित्रता थी। वहलविन्पास में से व्यजीवन इनका अधिविन्ध लम्बव बना रहा।—देखिए, 'हरिजीव अविष्कारन-मन्थ' (वरी) पृ ५११।

३ हमने शिक्ष की सुनि बनाउरी और लखेवा लुंरी में भी गाँ दे।

४ 'अभि' (वरी) पृ २४-२९।

(२)

अमल अकास त्यों प्रकास चाँदनी की नीकी
जहाँ-तहाँ देखो दल बादल विधायगो
त्योही रेनु-रहित अपङ्क भवनी पै कोऊ
कासन को कुसुम विकासन वतायगो ।
सिधिल सिद्धिदिनि को मठली गही है मौन
मनुस मरालगन जोई गीत गायगो ।
दसहँ दिसा में अर वासर-निसा में
'अगमोहन' हमारे जान सरद समायगो ॥'

(३)

चपक चमेलिन पै चाँदनी पै चन्दन पै
चूतन पै धार चञ्चरीक चरषंत है ।
छायक छपाकर पै छैल छोनि छारन पै
छाजित छतानन पै छवि छसकन्त है ।
'यश' जसपात पै जहाँ पै जगमग जोति
जुरय-ओक्षितानन पै ओवन जगंत है ।
साँधी-साँधी सट पै सुगाहन पै सालन पै
ससित सता पै सेत लहर दसंत है ॥'

(४)

कड़ प्रेम भरे अरवरा मुख ते श्रुति
प्रेम ही की धुनि धारते हैं ।
दृग ते सखें प्रेम ही की दुति को
पग प्रेम ही के मग धारते हैं ।
कवि 'यश' जू प्रेमी मिली जितही
तित प्रेम की पूंजी पसारते हैं ।
धनि वे प्रिय प्रेम-भरे हिय सो
नित प्रेम ही प्रेम पुकारते हैं ॥'

(५)

एरे मन मेगे मैं तोसो कहीं डेरो होय
 शंकर को चैरो मानि काटत भव-कन्दै रे ।
 मग है भँघेरो यहाँ कोई नाहि तेरो
 खोर विपै भानि चैरो सब छाड छस छन्दै रे ।
 कहै जन 'यज्ञ' यहाँ सुख को घसेरो नाहि
 हेरि जनि भूलै नेक गिरदा मख रदँ रे ।
 एरे मतिमन्दै होय भव वे निरखन्दै एक
 भानेद वे कन्दै भान्जचन्दै क्यों न खन्दै रे ॥



द्वितीय अध्याय

[ये साहित्यकार, जिनका जन्म-काल अनुमित है।]

अजितदास

आप बारा (याहानाद) निवासी कविपर कुम्हारजी 'बैन' के पुत्र थे।^१ बारा निवासी सुषीलासमी की सुपुत्री से विवाह होने पर आप अपने जन्म-मान से आकर समुराज (बारा) में ही बस गये। विशेषतः आपको ही पढ़ाने के लिए आपके पिता ने 'बन्धराजक' नामक ग्रन्थ रचा था।^२ आपके पिता 'भीरामचरितमानस' की शैली में एक बैन-रामायण भी लिखना चाहते थे, पर लिख न सके। उनके मरने के बाद उनकी आत्मा से आपने ही उसे ७२ सर्गों तक लिखा। पर असमय काल-कवचित हो जाने के कारण आप भी उसे पुरा न कर सके।^३ इसके अतिरिक्त आपकी अन्य रचनाएँ नहीं मिलती। आपकी रचनाओं के उदाहरण भी हमें नहीं मिले।

*

कमलाधर मिश्र

आप रत्नमाहा (बगहा, बभारन) के निवासी थे।^१ आपके पिता का नाम पं० लक्ष्मीधर मिश्र था। प्रसिद्ध विद्वान्, वैद्यराज और साहित्यसेवी पं० बन्धुरोपरधर

१. इनके परिवार के लिए 'पुस्तो-साहित्य और विचार' (पथक खण्ड पृ० ११४-१२) देखिये। इसका अनु-काल सन् १८२८ ई० (सं० ११११ मि०) के लगभग है। इसी आधार पर यह अनुमान होगा है कि मातृका जन्म सन् १८०१ ई० (सं० १८१७-७२ मि०) के आसपास हुआ होगा।—सं
२. साहित्यिक 'ग्रन्थालय' (भारत, बम्ब-ग्रन्थालय-११), पृ० २। मिश्रपुत्रों ने व्याख्या विवाह-रत्न 'शिवपुर' रचाना है, जो अकेल नहीं बच होता।—देखिये, 'मिश्रपुत्र-विचार' (वरी सुदीप-पत्र) पृ० १०७२।
३. मिश्रपुत्रों के महापुत्र 'बन्धराजक' में २ कथन बन्द कर कर कथि से कहे हैं और अनेक अन्य का काम कभी बन्द ही कर दिया है। यह ग्रन्थ बहुत विखरा है।—'मिश्रपुत्र-विचार' (मिश्रपुत्र-विचार) सं० १७२२ मि० (शिवीय पत्र) पृ० ७७२।
४. 'अजितदास' शिव सुभन के पदम हेतु अतिबन्धु।
शिवपुत्र सुभन को रचनी बन्द कर चुन ॥" —'बन्धराजक' की प्रस्तावित।
५. आपके कविपुत्र पुत्र हरिदासजी से भी इसे पूर्ण करने का प्रयास किया। किन्तु, दुर्भाग्यवश वे भी ऐसा न कर सके। इसकी भी बाबूद्विती बारा में हरिदासजी के घर में थी। हरिदासजी के अतिरिक्त आपके ही पुत्रों के नाम थे—'बन्धुराज और सुबरोचमदास'।—सं०
६. 'बभारन' की लक्ष्मी-वाचना (वही), पृ० १७-१८।
७. वे भी एक बहुत विद्वान् हुए। कविपुत्र हीरदास तथा भयमरेत तक वे शास्त्रार्थ के लिए समुदाय कायमित होते थे। कुछ काल में ही वे पूर्ण बन्द थे। रामनगर-राज्य (बभारन) की ओर से प्रजा के कथन और कविपुत्रों के साथ और नेपाळ पर बहामिन्त्र हुए हीरदासजी के साथ वही बाबूद्विती से लड़े थे।
—'मिश्रपुत्र' का एक 'विचार' (अध्वनीनी बखशीरी, बभारन) से प्राप्त विचारक ११ बभारन, सन् १८२१ ई० की सूचना के आधार पर।

मिम^१ आपके ही पुत्र थे। आप छाहिरव, संगीत एवं पाणिनीय व्याकरण के प्रकांड, पण्डित थे। हिन्दी में आपकी कुछ सुदृढ़ काव्य रचनाएँ मिलती हैं। आपकी मृत्यु सं० १९५१ वि० (सन् १८८५ ई०) में हुई थी।^२

उदाहरण

जहाँ एक घोर खंडी बाहु विक्रम उदंडी ।
घरू एन घोर दस दानवान उमडान ।
तहाँ मर्षी घमसान प्रलय भान के समान ।
जब खंडी नौह वान मूस न्कारी कीरपान !^३

✽

करनश्याम

आप मिथिला निवासी और महाराज छपटिह (सन् १८०८ ई०) के समकालीन थे।^४ कहते हैं, आप पर रचना भी सभी के लिए करते थे। आपने अनेक महाराजगणों की रचना की थी, जिनमें हर-गोरी के जीवन का अद्भुत वर्णन है। आपके पदों से मिथिला की संस्कृति पर अन्धा प्रकाश पड़ता है। आपके रचे अनेक छोहर और रास-पद भी लोकप्रसिद्ध हैं।

उदाहरण

पसुपति परम शेषाकुल, सजनी गे, नन्दी वदन निहारि ।
हाँसु तेज लेल कर, सजनी गे, घास सए घलल पुर भारि ॥
हर गिरिजा सँग सागल, सजना गे, घेरि सुमृक्ति भेल ठाढ़ि ॥
जेहेन उगल नव जलधर, सजनी ग, तुरति याम गेलि बाढ़ि ॥
राजकुमारि महुकि सिर भूकल, सजनी ग, महुकि देस महि ठारि ॥
शिव मन वाढ़ल क्रोध अति, सजनी गे, मारस चाह सुतारि ॥
हरिअर तून भुनि काटल, सजनी गे, वाढ़ल दुहु दिस भार ॥
सखलि गौरि हर यौंसल, सजनी गे, कौसुक कयस बिचार ॥^५

✽

१. इकाई कीरवय जनमे दासद मे इत्यम् ।

२. इसी आधार पर आपका जन्म-काल सन् १८२०-४ ई तक अनुमान होगा है —सं०

३. 'महाराज श्री साहित्य-भाषणा (पदी) पृ १८५ ।

४. 'मैथिली-साहित्यक इतिहास' (पदी) पृ २४४ । महाराज छपटिह की दरबार में करते समय आपकी कुछ अनुभावनाः ४० १० वर्षों से कम उमर ही होगी। इसी आधार पर यह अनुमान है कि आपका जन्म-काल सन् १८ १-२ ई से आसपास होगा। —सं०

५. 'मैथिली-साहित्यक इतिहास (पदी) पृ २४४ ।

कान्हजी सहाय

आपका उपनाम 'कान्हैया' था। कुछ लोग आपको 'कान्हवी' भी कहा करते थे।

आप शाहाबाद जिले के 'धमार' नामक ग्राम^१ के निवासी थे।^२ बहुत दिनों तक आप सरकारी अफीम विभाग के एक उच्च-पदाधिकारी थे।^३ संगीत-कला के आप एक अच्छे हाथ थे। आपकी प्रसिद्धि एक कृष्ण मछ कवि के रूप में भी थी। भाषणी मूलन और श्रीकृष्णबन्दासरी के उत्तम आप खूब धुमधाम से मनाते थे। आपके द्वारा रचित एक पुस्तक 'कान्हजी की कथाई'^४ का पता चलता है।^५ आपने कुछ स्फुट मञ्जन भी बनाये थे।

उदाहरण

(१)

भक्ति भसबेसी नारि ससोनी, सुन्दरी ऐसी भई न होनी ।
मुस पर सटक रही सिर चोटी, चन्द पर रही नागिनी सोटी ।
रहे नासा सखि कीर लजाई, चन्दकार मन्द करै मुसुकाई ।
खींच देइ मदन-धनुष-सी भौंहें, वान सिरछी पितवन भससौंहें ।
भुजन पर करिकर डारिए वारि, कुबन पर कर श्रीफल बलिहारि ।
दुरै मृगनायक कटि सों वन मे, हरै मदमत गयन्द गवन में ।^६

(२)

भूले संवसिया सास लसी सँग भूले हो ।
निरसि कोटि रति मार जुगल छवि भूले हो ॥
प्रफुलित विपिन-प्रमोद सरयु-बल उमडे हो ।
मीनी बूँद परत फुझार घटा पनि धुमडे हो ॥

१ यह ग्राम प्युए शहर से थोड़ा साठ मील दूरिय में स्थित है।

२ भौसबरेण कुने (बनगार) शाहजाद) का कहना है कि आप सुल्तान (शाहजाद) के यहाँ राजपुस्तकरी प्रताप सिंह की कृष्ण के लक्ष्य बन सुल्तान वाले थे। यह लगभग ३ वर्ष के थे। राजशासन की शुरुआत १७०३ ई. में हुई थी। इसी कारण पर अनुमान किया गया है कि आपका जन्म १६८३ ई. के लगभग हुआ होगा।—सबरेण कुने (वरी) का १ ४-२० का पत्र।

३ कबोटी भौसबरेण बनगारवादी (बनार, शाहजाद) की यादों में गौरीबा-दमाद है, के अगुसार आप अफीम-बदकरी के गुनास्ता थे। यह जोहरा कब्रियों की पीछी की वरपर भी था। —सं०

४ निहार-उपुत्पाद-परिषद् के इत्तफिअत-अन्वयेष-विभाग में आपकी रचनाओं के इत्तफेक सुरक्षित है।

५ निहार-उपुत्पाद-परिषद् के इत्तफिअत-अन्वयेष-विभाग में सुरक्षित इत्तफेक है।

बोलत सुक पिक चातक दादुर मोरे हो ।
 भौरन को गुल्लार सुनत धिध चोरे हो ॥
 कोउ सखि पेंग भुलावति मोद न थोरे हो ।
 कोउ मिलि गावति गीत सुप्रेम म्कोरे हो ॥
 गावत गुणमलार समय रस पागे हो ।
 नाचत 'कान्ह प्रसाद' समेंगि अनुरागे हो ॥'

(३)

सोहावनी स्याम रंग की घटा ।

कहति परस्पर धवध वधू नई मिलि-मिलि चढ़ि-चढ़ि घटा ॥
 दमकि-दमकि रहि स्याम घटा महँ बंधस दामिनि पटा ।
 भूलत पर जनु राम-रंग महँ जानकी छवि की छटा ॥
 जहँ-तहँ नटनि मयूरन की मृदु चातक पिक की रटा ।
 मचक पेंग किंकिनि-रव पर जनु सहरत बंधस पटा ॥
 'कान्ह प्रसाद' धवध बसि फिर का भाउव एहि मव भटा ।
 भाजु नयन मरि निरखि लेहु सुख दुर्लभ यह संघटा ॥'

(४)

ममकि भुलावो रे हिंदोरे, हग-सारे दोऊ किसोरे ।
 कंसी घेरि घटा घन भाई, कामे धूदन की मरि साई ।
 पवन भकोर वहे पुरवाई, सरयू लेति हिलोरे ॥
 वन प्रमोद कुसुमित केहि भाँतो, नम उडि लहर लेति बक पाँतो ।
 बंधस बपला दुरि-दुरि जाती, बोलत दादुर मोर ॥
 किन्दिन की भनकार सोहावन, पिक चातक रव भति मनभावन ।
 हिय भति देख समी भरे सावन, चठत उमंग मरोरे ॥
 बंट तर डारि हिँडारा नीको, सब भरमान निकारिय जी को ।
 भूल भुलाइ पिया प्यारी को, जिन है यह धिध चोरे ॥'

१ विहार-एम्पू-भासा-दीपक के इत्यदि-विद्वान-संश्लोक-विद्वान में सुश्रुति इत्यनेक है ।

(५)

वाजहि बहुविधि रंग-रंग के वाजेने
गावहि कोकिल वैन सुमंगल साजन
साजहि सुमंगल पूर बहुभासिनि सोहिलो मिसि गावही
बहु रतन मूपण बसन कंचन नन्दराय लुटावही
हमहूँ सखि सुधि पाइ सही सुधि और तें
एक कही अस बात भाइ नृप पीर तें
नृप पीर ते एक कहेत जव जुग जाम सीति आमिनी
एक स्यामसुन्दर सुघर सुव जाया महर की भामिनी
ओं सुधि है मह सखि सखी हमहूँ चलें
साजि सोहिसो नेंट महरि सँग जा मिसें
मिसि महरि सो घनि घन्य कहि-कहि सोहिलो मिसि गाइए
पूर नागरिन मिसि गाइ अनंद-बधाव अति सुख पाइए ॥^१



कान्हारामदास

आप मिथिला निवासी कथ कथस्य ये ।^१ आपके पिता का नाम था हलधरदासजी, जो 'सुरामाचरित' के रचयिता हिन्दी-कवि हलधरदास से मिनन व्यक्ति थे । आपने 'मैत्रेयवर्षर' नामक एक नाटक की रचना, मिथिला के कीर्त्तनिया-नाटकों की परम्परा में, सं० १८२२ वि० (सन् १८८२ ई०) में, की थी ।^२ गौरी शिव-परिचय पर लिखित इस नाटक की रचना उक्त परम्परा के सुन्दर नाटकों में होती है ।

उदाहरण

कहिअ माध मुनि बात हमें नहि भूझस ।
ई कहि हेमैल-पिघारि पिघा-पद गहन ।
घर-घर-कुस-परिवार विमल जौ पाविअ ।
गौरि-जोग बर होण विवाह कराविअ ॥

१. मिश्र-नाट्यशास्त्र-परिचय के इतिहासिक-ग्रंथलेख-विभाग में छापित इलाके में ।

२. 'History of Maithili Literature' (J. Mishra, Vol. I, 1949) P. 195.

३. आर्य रचना-काल सं० १८२२ ई० है, अतः आर्य काल सं० १८०१-२ ई० के लगभग हुआ होगा, ऐसा अनुमान है । —सं०

गौरि रहति कुमारि से वर सह्य ।
 सूख कुमेश मिहारि हमें हूमे नहिं करब ॥
 प्रान पिभारि दुसारि उमा पहु जानिअ ।
 तेहन करिअ वर जेहि देखि सुख मानिअ ॥
 सोच विसारि पिभारि एम सुमर मन ।
 से करि होए कल्याण 'कान्हाराम' भन ॥^१

✽

कामदमणि^१

आपका जन्म गया जिले के एक ब्राह्मण-परिवार में हुआ था।^१ आरम्भिक अध्ययन के पश्चात् आपने कुछ समय तक ग्रहस्य-जीवन व्यतीत किया, जिससे आपको एक पुत्री हुई। उसके पश्चात् आप सपरिवार अयोध्या चले गये और सस्य माता का 'सम्बन्ध लेकर' रामसखेयी की तपोभूमि 'मृत्परापन-कुंज' के समीप रासकुंज में रहने लगे और आजीवन वहीं रहे। वहाँ आपका अपेक्षाकृत समय साहित्यानुशीलन और समीपदेश में ही व्यतीत होता था। नवसस्य माता के मरु होते हुए भी आपने अल्प मछि-रवों का तपोयोगपूर्वक अध्ययन किया था। हिन्दी के मछि-साहित्य में आपकी गहरी पैठ थी।^२

आप संस्कृत और हिन्दी दोनों में रचनाएँ करते थे। हिन्दी में आपकी दो महत्वपूर्ण रचनाएँ मिलती हैं—(१) 'पंचमछि-रवों के वचनद वच' और—(२) 'केरव कहिन जाव का कहिय'।^३ आप सं० १६७५ वि० (सन् १६१८ ई०) में परलोकवासी हुए।^४

१ 'History of Malhill literature' (वही) P 195

२. आपका प्रसुत करिबन 'उपमछि में उच्छि-उपदेश' नामक ग्रंथ के आधार पर ठीक किया गया है।
 —देखिय, वही, पृ ५२१।

३. वही।

४. करते हैं आपकी निराशा के ब्यक्तिगत होकर कल्पसचर और मुनेसचर के कई राजाओं ने आपसे दोहा ली थी।

५. हम माता में गौराजी सुनतीरासकी श्री 'विभव-रत्न' के एक मछिद पर की व्याख्या की परी है।

६. सन् १६१८ ई० में आपका उपरोक्त वचन-काम मछिरी वर्ष की आशु में हुआ हुआ; क्योंकि संत-महात्मा अमर दीर्घतु होकर देह-त्याग करते हैं। यह दिग्गज थे आपका जन्म अनुमानतः सन् १६१८ ई० में हीवा करीब। —४

उदाहरण

(१)

स्वस्ति सखा श्री सहित श्री, जानकी-जीवन पाम ।
 पहुँचे पाती ललित यह, कनक-भवन आवास ॥
 कामद नर्मसखा लिखित, काया-सह्य - निवास ।
 तन को मन भावत नहीं, वदत विरह को स्वास ॥
 गुण गावत भाँसू बहुत, भयो सिधिल तन वीर ।
 वन-प्रमोद की सुरति करि, श्री सरयू को नीर ॥
 मैं चाहा तुमसो मिल्यो, कोटि कल्प सत जाय ।
 तुम खादो छिन म मिसो, दुसह विपत्ति विहाय ॥^१

(२)

मदन कदन करि सह्य को, छूटि लियो करि क्रोध ।
 सोम विनास्यो ध्यान को, क्रोध विनास्यो बोध ॥
 ज्ञान विरागादिक सर्व, भागे लै लै प्रान ।
 नर्मसखा तव जीव यह, कैसे वधे सुजान ॥
 याते वेगि बुझाय कै, रखिये अपने पास ।
 नर्मसखा निज जानि कै, दास कीजिए सास ॥
 विपुल विनोद विहार हित, उपवन सखिन समेत ।
 समन सपन निरखत कवहुँ, लखिहीं मोद निमेत ॥
 मधुर बभन पीयूष पिय, सुनिहीं चित्त लगाय ।
 पढ़े सदा दिसदार दिस, हिय ते मिन न जाय ॥^२

(३)

होँ दिसदार यार कव पैहोँ ।

जाके विन छन कस म परतु है साके बिना कैसे जनम गर्बहोँ ।

भङ्ग-भङ्ग लखि मधुर मनोहर द्वै भुज पकरि भङ्ग कव सौहोँ ।

कामदमणि यह सोच रनि दिन कैसे कै धानन्द माँहि समैहोँ ॥^३

१ अष्टौसप्तती में अष्टौ-सप्तत्यस्य (बरी) १ ११४ ।

२ २. बरी ।

कालिकाप्रसाद

आप सारन जिल्ले के 'दिमहर' नामक स्थान के निवासी थे ।^१

आपने हिन्दी में 'सिदा-स्वयंवर' नामक एक पुस्तक लिखी थी, जिसका लिपि-काल सं० १९५२ वि० (सन् १९८५ ई०) है ;^२ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



कालीचरण

आप मौजपुर (शाहाबाद) के राजकुमार रामेश्वर सिंह के दरबारी कवि थे ।^३ आपने एक राजकुमार की मजयात्रा के विवरण-स्वरूप, सं० १९०२ वि० (सन् १९४५ ई०) में, 'कुन्दावन-श्रवण' नामक एक ग्रंथ की रचना हिन्दी में की थी ।^४ आपकी रचना का कोई उदाहरण नहीं मिला ।



कालीचरण दुवे

आप जम्पारन निवासी^५ और मैथिली के महाराज-बहादुर आनन्द किशोर सिंह (सन् १८१३ ई०) तथा मवलकिशोर सिंह (सन् १८३८-५५ ई०) के दरबारी कवि थे ।^६ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



१. 'दलद्विधित हिन्दी-पुस्तकों का संविज्ञ-निर्वाह' (स्वामिमुन्दराय, मकल सं०, सं० १९५० वि० अधिलिख १) पृ० १ ।
२. अन्तर्गत रचना के लिपि-काल से अनुमान होता है कि आप सन् १८४० ई० के आसपास जन्मे होंगे ।—सं०
३. 'दलद्विधित हिन्दी-पुस्तकों का संविज्ञ-निर्वाह' (वही) पृ० २३ तथा २४० ।
४. एक रचना की भी दलद्विधित-संविज्ञ-सिद्धि है। उसमें कसबा (सिन्धु-काल सं० १९०५ वि०) मिला है ; वह सं० १९०२ वि० में एपी और सं० १९०२ में वि० लिखी गई, जो कस संभव (सन् १८४५ ई० में) आप लगभग ३०-४ वर्ष के रहे होंगे ; अतः, अन्तर्गत जन्म-काल सन् १८०० के आसपास १८१३ ई० अनुमानित है ।—सं०
५. ई. ग्रेगोर थोरे (ई. ग्रे. जम्पारन) द्वारा प्राप्त सूचना के अनुसार पर ।
६. आपके आत्मचरित्र की भी वैदिक-बदौतों का राम-राम चरित्र लिपि-काल सन् १८१९-२३ ई० तक है ; इसी चरित्र के शीर्ष में अन्तर्गत लिपि-काल अनुमानित है और इसी आधार पर अनुमानित अन्तर्गत जन्म-काल सन् १८०५ ई० के आसपास उपर्युक्त का उद्घाटन है ।—सं०

कृजनदास^१

आप पटना निवासी थे।^२ 'सुभाग विनीत' नामक आपकी एक हिन्दी-रचना सन् १६०२ ई० में प्रकाशित हुई थी।^३ किन्तु, उसके उदाहरण नहीं मिले।



केदारनाथ उपाध्याय

आप अम्बरन निवासी थे।^४ आपने हिन्दी में 'भीमद्वाग्वत', 'कृष्णकरित्र', 'रामारवमेध-रामायण', 'नृसिंह-धरित्र' आदि धार्मिक-ग्रन्थों की रचना की थी। आप सन् १८५० ई० में विद्यमान थे।^५ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



गणपत सिंह

आप पटना जिले के निवासी थे। पटना के मॉडल स्कूल में आप बहुत दिनों तक शिक्षक रहे। हिन्दी में 'भूगोल-बचन' के नाम से आपकी एक पुस्तक दो भागों में, अष्टाविंशत्य प्रेस (बाँकीपुर) से, प्रकाशित हुई थी।^६

उदाहरण

पटना जिसे अजीमाबाद भी कहते हैं, गंगा के दहने कनारे पर १५५९६३८ भादमियों की बस्ता है। यहाँ पटनदेवी का एक मन्दिर है हरीमन्दिर सिखों के तीर्थ को जगह है। शहर से तीन कोस पर बाँकीपुर में गोसधर, पटना कालेज, नार्मस स्कूल, मेडिकल कालेज,

१ इस नाम के एक और कवि १६वीं शती में हो सके हैं। उनका वास्तविक नाम अजीम कुंभविद्यापीठाल या और वे उदाहरण के निवासी थे। उन्होंने 'शिवपुराणवत्स' नामक एक उदाहरण ग्रंथ की रचना की थी। उसके विस्तृत परिचय के लिए देखिए, 'हिन्दी-साहित्य और विहार (परी, प्रथम खण्ड)', पृ १८-१९।

२ 'हिन्दी-मुद्राक-संग्रह' (परी), पृ ४०४ और ४१४।

३ सन् १६२१ ई० में रचना की थी जो किशो बरले ही गई होगी और रचना-ग्रन्थ में आपकी मरणावस्था बतलाने की रही होगी। इस तरह अनुमान है कि आपका जन्म सन् १८२० ई० से पहले ही हुआ होगा।—सं

४ 'कम्पोजर की साहित्य-आवना' (परी) पृ० ३३।

५ जब आप सन् १८५० ई० में विद्यमान थे, तब आपका जन्म अनुमानतः सन् १८०९ से १८१० ई० के बीच हुआ होगा।—सं

६ इसका प्रथम संस्करण सन् १८५४ ई० में प्रकाशित हुआ था। प्रथम संस्करण के प्रकाशन-आप में आपकी जन्म अनुमानतः आधीन रूप की रही होगी। इसी कारण पर आपका जन्म-काल सन् १८४४ ई० के आसपास संभव था बतला है। एक पुस्तक के बार में संस्करण हुए थे। बारको संस्करण सन् १८६१ ई० में प्रकाशित हुआ था।—सं

उदाहरण

गंगाजी को विपमता सखि मां मन हूरखात ।
 स्नात्क पठवसि स्वर्ग को आपु निम्न गति जात ॥
 आप निम्न गति जाति ताहि गिरिशिखर पठावे ।
 आप मकर-आरूढ़ ताहि दे वृषभ बढ़ावे ॥
 आप समिल तनु धारि ताहि दे दिव्य जु भ्रंगा ।
 जगत-ईस करि ताहि सीस चढ़ि विहरति गंगा ॥^१



गुरुवक्त्र लाल

आप बकसंबा (गया) के निवासी कायस्थ थे ।^१ आपके पिता का नाम था सीतारामजी । आपका रचना-काल सं० १६२१ वि० (सन् १८७४ ई०) माना गया है ।^२ आपकी हिन्दी-रचना 'कुण्डलिया-रामायण' अधूरी ही रह गई । उदाहरण नहीं मिला ।



गुलाबचन्द्र लाल

आपका उपनाम 'भ्रमरकवि' था । आप छपरा निवासी थे । हिन्दी, मोबपुरी और मैसुरी के प्रसिद्ध कवि रघुबीर नारायणजी^३ के आप शिष्यक थे । आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले ।



१. पं० बलदासप्रसाद ज्युबेरी (परी) के भाष्य से ।

२. 'पद्म के लेखक और कवि' (परी), पृ. ४२-४३ ।

३. अरसे रचना-काल के आधार पर ही अरसे अनुमित काल-काल सं० १८३०-१५ ई. मानी होता है ।—सं०

४. रचयिता का सं० १८८६ ई. में हुआ था । इसके भाष्य में आपने इन्हें बताया होगा । यदाते समय आपकी अरसे की-पैस के मन्त्र की रही होगी । इससे अनुमान होता है कि आपका काल-काल सं० १८२६ ई. के आसपास होगा ।—सं०

गोपी महाराज

आप पूर्णिया जिल्ल के कनेही-नरेश भीमान् राय। सीतानन्द सिंह के आभित दरबारी कवि थे।^१ अपनी रचना की उत्कृष्टता के कारण आपने पवाँत प्रतिष्ठि प्राप्त की थी। आपकी काव्य-रचना पर प्रसन्न होकर राय। सीतानन्द सिंह^२ ने आपको दान स्वल्प एक हाथी दिया था।^३ आपकी रचना का कोई उदाहरण नहीं मिला।



गोपीश्वर सिंह

आपका उपनाम 'गोपीश' था। आपकी रचनाओं में आपका यही नाम मिलता है।

आप दरभंगा के महाराज ब्रह्मसिंह (सन् १८४२ पू ई०) के कनिष्ठ (घटुयी) पुत्र थे।^४ आपके ही सबसे बड़े भाई महाराज महेश्वरसिंह (सन् १८५१ पू ई०) थे, जिनके दोनों राजकुमार महाराज शाहमीश्वरसिंह (सन् १८५२-६९ ई०) और महाराज रमेश्वर सिंह (सन् १८६९-१९३० ई०) मिथिला के परम प्रसिद्ध नरेश हुए।^५ आपका गणना जयमाया तथा मैथिली के प्रतिष्ठित कवियों में होती थी। 'गोपीश्वर विनोद' के नाम से आपका एक प्रकाशित काव्य-संग्रह हिन्दी में मिला है।

उदाहरण

(१)

झूलत आज श्यामा-स्याम ।

देखु वृन्दा-विपिन महँ हीरबोर मुदित सलाम ॥

साजि भूपण-वसन झूलवति मन्दगति श्रज-चाम ।

राग गुण्डमलार गावति सेति बहु विष भ्राम ॥

१. भागलपुर-दर्पण (पं. अरजपती का ज्यम ज्यम प्रथम खण्ड, प्रथम सं. सन् १९१३ ई.), पृ. ११९।
२. इन्हें सन् १८५३ ई. में राजा-नरेशपुर की पगवि मिली थी। सन् १८८३ ई. में वे स्वयंराजी हुए थे। इसी आधार पर अनुमान होता है कि आपका जन्म सन् १८२०-३ ई. के अन्तर्गत हुआ होगा — देखिए 'मद्रा' (बही मन्मार्थ, सं. १९८० वि. मधुकर सन् १९३ ई.) पृ. ३६।
३. आपने समय-समय स्वामपुरर कवि को कहीं राज-दरबार में थे। जब आपको अपने आश्रयदाता से हाथी मिला तब उन्होंने वे कविताएँ कही—

धरो हंस-भयर्तय-भवि बह भयारव मोदि काम ।

मोरी हाथी ये कहे देवत सुन्दर स्वाम ॥

इसपर प्रसन्न होकर राजा-नरेशपुर ने कहे जो हाथी हैकर सम्पादित किया। — भागलपुर-दर्पण (बही) पृ. ११९।

४. मैथिली-मौठ-रत्नावली (बही) पृ. ८५।

५. इसी आधार पर आपका जन्म-काल सन् १८२०-३ ई० के अन्तर्गत अनुमानित होता है। — सं०

वहत मास्त मन्द शीतल सुरभि लै अभिराम ।
जलद-नुन्द रसाल वरसत निरखि उमगत काम ॥
देखन सुमग शोभा भ्रमर तिय भाइ तजि निज घाम ।
गोपीश अञ्चल नैन लखि छवि लेत नहि बिसराम ॥^१

(२)

रघुवर द्रवत दास पर ऐसे ।
बरसि जगत भानन्द बढ़ावत श्रनु पावस घन जैसे ।
निज-रिपु-भनुज समाज-राज तजि भायो धरन विचारी ।
तिहि रघुनाथ तिलक लक्का दै कियो बंधु सम चारी ॥
भारत हरि सुग्रीव समै मन धरन-शरन तकि भायो ।
हूँ निशङ्क रघुवर-प्रताप-बल भ्रचल विमल सुख पायो ॥
देशु निखाद गिठ बाली-सुत गहे जे धरन खरारी ।
गोपि-ईश तिहि दियो परम पद भरु निज पद अधिकारी ॥^२

(३)

विनती सुनहु श्रीरघुराज ।
त्यागि भय सब धरन आयउं गुनि गरीब-निवाज ॥
हौं कुटिल भ्रम-खानि कुकरम कीन्ह जनमि दराज ।
बुझत यह भवसिंधु मोहि उबारि लीजै भाज ॥
पर-बधु पर-द्रोह-रसिकन मांह कीन्ह समाज ।
भाज सौं लखु नाहि मो सो भयो कछु सत काज ॥
सुमिरि निज विरदावसी भव सनल सुर-सिरदाज ।
वेगि श्रीगोपीश की प्रभु भवहुँ राखहु साज ॥^३

१ 'श्रीगोपीश-विन्दे' (श्रीगोपीशर शिब प्रथम सं सन् १७५५ ई), पृ ३ ।

२. गयी, पृ १११ ११४ ।

३. गयी पृ १११ ।

(४)

भ्राजु भेस ससि दिन वर, मण्डप बिच देखि हर वर ॥
 हेमैत गौरि कर गहि लेस, शङ्कर पाणि उपर देस ॥
 शङ्क हेम जन फल दए, देखे दान परसन भए ॥
 तखनुक हर्ष एहन सन, न भेस न होएत कहु सन ॥
 गोपि-ईश मन कविबर, गौरि बिभ्राह्म शङ्कर ॥^१

(५)

भ्राएस हेमैत नगर हर, देखए चलसि पुरनारि ।
 देखि मन सबहुक भुर भेस, मिलि मिलिअपि पड़य गारि ॥
 प्रथम भूतगन अनुघर, घूढ़ घृषम असवार ।
 भूपन नाग विविष तन, सिर मन्दाकिनि-धार ॥
 सीनि नयन सस भद्रभुत, रजस्त-सिखर सम भङ्ग ।
 भाल वास ससि राजित, असन भाक बिप भङ्ग ॥
 दिहैसि बिहैसि सम नागरि, चलसि देखि दरिभास ।
 परिधय पुछए वरक सम, कसए माय कत तात ॥
 कहयि मनाइनि ससि सैं, सुनि-सुनि वरक स्वभाव ।
 कपोत एहन वर भानल, भव मोहि किछु नहि भाव ॥
 गोपि-ईश कह इह वर, त्रिभुवन-पालक जानि ।
 समुचित मिसल गौरिवर, कह उछाह हिम रानि ॥^१

❀

१ जो ईतबाब क्य (वरभोग) से प्राप्त ।

२. वरी ।

गोविन्ददेव

आप मगध के निवासी थे।^१ संस्कृत तथा प्राकृत के आप प्रकाश विद्वान् थे। प्राकृत पर ही आपका असाधारण अधिकार था। कुमारान के प्रसिद्ध कवि 'विप्रवन्तम' (राधावल्लभ कोशी)^२ को आपने ही नागराज का 'प्राकृत पिङ्गल' पढ़ाया था। आपने उन्हें हिन्दी-कविता करने की परिचाटी भी सिखलाई थी। आप स्वयं भी हिन्दी के एक विद्वत् कवि थे। आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



चतुर्भुज सहाय

आप सारन जिले के 'सहस्रवनगर' नामक ग्राम के निवासी^१ और खतरपुर-राज के दीवान थे। आपकी पुस्तककार किसी रचना का उल्लेख नहीं मिलता। केवल स्फुट रचनाओं के सम्बन्ध में ही सूचना मिलती है। मिश्रबन्धुओं से आपका रचना-काष्ठ सं० १८८८ वि० (सन् १८२१ ई०) कतसामा है।^२ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



चन्द्र शर्मा

आप मिथिला निवासी थे। आपकी लिखी एक पुस्तक (उपाहरण)^१ बृजचन्द्र घोष के माध्यम से, दरभंगा से प्रकाशित हुई थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



- १ 'वैश्यापर' (वर्ग, पृष्ठा २० व कन्नड, अक्षर १ अंक ७, सं० १९१४ वि) पृ २१२।
- २ इनका उल्लेख इसी पुस्तक में कर्नाटक ग्रन्थ है। इनका जन्म सन् १८२१ ई में हुआ था। 'महल्लोचन' पढ़ते समय इनकी आयु १२ २ वर्ष की रही होगी। पढ़ते समय आपकी आयु भी कर्नाटक-पद्यम वर्ष के लगभग होगी। इस तरह अनुमान होता है कि प्यत्थ जन्म सन् १८०१ ई के बीच हुआ होगा।—सं०
- ३ 'मिश्रबन्धु-विमोह' (वही विज्ञान जग) पृ० ७४०।
- ४ वही। आपके रचना-काष्ठ के आधार पर आरका जन्म सन् १८०२ ई० के अक्षरगत अनुमित होता है।—सं०
- ५ 'दिग्दी-मुक्तक-संग्रहित' (वर्ग) पृ ४४। आरकी वा रचना सन् १८८० ई में प्रकाशित हुई थी। अनुमान है कि इस समय आपकी आयु कम से कम ३० वर्ष की रही होगी। इस तरह आरका जन्म सन् १८२० ई के अक्षरगत माना जा सकता है।—सं०

चन्द्रेश्वरी राय

आप सारन जिले के 'पंचवर्नियाँ' नामक ग्राम (डा० बरौली) के निवासी थे।^१ आपके पिता भीवालकिमुन राय (भीवालकृष्ण राय) कवि ठोकाराय^२ के परासे के थे और सारन जिले के ही 'पठार' नामक ग्राम (परगना आँवर) में रहते थे। वे (आपके पिता) ठोकाराय के समय में ही उक्त ग्राम छोड़कर 'पंचवर्नियाँ' में जा बस्ये थे। वे और उनके पुत्र 'सविता' और 'भवानो' भी काव्य-रचना करते थे। अतः, आपकी काव्य-रचना की प्रथिमा पंश-परम्परागत थी। आपके पुत्र का नाम था महेन्द्र राय और महीबे का मिन्दु राम। वे दोनों भी कवि थे। आपके एक शिष्य और साल ठाकपुर (कुलशरिवा, सारन)-निवासी रामकृष्ण राय^३ भी एक कवि हो गये हैं।

सं० १६०२ वि० (सन् १८८५ ई) तक आपका जीवन रहन का पता प्लतवा है।^४ वास्तवकात् से ही आपमें कविता रचने की प्रवृत्ति थी। रीतिकासीन काव्यश्रंखी के अन्वयन में आपका विशेष अनुराग था। आप बड़े स्वामिमानी और स्पष्टवादी कवि थे। आपकी कई रचनाओं में मोक्षपुरी का पुट भी है। आपकी स्फुट रचनाएँ बहुत-सी हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'स्वयंवर नामक एक काव्य-ग्रंथ भी लिखा था। कुछ सम्जन आपके और भी ग्रंथों का पता मतलाप्त है।^५

१. श्रीगुप्तदेवप्रसाद सिंह (बही) द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर।

२. इसका परिचय इस पुस्तक के अन्वय संक में द्रष्टव्य।

३. इसका परिचय इसी पुस्तक में बदारवान द्रष्टव्य।

४. पंचवर्नियाँ (सारन) के जन्मी-व्यसक-निवासीरिद के लक्ष्यी प्रबन्धाचारक श्रीगारराकर प्रसन्न के (१) कथन सन् १९११ ई के अरसे पर में लिखा है कि आपके बारे में सप्रमाण पतास वर्ष हो गये। इससे अनुमान होता है कि आप सन् १६०२ ई के लगभग जन्मे हुये। कर्तुंयुक्त संजन के लेखानुसार ही आपकी मृत्यु साठ-बैसठ वर्ष की आयु में हुई थी। तब आपके जन्म-वर्ष सन् १८८२ ई के लगभग अनुमित होता है। उक्त पर से ही पता चलता है कि आपके पुत्र श्रीरंज राय का जन्म सं १९१५ वि (सन् १८९२ ई०) में और देवप्रसा सं २००० वि (सन् १९२२ ई) में हुआ था। आपके भाई निम्नेरपरी राय के संसों के अतिरिक्त आप आपका कोई बंधन नहीं है। —सं०

५. आपकी रचनाओं के विवर में पूर्णतः दृष्ट-संदेह में लिखा है कि कलमठपुर (भारत)-निवासी किसी व्यक्ति ने आपके रचनाओं में कुछ हेरफेर करके उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करा लिया है। ऐसी रचनाओं में 'महाप्रकाश' बन्ने-पडी है। उनके अतिरिक्त 'अनवरतनक नामक आपके एक काव्य-ग्रंथ का भी पता चला है पर वह भी अनुपपन्न है। श्रीराजदेव कवि (बही) के लेखानुसार 'आपकी बहुत-सी रचनाएँ आपके भाई निम्नेरपरी राय के संसों के अतिरिक्त आप के नाम ५ बने-बिना में बनी हुई हैं। करे बिने आपकी वा जूलित मकरी में। वे लोप करने देना बही चाहते हैं। —सं

उदाहरण

(१)

करत न यज्ञ कूप वायली तबाग भूप
समुक्त्त न होत्रे द्वार सायु संत भ्रंला मे ।
पंडित प्रवीन जो पुरान ले सुनाये ताहि
देत ना छद्राम होत सामिल न खला मे ॥
चन्देश्वरी कहै कियो मुक्ति सो रूपया त्वंचि
जोरि-जारि भरत सन्दूक भौर धला मे ।
गंसा पर पाछे पछलात मधुमच्छिका-मे
वाजे मन मंसा है अनूप धन भेला में ॥'

(२)

झाँकती करोखे सागि जानकी भटारी वंठि
सखियाँ सलानी चारु चन्द सों लगति हैं ।
तामैं उमा इन्दिरा सरस्वती सुरिन्द सूर
प्रमदा सभेप धै प्रमोद म पगति हैं ।
चन्देश्वरी कहैं व्याह उत्सव प्रभाव देखि
मंगल मुगाय है असोस उमगति हैं ।
जानत न कोऊ राम जानकी लखन जान
प्रेम के परिच्छा है समामे सों ठगति हैं ।'

(३)

बैंगला बहार जामें सासा विश्वकानी लसे
भाबडू फनुस देखि सोभा साम लहिहै ।
चन्मन नवार अरु बूँदन बध्दार लागे
खाम भस्म-बानन में पंखा पवन ठरिहै ।

१ श्रीदुर्गादेव प्रसार निर (११) से पाठ ।

२. बही ।

चन्द्रेश्वरी राय

आप सारन जिले के 'पंचवेनियाँ' नामक ग्राम (डा० दरोली) के निवासी थे। आपके पिता श्रीबालकिशुन राय (श्रीबालकृष्ण राय) कवि तोफाराम^१ के घराने के थे और सारन जिले के ही 'पठार' नामक ग्राम (परसना जॉर) में रहते थे। मैं (आपके पिता) श्रीकाराम के समय में ही एक ग्राम छोड़कर 'पंचवेनियाँ' में जा बसे थे। मैं और उनके पुत्र 'सखिता' और 'भवानी' भी काव्य-रचना करते थे। अतः, आपकी काव्य-रचना की प्रतिमा पंथ-परम्परागत थी। आपके पुत्र का नाम था सईन्द्र राम और भतीचे का मिन्दू राम। मैं दोनों में कवि था। आपके एक शिष्य और छात्र ठामपुर (पुल्लवरिया, सारन)-निवासी रामप्रकाश राय^२ भी एक कवि हो गये हैं।

सं० १६०९ वि० (सन् १८४२ ई.) तक आपका जीवन रहने का पता चलता है।^३ बाल्यकाल से ही आपमें कविता रचने की प्रतिभा थी। रीतिकालीन काव्यग्रंथों के अध्ययन में आपका विशेष अनुसंधान था। आप बड़े स्वाभिमानी और स्वपरायणी कवि थे। आपकी कई रचनाओं में भोजपुरी का पुट भी है। आपकी स्पष्ट रचनाएँ बहुत-सी हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'स्वयंवर' नामक एक काव्य-ग्रंथ भी लिखा था। कुछ समयन आपका और भी ग्रंथों का पता बतलाता है।^४

१. श्रीदुर्गातीर्थरत्नार मिश्र (बही) द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर।

२. इनका परिचय दस पुस्तक के प्रथम संक में द्रष्टव्य।

३. इनका परिचय वही पुस्तक में बहासनाम द्रष्टव्य।

४. पंचवडी (सारन) के पण्डी-न्यायक-विद्यापीठ के सहायी प्रशासनात्मक श्रीजगन्नाथप्रसाद मिश्र के १३ अप्रैल सन् १९२१ ई० के अपने पत्र में लिखा है कि आपने मेरे जगन्नाथ प्रसाद पत्रें ही भेजे। एतत्त अनुसंधान होता है कि आप सन् १६ २९ ई. के लगभग मरे होंगे। उपर्युक्त समय के लेखकानुसार ही आपको सन् १६०९ तक का पता है। आप का जन्म-साल सन् १६४० ई० के लगभग अनुमानित होता है। एक पत्र से ही पता चलता है कि आपका पुत्र सईन्द्र आप का जन्म सं० १६४९ वि० (सन् १८०२ ई.) में और देवान्त सं० २० ० वि० (सन् १६२० ई.) में हुआ था। आपके भाई मिन्देसरी राम के बंशों के अतिरिक्त यह आपका कोई बंशपर नहीं है। —सं०

५. आपकी रचनाओं के विषय में पूर्वोक्त पत्र-प्रकाश में लिखा है कि सय्यतपुर (सारन)-निवासी किसी व्यक्ति ने आपकी रचनाओं में कुछ हेरफेर करके उन्हें अपने नाम से प्रकाशित करा दिया है। वेही रचनाओं में 'सदाशिवधर्म' शब्दों-वर्णन है। इनके अतिरिक्त सय्यतपुरक नामक आपकी एक काव्य-ग्रंथ का भी पता चला है पर वह भी अनुसंधान है। श्रीद्वारदेव कवि (बही) के लेखानुसार 'आपकी बहुत-सी रचनाएँ आपके भाई मिन्देसरी राम के परिवारात्मकों के नाम रचने-लिखने में नहीं हुईं हैं। अनेक-कौन रचनाओं पर अनुसंधान प्रवृत्तियों में। ये लोग उन्हें देना नहीं चाहते। —सं०

उदाहरण

(१)

करत न मन कूप वावली तहाग भूप
समुख न होवे द्वार साधु संत झेला मे ।
पढित प्रवीन जो पुरान ले सुनावे ताहि
देत ना छदाम होत सामिल न खेला मे ॥
चन्द्रेश्वरा कहै कैयो मुक्ति सों कपया त्वचि
आरि-ओरि घरत सन्दूक भोर पला मे ।
गैला पर पाद्ये पछतात मधुमच्छिका-मे
वाजे मन मैला है अनूप धन मैला म ॥'

(२)

भाँकतो ऋरोषे लागि जानकी अटारी वीठि
सखियाँ सलानी शारु चन्द्र सा सगति हैं ।
तामैं उमा इन्दिरा सरस्वती सुगिन्द सूर
प्रमदा समेप धै प्रमोद मे पगति हैं ।
चन्द्रेश्वरो कहैं व्याह उत्सव प्रमाथ देखि
मंगल सुगाम है असास उमगति हैं ।
जानत न कोऊ राम जानका लखन जान
प्रेम के परिच्छा है समास सा ठगति है ।'

(३)

बैंगला महार जाम सोसा चित्रकारी लख
काहू फनुस देखि सोभा सोम सहिहै ।
चन्दन नवार अरु दूदन वछार लागे
श्याम लस-वानन में पत्रा पवन हरिहै ।

१ श्रीदुर्गादेव पठार त्रिद (१०१) के अर्थ ।

२. जो ।

चन्देस्वरी कहैं तामे इतर फुहारन की
 सुमन का सज्जा पर सरोज गात सहिहै ॥
 होत जो न थाम तीन बाहर पसक तीन
 क्वार के करेरी थाम राम कैसे सहिहै ।^१

(४)

धुंध करि दादुर दरेरा दत दोर दोर
 वर-वर वरारन दबीज दरसै-सगै ।
 पृथुमि पतास पंथ पर्यतनि पौडि पानी,
 सर सरिसानि बापी कूप सरसै सगै ॥
 चन्देस्वरी घासक पपीहा मोर मिन्मोगन
 चहुँ छोर टेरेँ पौन पुज परसै लगी ।
 नीद नहिँ भावत गुविंद पति प्यारे बिनु
 धुन वारि वारिद धुसन्द वरसै सगै ॥^२

(५)

धरन-सरन जन गहस सहत धन, कहत सकल जग भचल अनद-मद ।
 असम नयन बर मसन धरम-गज, कर धन सर यह दहन मदन मद ॥
 वसह धरध पर ससत चहुँत कन, सरद रयन कर धबल करम रद ।
 जहर सहर मह गरक रहत मन, समगत हर हर कहत अनद मद ॥^३

❖

१. श्रीगुरुदेव प्रसाद शिर (११) काव्य प्रेरित ।

२. श्रीकचोप खर्चित (११) काव्य प्रेरित ।

३. वही ।

आप हिन्दी और संस्कृत के प्रकांड विद्वान् थे। आपकी विद्वत्ता एवं कुशाग्रबुद्धि का परिचय देते हुए काशी के प्रसिद्ध ज्योतिषी महामहोपाध्याय भोक्तयोध्यानाय जी कहा करते थे कि एक बार एक विद्यायी ने आपसे रामायण पढ़नी चाही। जिस समय उस विद्यायी ने आपसे अपनी यह इच्छा प्रकट की उस समय वह 'धारस्वत' पढ़कर 'चन्द्रिका' पढ़ रहा था। उस आपने उसे चन्द्रिका ही पढ़ाते हुए उसी में अर्थात्सहित सारी भावस रामायण पढ़ा दी।^१

काशी के प्रसिद्ध रामायणी पं० भीरामकुमार जी को आपसे ही माताय-सहित 'मानस' पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उस समय आपकी अवस्था ६३ वर्ष की थी। महारत्ना श्रीअज्ञानीनन्दनशुक्ल जी न लिखा है कि 'पं० रामकुमारजी अपनी कथा में आहर-पूर्वक आपका नाम लिया करते थे और कहा करते थे कि मैं (आप) 'मानस' के बड़े अगाध समर्थ थे—जब-तब कही कहते थे कि अब बुढ़ापे में तुमको कथा पढ़ाऊँ, कथन खानासा दिखाये देता हूँ।'^२

काशी के बिकटोरिया प्रेश ने आपकी रामचरितमानस की पोथी का एक गुठका छापकर प्रकाशित किया था। आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



छोटक पाठक

आप अम्मारम मिले के निवासी और वैठिबा (अम्मारम) के महाराज राजेश्वर किशोर सिंह (मन् १८२५-८६ ई) के दरबारी कवि थे।^३ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



जगदम्बलाल प्रहारी

आप इलाक (हजारीबाग)-निवासी अम्बलाल कायस्थ थे।^४ आपकी दो काव्य रचनाएँ मिलती हैं—(१) लखरसलागर^५ और (२) प्रथम गिलाहोमी^६। प्रथम में ८६ पद्य हैं और द्वितीय में १११ कवित्त। अन्य क अन्त में भी ७ स्पुष्ट कवित्त हैं।

१ —'ऐपिच, कल्याण' (वही) पृ ६२४।
 २ वही।
 ३ विहार-साहित्य विष्णु-सर्पिल-वर्णन के द्वितीयाविवेशन (वैठिबा) के स्वगताध्यक्ष लेख राधाहृष्य जी के भाष्य में। भाष ही वैठिबा—'अम्मारम की साहित्य-संस्था' (वही) पृ १६ महाराज राजेश्वर किशोर काव्य एवं संभोक्त-कथा के बड़े कारणी थे। इनकी अत्यन्त बनी रामसंज्ञा के अर्थ में भी। उन्होंने बायोमैरा महाराज देवरी प्रसार कारागण सिंह के दरबारी कवि उदहार जी को राजेश्वर देवरी पर सम्पादित किया था। एक बार कविदर वर्णन को भी इनके एक कवित्त पर २० हजार रुपये देकर सम्मन किया था। बहते ही भास्तेपुत्रान् हरिरत्न के दुर्दिन में भी उन्होंने इनको (कारागण जी) सहायता की थी और राधा मित्रवत्सल शिरोदेशिनी को मुक्तिदान किया था। (कापिजी, मन् १८६१-६२ ई पृ ४६)। बरकाजगदीश्वर-काल मन् १८२२ ई है। दरकार में उठते समय आपकी अवस्था कम-से-कम पालीन वर्ष की रही होगी। अतः अनुमान है कि आपका जन्म मन् १८१५ ई. के लगभग हुआ होगा —वै
 ४ श्रीचन्द्रशेखर महाराजों द्वारा भाग्य गुणना के अन्तर्गत पर।
 ५ समस्त प्रकाशन लखनौमुद्रण प्रेम (कल्याण वही) के द्वारा था।
 ६ समस्त रचना में १११ पद्य (मन् १८६० ई) में अन्तर्गत २३वरी बुधवार को समाप्त हुई थी। वही आचार पर आपका अन्तर्गत मन् १८८ ई के आनन्दन अनुविद्य है।—सं०

उदाहरण

(१)

श्री गनराज कृपा सुख साज गरीव-नेवाज नमो पदकंजा ।
दास मनोरथ पूरन तूरन कूरन कोविद कारक पजा ॥
बोधन को घन वाजि गजादिक गो-घन-घान्य सुदायक संजा ।
विघ्न विनासि विनासु दुस्सार्तिहि दारिद दूरि परे कुरु भजा ॥

(२)

शकर कुसारविन्द शोभानन जों करिन्द
बन्दित सुरेन्द्र पद कविन्द गन गावें ।
विघ्न हूँ विनाय जात दारिद दुराय जात
कोटि कामदा सुहात सेवक मन भावें ॥
कासो गुन पारावार रावरो बखानो जाय
गौरिजू के नन्दन घन्द मौसि छवि छावें ।
बोधन उर प्रेम की तरंग बाढ़ि वारि
सेननाथ इष्ट देव जू से विनती गुरावे ॥^२

(३)

बानी महरानी मसि दीजिए सुदानि देवि
बिरद को कहानि तोहि बेदहू बखानी हैं ।
विधि की हो तनुजा तू प्रभुनारायन जी की
पटरानी राजधानी बँकुठ बसाना हैं ।
दासता सुबुद्धि मानु हौसभा जो होष जात
गावो गुनगाथ जा के मुक्ति को निसानी है ।
वासर सिरानी बहू ताते प्रकुत्तानी चित
देहू वरदानि मोहि बन्दौ जोरि पानी हैं ।^१

✽

१. 'सर्वसङ्कार' का प्रथम उदाहरण ।

२. 'प्रथम शिल्पीय' का प्रथम पद्य—सर्वसङ्कार ।

३. 'सर्वसङ्कार' का द्वितीय पद्य—सर्वसङ्कार ।

जगदेवनारायण सिंह

आप गया जिले के निवासी थे। आपके भाग्यवशात् उसी जिले के टिकारी तरेण महाराजा गणहृष्य सिंहजी थे।^१ आपके द्वारा महाराजा के सम्मान में रची कुछ हिन्दी कविताएँ उपलब्ध होती हैं। आपकी प्रसिद्ध एक छायाकवि के रूप में भी थी।^२ आपकी कोई पुस्तकाकार रचना नहीं मिली। केवल कुछ रचनाओं के कुछ उदाहरण ही प्राप्त हो सके।

उदाहरण

(१)

बैठे कुसासन पे सासन करि इन्द्रिन को
 धारे कंजासन नहीं प्राप्त जमराज को।
 धनुवाण चन्द्रिका सुमुद्रिका सिलाय भंग
 उर्ध्वपुङ्ख चन्द्रविन्दु भी कै सुभ साज को ॥
 सरयू भी गङ्गा जल पान करि बार-बार
 ध्यान करि सीता-राम रास कै समाज को।
 ब्रह्म-मण्डली के बीच ब्रह्मबेला पाम गये
 ब्रह्म-रंजन हूँ कै लोक ब्रह्म-रघुराज को ॥^३

१ 'विहार-दर्पण' (वर्षी) १ १४०-४१; महाराजा गणहृष्य सिंह की मृत्यु सं १८१२ वि० (सन् १८७२ ई.) में ६२ वर्ष की आयु में हुई थी। उनकी मृत्यु के समय आप का उपासकत्व में। उपासकत्व और उपासकत्व होने के कारण कुछ समय आपकी बड़ावा कृप से इन काशीस कव की रही होगी। उपासकत्व का अर्थ अनुमानतः सन् १८२०-२२ ई. के आसपास हुआ होगा।—

२ वही, पृ० १४१। महाराजा की मृत्यु के कुछ वार आपन विभक्तिविषय कुछ चीरे बनावे, जिससे आपके अस्तु-वर्ति होने का प्रमाण मिलता है—

एक लोक विधि अस्तु-वर्ति कथित है।

सोमवार दिवि धार में कुछ रात टुन कल त

गये लोक सारेत में करि सबध कायेत।

एक-दिवस को रात करि अन्त-विराग उमेत ॥

महाराज-वारी उचित उपहृष्य सिंह नाम।

कविम-रत्न का रत्न गये तुल-रत्न के नाम ॥—वही।

(९)

राज तीय मुद्रा दिये लच्छन विघच्छन को
 वच्छन समेत गाय कच्छन भराम कै ।
 भच्छन के हेत दिये भन्नदान दीनन को
 खीनन को खेत दिये दछिना मिलाय कै ।
 हेम-सिंह-भासन पै भासन कराय दिये
 शासग्राम शानवाक्य वैदिक बनाय कै ।
 साता-राम प्रीत दिये ग्राम विज पडित को
 पूजे पदकज हरिभक्त हिय ताय कै ॥'

*

जगन्नाथ तिवारी

आप चम्पारन जिले के निवासी और बेतिया (चम्पारन) के महाराज राजेश्वर-
 सिंघोर सिंह (सन् १८५५-८३ ई) के दरबारी कवि थे ।^१ आपकी कविताओं के उदाहरण
 उपलब्ध नहीं हुए ।

*

टिम्बल शोम्भ

आप पटना जिले के निवासी थे । कोई कोई आपका गया जिले का निवासी भी
 बतलावे हैं । पटना जिले की प्रसिद्ध नदी 'पुनपुन' की महिमा बरसावे हुए सन् १८८८ ई
 में आपने एक छोटी-सी पुस्तक 'पुनपुन माहात्म्य' लिखी थी ।^१

उदाहरण

(१)

पुनि पुनि करत पवित्र सदाई । पुनपुन नाम कहुत श्रुति गाई ॥
 जौ पुनपुन के तट पै जायो । प्रथम तासु रज सीस जगाओ ॥
 पुनि जल सै सिर ऊपर राखो । तव जल पैठि राम मुख माखो ॥
 या वह नियम न पाली माई । होइहि कष्ट सुनो चित साई ॥

१ 'मिहार-दर्शन' (पृष्ठी), १ १४५ ।

२ मिहार-दार्शनिक टिप्पणी-संश्लेषण के द्वितीय अधिवेशन (बेतिया) के स्थापनापत्र एक उदाहरण
 के माध्यम से । महाराज राजेश्वरसिंघोर सिंह का सिंहासमारोहण सन् १८३३ ई में हुआ था । उनके
 दरबार में रहते समय आपकी कल्पना कम-से-कम बाबोस वर्ष की रही होगी । अतः आपका जन्म-काल
 सन् १८१५ ई के आसपास अनुमित है ।—सं०

३. इसके प्रकाशन-काल से अनुभाव होता है कि आपका जन्म सन् १८३३ ई० के अन्ततः हुआ होगा ।—सं०

प्रथम रोग उत्पत्ति फल सीजै । तेहिते विविध भाँति तन छोजै ॥
जो शरार में उपजै रोगा । तीनहि होई सक कोई भोगा ॥
भोग अकारण जनमहु जाई । ताते नियम पालिय भाई ॥^१

(१)

कीकट देस पुनीत नदी कह्यै जो जन जान हिये मह्यै धार ।
पितरन भास सगाय हिये मह्यै कोटिन भाँति असीस उधारे ।
देव रहो जस पिण्ड सुपुत्र तू नरकन स कुल केर उधारे ।
आम गया मह्यै पिरठहु पारि के साँचहु पुत्र हो नाम तिहारे ॥^२

✽

ठाकुर^३

आप छपरा-नगर के साहजगज-सुहस्ते के निवासी मदनिया (मधेधिया) कान्त (मङ्गुबा) थे ।^४ आपके पिता का नाम गोपीनाथ साह था, जो इलहाई का काम करते थे । आप भी स्वजातीय बन्दे में बड़े निपुण थे । मिठाइयाँ, सुरब्बे, अचार आदि बढिया बनाते थे । बिन्ही की वस्तुओं का एक ही दाम कहते और उतना ही लेते थे । आप बड़े परोपकारी और यशस्वी बंधु भी थे । बिंकरवा निष्ठाव्रत करते थे । खीरप बनाने में का डीक लज होता था, वही रोगी से लेते थे । आप एक अच्छे मसकरे और कुत्ते के शौकीन थे । कुत्ते आपने हनुमान सिंह नामक व्यक्ति से खीची थी ।

आपके पिता से ही पहले-पहल आपको हिन्दी पढ़ाई । आगे चलकर आपन कुछ संस्कृत भी सीख ली । इन दिनों छपरा के बमनाथ महादेव के मन्दिर में माताबा देव के निवासी भोरामचन्द्र नामक एक पण्डित पुराण-कथा कहा करते थे । आपने उनसे भी कुछ शिक्षा प्राप्त की थी । आप बराबर सुबिधो, पढिठो और कबिबो की संगति में रहा करते थे । प्रसिद्ध हिन्दी कवि 'पद्मनेत' का भी घस्संग आपको प्राप्त हुआ था । पद्मनेत का जन्म-काल १८०२ वि० (सन् १८१५ ई०) और कविता-काल १८०० वि० (सन् १८१३ ई०) माना गया है ।^५ इसी समय के लगभग आपका भी रचना-काल रहा होगा । कहा जाता है कि पद्मनेत के छोटे भाई 'सुबनेत' अपने जीवन के अन्तिम दिनों में बहुत दिनों तक छपरा-नगर में गुरुकर वहीं

१ 'पुनपुन-पावताम्' (दिव्यत जोका, अथन १८ सन् १८८२ ई.) पृ २० ।

२ वही ।

३ आपका परिचय (१८०) वल्लु विपनन्दन सहाय द्वारा बेसिध मृगनाथों के आचार पर उक्त किया गया है ।

४ 'विहार-वर्ष' (वही) पृ० १८१ ।

५ 'दिव्यत-विचर' (वही सटीक भाग), पृ० १०३८ ।

निर्मित हुए थे। संभव है, इन्हीं के संतर्पण से पबनेस के साथ आपका भी सम्पर्क हुआ हो। कवि-समागम के प्रभाव से आपने विंगल का भी अध्ययन किया। कहते हैं, आपके एक मित्र साक्षात् हरनाथ सहाय^१ ने आपकी सहायता से ही 'काशीखण्ड' नामक एक हिन्दी-पुस्तक की रचना की थी।

सं० १६२६ वि० में, लगभग ३९ वर्ष की आयु में भाद्र-शुक्ल ३ को, मीपन स्वर से, आपका शरीरपात हुआ।^२

आपके द्वारा रचित किसी भी पुस्तक का पता नहीं चलता। केवल स्पूट रफ्तारों ही मिलती हैं। बा० रामदीन सिंहजी ने लिखा है कि 'छपरा के इलाके में रेमा कोई न ठहरैगा, जो ठाकुर कवि की बनाई चीजें (कवित्त, मन्त्र आदि) न मानता हो या इनकी महार्ह के कामों से इनकी याद न करता हो।'^३

उदाहरण

(१)

हरि मोहि सेवरी-सेवक कीजै ।

पानोदक प्रह्लाद दैत्य को निश्चर नफर करीजै ।

गनिका भनुग भजामिस भनुचर गोघ गुलाम गनारै ।

दास करो रविदास कविर को सुपन्ध पंगति लाज ।

ठाकुर ठौर ठाढ़ होइवे को सदन-सदन मोहि दारै ।^४

(२)

कलिके क्षम सेसत होरो ।

होस प्राप्त स्वनी भरि तारी, घर-घर खरी खुशो रा ।

पोषत खात ससात परसपर, जूता-सात मचो रो ।

दया होइ वमन करो री ॥ कलि०

बहुत जतन से भ्रष्टा सामो, नभचर प्रात हसो री ।

भेठ पछारि नै भाग सगावत, जलचर भच्छ करो री ।

दया नहि सार्ग खोरी ॥ कलि०

(१) इसका परिचय शही मुलक में कराधान रहस्य ।

(२) शही अन्धकार पर आपका कर्म-कात्र सं १८१० वि० (सन् १८३६ ई.) के अन्धकार प्रसंगिता हीना है।—सं

(३) 'विद्या-दर्पण' (वरी) १ १२६ ।

(४) वरी ५० १६४ ।

ठीर-ठीर में जमनी नाचत, बा सेंग भोग करो री ।
 वार्जी नर-पदत्रान हार गल, खर पर हरपि चढ़ो री ।
 मूँह मसि-तेल खभोरी ॥ कलि०
 रहित उखाह डेरास रंग से, घोड़ गुत्ताल परो री ।
 ठाकुर जम जब प्राण निकसिहुँ, देहि नरक म बोरी ।
 प्रथम है गिनती मोरी ॥^१ कलि०

✽

देवदत्त मिश्र

आप पठना के निवासी थे । हिन्दी में आपका द्वारा रचित एक नाटक 'बास बिबाह बृषक' का पता चला है ।^१ आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले ।

✽

नान्हक

आप धारन जिहो के निवासी राज भाट थे । आपने बहुत-सी स्फुट कविताओं की रचना की थी, मितपर मोजपुरी भाषा का अधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।^२

उदाहरण

हापिन के साजे वने समाजे कोटिन राजे पगु • डारे ।
 दल बादल छाये जनक बुलाये नृप सब भाये मनि डारे ।
 दुल्सह जब भाये दरसन पाय 'नान्हक' पढ़त सुमन धरये ।
 दिग्गज अकृमान कमठ सकाने जनक जुडाने दल देये ॥^३

१ 'बिहार दर्पण (वरी) ५० १७१ ८४ ।

२ इनका प्रकाशन सन् १७७२ ई० में बंकेचुर (वराण) क पत्रिकास में से हुआ था ।—देविप्र, विन्दी पुस्तक-सालिका (वरी) ५ ४८० । एकदा प्रकाशक-काल में अर बाक-से-काल ४० वर्ष के रहे होंगे । अत आपका जन्म साल सन् १७३२ ई० के आसपास ही लगता है ।—त

३ अनुमानतः अथवा रिचित-काल से० १८४१ पर मि०(सन् १७७४-८४ ई) के आसपास है । अतः, जन्म-काल सन् १७४०-४२ ई के बीच का अपने-पैजे होना ।—जीतुपतिशरवतार सिंह (वरी) से प्राप्त परिचय-नामकी के आधार पर ।—त०

४ वरी ।

नारायण

आप पटना निवासी थे। आपने हिन्दी में काव्य रचना की थी। हिन्दी में आपका 'व्यथाम' नामक एक काव्य-ग्रंथ प्रकाशित भी हुआ था।^१ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



नारायणदत्त उपाध्याय

आप भ्रमरान मिले क निवासी और बतिया (चम्पारन) के महाराज आनन्दकिशोर सिंह (सन् १८१५-३८ ई०) और नवलकिशोर सिंह (सन् १८३८-५५ ई०) के दरबारी कवि थे।^२ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



परमानन्ददास

आप शाहाबाद जिला के 'कोठी' ग्राम निवासी एक काव्यस्य कुलोत्पन्न कबीर-संघी संत थे।^३ आप बौद्धिकोपासन के लिए बौधपुर (उत्तर प्रदेश) में नौकरी करते थे। वहाँ से भर आने के लिए आपकी अवकाश कम मिलता था। अतः, प्रतिमास अपनी पत्नी के पास खन्वोबख पत्र प्रेषित किया करते थे।^४

आपकी दो पुस्तकाकार रचनाएँ हस्तलेख के रूप में मिलती हैं—(१) 'बारहमासा'

१. इसका प्रथम अंक सन् १८८७ ई० में बङ्गालका प्रेस (पटना) से हुआ था—बैंग्रिप 'हिन्दी-पुस्तक सारित्त (वही) पृ ४६५। यह रचना प्रकाशक-काल में अथ ४० वर्ष के उद्रे होयें तो आपका बन्धु अन्वोबख सन् १८९० ई० में हुआ होता।—सं०
२. बैतिका-नरेश महाराज आनन्दकिशोर सिंह सन् १८१५ ई० में गरी पर बैठे थे और नवलकिशोर सिंह सन् १८५५ ई० में लखीम हुए थे। अतः, आपका स्थिति काल इसी अवधि के अन्तर्गत अनुमित है।—सं०
३. एशिया विहार-प्रान्तीय हिन्दी-सहित-सम्मेलन (सीतामढ़ी) के समारोह श्रीरामदास साहब के भाषण से।
४. श्रीरामेन्द्र प्रसाद (कोठी, शाहाबाद) के लिखित २४४२८ के पत्र से।
५. इस पुस्तक की एक हस्तलिखित प्रति विहार-उद्गमक-परिषद् के 'बौद्ध संघ' में सुरक्षित है। इसकी एक प्राचीन हस्तलिखित प्रति श्रीरामेन्द्र प्रसाद (अन्वोबखी सेठिया) के पास भी है। कन्दो बसी प्रति के आधार पर अन्वोबख के भीमपुरी स्थित भविष्य (वर्ष १ अंक १९-१५ १९ मई सन् १९६६ ई० पृ ११-१०) में श्रीरामेन्द्रजी के 'बारहमासा' शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया है जिसमें कन्दोने आपका लिखित-काल १८वीं शती बताया है। किन्तु कवि ने स्वयं ही 'बारहमासा' का रचना काल सन् १९५ ई० और कबीरमानुसंग का ८ १६३२ वि (सन् १८३८ ई०) बताया है। 'बारहमासा' के काल-सूचक कोड़े में जो संवत् संवत् है वह वर या सात का बोधक है। आन्वो सन् १८५२ ई० में अपनी पहली रचना (बारहमासा) लिखी थी। उस समय काव्य-कम-से-कम ४-५५ वर्ष के उद्रे बनि। अतः आपका बन्धु-काल सन् १८१ १५ ई० के लगभग होगा।—सं०

ठौर-ठौर में जमनी नाचत, वा सँग भोग करो रा ।
 वार्द्धी नर-पदचान-हार गल, छर पर हरपि खढ़ो री ।
 मुँह मसि-तेस खमोरी ॥ कसि०
 रहित उछाह डेरात रंग से, थोड़ गुलाब परो री ।
 ठाकुर जम जय प्रात निकलिहँ, देहिं नरक में बोरी ।
 प्रथम हूँ गिनती मोरी ॥^१ कसि०



देवदत्त मिश्र

आप पटना के निवासी थे । हिन्दी में आपकी द्वारा रचित एक नाटक 'बाबू विवाह झूठ' का पता चलता है ।^२ आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



नान्हक

आप वाराणसी के निवासी राम भाट थे । आपने बहुत-सी स्फुट कविताओं की रचना की थी, जिनपर भोजपुरी भाषा का कविक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है ।^३

उदाहरण

हाथिन के साजे बन समाजे कोटिन राखे पशु • ठारे ।
 दल धादल छामे जनक बुलाये नृप सब भाये मनि ठारे ।
 दुस्तह जव भायं दरसन पाय 'नान्हक' पढ़त सुमन धरये ।
 दिग्गज भ्रुकुसाने कमठ सकान जनक जुड़ाने दल देये ॥^४

१ 'विहार-दर्पण (वही) १ १५३ पृ ८८ ।

२ इसका अद्यतन नाम १९८५ ई. में म.जी.पुर (वाराणसी) के उद्घाटन समारोह में हुआ था ।—द्विज, 'हिन्दी पुस्तक-साहित्य (वही)', पृ. ४८ । रचयिता-काल-काव्य में आप कम-से-कम ४० वर्ष के रहे होंगे । कवि आपका जन्म-काल लग् १९४५ ई. के आसपास ही सकता है ।—सं

३ अनुमानतः आपका दिवस-काल सं. १८८१ ई. में (लग् १९८८-९० ई.) के आसपास है । कवि, काल-काव्य लग् १९४०-५५ ई. के बीच का कवि-जीवन होगा ।—मौजुदाई-अनुसंधान विद्या (वही) से आगे परिचय-नामची के आधार पर ।—सं०

४ वही ।

और (२) कबीर-मालु-पकाय ।^१ कहते हैं, प्रथम पुस्तक में व्यापक उपसुक्त सन्धोबद्ध पद्य ही संश्लेषित हैं। इसमें सात के बाहर महीनों में बिगड़ी और बिरहिनी की मनोदसाका बड़ा ही रोचक और साहित्यिक वर्णन है। दूसरी पुस्तक एक प्रकार से कबीर साहब के बिचारी का सद्य संग्रह है। इसके अतिरिक्त इसमें आपके मौखिक विचार भी हैं और अन्य धर्मों की परिव्याप्तक आलोचना भी। साथ ही, स्वान-स्वान पर कबीर, हुस्नाशाह आदि सन्धी और बोगदासिध, बेदान्त-स्वाव-बर्धनादि की छक्तियों को साक्षी-रूप में रखकर अपने मन्तव्य को पुष्टि भी आपन की है। आपकी रचनाएँ मात्रपुरी भाषा में भी मिलती हैं।

उदाहरण

(१)

सत नाम असी वर सन्त सती दिन अन्त भये भगवान पमाना ।
जग नैन महा सुख ईन दुरे धीरे धीर घरो पद पंकज भ्याना ।
हृद इन्द्रिन दौन त मीन गहा घिर भासन हो धनुसासन माना ।
यहि संधि सचेत सतोगुन छ सत धारहि ये सत रूप समाना ॥^२

१. इसको एक हस्तलिखित अठ बिहार-राष्ट्रवादा-परिषद् के बोरे-संग्रह में सुपुष्टित है। इसके प्रथम में आपने लिखा है—

समस्त कविष सी वैठीसा । तुल्य बचवतीं लिखि दीसा म
अंगत बर बरेष बरीया । ता दिव संव समालि कीसा म
यहि पंथम देत के भारी । छर बिपीबपुर बर बरौ म
नय सुकतर बर दक बरै । दोषा मय निष्य हेदि करै म
तादि मय में बर असीसा । मयम अय बसु के लोलीसा म
यं बरन गुर असा करै । किब रच बरै कया समुभरै म
केते अरु सिपे बरारै । बो बोरे बटि रदि कदि मितरै म
छे गुर समुस सैजा परैरे । मिय मेर बो बोरे करैरे म

इससे ज्ञान चलता है कि आपके गुरु कीई पंथकी सन्त थे। आपने सं० १२१२ वि (सन् १८७८ ई.) में एक संव रच का। संवत में अथ कुछ समय रहे भी होवे। आपकी भाषा में 'गुनापेथे' 'किरदथे' 'भाषा' 'करथे' आदि शब्द प्रयोग पंजाबी भाषा के प्रामाणिक मतीय होते हैं। किन्तु, यह बिहार के ही बिरहानी थे। आपने रचय किया है—

हि-नुमान के गुरे में गुरे बिहार है । का में टाशागर सुकत ठाका है म

अने बरार के बोरो में मेरो मय है । बन्दा बरनामर इसाय बरन है म

—'गौर-वर (पंचिक, वर्ष १ अंक १४ १५ १६ मई, सन् १९१२ ई.)', पृ. १६।

२. बिहार-राष्ट्रवादा-परिषद् के हस्त लिखित प्रथम संस्करण में सुपुष्टित 'कबीर मालु-पकाय' की प्रत है।

(२)

छतियन वजर-केवार जैजीरा दे गये ।
 सूनी सेज भयावन भारी रात है ।
 निसि दिन ही पछतात बिरह से जात है ।
 का से कहौ यह दरद मैं अपने प्रीत की ।
 भागि लगो वोहि देस घसन वोहि रीत की ।
 सम सखियन के पीव विदेस से भाइयाँ ।
 मेरो वसाम्ह भामीत विदेसे छाइयाँ ॥'

(१)

सावन मास सोहावन जस यस महि भरे ।
 कन्त कुमंत विदेस न जानो बस रहे ॥
 छन गरजत छन खरसत दमकत दामिनी ।
 हरपत भवन मयावन सूती यामिनी ॥
 कर्वाहि भटाके छूट घटा के रोक से ।
 कर्वाहि भक्कोरत मेघ पवन के भोंक से ॥
 गगन तडकत मेघ कडकत छातियाँ ।
 बिरह मरी रस धैन सुनावत यातियाँ ॥
 वोसत दादुर मोर बिरह की घोसियाँ ।
 बिरहिन के हिय मांह सगे जस गोसियाँ ॥^१

(५)

भाये पूस के मास तर घर यास है ।
 बिरहिन को यह मास गले का फाँस है ॥
 रात वसो मोहि नींद न भावत नैन में ।
 तिसिर समै की रात न कुछ चित धैन में ॥
 करवट करवट फेरत कर है अलग फटे ।
 मेरो छोह पिया के तन मन सो घटे ॥

१ विद्या-रामनाथ-जीवह के वरत लिखित-धन रोच-विषय में सुरजन भावमत्ता के ।

कोइ न सायी संग सखियाँ सहेनियाँ ।
 आको वृम्ह वृम्हायोँ धिरह पहेनियाँ ॥
 एक दीपक है साध सो धात न वासही ।
 सुसुकि सुसुकि भर नैन गिरत तन बोसही ॥^१

(५)

दौरि गहे पद कन्त जी भरि गये लोधन नीर ।
 हां वकार मुख चन्द्र अस कागज की तसवीर ॥
 एसा समय असाढ़ को पाव विदेमे छाम ।
 निरखि घटा धन को छटा पिछ विन मन कदराय ॥^२

❖

फतूरी खाल

आपका नाम 'फतूरीखाल' भी मिलता है ।

मिश्रकवियों ने आपका निवास-स्थान लिखित करवाया है ।^३ उन्हीं के मठानुसार आपका 'कविच अकासी'^४ नामक एक ग्रन्थ की रचना की थी । मैसूरों में रचित आपकी कुछ स्पष्ट रचनाएँ भी मिलती हैं ।

उदाहरण

(१)

जैठ मास अमावस, सजनि गे, सभ धनि मंगल गाव ।
 भूपण असन जतन कर, सजनि गे, रश्मि-रश्मि अंग लगाव ॥
 वाजर-रेख सिद्धुर भेल, सजनि गे, पहिरपि सुधुधि सयाना ।
 हरखित खससी अछयवट, सजनि गे, गवितहि मंगल दावा ॥

१ विहार-उपुष्पमाला-निबन्ध के हस्तलिखित-संस्करण में छुटवित अक्षरमाला से ।

२ 'शोक-वार्ता' (वही) पृ० ११ १७ ।

३ 'विहार-उपुष्पमाला-निबन्ध' (वही, पूर्णतः भाग) पृ० १२११ तथा डॉ० निराले द्वारा 'विहार-उपुष्पमाला का प्रथम इतिहास' (वही), पृष्ठ २११ ।

४ डॉ० मिश्रकवि के मठानुसार सन् १८०४ ई० में अथवा अथवा वे और मैसूरों में लिखित सन् १८०१-०२ ई० के अक्षर या वर्णन करके लाले 'अक्षर-माला' नामक अक्षरमाला-विषयक ग्रन्थ के रचयिता थे । —देखिए 'Journal of the Asiatic Society of Bengal' (Extra No 1881), P 24 और डॉ० मिश्रकवि द्वारा 'विहार-उपुष्पमाला का प्रथम इतिहास' (वही) पृ० २११ । —अथवा 'अक्षर-माला' (सन् १८०१-०२ ई०) में अथवा अथवा अथवा ५० वर्ष की उमिर लेखी । अथवा, अथवा अथवा-अथवा सन् १८०१ ई० के अक्षरमाला होने का अनुमान है —सं०

वधुजन भू

आप मिथिला के पिलखवाड़ नामक गाँव के निवासी थे।^१ आपके पिता का नाम महामहोपाध्याय शीतबन्धु (नेनन) उपाध्याय^२ था। आप अपने समय के एक भारत प्रसिद्ध विद्वान् थे। रघुन आदि शास्त्री में आपकी अच्छी पैठ थी। विद्यावान के अतिरिक्त ४०-५० विद्यार्थियों के मोहन-बन्ध की व्यवस्था भी आप स्वयं ही करते थे। नवानी-ग्राम (बरमगा)-निवासी सुप्रसिद्ध नैयायिक पंडित कृष्ण का^३ भी आपके ही शिष्य थे। आपने इन्हें स्वाप-बधन की शिक्षा दी थी। आप स्त्रौतिपद्याम्न के विद्वान् पं० भानुनाथ (माना) का^४ के सगे भाई^५ थे।

उदाहरण

नागर अटकि रहस परदेश । तस्य वयस कत सेपय क्लेश ॥
मैस वसन उन मसम खेनि खेस । तन दूबरि अमरन तजि देस ॥
सन-सन झालयि रहुधि मन मारि । कोन दोषे तजि गेस मदन मुरारि ॥
भन 'वधुजन' कवि सुनिय द्रजनारि । धैरज घय रहु मिसत मुरारि ॥^६



बहादुरदास

आप संभवतः 'डुमराँव' (साहावार) के निवासी थे। हिन्दी में आपकी एक प्रकाशित पुस्तक 'निहन्द रामायण'^१ का पता जाता है।^२ आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले।



१ 'नाटक (मञ्जि, वर्ष १४, अंक २ कारी सन् १९६ ई०) पृ० १००।

२ 'पुस्तक-संस्कार कम्पनी-नया-द-दण्ड (वही), पृ० ४००।

३ रचना परिष्क करते करते में दृश्य।

४ रचना परिष्क वही पुस्तक के प्रथम अध्याय में दृश्य।

५ 'पुस्तक संस्कार कम्पनी-नया-द-दण्ड (वही) पृ० २०। पं० भानुनाथ (माना) का वय कल्प सन् १८२६ ई में हुआ था। वही सन्धार पर आपका कल्प-दण्ड भी इसके अन्त-दण्ड अर्थात् सन् १८२० ई के सन् १८३० ई के बीच अनुमित है।—सं०

६ 'विश्वना-गीत-संग्रह' (वही, प्रथम भाग) पृ० ६ १० २६ तथा २४।

७ रचना प्रकाशन सन् १८०३ ई में हुआ था के ही विवरण लम्बक किरी अर्थ में दिया था।
— 'विश्व-पुस्तक-साहित्य (वही) पृ ५२०। वरि आप अपनी रचना के प्रकाशन-दण्ड में ४ वर्ष के भी होने की आपका कल्प-दण्ड अनुमान सन् १८५२ ई में प्रकाश है।—सं०

विहारी सिंह

आप सारन जिले के निवासी थे ।^१ आपकी तीन हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं— (१) विहारी नखशिख-भूषण^२, (२) माकड़ी मंढरी^३ और (३) कृती-रसम ।^४ रचनाओं के सवाहरम नहीं मिले ।



बुल्लराम

आप झोटानागपुर प्रदेश (बिहार-राज्य) के निवासी थे । इतिहास प्रसिद्ध सिपाही-विद्रोह (सन् १८५७ ई०) के अमर शहीद पान्धेय गणपत राम के आप पुराहित थे ।^५ जब विद्रोह में पान्धेय गणपत राम शहीद हो गये, तब जिनके २१-२२ अप्रैल (सन् १८५८ ई०) को आप उनकी लाश छान ली गयी थी । आपन हिन्दी में काम्ब-रचनाएँ भी की थीं ।^६ पर आपकी रचनाओं के सवाहरम नहीं मिले ।



बोधिदास

आप संमभतः पटना जिले के निवासी थे, हिन्दी में आपके द्वारा लिखित एक धार्मिक पुस्तक का पता चलता है— 'मछ-बिदेक' जो, सन् १८७६ ई. में प्रकाशित हुई थी ।^७ आरकी रचना के सवाहरम नहीं मिले ।



१ —हिन्दी-पुस्तक-संश्लेष (वही) पृ० ३२३ ।

२ पर कर्मिता-पुस्तक सन् १८८६ ई. में अधुपचितत प्रेस पत्रिका से विद्यमान थी ।

३ इन कर्मिता-पुस्तकों के प्रकाशक श्री साहब-बिना-निवासी कानपुरवाले बाबा के व्यक्ति थे । अनुमान है कि सन् १८५१-५२ ई. में पुस्तकों के प्रकाशक के समय आप ४० वर्ष के उम्र में थे । अतः, आपका जन्म-आय सन् १८११ ई. के लगभग रहा होगा ।—सं०

४ हिन्दी के कबीरजी कथाकार श्रीधरदासजी (रौपी) ने अपने विर्ताक ४-२-३६ के पद में लिखा है कि 'विन्दी पुणने काम्य में कैरल बनना होयिना पर कि 'मार कबरेय मयपत राम के पुणैदित और कवि भी थे ।

५ कविदासी (साहित्यिक, वर्ष २२ अंक २०-२२ जनवरी, सन् १९३६ ई०) पृ १६ । अनुमान है कि जिस समय आप गणपत राम की लाश छानने के लिए रौपी गये होते, उस समय आपकी कब्रना काशीत वर्ष से कम होनी । अतः, इस दिशा में आपका जन्म-वर्ष सन् १८१६ ई. के लगभग सरता है ।—सं०

६ इस पुस्तक के प्रकाशक काना-बिदासी श्री नारायण दास थे ।—वेदिक, हिन्दी-पुस्तक-संश्लेष (वही), पृ० ३२७ । अनुमानतः आपका जन्म-वर्ष सन् १८३६ ई. के लगभग रहा होगा ।—सं०

भगवान प्रसाद वर्मा

आप हजारीबाग जिले के 'इषाक' नामक स्थान के निवासी थे।^१ आपकी रचना हिन्दी के एक अच्छे लेखक के रूप में होती थी। आपने बालीय से अनेक पुस्तकों का प्रबन्धन किया था जिनमें अधिकांश नष्ट हो गईं। सन् १९१६ ई० के पूर्व तक आपकी जो हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी थीं, उनके नाम इस प्रकार हैं—

- १) गोपाल बाल-सीता-सार (रचना काल सं० १९३५ वि०, सन् १८७८ ई०)
- २) कल्याण-शतक (भीमपिकामहाराणी प्रति, सं० १९३५ वि०, सन् १९०८ ई०)
- ३) भीमार्क-कृत मण्ड-सूत्र भाषा, (४) अथवा माहात्म्य और हरिवृत्त माहात्म्य (सं० १९५० वि०, सन् १८९३ ई०), (५) सप्तशतीकी गीता, (६) स्पृष्ट मीठावली या कवितावली, (७) बंश्यावली, (८) भीमदुर्गावली-माहात्म्य तथा (९) मछ निवेदन।^२ आपकी रचना के उदाहरण नहीं प्राप्त हुए।



भजनदेव स्वामी

आप 'बघाहारी बाबा' के नाम से प्रसिद्ध थे। पीछे 'नीमबाँ बाबा' के नाम से प्रसिद्ध हुए।

आपका जन्म बघा मिला के अरबल जाने में, 'लौरा' नामक ग्राम में, हुआ था।^३ आपके पिता का नाम बामदुर्गादेव सिंह। आपका बचपन अपने मामा के यहाँ, शाहबाद जिले के सिकरहटा-कलाँ नामक ग्राम में व्यतीत हुआ। जब आप वहीं थे तभी आपने एक ग्राम से पाँच मोल दक्षिण, राजमङ्गल-नदी के बाँधों से छट पर, बिहटा-ग्राम के मठापीठ भीमगुप्तस्वामी से बोधा ली।^४

कहते हैं, आप सिकरहटा-कलाँ से रात्रि-काल में निरव्य अपन गुरु के यहाँ जाते और फिर सुदूर दिन प्रातः काल लौट जाते थे। यह क्रम बारह वर्षों तक लगातार चला। इस अवधि में आपने अपन गुरु से योग-साधना की भी शिक्षा ली।^५ जब आपको इतपर भी संतोष नहीं हुआ, तब आप बिहटा-मठ में अपन गुरुदेव के पास ही रहने लगे। आपने

१ श्रीमूर्ति काठकण्ड भंडारी, (रक्षाक, द्वापरकाल) द्वारा दत्त सूचना के आधार पर।

२ वे सारी पुस्तकें 'योगदास श्रीकृष्णचरण' (वर्मा) द्वारा प्रकाशित हुई थीं। परन्तु दुर्भाग्य है। यदि आपने दक्षिण-भाग (सन् १८७८ ई०) में आपकी व्यवस्था १० वर्षों की थी तबानी बाबू, तो आपका जन्म-काल सन् १८५८ ई० ही इतरता है। निरस्तरेत व्यपद्य जन्म कल्पितनी लक्ष्मी के पूर्वाह्न में ही हुआ होगा। अनुमानतः यह समय सन् (१९३६ ई०) के आसपास हीकी अतिरिक्त।—सं०

३ हरिद्वार में देवित्त तक अष्टाध्यायिक श्री सूचना के आधार पर। [मेरेक महाशय ब्रह्म बाबू (रक्षाकण्ड) १९८ पन्ना बनी गता]

४ भोटादेवराज (मध्यकाल विद्यालय लखनौ) द्वारा देवित्त सूचना के आधार पर।

५ उन दिनों आपका अष्टाध्यायिक सूत्र था, जिनके अन्तर्गत आप 'नृपराजनी शशा' कहलाते।

गुरुदेव के समीप रहकर आपने बारह वर्षों तक कठिन साधना की।^४ इसके पश्चात् अपने जीवन का शेषार्थ आपने बिहटा से उत्तर-पूर्व-कोण पर स्थित शीबमद्र-नद के बायें छट पर 'धर्मपुर' नामक ग्राम में बिताया। यहाँ आपकी बहुत स्मृति हुई। यहाँ आपके गुरु मी च्छे आये। गुरु शिष्य अतिम दिनों में साथ ही रहे। आप सं० १९७२ वि० (सन् १९१५ ई०) के चैत मास में परमपाम सिधारे।^५ आपकी बार हिन्दी पुस्तकों का पता चला है—(१) गुरु धन-गुण, (२) भीक्षेत्र ज्ञान, (३) ब्रह्मस्वरूप-रूपक और (४) ज्ञानसरोवर। इनमें प्रथम दोनों पद्यमय रचनार्थ प्रकाशित हैं^६ और अतिम दोनों प्रकाशित।^७ प्रथम का विषय 'ब्रह्मविद्या विहार' तथा द्वितीय 'शारीरिक ज्ञान विराग पद प्रसंग' है।

उदाहरण

(१)

सत गुरु बिना कोई ना हमार।

हित-नासा सब कुल-परिवारा, मतसब के साथी संसारा।

यहि तन त्यागि जतन कियो कोटिहु, सोउ घोखा दियो बीच बजारा।

पाँच जना मिलि सूट मचायो, धवकी द्वार गुरुकरहु सहारा।

स्वामी जगु अरज सुनि सेहु मोरा, 'भजनदेव' को सरन पुकारा ॥^८

(२)

राम रटन रट लाओ मेरो भाई।

मूठ बकवाद में जन्म बिताये, नहीं भाई कछु हाथ कमाई।

जाहि घठी तू राम-भजन कर, सो करे तेरो संग सहाई ॥

१. साधना की इस अवधि में गुरु केवल जीम के लिये बसाकर अपना जीवन-मास करते थे। इसी कारण 'गैमर्सी गावा' बसलाये।

२. आठ वी भाषणी और गुरु की समाधि पर दो मध्य मंदिर विद्यमान है। लोग-सायक उत्पन्न-परतना होने के कारण शरीरगत के समस्त सन् १९१५ ई में गुरुकी मृत्यु कम-से-कम ७-७५ वर्ष की उम्र होगी जिसके आधार पर अनुमान होता है कि अग्रज जन्म सन् १८४० ई के लगभग हुआ होगा।—स

३. इनमें प्रथम का प्रकाशन बाबापुर (पटना) के श्री० बक० बाहसिंग साहब के प्रेस से सन् १८९३ ई में और द्वितीय का बंबीपुर के पत्रकारितालय से सन् साहबसाहब सिंह के द्वारा सन् १८९८ ई में हुआ था।

४. इन दोनों पुस्तकों की हस्तलिखित प्रतियाँ बस धर्मपुर नद के बायें छे फलत सुरक्षित है।

५. औरतेश्वर राम (परी) द्वारा माह।

माया के माल देखि जति भ्रमो, यह सब माल साहु क भाई ।
जा दिन प्राण गवन जग किन्हा, संगहु के तन जात बिलाई ॥
जीत कर्म करा यहि जग में, सोई तेरो सग करे सहाई ।
प्राण निकलि जव बाहर भाए, विना सतनाम के भटकत जाई ॥
मूरत शब्द सत ठहराओ, सब मन आपन पाई ।
स्वामी जगु कहे 'मजनदेव' सुनो, नाहि त कर्म काल हो जाई ॥'



भवानीचरण मुखोपाध्याय

आप छपरा नगर में, छट्टरा बुरहले के पास की 'कालीबाड़ी' क निवासी थे । आपके पूरब आज से लगभग दस सौ वर्ष पूर्व (सोलहवीं शती में) बंगाल से छपरा श्ले आये थे । 'शरीरोग इफतर', 'विजय', 'बीसुरी' तथा 'हिन्दुपंथ' क प्रसिद्ध सम्पादक स्व० कासिकेयधरन मुखोपाध्याय आपके ही मसीखे थे । आपने सन् १८८८ ई० में, छपरा से प० अम्बिकादत्त श्वाश के सम्पादकत्व में 'सारन-सरोज' नामक एक हिन्दी मासिक पत्र निकाला था ।^१ उसी में आपके लिखे हिन्दो-लेख भी छपते थे । आप एक गद्य-लेखक थे । आपकी रचनाओं के सदाहरण मही मिले ।



भागवत नारायण सिंह^१

आप 'भागवत' नाम से प्रसिद्ध थे ।

आपका जन्म^२ पटना जिले के रूपम ग्राम में हुआ था । आपके पिता बाबू निरबीर सिंह मिसौरिबा-श्रमिप-वंश के प्रसिद्ध पुरुष बाबू बीनरवाल सिंह के वंशज थे ।

पौत्र से बीस वर्ष की अवस्था तक आपने अपने अपने-स्वाम और काशी तथा आपाध्या में रहकर हिन्दी और संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की । दूतरे साय-साय आपने तुलसीदास रामायण का भी अध्ययन किया । अपने ही अध्ययन के आधार पर आगे बढ़कर आप रामायण क अद्वितीय ज्ञाता कहलाये । आपकी रचना एक प्रसिद्ध राम-मठ के रूप

१ मीरजोहराम (वही) काय माल ।

२. कहते हैं कि 'सारन-सरोज' को आपने अपनी बुरहलखा से निकाला था । अतः आपका जन्म-काल सन् १८२४ ई० के आसपास अनुमान है ।—सं०

३. आर्य्य परिवर्णन रूप (राज कृत) विवासी श्रीरामराम सिंह काय प्रेषित लुधियाने के अन्तर पर तैयार किया गया है ।

४. लुधियाने-पत्र के सदाहरण आपका जन्म अनुमान^३ सन् १८२४ ई० के लगभग हुआ था ।—सं०

में भी होती थी। आपन सं० १९८० वि (सन् १९२३ ई०) में भोकारखण्डी-स्थान (रूपत) में एक भीरामायण-सर्तग की स्थापना की थी, जिसमें आज भी प्रत्येक रविवार का दो घण्टे तक रामायण-पाठ हरि-कथा, भार्मिक प्रवचन आदि होते हैं। रूपत के इलाक में आज एक सर्तग की बहनों शाखाएँ चल रही हैं। आप एक अच्छे पहलवान भी थे। आपके एकमात्र पुत्र भीपरमानन्द सिंह काश्मिरीय भी बड़े होनहार बामजात कवि थे, किन्तु दुर्भाग्यवश वे युवावस्था में ही आपको अचहाय छोड़ गये। अपने जीवन के अन्तकास तक राम-नाम का शप करते हुए, लगभग ६० वर्ष की आयु में, सन् १९३९ ई० में, आप वृत्त बसे।

आपने हिन्दी में कई पुस्तकों की रचना की थी, जिनमें प्रमुख के नाम इस प्रकार हैं—(१) रामलीला-संवाद, (२) वरणावली-बोहा, (३) मरनोघर-बोहा, और (४) भीरामनामामृत-बोहा। इनके अतिरिक्त आपकी स्फुट रचनाएँ भी उपलब्ध होती हैं। एक सारी रचनाएँ अभी तक अप्रकाशित ही हैं। आपका रचना कास सन् १८८१ ई से सन् १९२४ ई० तक है।

उदाहरण

(१)

वने हैं अचारी कोई भर्म-धुरधारी ध्रुव,
कोई उपकारी बडे कोई निर्विकारी हैं।
कोई बडे पंडित बिराग से न खंडित,
भवदण्डित भवनि में उदंडित विधारी हैं।
कोई पट्टशास्र पडे वाद भो विवाद करे,
कोई कुल काव्य गडे दया मडे भारी हैं।
छके नाहि सीके पीके प्रेम रस पीके नीके,
कहा किये जीके जीके पीके सुखकारी हैं।^१

(२)

राम-सुयश सुठि गाइए, सतन सो कर प्रीति।
धस-वस सवको छाडिए, यहि सज्जन की रीति॥
पडिए सब सद्ग्रंथ को, चतुराई ना वास।
भजिय सदा रघुनाथ को, हित करि मानहु तात॥^२

१ श्रीरामकम सिंह (बन्दी) द्वारा ही प्राप्त।

२ बन्दी से प्राप्त।

(३)

जो जन रामायन को फरत रनि दिन पाठ ।
 धूप-दीप-नैवेद्य विधि पूजत हैं यहि ठाट ॥
 पूजत हैं यहि ठाट करत हैं जे नरनारी ।
 तेहि के दुख टरि सेत सदा सुख देत खरारी ॥
 कहत सस्य भगवत करि कह रामायन-पाठ ।
 पाप-साप-संताप सब भागत हैं दस घाट ॥'

(४)

चारि वेद को सार है रामायण सुख मूल ।
 वाँचत ही भ्रानन्द मन कटत घोर त्रैशूल ॥
 कटत घोर त्रैशूल हरत सब पातक भारी ।
 भक्ति होत उपरम सदा श्रीभवध-विहागी ।
 लोक और परलोक में सदा होत विश्राम ॥
 रामायन नित नेम स कह भगवन्तहि गान ॥'



मधुसूदन रामानुज दास

आप मागसपुर जिले में कोशी के घट पर स्थित 'बलुआ-बाजार' नामक स्थान का
 माली थे।^१ नाम और रचना का अनुसार आप एक मधुसूदनक शास्त्री होत हैं। आपके द्वारा
 त 'मधुसूदन धर्म-दीपिका' नामक एक पुस्तक धूनियन प्रस (बरमोहा) से, सन् १८८१ ई०
 प्रकाशित हुई थी। रचना का उपाहरण नहीं मिले।



^१ श्रीरामदास सिंह (बही) द्वारा प्राप्त।

छन्दी में प्रस।

यह ५४ पृष्ठों की एक छोटी पुस्तक थी। इसके साथ से अनुमान होता है कि आपने १८५०
 रचना अपनी कृताररणा में की होगी। इसके प्रकाशन-काल से माल पता है कि सन् १८४६ ई०
 १८४८-४९ आपका जन्म-काल होगा।—सं०

महावीर चौवे

आप चम्पारन क निवासी और बेतिया (चम्पारन) के महाराज राजेन्द्रकिशोर सिंह (सन् १८५५-८३ ई०) के दरबारी कवि थे। आपने हिन्दी में कुछ स्तुत-काव्य की रचना की थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



महेशदास

आप पटना निवासी, वाति क कहार और वैष्णव धर्म (बृहत्तम-सम्प्रदाय) क उपासक थे। आपने सं० १८१५ वि० (सन् १८५८ ई०) में 'एकादशी माहात्म्य' नामक एक पुस्तक की रचना हिन्दी में की थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



मुकुटलाल मिश्र^१

आपका उपनाम 'रंग' था।

आप पटना सिटी के कुतूबीगञ्ज गृहस्थे के निवासी थे। बाल्यावस्था से ही साहित्य, संगीत और व्यायाम के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि थी। संगीत में तो आपकी पैठ इतनी गहरी थी कि कुछ ही समय में आप अपने समकालीन शास्त्रीय संगीतज्ञों में अग्रतम हो गये। संगीत क शास्त्रीय पक्ष का ज्ञान आपका जितना व्यापक था, व्यावहारिक क्षेत्र में उसे आपने उतना ही मधुर रूप प्रदान किया था। स्वनिर्मित काव्य-रचनाओं को जब आप राग-रागिनियों में बाँधकर गान लगते थे, तब भीता मंत्रमुग्ध-से हो जाते थे। संगीत की शिक्षा का आपका हंग मी झनुठा ही था। कहते हैं, इस दिशा में आपने अपनी एक विशेष पद्धति ही स्थापित की थी। बाधदर्शियों में सारंगी आपको विशेष प्रिय थी, जिसका अभ्यास आप नियमित-रूप से किया करते थे।

१. विद्वान् विहार प्रदेशक हिन्दी-साहित्य-सम्प्रेषक (शैलीका) के स्वायत्तपत्रक सेठ एकादश के भाष्य से। महाराज राजेन्द्रकिशोर सिंह का उल्लेख-काल सन् १८५५ ई० से आरम्भ हुआ था। उस समय आपकी प्रवृत्ति कम-से-कम कालीन की होगी। इसी प्रकार पर अनुमान है कि आपका समय सन् १८१२ ई० के लगभग हुआ होगा।—सं

२. 'वृत्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त विवरण' (पहली प्रकाशना कागद-काल) पृ १।

३. आपकी पुस्तक सन् १८५८ ई० में लची गई थी। उस समय आप कालीका नर नर मुके होंगे। अतः, उदाहरण उल्लेख-काल सन् १८१८ ई० में पूर्व ही होगा।—सं

४. आपका परिवार मुख्यतः से बटवा-सिरी के प्रमुख संगीतज्ञ और संशोधक प्रवर्तनी-सभा (पटना-सिरी) के संघी श्रीलक्ष्मणदास वर्मन के द्वारा प्रेषित विवरणों के अनुसार नर नर नर नर है। इनके सहायकार आपका समय सन् १८२२ ई० के आस-पास हुआ था।—सं

आपका जीवन सादगी, सरलता एवं पवित्रता का अत्यन्त उदाहरण था। जब तक शक्ति रही, आपने अपना मोहन, जो अत्यन्त सात्विक होता था, अपने ही हाथों तैयार किया। बाजार का कोई पक्क अन्न आपको कभी प्राप्त न हुआ। जीवन-भर आप आत्म विहाय और आत्मज्ञानाभा से घृ रहकर एकांत साधक की मूर्ति साहित्य-संघों की उपाठना में उल्लिखित रहे।

आपने अपनी उपार्जित सारी सम्पत्ति गौ-सेवा में लगा दी। गौ-सेवा का स्वप्न आपको बाल्यकाल से ही था। आपने अपने यहाँ बहुत-सी गायें पाल रखी थीं। उनके रूप से कभी आपने अर्घोपायन नहीं किया। उसे होने के लिये पास-पड़ोस के लोगों में निगूँक वितरित कर दिया करते थे। आपका शिष्य-वर्ग यहाँ एक और आपके पास बैठकर निगूँक संघीत शिष्या प्राप्त करता था, यहाँ दूसरे और निगूँक गौ-सुख-यान कर स्वास्थ्य-शाम भी करता था।

आप एक यंत्र ही निष्ठावान व्यक्ति थे। अर्थ का अभाव आपको जीवन भर रहा, किन्तु इस अभाव को आपने अपने तक ही सीमित रखा। अपनी सहायता के लिए दूसरों के आगे हाथ पसारने को आप मनुष्यत्व का अभाव मानते थे। आपने अपने पैरों पर खड़े होने की प्रकृति थी, जो अन्तकाल तक बनी रही।

आपने आर्य समाज के अन्तर्गत मठ का पालन किया। वैष्णवीय कल्पना आपके रग-रग में व्याप्त थी, जो मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों के प्रति भी अनायास प्रत्यक्ष हो जाती थी। कहते हैं, यदि माग में आप किसी रोगी या अशक्त पशु-पक्षी को निःसहाय अवस्था में पाते थे, तो उसे अपने घर उठा लाते थे और जब तक उसकी सेवा में लगे रहते थे जब तक वह पूरा स्वस्थ नहीं हो जाता था। अन्य पारायणों, मित्रहरियों और दूसरे जीवधारियों को धारा देना आपका नियम-कर्म था।

साहित्य के क्षेत्र में आपने १०० अष्टिका दश व्यास को अपना गुरु बनाया था। हिन्दी में आपकी एक ही पुस्तकाकार रचना उपलब्ध होती है—'दुर्गा विजय'। कहते हैं, 'गणिका-साधु-संवाद' के नाम से आपने एक और पुस्तक भी रची थी। यह भी पता चलता है कि आपने कवि-संघों में 'विहारी-सतसई' की एक टीका भी लिखी थी। आपकी बहुत-सी स्फुट काव्य-रचनाएँ और समस्मापूर्तिवाँ 'पटना-कवि-समाज,' 'समस्मापूर्ति' आदि सरकासन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी। आपकी रचनाएँ अत्रमापा में

१ इसमें आपने आर्य समाज के अन्तर्गत मठ का पालन किया था। गौ-सेवा का स्वप्न आपको बाल्यकाल से ही था। आपने अपने यहाँ बहुत-सी गायें पाल रखी थीं। उनके रूप से कभी आपने अर्घोपायन नहीं किया। उसे होने के लिये पास-पड़ोस के लोगों में निगूँक वितरित कर दिया करते थे। आपका शिष्य-वर्ग यहाँ एक और आपके पास बैठकर निगूँक संघीत शिष्या प्राप्त करता था, यहाँ दूसरे और निगूँक गौ-सुख-यान कर स्वास्थ्य-शाम भी करता था।

२ आपके शिष्यों का मत है कि इस पुस्तक का अन्तःकरण 'रमा-सुख-संसार' है और इसमें वैदिक तंत्र-बन्ध ही प्रमुख हैं।

३ श्रीगुरुदेव के कर्म में आपने सर्व विद्यायें पश्चिमी ब्रह्म सन्धि मूल्या की हैं और कर्मों के तौर पर सर्व ही की ही अर्थों से ही जो लाभ हो दे ही दे। जीव के अन्तः में ही सब ब्रह्मण्ड के रूप में वर्तित हैं।

होती थीं । अपने जीवन के अंतिम दिनों में आप कड़ीबोसी की ओर भी लम्बुछ हुए थे । आपने अपनी इहलोक लीला, सं० २०३ वि० (सन् १६४६ ई०) में केशवदास एकारगी को समाप्त की ।

उदाहरण

(१)

मंदित मयक-मुख नखत सु फाके परै
ही के मुकुटान हार नीके सीत धाए री ।
पौनहू निरस बस दच्छिन घसन लागे
सीतल समीर-तीर पीर अधिकए री ।
छीन छवि दीपक मत्तान ससु 'रंग' कवि
चारो दिशि बचल गुलाब चटकाए री ।
छाई नमलासी रति ओरे बहूँपानी हाय
घासी निसि कासी बनमासी नहि आए री ।^१

(२)

केहरि कीर कपोत मल मति मत्त गयन्दन सो उमगी रहै ।
सजन भस्व कुरग तहाँ छवि कुन्दकली जुरि जोति जगी रहै ॥
श्रीफल विम्ब सुधा धनु नागिन वस्तु भनेकन 'रग' रंगा रहै ।
सो जिय चाहै सो लीजो लसा चनु घाट पं रूपकी हाट सगा रहै ॥^२

(३)

बाहू ते चमक चारु चूनरी चटक धारि
चंचल बखन चोखे चोर घित चोर मे ।
सहज सिंगार सजि सोरहो सलोनी नारि
ससि ते सरस सोभ सौगुन धँजोर मे ।

^१ श्री लक्ष्मणस मंत्रार्थ (वही) से ग्रह्य । इस कविच की रचना अपने विहारी के निर्माहित होने के कारण पर की थी—

मम बानी बानी निता चरकानी हुनि कीन ।

रति कान्धी कान्धी अनगु आर बनमासी म ॥

^२ 'समवापुति (वही) बनीवरी सन् (१६८८ ई) पृ २ । यह एक समवापुति है जिसकी समवा है—'बाहू ते रूप की हाट लमी रहे ।

रासति रुधिर रूप-रासि मे रमा-सी
 'रंग' भूमति भुकति उभकति भुकभोरे में ।
 हृषकन सहै हर हेम की सवा-सी खासी
 हेरति हंसति हाय हीरक-हिंदारे मे ॥^१

(४)

सुधर समोनी सुध्र कीर्ति कमनीय जाका
 जानत जहान जासु महिमा भगवा को ।
 भ्यावत सप्रेम पद पावत परम धाम
 गावत मृनीस गुन करत भराधा को ।
 जाकी तन म्हाई नक भ्यावत ही स्याम-तन
 हरित हसोरें होत पूरित मन साधा को ।
 सक्ति सिरसाज काज पूरन प्रद चार फल
 'रंग' सोई राधा हृष मेरी भव-वाधा को ॥^२

(५)

छीन लगे है कहा धो हर्म कटि कैसे निरन्ध्र मही गस्ता है ।
 बाढ़ि कै केस धम्यो छिति छूमन भौंह चढ़ि है भकास भपाहे ।
 धानन धोप तू देखु विचारो के कानन को दृग नाधिवा चाहे ।
 पूछूं मैं तोसा सखा दिना दू क ते मो हिय हेरि हंसै हरि बाहे ॥^३

(६)

साजि कै कवच तन स्यामता गगन गाढ़े
 चन्द्रिका चपल चन्द्रहास चमकायो है ।
 बलियाँ कुमुद कुस कमल गुह्रज गोस
 जंजन जमात जोर सैन सैंग साया है ।

१ समरपूति (वही जुगर्ग सन् १५६७ ई.), पृ. १। पर भा कव समरपूति है। उलटा है—
 हीरक वि हीरे में।

२ वही। इस कवच को रचना सिद्धांश के किम्बदन्ति रोहे के आधार पर हुई है—
 मेरी भववत्ता वही राधा नामक स्त्री।
 जगन को मूर्ति पर रक्त हरित वृत्ति होव ॥

३ वही (जुगर्ग सन् १५६७ ई.), पृ. १।

त्रिविध समीर घोर धावन चले हैं 'रंग'
 विरहित कास को पठाक दरसायो है ।
 वरखा विगत वची विहित विदारिध का
 सरद भद्रद वीर रूप धरि धायो है ॥^१

(०)

होसै तू अकेली कहा घोर भूल कुजन क
 लवत सरीर लम-स्वेदन सकार हैं ।
 वेनी विष्टुरि वार बहक्या कपोलन पै
 गर गुन-माल विनु गौहर गुंधार हैं ।
 नैनन लखि जानी मोहि वैनन भुराव कहा
 'रंग' रस साने भरसाने भङ्गार हैं ।
 यिरता पगन धाये भानन अजव भता
 भृगु के सता की बिता उर म निहारे हैं ॥^२

(८)

अमकि हरि मूलत रंग हिडोरे ।
 मनिमय जटित लंम कंचन को सुरंग पाट सग डोरे ॥
 तैसो मुकुट नुभग सिर राजै मृगमद हचिर सु खोरे ।
 असकें कुटिस धंक जुग भौहें नैन आरु चित चोरे ॥
 पावस उमगि धरि धन धायो लडित लडप चहुँ धोरे ।
 बहन समीर त्रिविध पिक सुक गन रटत रहत नित मारे ॥
 भोकन भुक्त दुरत प्रकटत पुनि सघन कुञ्ज की कोरे ।
 अनु विषु पडत जसद-पट निसरत सोमा अभिक सही रे ॥
 घेरि रहीं चहुँ त्रिसि ते सखियन उजमा देत 'रंग' मुख मोरे ।
 मदन एक रति रूप कोटि धरि निरखि-निरखि तुन तोरे ॥^३

❦

१ 'अमरकवचन' (वही) सुभाषिते अम् १८२७ १०) १० ३ ।

२. वही (दिलनवर, अम् १८२७ ३), १० ३ ।

३ श्रीमद्भागवत अर्चन (वही) अम् १८२७ ३ ।

मुनीन्द्र

आप मिथिला के बिहीसी नामक स्थान के निवासी थे। पीछे उत्तर-प्रदेश में जाकर बस गये।^१ सन् १८५७ ई० के गदर के समय आप भीषित थे।^२ आपके पिता का नाम कबीन्द्र^३ और पितामह का हरिन्द्र था। आप कुछ दिनों तक हिन्दी-साहित्य सेवी पत्रिका बुगियाँकर गुरु के पितामह पं० तोताराम गुरु के साथ रहे थे। उनके दोहिब बाबू कृष्णानन्दजी से, जो काशीपुर के राजासाहब के शिक्षक (ट्यूटर) थे, आपकी प्रसिद्ध मैत्री थी। आप जलौकिक कमरकारोंवाले एक पहुँचे हुए धावक थे। कहते हैं, अपने से उरचकुस की एक कम्हा को सिद्धि के द्वारा शास्त्रार्थ में परास्त कर आपने उससे विवाह कर लिया था।

आप हिन्दी के एक सफल कवि थे। आपकी कविताएँ उत्तर प्रदेश के बरेली, पीलीभीत, काशीपुर और शाहजहाँपुर के काव्यासुरागिणी तथा धावकों की गोपित्री में बड़े आदर से पढ़ी-सुनी जाती हैं। आपने 'भीमगदम्हा-स्तोत्र' नामक एक पुस्तक की रचना की थी, जिसमें भीमगदम्हा से सम्बन्धित आपके कुछ कविच संश्लेष हैं।

उदाहरण

(१)

दक्षिणा को दास हों फरास पासवारी को
 में रासम हों राज राजरानी सो कृपासी का।
 उल्लू उग्रतारा को हों बगुलामुखी को वल
 छिन्ना को छीकरा हों मूक मुडमाली को ॥
 सुकवि मुनीन्द्र सिधुवामाजू को बालक हों
 भैरवी को भक्त घूत घूमा विकराली को।
 घामुंहा के वासर के खीकर को घू कर में
 धूकर हों ध्यामा जू को घूकर हों काशी को ॥^४

१ कानी से विहीसी के बच्चासे मिथिला के इस नाम सुनवाने काशीपुर की बरेली के।
 २ मैथिल बुगियाँकर बचपन बरिचरी जाती पुत्र है प्रसिद्ध भीमगदम्हा कवि मैथी के।
 ३ शीव है बरीन्द्र के प्रथम है रतनचँठ अ के पुत्र शिवपुरी शैलबध मन्नापर देखी के।
 ४ लखी, कुमाऊँ कमरकाश और संतल माल-बस के बरेला बनारस जन्मेकी के ॥

— सरस्वती (साहित्य, भाग ३१ पृष्ठ १ संस्करण २ मरी सन् १९३० ई०) पृ ३१७।

५ वही आकार का यह अनुमान होता है कि अथवा अन्य सन् १८६०-२ ई के बीच हुआ होगा।—मै०

६ ये भी हिन्दी के एक सफल कवि थे। इसका परिचय इसी पुस्तक में बनाकर प्रस्तुत है।

७ 'सरस्वती' (पृ०) पृ० ५२०।

(२)

जाके भ्रम्बुजासन खगासन वृषासन गणेश
शेष आसन सिंहासन भरे रहे ।
सापर भ्रमंग-रूप सेज-रूप ब्रह्मणी की
चंद्र हैं वितान छाँह सीस पं करे रहें ॥
श्रीपति रहत जाकी शरण-शरण ताके
घाकर-से वारहो दिवाकर लखे रहे ।
मंदिर के घनाधीश द्वार पं कसंदर स
बंदर से चौदहों पुरन्दर पढे रहें ॥'

(३)

नागानन नाशिर सो हाजिर हो हुजूर
श्री पति सिरस्तेदार सुखमा सने रहें ।
द्रुहिय दिवान मघवान ऐसे मुंशी जी
सु मारतठ मुलिन मुसही से बने रहें ॥
धरुण बकीस तहसीलदार तारा-पति
जम से जमादार संतत भने रहें ।
सुकवि मुनीन्द्र महारानी जू के दरवार
महादेव ऐसे यूँ मुसाहिब बने रहें ॥'



रघुवंश सहाय

आप छपरा क निवासी थे । आपने 'मजबून-बाबा' नामक एक पद्यत्मक पुस्तक की रचना हिन्दी में की थी, जिसे आपने स्वयं प्रकाशित भी कराया था । आपकी रचना क छदाहरण नहीं मिले ।



१ 'मजबून' (पृ०) पृ० १२० ।

२ वही ।

३ हिन्दी-मुसक-मजबून (पृ०), पृ० १२४ ।

४ इस पुस्तक का रचना-काल लग् १८०२ ई. है । जस आपका मूल-काल लग् १८२३ ई. है क मूल मुद्रण है ।

रत्नपाणि^१

आपका मूल नाम 'बबुरैया का' था।

आप मिथिला-निवासी शास्त्र तथा संस्कृत के महान पंडित और कर्मकांड सम्मन्धी पुस्तकों के अधिकारी प्रकटा थे।^२ आप महाराज खजसिंह एवं खसिंह के दरबार में समा पंडित थे।

कीर्तनिया-नाटकों की परम्परा में आपका 'उपाहरण' नामक एक नाटिका लिखी थी, जिससे आपके पांडित्य का भी परिचय मिलता है। इस नाटिका में आपने मैथिली-गौनों के अतिरिक्त आपकी कुछ स्पृष्ट रचनाएँ भी मिलती हैं। आपका निधन सन् १८६० ई० में हुआ।

उपाहरण

(१)

शिव मोर करिभ तराने ।

भसह ध्यया हम सह्य न पारिभ संकट पडस परान ॥

नाचि-नाछि शिव सोहि रिक्ताभोल भाष हायत वरदाने ॥

तखन मेलहुँ मायावस भमिमस जाथक भानक भाने ॥

तकर उचित फस धाय तुलायल जहन कयल भमिमाने ॥

वस सत धाहु छनहि काटल गल नहि दापो खगयान ॥

सभ तेजि धाय भाय तुभ परिसर घय मन भास बिधान ॥

दखिभ नाथ हरणि हर हेरिभ हरिभ दोष सन्ताने ॥

दखिस नाथ हर सभ दुष फेरल कयल गनक परधाने ॥

रत्नपाणि भत वरद एक सिव जगत-विरित जस गान ॥^३

(२)

कर्णा कर्ण सुनल सभ लोष । भेस कृतारथ विघरल सोक ॥

तपन सँवारी नगरम भेस । दोसग द्वारका जनि धनि गेल ॥

चन्दन उचित जगमग सरनि । कुसुम-बिभूपित भय गल धरनि ॥

तसय पताका सभ दिशि सोभ । देवदत्त सुरपति कौ होम सोभ ॥

१. महादेव विष्णु पत्र के अन्तर्गत महादेव विष्णु के मंत्रों 'भस्त्रु' के एक पुत्र की 'उपाहरण' नाम के ही गद्य है। विष्णु के अपने विश्व-वर्ष के —

२. हिन्दी-साहित्य की बिहार की देन (बरी) पृ० ११७। इस पुस्तक में आपका सत्य सन् १८०१ ई. में देन है। अतः आपका मूल जन्म मूल सन् १८०० ई. में हुआ और देवदत्त (१८१ ई. में) —

३. दे. श्री साहित्य-संस्था (बरी) पृ० ११७।

कि कहव नगरक तखनुक चरित । विसकम्मा जनि सिरजल स्वरित ॥
सम दिसि वाज सकल जन तखन । कृष्ण-कमल-मुख देखव कखन ॥
गजरथ वाजि पदाति अलेख । हरप वेभापित चलल असेप ॥^१

(३)

अयुत उदित रवि-शंकर देह छवि, अस्त्रपाट पटभासे ।
रिपु सिर निकर माल उर शोभित दश दिस ज्योति विकासे ॥
शंकर-लेपमय पीन पयोधर, मुख अरविन्द समाने ।
ससिचर रत्न-मुकुट शिर शोभित मृदुल हास परधाने ।
पुस्तक अमय अक्ष जपमाला धर कर चारि निधाने ।
निख जन शंकरि असुर-भयंकरि श्री भैरवि तुम ध्याने ॥
विषय विषम रस हृदय देविपद भजत न धरत न ज्ञाने ।
भुवन भवन तसु उदित सुकृति वसु से जन भय परधाने ॥
जगत जननि ! विनती किछु सुनिअ 'रत्नपाणि' मन दासे ।
श्रीमिधिलेशक हृदय वास कए पुरिअ तासु सम भासे ॥^२

(४)

वसहा भिरल पलान रे, कर घए लेख ठोरी ।
पथ चलल नहि जाए रे, व्याकुलि भेसि गौरी ॥
साम्ग पढल वनमात्र रे, गणपति छवि कोरा ।
भवहै करिअ हड़ ज्ञान रे, बुढ़ भङ्गी मोरा ॥
आक घुघुर केर झुर रे, फाँधि भरि गाला ।
परिजन भूत वेताल रे, भोहन बघछाला ॥
'रत्नपाणि' घर ध्यान रे, विनती कर जोरी ।
हर धिक त्रिभुवन नाथ र, सुनु गौरी मोरी ॥^३

✽

१. मैत्रिणी साहित्यक रसिदास (बही), पृ १६५।

२. मैत्रिणी-मीठ-रत्नपाणी (बही), पृ ३० ५४ ३० ४५ ४६।

३. बही, पृ ४६।

राजेन्द्रशरण

आपका उपनाम 'जानकीप्रपन्न' था ।

आप छपरा-निवासी एक राम भक्त थे ।^१ खड़ीबोली में रचित आपकी एक प्रकाशित पुस्तक 'रतिक उर-हार' का पता मिला है ।

उदाहरण

राजिन्द्रर जानकी-वर धरन व्यावा ।
 सुजस श्रीप्रानपति कं नित्य गावो ॥
 नमो प्रातम पियार प्रान-वल्लम ।
 दरस भपना दिलाभो जो है दुर्लभ ॥
 विनय करता हूँ प्रतिसय प्रान-प्यारे ।
 लगी है भास चरनो म तुम्हारे ॥
 तुम्हारे दिन बहुत दिन प्यारे बीते ।
 यमन लोचन सफल हों भव तुम्हीं त ॥
 दरस तब प्रान-वल्लम मैं ओ पाऊँ ।
 कमल-धरमों का मधुकर हाँ हाँ जाऊँ ॥
 धरन-रज से कृतारय सास करवे ।
 रहूँ मैं माद से निज हीम भरके ॥
 धरे हामो प' धार्षण्य धरन को ।
 सदा दंखा करूँ सीमा सदन को ॥

१ कहा जाता है कि आप मुँगेर बिले के 'धरान' नामक स्थान के निवासी थे और जिस समय जीवन्मुक्ता की मुँगेर में बड़ी सभा लगावार रहे थे वही समय इनके संन्यस से श्रम भी गृहाणी मयूर आपका की रामभक्ति के अधिष्ठाता हुए । जीवन्मुक्ता की १७७० ई. के अठारस मुँगेर में थे । कहते हैं कि वहाँ वे कठिन श्रमसे काम करते । समय है वहाँ के लक्ष्मण से आरंभ के प्रथम में अथर्व-मंत्र कथित हुईं थीं । उस समय आपकी उमर ५० वर्ष के लगभग रही होगी । मध्य अनुमान है कि आपका जन्म १७२० ई. के दूर कथित हुआ होगा । — सं०

कमी हँस के न बोले तुम सियावर ।
 कृपाकर दो य' सुख मुझको दया कर ॥
 मुझे अपनी भूलक प्यारे दिखाओ ।
 वचन मीठे मुझे अपने सुनाओ ॥
 सदा राजेन्द्र सिय पिय ध्यान लाभो ।
 सुजस श्री प्रानपति के नित्य गाओ ॥^१



राम

आपके बन्ध-स्थान का पता निश्चित-रूप से नहीं चलता किन्तु इतना ज्ञात हुआ है कि आप सन् १८५७ ई० के सैनिक विद्रोह के अमर सेनानी बगरीशपुर निवासी बामू कुँवरसिंह के आश्रित कवि थे ।^२ जिस प्रकार महाकवि मूषण ने छत्रपति शिवाजी की यशोगाथा लिखकर अपनी लेखनी को धन्य किया था, उसी प्रकार आपने अपने आश्रयदाता बामू कुँवर सिंह के शोच-पराक्रम पर काव्य-रचना की थी, जो आगे चलकर 'कुँवर पचास'^३ नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुई ।

उदाहरण

जैसे मृगराज गजराज के झुण्डन पी
 प्रबल प्रचण्ड सुण्ड स्रष्टत उदण्ड है ।
 जैसे बाज सपकि लपेट के सवान-दल
 दलि-मलि डारत प्रचारत विहड है ।
 कहै 'राम' कवि जैसे गड्ड गरब गहि
 अहि-कुंभ दरिड-दरिड भेटत घमण्ड है ।
 तैसे ही कुँवरसिंह कीरति अमर मण्ड
 फौज फिरगोन की करी सुखंड-खंड है ॥^४



१ 'रामक वर-दार (विवरण अनुपलब्ध) पृ १३ ।

२ 'आज (दैनिक, साप्ताहिक-विशेषांक, १ फरवरी सन् १९२५ ई) के १८५७ के समर्पण कवि और कवयित्री काव्य शीर्षक लेख से । सन् १८५७ ई में कविता-रचना-काल में आपकी अवस्था कालीस वर्ष के लगभग रही होगी । अनवरत अनुमानतः आपका जन्म-काल सन् १८२ ई के आसपास माना जा सकता है ।—सं

३ इस नाम की एक पुरानक शोधपुरी म प में 'शोभादाय आम्ह कवि की मो है ; इसी पुरानक में अम्हण कवयित्री दरिचर देणिय ।

४ 'आज' में प्रकाशित जल संख्या ९३ ।

रामचरणदास^१

आपका उपनाम 'ईसकला' था। आपका यह नाम आपके गुरु भीरामदास 'नृसकला' की न रखा था।^१ आपका वास्तविक नाम था 'नागापाठक'।

आप धारन जिले के 'कमर' परगन के गंगा-सदस्य गंगहरा-ग्राम के एक ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे।^२ आप किशोरवस्था में ही विरक्त हो गये। यहत्यागी विरागी होकर जब आप बैद्यनाथ-ग्राम (देवघर) पहुँचे तब ईश्वरीय प्रेरणा से आपको लक्ष्मीपुर की रानी के भगवान्-ग्राम मंदिर में वैष्णव-मठ भीरामदासजी 'नृसकला' के दर्शन हुए। आपकी भद्रा-भक्ति से उत्तुष्ट होकर उन्होंने आपको अपना शिष्य बना लिया और उसके बाद ही आप 'रामचरणदास' के नाम से प्रसिद्ध हो गये। आपने बहुत दिनों तक जनक साब रहकर सांप्रदायिक ग्रन्थों का अध्ययन किया तथा धार्मिक विषयों में अच्छी योग्यता प्राप्त करके विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की। सबसे भीरामदासजी न आपको अपने गृहस्था (मागलपुर) के भीराम-मंदिर की मइन्ती गरी बेकर भीठाकठ-बाबा की सभ से आप भरावर सही स्थान में रहकर ईश्वर मजन और साधु-सेवा किया करते थे। आपने अपने अमृतमय उपदेशों से बहुतों को सत्य पर लाकर कृतार्थ किया। आपके शिष्यों में प्रमुख थे श्रीश्रीतारामशरण मगवान प्रगाढ़ 'रूपकला'।^३ वे आपका ही अपना वीक्षण मानते थे।

मागलपुर में आपके स्मारक-स्वरूप आज भी 'भीईसकला मगवत् संकीर्तन-समाज' स्थापित है। सं० १६३६ वि० (सन् १६१२ ई.) की शरद-पूर्णिमा को, लगभग ७२ वर्ष की आयु में, आपने साकेत-यात्रा की।

आपने हिन्दी में एक धार्मिक-ग्रन्थक 'राममाहात्म्य-चन्द्रिका' लिखी थी।^४ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



१. रानी नाम के एक और कवि १० वीं शती में हो गये हैं। इनका नाम 'मठेवठ' का और वे राजा के निरासी थे। उन्होंने ब्रह्मण की परंपरा में एक काव्य-ग्रन्थ 'अनुकथा' की रचना की थी। इनके निरूपण परिष्क के सिद्ध हैं—'हिन्दी-साहित्य और विहार' (वही) पृ० ५०।

२. करते हैं कि पर से विरक्त होकर जब आप श्री बैद्यनाथ-मठारण्य के दर्शनार्थ बैद्यनाथ-ग्राम (देवघर) गये तब वहाँ रहने में आपकी आशा हुई कि 'मन्त्री' में लक्ष्मीपुर की रानी के भगवान्-मंदिर में श्रीरामदास 'नृसकला' नामक वैष्णव मठवाला रहते हैं जहाँ की सेवा में कार्य करेंगे। इनके बरबाद बैद्यनाथ-ग्राम में तीन दिनों तक रहकर आप उस मठवाली शरण में पहुँचे। कुछ ही दिनों में आप उनके वड़े कृतार्थक हो गये। आपको गुरुार नाम का उपासक देकर उन्होंने आपका नाम श्रीश्रीमगवती 'रूपकला' रख दिया।—'देवघर, रामचरित में पंडित-संग्रहण' (वही) पृ० ४१० तथा 'हिन्दी-साहित्य और विहार' (वही) मंत्र कवच, पृ० ४२।

३. श्रीरामदास-व्याख्या (मसिद्ध भाग ३६ संख्या १), पृ० ३०-४। सं० १६३६ वि० (सन् १६१२ ई.) में आपने रचकता की दो दीर्घिकाएँ लिखीं। अनुमानतः उस समय आप साठ वर्ष के उम्र में रहे होंगे। इन तरह आपका जन्म-काल सन् १५६१ ई. के लगभग होना चाहिए।—सं०

४. इनका परिष्क नाम पुस्तक में ही बरकरार सुविध है।

५. रामदास ब्रह्मण्य मन् १६२ ई. में मुबार के श्रीश्रीमतीन मठों नामक किमी भक्ति में लिखा था।—'देवघर, हिन्दी पुस्तक-साहित्य' (वही) पृ० २५१।

रामरूपदास^१

आपका जन्म दरभंगा जिले के 'पुष्पपुर' नामक ग्राम में हुआ था ।^२

आप कस्साम सम्प्रदाय के एक पहुँचे हुए सन्त थे । कहते हैं कि एक बार एक निपन व्यक्ति कुछ आर्थिक सहायता के लिए आपके पास आया । आपने उसे एक पत्र के साथ अपनी पत्नी के पास भेज दिया । पत्र में उस व्यक्ति को बौध रूपसे धे देने का आदेश था । आपकी पत्नी ने रुपये रहते हुए भी उस व्यक्ति को निराश वापस कर दिया । इसी बात पर आपके मन में विरक्ति उत्पन्न हुई और आप यहस्वागी हो गये ।^३ भगवान श्रीकृष्ण में आपकी अपार भक्त्यासक्ति थी । आप एक आत्मनिष्ठ योगी थे । आपका जीवन शोक-कल्याणकारी था । आपने अनेक स्थानों में भ्रमण करके वैष्णव धर्म का प्रचार किया । जब आप धर्म प्रचारार्थ भ्रमण में निकलते थे, तब आपके पीछे सैकड़ों की जमात चلتती थी ।

आपने जीवन के अन्तिम दिनों में रमठा योगी की तरह पयटन करत हुए आप रहिया (मुगेर) आये थे और वहाँ के शांठी को समझा-बुझाकर पशु-बलि की प्रथा बन्द करा दी थी । उस समय आप बूढ़ थे । आपका स्वर्गारोहण मुगेर जिले के ही गंगा-सदस्य मधुरापुर-ग्राम में, सन् १८७३ ई० के आसपास, हुआ था ।

हिन्दी में आपने अनेक मन्त्रों की रचना की थी । ऐसा कहा जाता है कि आप निम्न निम्नपूर्वक पाँच मन्त्रों की रचना करके भगवान श्रीकृष्ण को अर्पित करते थे । आपके मन्त्रों का एक संग्रह 'गोपाल-सागर'^४ के नाम से श्रीबैकेश्वर स्टीम-प्रेस, (बम्बई) में छपा था ।

^१ इस नाम (पुष्पपुर) के एक और भी जिला-जिला की कवि का कल्लेज मिलता है जो 'संस्कृत' के नाम से कल्प-रचना करते थे । डॉ. विपिन में विविता में रहते समय इनके अनेक गीत संकलित किये थे । कहा गयी वा संकना कि वे दोषों व्यक्ति (उमरुपसत और रामरुप (सकन)) एक ही थे वा भिन्न ।—दक्षिण, डॉ. विवर्तक-कृत 'हिन्दी-साहित्य का मन्त्र इतिहास (बही) पृ ३४ ।

^२ डॉ. लक्ष्मीकांत उष (भिक्षुशा-नारायिकारी अस्त्याज रहिया मुगेर) से प्राप्त सूचना के आधार पर । कभी क मतनुसार आपका जन्म इन्दीमती शशी के अर्धमक वर्षों में ही था। सन् १८०० से १९ ई० के आसपास कभी हुआ था ।—सं०

^३ वही ।

^४ इसकी एक तीसरी प्रति श्रीकुमार माण्डेधुबन 'विमलास' (रहिया मुगेर) के पास है ।

उदाहरण

(१)

यमुना-तट बंशी घाज रही मन-मोहन रास-रसोले के ।
 मुरली-धुनि सुनी घाउरी हो गये मनहर रूप रंगोले के ।
 विपिन घोर भ्रँघियार एरि रजनी कूँडत फिरत छवोले के ।
 घर दुभार परिवार सुख छूटल परि गये भग अहीरे के ।
 रामरूप कह दो कृपा करि मिलिहूँ हमरा सुभन जसोदे को।^१

(२)

हरि हम मूढ़ मन्व अभिमानी ।

सम्पति अवर को देखि जरत उर विपति निरखि हरस्राना ।
 डोलत फिरत घर-घर कूकुर सम कदहूँ न पेट अघाना ।
 पर को छिद्र विसोकत जहँ-तहँ पर-तिय निज करि आनी ।
 पर अपमान मान नहिँ कदहूँ दिन-दिन मान मोटानी ।
 पर-उपनार कदहूँ नहिँ कौन्हों अपकार मदा जिय आनी ।
 पतिलन कर सरदार सिरोमनि धूमि पुरान नहिँ मानी ।
 हों अपराधी अनग जम कर हरि तेरो हाथ विकानी ।
 रामरूप पाप-सागर महँ बूडत कर गह सारंगपानी ॥^२

✽

रामसनेही दास^३

आपका जन्म दरभंगा जिले के मधुरा-ग्राम में, एक निधन परिवार में हुआ था । जब आप दस वर्ष के हुए, सभी आपके पिता पं० इशुमान दत्त झा का देहांत हो गया ।

१ ओटिसगाम (बही) से कात ।

२ कड़ी से कात ।

३ आपका परिवार 'असौवन' (दिनांक, १ मई सन् १८५६ ई.) में ब्रह्मदेश जीवोपेक्षर प्रसाद सिंह के भोग के आशर पर तैयार किया गया है । कनी भोग के लेनक का अनुमान है कि आपका जन्म सन् १८१६ ई. के आस-पास हुआ होगा । —म

वास्तव में आपका प्रमुख कार्य अपनी गायों को बराना था। गायें चराते समय भी आप मजबूत गाते रहते थे। संध्या-समय उक्त काय से निवृत्त होकर आप चौपाल में धर्म-चर्चा सुनने में रम जाते थे।

एक दिन एकाएक आपके हृदय में निर्वैद-भाव का उदय हुआ और आप यह त्याग कर अयोध्या चला गये। वहाँ नागा-साधुओं के सत्संग में आपके शरीर एवं मन का स्वस्थ विकास हुआ। इसके परचात्र विद्योपासन के लिए आप कारी पहुँचे। वहाँ आपन साहित्य के अतिरिक्त व्याकरण षोडश धम आयुर्वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया। समय-समय पर वृष को अश्वत्थामा, पृथाङ्गना आदि तीर्थों का पर्यटन करत हुए, आप पुन अपनी जन्मभूमि को लौट आये। यहाँ भी-सम्प्रदाय में दीक्षित होकर आपने सत षण्डीगोस्वामी का शिष्यत्व ग्रहण किया। इसके बाद का आपका जीवन एक सत एवं काव्य-साधक का जीवन है।

करते हैं, अपुङ्गराज^१ मुरशानवास, पंचमवास प्रभृति संतों को काव्य प्रपदन की प्रेरणा आपसे ही मिली थी। मत्स्य के क्षेत्र में आपके प्रिय शिष्य थे मोहनदास जी।

आप हिन्दी और मैथिली के एक कुशल कवि थे,^२ हिन्दी में आपकी स्पृष्ट-काव्य रचनाएँ उपलब्ध हैं। आपका निधन लगभग ८७ वर्ष की आयु में, सन् १९०६ ई० में, हुआ।^३

उदाहरण

(१)

सौजापति रामचन्द्र कोशल रघुराई।

वेद सिद्ध घेनु संत दुस्त्रित सकल जीव-अंत,

मथिल-नृप ज्ञानवत विपत्ति-घटा छाई।

१ किन्तु यह है कि अपुङ्गराज ही रामचन्द्रोदास की ओर गुण समझते थे। किन्तु अन्त-साल के आचार पर रामचन्देरी राम ही अपुङ्गराज की के शिष्य रूप में मान्य होते हैं—

“अपुङ्गराज गुण सब लये राम किसे बर नैह।

रामचन्देरी बापि उष छीस बरे का खेर ॥”

—“व्यासवर्ष के बटी लेख से।

२ एक समय सायु-सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें रामचन्द्रोदासजी ने “कबीर राम का मिलेनब निककि-प्रसन्नर की सहायता से इस प्रकार किया—

“रं करका मरवात्र से ‘की कस्या मव मारि।

रामरु ५ इ काम हरि लो कबीर बन भयि ॥

रामचन्देरीराम की बर पूजनेवाले थे। उन्होंने अपने एक-एक में ‘सायु’ का मिलेनब और कव-निर्देशन इन प्रकार किया—

मन कथा अरु बचन ठे काहु दूजत कारि।

रामचन्देरी सायु ही रामरु बग भाई ॥

ब्रिटिश राज करत पाप जनगण विष वदस दाप,
 भावि भाव हरहु ताप सत्वर सुसदायो ।
 सबस सुवन भेस मद दशक दय फटक फंद,
 मूँह कान करै बंद गोरा कटकायो ।
 कहत 'रामस्नेहिदास' भारहु क्षय श्रीनिवास,
 हरहु त्रास एक भास धरण केरि सार्ई ॥^१

(२)

जगत में रामनाम छवि सार ।

शिव गणपति भादिम कवि जानधि महिमा हिनक अपार ।
 मातु-पिता गुरु-मित्र सहोदर पुरजन कुल परिवार ।
 समनयो माया मोहक सगी छवि करु मनहि विचार ॥
 भवध जनकपुर की वृन्दावन जाकै हो हरिद्वार ।
 पुरी प्रयाग वाराणसी में शिव सदिसन इएह उचार ।
 गणिका गोध गजेन्द्र पापिनी अघम गँवार ।
 सै सै नाम प्रेम सौं प्रभु के उत्तरस भवनिधि पार ॥
 सतपुग जोग जाग प्रेक्षा छस द्वापर दान उदार ।
 'रामसिनेही' जनहित केवल बल्युग नाम अघार ॥^२

(३)

मानिक मुक्ता माहि सब, नग करि देखु विचारि ।
 उपज 'रामस्नेही' नहीं, चन्दन सब बस भारि ॥
 संग महानारत कियो, पार्य वीर बसवान ।
 रामसिनेही प्रभुधिना, ब्याधा मारो बाम ॥^३

१. 'रामस्नेही' के उद्धृत लेख से।

२. वही।

३. वही।

रिपुभंजन सिंह

आप अगरीशपुर (शाहाबाद) के पास पत्नीपुत्र-गढ़ के निवासी थे ।^१ आपके पिता का नाम था बामू बघात सिंह, जो सन् १८२७ ई० के गढ़र के अमर सेनानी बामू कुंवर सिंह के सगे छोटे भाई थे ।^२ आप अपने पिता के अष्ट पुत्र थे ।^३ आपके छोटे भाई का नाम था सुमानसंजन सिंह । आपका विवाह रहसुआ (शाहाबाद)-निवासी बामू निरंजन सिंह की कन्या से हुआ था ।^४ कहते हैं, उन्होंने आपकी विवाह के अवसर पर तीन लाख रुपये दिये थे—एक लाख कविता-रचना की शिक्षा के लिए, एक लाख मुस्लीम सड़ने के लिए और एक लाख शिकार खेलने के लिए । आप स्वयं निरसंहान ही रहे । आपकी विधवा पत्नी बहुत दिनों तक जीती रही । सन् १८५७ के गढ़र के गार आप राज्याधिकारी हुए ।^५

आप एक लम्बे काल के बलिष्ठ अमान 'नामी पहलवान और साहसी शिकारी थे ।^६ बामू कुंवर सिंह स अगरीशपुर में जो शिक्षास्थल सन् १८५६ ई में बनवाया था,

१. 'बामू कुंवरसिंह' दुर्गाशोकवसन्त सिंह प्रथम सं०, सन् १९२३ ई०) पृ० १२३ ११ ।
२. कुंवरसिंह से स करने के कारण बगल सिंह ने दमस्त रिवाज से अपना हिस्सा निकलवाकर अपने पिता साहनबाद सिंह के समक्ष में ही शिक्षा किया था । साहनबाद सिंह की सन्तु के गार फिर दुर्गाशोक से बगल सिंह की अनेकान अनेक बड़ भई, उन उन्हें अगरीशपुर लान देना पड़ा ।
३. आपका जन्म अनुबाबा-सन् १८२० ई० के अष्टमघण्ट हुआ होगा । सन् १८२१ ई० में बामू कुंवर सिंह द्वारा स्थापित रिपुभंजि के नामे का शिक्षास्थल बनी देर तक नामे रहने के कारण अनुमान होता है कि उस समय आपकी उमरवा कम-से-कम तीस वर्ष की रही होगी । इस विषय से आपका सम्बन्ध सन् १८२१ ई० अनुमान होता है—सं०
४. 'अस बरत में कुंवरों से महापुत्रा अनेककरा सिंह और अगरीशपुर से बामू कुंवर सिंह की भई थे । जो इनस बरत में हुई की बर बराल से गार है । कबीर जी की बरत से बामू निरंजन सिंह बरत ही भई ।—'प्यारिजे पन्नामिक' (बर्त, हिस्सा १) पृ० ११४-१२ ।
५. "सन् १८२० ई० के गढ़र के बरते ही बामू कुंवर सिंह के एकमात्र पुत्र बलसंजन सिंह मर लुके के और पहर के अमाने में ही बौदा (बगल प्रदेश) में पीप बीरभंजन सिंह की मर भई । इसलिय पहर के बरत रिपुभंजन सिंह की बरी मिली । कुंवरों के महापुत्र महेश्वरबहाद सिंह ने रथभरी अंजाम भ्रमरई । बामू कुंवरसे से गरी-बरीकी हुई ।"—बरी ।
६. सन् २० के गढ़र के समय भारत-सरकार (ईंग्लैंड बलसराव) से शाहाबाद के नर-अभियन्तारियों की जो दुस्मिया निष्पत्ती थी, उसमें आपने सन का विचारवात्मक परिष्कार है ।
७. "पैरों के टिकार के लिए दक्षिणी पराकी में बरतार बाला करते थे । एक बार रोर की कोली लगी बर अनेकतर हू बर ली रिपुभंजन सिंह ने बरते रोरों मयते हाव (१) एकद लिये । आपके सानी रोररोर मारीये कन्क की माल रोर के मुँह में बाल दी । मुस्ली में अकर रोर के माल क्या बरती । एक पडे एक कुली रोर से होती रही । अरथा देकर अपने को बरामे की कुली मारी मिली । बरी लगी माल से अकार कर बरतार करता रहा । बर सानी की रोर के लकी से बरी बरत बरत ही गया । अरथि आप रोर की बीजे बरिलते पाक की कोह एक से गये और बरों देठा अरथा रिपु भि रोर कीमे कीर में का गिरा । रोर की कमार हू बर बर बर बरों लकटा था । आप बोनी लगी की माल ही मिर बरने लकटा मोग मर बरने और बर ले जाये, बर-राक से बर बर कुली हुई । बर लगी की मरत बरने और सेठ बराम दिने गये।—(बरी) पृ० ११४-१२ ।

जिसकी आगे मिलाकर (मन् १८२८ ई० में) लंगरेजी ने बाक्य से उड़ा दिया, उसमें स्थापित होनेवाली शिवमूर्ति का अरथावाला शिलापट्ट बहुत भारी था। स्थापना के समय उसे पाँच-छह पहलवान मिलाकर उठा सफ़ था। कहते हैं, आपने अकेले ही उस छटाकर मंदिर में प्राण प्रविष्टा के स्थान पर रक्त दिया था।^१ आपको अस्त्र राक्ष संभालन का भी अग्निदान था तथा आप संगीत के भी आचार्य थे।^२

कहा जाता है कि सन् सत्तारन के मरने के पूर्व जब बाबू कुँवर सिंह के दरबार में क्रांति के पक्ष और विपक्ष में दो रत्न काय कर रहे थे, तब आप क्रांति विरोधी रत्न के नेता थे। आगे जब सुलतकर बलवा हो गया, तब आपन लंगरेजी की सहायता मी की। इस काब में आपने हुमराँव के ठस्काहीन महाराज अक्षरबख्श सिंह का भी सहयोग पाया। आपका यह काम बाबू कुँवर सिंह की मृत्यु के बाद एक साल रहा। बाबू कुँवर सिंह की जम्म रिपामत प्राप्त करने के लिए भी आपन कोई प्रयत्न उठा नहीं रखा।

आपके पिता का दहान्त बहुत पहले ही हो गया था। उनके देहान्त के पश्चात् आपही अपनी रिपामत के कर्त्ता बर्षा हुए। आपकी रिपामत समयसम साठ-सत्तर हजार सालाना आमदनी की थी। इसका उपभाग आपन जम्म माई के साथ लगभग १९८१-८२ फसली (मन् १८०५-०६ ई०) तक किया। उसके बाद कर्म बुकान और मुकदम लड़ने में आपकी सारी रिवातत दिख गई^३ और आपकी आर्थिक बर्सा बहुत कमिद गई।^४

८. बाबू कुँवर सिंह के मनीषा बाबू रिपुर्मन सिंह बड़े लाकठर और शिम्भर-बहादुर थे। बाबू कुँवर सिंह बकशीरपुर में कुँवरलाल महादेव का मन्दिर बकशाकर शिराण मूर्ति की स्थापना कर रहे थे। उस दिशिर्षा कुँवर सिंह के हाथ से बर्षाई गई। शिवजी के मरने में रत्न के लिए कलर भी एक शिला की जो सदा गज लमी और सदा गज बीड़ी की और उसके बीच में मूर्ति के लिए बड़ा क्षेत्र बना हुआ था। बड़े साधक पद्म साहे, बर बसके खुल गयी होने के कारण वे कर्त्ते लये, बजर विधि के सम्पन्न होने पर ही यह शिवा गोषे अपने में लयी जा सकती थी। अन्तको जो विपत्त दण रिपुर्मन सिंह ने बड़े काम लिया और काय बड़े तक बड़े दोषी हाथों बकब बगल में करका शिवा कर कर विधिर्षा पूरी हुईं तब हीरे (करपे) में रक्त दिया। बाबू कुँवर सिंह आदि बरविपत्त लीनों को बड़ा बरम्मा हुआ और वे लोग आरको सावाली देने लये। —'बर्षादण्डे बरमेनिवा (दिग्वा १), पृ ११०-१८।

रिपुर्मन सिंह विनयना, आत्मकथा, सवीरकण्ठ, मकरनिषा, हुकसवाटी फण्डरकथा आदि में बड़े विपुल थे। काले बर्षा सवार बानी दण्डुटी में बागविटी की शालीन थी थी। रिपुर् दयाल सिंह और काया अमर सिंह के भी सवाटी-शिवाटी लिखार्वे थी। —बरी ६० ११४ ११।

बने के बाद अर दोनों न शर्षों में अवरन हुए हो गईं। लन्धानशील होने के कारण आप बहुत लक्ष्मीने बरम्भर थे थे। अन् बूटो मारे गुवान भोजन सिंह अरसे बर ददा करते थे। मूफ्तः रली वाग पर अर दोनों में मेर बरदा हो गया। रिधानन की कर्म के लोभ से लरपी गईं। अन् में मुकदमेदारी में सारी रिवातत बसा हो गईं। —दे'पिच, बाबू कुँवर सिंह (बरी) प० ११० और २०१।

आपकी इस बरिबिल में हुमराँव के बरनुक बराम्भर सवाबदार सिंह ने तदा बगरीरपुर रिवाण्ट के बनीरब बीदेरार औरनेर देनन में बहुत सवाबका की था। एक दोनें म्पलिये की और से आपकी आर्बन बर-बक ही बने आर्थिक की मर्त होटी ररी। —८

आपके दरबार में विद्वानों और कवियों का आना माना बराबर हुआ करता था। आप स्वयं भी हिन्दी, संस्कृत और फारसी के बड़े अध्ये विद्वान्, बरतन-शास्त्र के पंडित तथा कवि थे। हिन्दी में आपकी कई पुस्तकाकार रचना नहीं मिलती, स्फुट काम्य रचनाएँ भी दुर्लभ हैं।

उदाहरण

अदुकुल बंस चले, रघु वो दिलीप चले,
 चले राम रावन अचल जस थापनो।
 शिव चले सक्ति चले ब्रह्मा दिग्पाल चले,
 चले सेस सहन-फल उदन अनापनो।
 कहे 'रिपुभजन' कतेक दय-दानव चले,
 चले वलि घामन तीन लोकन को नापनो।
 अगत के देखे में लोग सब चले जात,
 लोगन के देखे मे चलन होइहें आपनो ॥^१



लक्ष्मीनारायण^२

आप शाहाबाद जिले के अफ़्तिवारपुर-ग्राम के निवासी थे।^१ आप गोरखपुर में पुच्छि-बारीगंज में श्रीहनुमान्जी के उत्तरासक के रूप में आपकी अथर्वी प्रतिष्ठा थी। सरकारी नौकरी से अवसर ग्रहण कर स्थायी रूप से आप अफ़्तिवारपुर में ही रहने लगे। यहाँ आपका अथर्विक समय एक मंदिर में रहकर काम्य-रचना तथा भगवद्भजन करन में ही बीतता था। आपके एक पुत्र का नाम नागेश्वर प्रसाद था। वे भी हिन्दी में कविता रचना करते थे। बाबू शिवनन्दन सहाय का कहना है कि आपसे हनुमान्जी के गुण-कीर्तन में तिराही शीगाइयो की एक पुस्तिका रची थी। फारसी लिपि में लिखी हुई उसकी एक प्रति उन्होंने (बाबू शिवनन्दन सहाय से) देखी भी थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।

- १ ल. ० ०- सरयूका तीर्थ (बनारसपुर शहर) के दिनांक १३-२३ के पत्र से।
- २ इस नाम के एक और कवि १३वीं शती में लिखता में हो गये हैं। वे ल. ० १३० वि (सद १३२३ ई.) के समय हिन्दी के कवि अमरुतीम कावखाना (सद १३०३ १३१३ ई.) के दरबार में थे। हिन्दी में उनकी दो रचनाएँ मिलती हैं—(१) 'मैमरुतिपदी और (२) 'हनुमान्जी का उपाध'।—प्रेमचंद, 'हिन्दी-साहित्य और विचार (परी) ३० ३५।
- ३ श्रीशिवनन्दन सहाय (अफ़्तिवारपुर, शाहाबाद) द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर। आपके अथर्विक-काल के सम्बन्ध में अनुमान है कि वह ल. ० १३० ई. के उत्तरार्ध हीगा; क्योंकि बाबू शिवनन्दन सहाय ने हनुमान्जी गीता के अन्तिम अंग में उन्हें बरौण्ड देखा था।—सं०

लक्ष्मीसखी

आपका वास्तविक नाम 'लक्ष्मीदास' था।

आप छारन जिले के 'अमनौर' नामक ग्राम के निवासी सुशी बगमोहनदासजी के पुत्र थे।^१ बाल्यावस्था से ही आपकी बुद्धि किसी धारतल्ल की खोज में लीन रहती थी। उस समय से ही आप बोग-भ्रमण में मग्न रहते थे। आपके माहुरों ने आपको सांसारिक मनाने की अनेक चेष्टाएँ कीं, किन्तु असफल रहे। मुना होने पर आपने विवाह भी नहीं किया और क्रमशः मक्ति-पथ पर अग्रसर होत गये। सांसारिक वस्तुओं से आपने यहाँतक नाटा छोड़ लिया था कि शरीर पर बस्त्र भी नहीं धारण करते थे।

लगभग पच्चीस-छत्तीस वर्ष की अवस्था में आपन एक संत श्रीशानीदासजी का शिष्यत्व ग्रहण कर अनेक स्थानों में भ्रमण किया। कहते हैं, इसके पूर्व आप कबीरपंथी थे। श्रीशानीदासजी के साथ बिसरल करने के पश्चात् सरभंग-सम्प्रदाय की साधना-पद्धति से आपको विराम हो गया और आपने सखी-सम्प्रदाय के नाम से एक नये पंथ का ही प्रवचन किया। इस नये पंथ के प्रवर्तन के पश्चात् मीमांस्य साठ वर्ष की अवस्था तक आप अपने अनुयायी संत-मठों की जमात के साथ हीर्यटन करत रहे। अन्त में उसका भी परित्याग कर आपन छारन जिले के राजापट्टी-स्टेशन (एन० ई० नगर) के निकट शालग्रामो-नरी के तट पर 'टेकआ खैर' में एक कुटिया^२ बना ली, और उसी में स्थायी रूप से रहकर बोग-साधना एवं भगवद्भजन में अपने दिन बिताने लगे। आपने अपने जीवन के शेष साठ वर्ष उसी कुटिया में बिताये। इनमें भी अन्तिम चार वर्ष आप कुटिया के अन्दर प्रायः समाविस्य ही रहे। कहते हैं, इन्हीं चार वर्षों में आपने अपनी समस्त रचनाएँ पूरी की थीं। आपके शिष्यों में सर्वप्रधान हैं—कामतासखी^३, जिन्हें आपक सम्प्रदाय के प्रधान अधिकारी होना का भी भेष प्राप्त है। इनके अतिरिक्त आपक शिष्यों में दो सम्भन और भी प्रमुख हैं—भीमश्रीपसखी और श्रीधुनापसखी।

आप सं० १९७० वि० में, बैशाख शुक्ल ३ मंगलवार (सन् १९१४ ई० की २९वीं अगस्त) को ७३ वर्ष की आयु में समाविस्य हुए।

आपकी अधिकांश रचनाएँ मौखपुरी भाषा में ही हैं। आपकी रचनाओं में निम्नांकित पुस्तकाकार में प्राप्त हैं—अमर-सीढ़ी^४, (२) अमर-कहानी^५, (३) अमर

१ 'अमर-कहानी' (लक्ष्मीसखी, पथक सं० सन् १९६० ई.) १ क (परालि) तथा 'अमर-विवाह' (वही प्रथम सं० सन् १९३५ ई.) १ क (मूकिका)।

२. इसमें आपके एक शिष्य महात्मा श्रीशानीदासजी ने निवास करते थे।

३. इसका परिचय वही पुस्तक में बलारवान ३, १७३ है।

४. इसमें आप ८ शिष्ये ४२ अन्त संगृहीत हैं।

५. इनमें आपके ७७२ अन्त हैं। इसका पद्यतम आपके ही प्रमुख शिष्य श्रीधुनासखी (राजराज, मुबबकरपुर) ने १९६० ई. सन् में करवाया था।

विलास^१ और (४) अमर-पुराण^२। इन चारों रचनाओं को सखी-सम्प्रदायवालों ने 'भोग्यप्रामाणी' की संज्ञा दी है। आपकी सख पुस्तकी के अतिरिक्त दोसी, कचहरा, कसली, अदुरमास, भूमर, मोहर, झूतना आदि पदों के खोद-काटे संग्रह भी प्रकाशित हुए हैं।^३

उदाहरण

कव सगि सहवे भगिनियाँ के माहवा, ये सोहागिनि,
सख चौरासी कर धार।
नया रे झुवेला ना त भगम भयहवा, ये सोहागिनि,
कहिले से कर ना विचार।
सतगुरु ज्ञान के केवट मसहवा, ये सोहागिनि,
संत कर शब्द कस्मार।
भापन प्रीतम बसेला सखी जहवाँ, ये सोहागिनि,
सहजे से उतरि लेहु पार।
सखिमी सखी एगो गाथे निगुनवाँ, ये सोहागिनि,
ना त दूटेसा सोझुं तार।^४

(२)

सांगेला हिरोसवा र भमरपुर में झुलेसा सत सुजान,
खलु सखियन सुन्दर धर देखे खासि लेहु गगन पेहान।
येह पार गंगा ओह पार जयुना बीचे-बीचे सुन्दर भान,
आव भार जोगेला जगमग तारा झलकेसा सुन्दर चान।

१. इसमें आपके लिखे २०४ अन्त सुपुष्टि है। इसका प्रकाशन श्रीकपदेवराज भयन ने सन् १९१४ ई० में किया था।
२. इसमें आपके लिखे २०२ अन्त है। इसका प्रकाशन ममी सख तारी हो सख है। विद्वत्-राजगण-परिषद् के इत्यभिलक्षण अन्त-अनुसंधान-विभाग ने इसकी एक इत्यभिलक्षण अन्त सुपुष्टि है। परिषद् के एक विभाग की ओर से इसमें सम्प्रदाय की व्यवस्था हो रही है।—२०
३. सखीमठ (अष्ट) में इन चारों पुस्तकों की पूरा प्रतियाँ सुपुष्टि हैं। यहाँ इसकी कितनी कपटी होती है और और-पूर्विक के दिन इसकी पूरा प्रती व्यवस्था से की जाती है।—श्रीकपदेवराज (सिद्धक, रावम लखन, आठ) के १० अन्त, सन् १९१४ ई० के पर है।
४. 'सांगेला' (परी १०० अन्त ४ अमरवी सन् १९५० ई.), १० ई०; इस प्रकार का एक संग्रह श्रीमान (सारन) के विचार प्रेस से अष्टपुत्रक अन्त सखी ने और दूसरा अष्ट के श्रीकपदेव प्रेस से श्रीकपदेव अन्तक अन्तक के अन्तक कटा है।—३
५. 'अमर-पुराणी' (परी १० व (परिष्ठा)।

लक्ष्मी सखी के सुन्दर पियवा मिलि गइले पुरुष्य पुरान,
 लागेसा हिरासवा रे भवघपूर जे झुलेसा राम नरेस ।
 खलु सखी खलु भव देखन पियवा के नोके सरी बाँधि-बाँधि केस,
 एक भोर सीया धनी एक भोर सखिया बीच में बइठेसा भवघेस ।
 सोने कर बरहा रूपन कर पाटी किलुहा झुलावेसा सेस,
 मछिमि सखी के सुन्दर पियवा गुरुजा दिहले उपदेस ।'

(४)

भव लागस ए सखा मेघ गरजे, खलु भय पियाजी के देख हे,
 घोहरे देखवा म जगमग जोसी गुरुजा दिहले उपदेस हे ।
 गगन गोफा में एगो सुन्दर भूरठ देखस लागेसा परमेश हे,
 रूप अनूप छवि बरनि ना जाला जनु कोटिन उगेसा दिनेश हे ।
 उगेसा धाम ताहाँ भाठी पहारा माया मोह फाटेसा कुवेस हे,
 जनम मरन कर छूटेसा बनसा जे पुरुष्य मिलेसा भवघेस हे ।
 चारु भोर हीरा सास के बाती हस-हस बरेले हमेश हे,
 उठेसा गगन धनधोर महाधुनी भमृत भरेसा जलेश हे ।
 लक्ष्मी सखी के सुन्दर पियवा सुनि लेहु पिया क सनेस हे,
 मानुष जनम के ब्रह्मस पियावा फेरू नाही लगिहें उवेस हे ।'

(५)

बगिससा गगन भिजेसा मोरा सारी कैसे बला दसम दुभार हे,
 भेजि देहु ए पिया होखिया कहुरिया एगो सुन्दर सबुजी मोहार हे ।
 भाव-भावऽ ए मोरा सखिया सलेहर मिलि-जुलि कर ना सिगार हे,
 भवर्षी के जावना फेरू नहीं भावना करि सहु भेंट भँववार हे ।
 हसबस दमयल बलेसा नँहरवा जाई के लागेसा दुभार हे,
 देखसा मैं ए सखी सुन्दर पियवा गालि के बइठेसा बँवार हे ।

१. 'भेजुती के बने और काम (पत्ती) १० । ११ ।

२. 'भाव-भाव' (पत्ती, पद्य सं०, पृ. १२५० रे०) १० । १ ।

स्वयं अनूप कहीं कहीं सखिया जनु कोटिन अन्ध उजियार है,
 हायावा में लिहले वान सरासन भंजन भूमि मार है।
 सखमी सखी के सुन्दर पियवा भगत हेत भवतार है,
 भवकी के जनम सुभारि सेह सखिया ना त होखे कुकुर सियार है।'

(५)

उठु सखी उठु अलु भ्रमर नगरिया।
 सुख के सागर सखी भरिले गगरिया,
 सतगुरु हमरो मिलले घरहरिया।
 धार तोरा भल नीक लागेला जहरिया,
 जे छोरत वने ना दुइ दमरि अमरिया।
 छोरि देखु साक पोसाक भोड़िले कमरिया,
 भारे का तोरे भाँख में लागल वा जमरिया।
 लछिमा सखी बान्हि सेह गेंठी में समरिया,
 अरफर पेन्हि सेह चुमुकी चुनरिया।'

✽

लालवात्रु

भाप मन्मथपुर त्रिलो में गोपालपुर नामक स्थान के निवासी थ।' आपसे पद्यों
 (सारन) के साहित्यिक रसैय नाम्म अननारापण सिंह के आश्रम में रहकर काव्य-रचना की थी।

उदाहरण

नम-गुन-निमान नग ईसन उदार नृप।

कौसल-कृष्णा क सेह नाम समुदाई है ॥

सहि सतसंग मतिमन्द बहु गुनि भयो।

भसयाचल गग्ध गुन अन्दन सुहाई है ॥

२. 'अनन-नमदा (वारी) १४।

३. 'अनन-नमदा (वारी) १०३।

विरद बडाई प्रस कीरति किरन 'सास' ।

उदयाचल मानु सब लोक-सुखदाई है ॥

बुद्धि वा वियेक गुन सास मरजाद देखि ।

कोविद कवीन्द्र बुद्धि भस्ताचल घाई है ॥^१



विजयगोविन्द सिंह

आप पूर्निवा बिले के 'करकिया-स्टेज' के साहित्य और धार्मिक मैगजिन का एक म. आपके पिता 'मैयाजी' नाम से प्रसिद्ध थे। कहते हैं सन् १८५७ ई० की लड़ाई में अंगरेजों से आपकी रिवाजत से एक करोड़ रुपया कर्ज लिया था।^१ हिन्दी में आपने स्फुट काम रचनाएँ की थीं। 'सिन्धीनामा' नाम की आपकी एक पुस्तक का नाम जुना गया है, पर आपकी रचना का उपाहरण नहीं मिला।^२



श्यामसुन्दर

आप बनेली (पूर्निवा) के राजा बेहानम्ब^३ सिंह के दरबार में रहते थे।^४ कहते हैं राजा बेहानम्ब सिंह के ज्येष्ठ कुमार भीलीखानम्ब सिंह^५ ने जब अपने दरबार के कवि गोपी

१ विहार-राष्ट्रवाच-परिचर के इरतिविद्य संव अनुसंधान-विभाग में सुरक्षित इरतिविद्य गोपी 'दुर्गा-मेघ-वर्णिका' से। वे ब्रह्मिर्वा बम्भनाथवत सिंह की बरसा में लिखित हैं। कम्भनाथवत सिंह का इरिबन्ध अनुसंधान पुस्तक में ही बयानबान प्रकटित है। वे सन् १८६६ ई० में, इरानम्ब में, रचयेक हुए थे। जबके दरवाही कवि की अवस्था उनके समय में ४०-५० वर्ष की उमिर होनी थीर वत आचार पर अनुबान होता है कि आपका जन्म सन् १८३०-४० ई० के अन्तर्गत हुआ होता।—३

२ कहते हैं कि वत पुस्तक की इरतिविद्य मणि पाक-पुस्तकालय, दरभंगा में सुरक्षित है।

३ वत समय आर ४०-५० वर्ष की होवे, जन्म आरका जन्म-काल सन् १८००-१० ई० के बीच अनुमान है।

४ आपकी रिवाजत का मियेबत 'आमर नामक एक अंगरेज था। किरांती है कि वतकी रनावाजी से रिवाजत के भी-नाम होमे पर आपने एक बरिदा बरामे थी, बिसवा जर्मिन संत था—'आमर नामका रिवाजत। किर वतने विषय में भी आपने लिखा था—

जन्म जने दाहि कुल जाई वृषति ब्याज।

किर वतने दाहि थी विविदि करी म बाव ॥—३०

५ एकका दरबार 'हिन्दी-साहित्य और विचार' (बरी ५ १९६) में देखिय। सन् १८५६ ई० में एकका देवनागरी पुस्तक था। एकके पुत्र राजा भीलीखानम्ब सिंह (५ २१-२२ ई०) के दरबार में भी आप रहे। वत आचार पर अनुबान होता है कि आपका जन्म सन् १८००-१० ई० के अन्तर्गत हुआ होता।—३०

६ 'सत्तरवती (साहित्य, मई, सन् १९२६ ई०, जन्म २०, अवर २ संख्या ४), ५० १२६-२३०।

७ एकका जन्म सन् १८३०-४० ई० है। एकके पिता के दावार में भी आप रह हुए थे। दरवाही कवि के आपकी अवस्था वत से-वत बराली वर्ष की उमिर होनी। उमिर आचार पर आपका जन्म-काल अनुमान है। दुर्गा काव्यरत्ना के समय में आप बरिदा रहे हैं।—३०

महाराज की काव्य-रचना पर प्रसन्न होकर उन्हें हानस्वरूप एक हाथी दिया था,^१ तब आपने अपने आभयदाता से निम्नांकित पंक्तियाँ निवेदित की थीं—

अहो हंस-अवतल मणि, यह अचरज मोहि मान ।

गोपी हाथी मे चढ़े, पैरल सुन्दर स्वाम ॥^२

आपकी इस उक्ति पर आपका आभयदाता बहुत प्रसन्न हुए और आपका भी पुरस्कार-स्वरूप एक हाथी दिया । आपकी रचना^३ का कोई अन्य उदाहरण नहीं मिला ।



श्यामसेवक मिश्र

आप शाहाबाद जिले के सूर्यपुराधीश राजा राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह के दरबारी कवि थे ।^४ आप राजा साहब के जीवन का अंतिम प्रहर तक उनके दरबार में रहे । कहते हैं, उनके दरबार में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । आपकी कुछ स्पष्ट रचनाएँ नामविक गीतों के रूप में आज भी उपलब्ध हैं ।

१. कुछ कवियों का कल्प है कि पीपी महाराज की राज-स्वरूप हाथी राजा वेदात्मसिंह ने अपने ज्येष्ठ पुत्राय श्रीजीमानन्द सिंह के ज्योत्सव के अवसर पर दिया था ।—देहिण, 'सरस्वती (वरी)', १० १२६-२७ ।

२. इस दोहे का अन्वय भी मिला है—

महाशय-दरबार में एक अक्षर्य अभिराम ।

गोपी तो कबीर कहे पैरल सुन्दर स्वाम ॥—देहिण, वरी ।

३. श्रीजीमानन्द पुस्तकालय (भागलपुर) में प्राप्त कवियों की रचनाओं का प्रच्छा संघर्ष है । इन प्राप्त कवियों में सर्वप्रथम कवि पं श्रीजामसुन्दर हो गये हैं, जो योगराज कबीरवर के अग्रमग और भागलपुर नगर के जगत गंगाधर सिंहपुर अक्षर के अन्तर्गत मिस्त्री प्राममाजी थे । उनका संबंध मिस्त्री कबीरे-दरबार में था । कबीरे-दरबार इस संघर्ष का एक संश्लेष कबीरवार-परिवार माना जाता था । यही परिवार के शाहाबादी पं श्रीमगवानप्रसाद कबीरी ने सन् १६१३ ई में भागलपुर-नगर में मगवान पुस्तकालय की स्थापना की और इन कवियों की रचनाओं को पुस्तकालय में संकलित करवाना । बिहार-राष्ट्रमार्ग-परिषद् (बनारस) के अनुसन्धानक श्रीरामाराजराय शर्माजी ने इनके एक मात्र परिष्कार की रचना-संग्रह सं १६२२ वि क्रियाकाल सं १६६३ वि मानने हुए छठे हिन्दी की मौलिक रचना कहा है । कविता स्वामसुन्दर की ही एक प्रमुख पुस्तक 'चित्रकालम्' का बन्देख करते हुए शाल्मबी ने लिखा है—“एक विद्वत् में अन्य अनेक कवियों की रचना है जो भागलपुर के कवि हो गये हैं, जो अक्षर्य महत्त्वार्थ है।” इस काव्य का रचना-काल सं १६४२ वि है । इन प्राप्त कवियों का मूल स्थान उत्तरप्रदेश एवं बिहार था, जहाँ से आकर वे लोग मिस्त्री दरबार के काव्य में बस गये । स्वामसुन्दर कवि की अन्य ही रचनाएँ 'भाषावैश्वप्रकाश' एवं 'अठहरनामा के संघर्ष में शाल्मबीका मत है कि वे अन्य कवि ने अपने आत्मदस्ता राजा भाषावैश्व के बीरब क संघर्ष में लिखे हैं । संघ के अंत में एक बिश्र भी है । अपने इन दोनों का विविचार प्रकाशक रचन है ।” —देहिण, सुगरका-महाविद्यालय, भागलपुर पत्रिका (सन् १९६ ई) में प्रकाशित श्री देवका रम् प का लेख 'हिन्दी-सहित को भागलपुर की देन' इत्यम् ।

४. पं० जगदीश शुक्ल (संस्कृत-हिन्दी-अध्ययक, राम द्वार-सूक्त सर्वपुरा) से प्राप्त प्रामाजी के आचार कर । आपने आत्मदस्ता राजासाहब का उक्त-काव्य कबीरजी शब्दी का अन्तिम अक्षर था । उनका अन्त सं १६ ३ ई में हुआ था । उनके दरबार में रहते समय आपकी अवस्था बृद्ध बच ल कम न होती । अन्तः अनुमान है कि आपका जन्म सन् १५४०-३ ई के लगभग हुआ होगा ।—सं

विरद बड़ाई जस कीरसि किरन 'भास' ।

उदयाचम भानु सभ भोक-सुखदाई है ॥

बुद्धि को विवेक गुन साल मरजाद देखि ।

कोविद कवीन्द्र बुद्धि भस्ताचम घाई है ॥^१



विजयगोविन्द सिंह

आप पूर्बिया जिले के 'करकिया-स्टेट' के मासिक और मोबिल मैगजिन का सम्पादक आपके पिता 'मैयाबी' नाम से प्रसिद्ध थे। कहते हैं सन् १८२७ ई० की लड़ाई में अंगरेजों से आपकी रियासत से एक करोड़ रुपया कच लिया था।^१ हिन्दी में आपने स्फुट काम रचनाएँ की थीं। 'विहारीनामा'^२ नाम की आपकी एक पुस्तक का नाम सुना गया है, पर आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।^३



श्यामसुन्दर

आप बनेसी (पूर्बिया) के राजा बेहानन्द^४ सिंह के दरबार में रहते थे।^५ कहते हैं राजा बेहानन्द सिंह के ज्येष्ठ कुमार भीखीचानन्द सिंह^६ ने जब अपने दरबार के कवि गोपी

- १ विहार-शासनात्मक-परिवर्त के इतिहासिक ग्रंथ अनुसंधान-संस्थान में सुदृष्टित इतिहासिक शोध-पुस्तक-संग्रह (गिरी) से। ये ब्रिटीश वायु-संग्रहालय के सिविल को-लेज में लिखित है। सन् १८५० ई० में, ब्रह्मचारी श्री चन्द्रिका प्रसाद मुखर्जी ने इसे बंगाली में अनुवादित किया था। यह पुस्तक में ही बंगाली में प्रकाशित है। ये सन् १८५१ ई० में, ब्रह्मचारी श्री चन्द्रिका प्रसाद मुखर्जी ने इसे बंगाली में अनुवादित किया था। यह पुस्तक में ही बंगाली में प्रकाशित है।
- २ कहते हैं कि यह पुस्तक की इतिहासिक प्रति का प्रकाशन, दरभंगा में हुआ है।
- ३ इस समय सन् १८०२ वर्ष के इतिहास, जहाँ आपका जन्म-स्थान सन् १८०३-१८०४ ई० के बीच अनुमानित है।
- ४ आपकी रियासत का मैनेजर 'शारदा' नामक एक चैम्बरलैन था। किन्तु यह है कि बंगाली राजाओं की शक्ति के अभाव में ही आपने यह पुस्तक लिखी थी, जिसका अर्थ यह है—'आप अपने दरबार में ही अपने विषय में ही लिखने लगे थे।

जन्म और दार्जिलिंग में रहते हुए लिखते थे।

जिसे आपने दार्जिलिंग में लिखित करीब सन् १८०३ ई० में लिखा।

- ५ इसका उदाहरण 'हिन्दी-साहित्य और विचार' (वर्ष ५ १९६) में देखिए। सन् १८०३ ई० में इसका उदाहरण हुआ था। इसके पुत्र राजा भीखीचानन्द सिंह (१८०३-१८०४ ई०) के दरबार में ही आप रहे। यह आपका ही अनुमान होता है कि आपका जन्म सन् १८०३ ई० के आसपास हुआ होगा।
- ६ 'शारदा' (मासिक मई, सन् १९२९ ई० अथवा १९३० अथवा १९३१) पृ १९६-१९७।
- ७ इसका समय सन् १८०३-०४ ई० है। इसके पिता के दरबार में ही आप रहे मुझे ये उदाहरण बंगाली में आपकी रचना का उदाहरण बंगाली में लिखने लगे थे। इसके अभाव में ही आपने लिखा था—

महाराज की काव्य-रचना पर प्रसन्न होकर उन्हें हानस्वरूप एक हाथी विद्या था,^१ तब आपने अपने आभयवाता से निम्नांकित पंक्तिपों निवेदित की थीं—

अहो हंस-अभर्तस मयि यह अचरज मोहि मान ।

गोपी हाथी पै चढ़े, पैवस सुन्दर श्याम ॥^२

आपकी इस उक्ति पर आपका आभयवाता बहुत प्रसन्न हुए और आपका भी पुरस्कार-स्वरूप एक हाथी विद्या । आपकी रचना^३ का कोई अन्य उदाहरण नहीं मिला ।



श्यामसेवक मिश्र

आप शाहाबाद जिले के सुसपुराधीश राजा राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह के दरबारी कवि थे ।^४ आप राजा शाहब का बीकन का अंतिम प्रहर तक उनके दरबार में रहे । कइते हैं उनके दरबार में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी । आपकी कुछ स्फुट रचनाएँ सामयिक गीतों के रूप में आज भी उपलब्ध हैं ।

१. कुछ लोगों का कथन है कि नीली महालाय को ब्रह्म-स्वरूप हाथी राजा वेदान्तसिंह ने अपने श्लेष कुमार श्रीजीलालन्द सिंह के कर्मोत्सव के अवसर पर दिया था ।—देहिण्ड, 'उदरलक्ष्मी (वरी)', पृ. ६२६-२७ ।

२. इस वीरे का अन्वय भी मिला है—

महाराज-दरवार में एक अचरज अभिराम ।

गोपी तो हाथी को पैवस सुन्दर श्याम ॥—देहिण्ड, वही ।

३. "श्यामश्याम पुस्तकालय (मायापुर) में भारत कवियों की रचनाओं का अच्छा संग्रह है । इन भारत कवियों में संक्षिप्त कवि पं० श्रीरामसुन्दर हो गये हैं, जो बीकनपुर कबीरर के अवसर और भयानपुर नगर के अण्डर संतापार विहणुर-अंजल के अन्तर्गत मिश्रके प्रान्ताधी थे । उनका सर्वत्र मिश्र के बीरे-दरवार में था । बीरे-दरवार इस अंजल का एक संग्रान्त कर्मोत्सव-दरवार माना जाता था । कही दरवार के शिवाये भी पं० श्रीमयाबाबुसाह बीरेजी ने सन् १९१६ ई. में मायापुर-नगर में भगवान पुस्तकालय की स्थापना की और इन कवियों की रचनाओं को पुस्तकालय में संग्रहित करवाया । विहार-उपसंग्रह-दरवार (परना) के अनुसन्धानक श्रीरामनारायण रामजी ने उनके एक पत्र 'पंजाबकी का रचना-काल सं० १९२२ वि. अधिकांश सं० १९१२ वि०' मानते हुए कहे हैं कि की अधिक रचना करा है । कवियर रामसुन्दर की ही एक प्रमुख पुस्तक 'विश्वकाम्य' का अन्वय करते हुए आरंभों में लिखा है—"यह विश्व में अन्य अनेक कवियों की रचना है जो मायापुर के कवि हो गये हैं, जो अचरज महाकर्ण है ।" इस काव्य का रचना-काल सं० १९१२ वि. है । इन बात कवियों का मूल नाम अचरजेश्वर एवं पंजाब का कहीं से आकर के लोग मिश्रके दरवार का काव्य में लक्ष गये । रामसुन्दर कवि की अन्य ही रचनाएँ 'मायावेश्वरप्रसाद एवं 'अठहरामा के संग्रह में शामिल होना मत है कि ये अन्य कवि से अपने अचरजेश्वर राजा मायावेश्वर का बीकन के संरक्ष में लिखे हैं । प्रथम के संग्रह में एक विश्व भी है । अपने इन प्रबंधों का विविधतर प्रकाश रूप है ।"—देहिण्ड, 'सुन्दर-सहितकालय, मायापुर पत्रिका' (सन् १९१० ई.) में प्रकाशित पृ. १० केकम पृ. २ का लेख 'हिन्दी-सहितकालय को मायापुर की देन' इत्यादि ।

४. पं० कर्मवीर शुक्ल (संस्कृत-हिन्दी प्रकाशक राजा हर-शुक्ल स्वपुरा) से प्राप्त सामग्री के आधार पर । आरंभके अचरजेश्वर राजाशाहब का उल्लेख-काव्य कबीरजी राठी का अन्तिम चरण था । उनका रहस्य सन् १९३३ ई. में हुआ था । उनके दरवार में रहते समय काव्यकी अचरजा कवि-स वष से कम न होगी । अतः, अनुमान है कि अचरजा काव्य सन् १८४०-५० ई० के अवसर हुआ होगा ।—सं

बिरद नहाई बस कीरति फिरन 'सास' ।

उदयाधम भानु सब सोक-सुखदाई है ॥

बुद्धि वा विवेक गुन सोल मरजाद देखि ।

कोविद कवीन्द्र बुद्धि अस्ताचल घाई है ॥'



विजयगोविन्द सिंह

आप पूर्बिया जिले के 'सरकिया-स्टेट' के मासिक और भोजिय मैगिज ब्राह्मण थे । आपके पिता 'मैवाजी' नाम सप्रसिद्ध थे । कहते हैं, सन् १८५७ ई० की लड़ाई में अंगरेजों ने आपकी रिवाजत से एक करोड़ रुपया कर्ज लिया था ।^१ हिन्दी में आपने स्फुट काव्य बनाई की थीं । 'बिस्तीनामा'^२ नाम की आपकी एक पुस्तक का नाम मुना गया है, पर आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।^३



श्यामसुन्दर

आप बनेली (पूर्बिया) के राजा बेदानन्द^४ सिंह के दरबार में रहते थे ।^५ कहत है राजा बेदानन्द सिंह के श्यैब कुमार भीलीलानन्द सिंह^६ ने जब अपने दरबार के कवि घोषी

(बिहार-साहित्य-परिषद् के इत्यतिष्ठित ग्रंथ अनुसंधान-विभाग में मुद्रित इतिहासिक दोषो-दुर्गो-प्रेम-वर्धिका) से । ये दक्षिण बन्धु कनकात्मक सिंह की प्रशंसा में लिखित है । बाद कनकात्मक सिंह का परिष्कृत प्रमाण पुस्तक में ही कनकात्मक प्रकाशित है । ये सन् १८७६ ई० में, ब्रह्मचर्या में स्वयंसेवक हुए थे । उनके दरबारी कवि की अवस्था जबके समय में ४०-५० वर्ष की रही होती थी तब आपका पर अनुमान होता है कि आपका जन्म सन् १८५५ ई० के अन्तर्गत हुआ होगा ।—^७ कहते हैं कि एक पुस्तक की इत्यतिष्ठित प्रति राम-मुकुन्दलाल, दरभंगा में सुरक्षित है ।^८ जब समय सन् १९०२ वर्ष के होने, अतः आपका जन्म सन् १८००-१९०० ई० के बीच अनुमान है । आपकी रिवाजत का मैनेजर 'जामर कामरुदक अली' था । किन्तु ही है कि कसबे दगावाजी से रिवाजत के बीना होने पर आपने एक कविता बनाई की जिसका अन्तिम श्लोक था—'जामर कामरुदक रिवाजत' फिर अपने विषय में भी आपने लिखा था—

जन्म ग्रहे बरिह दुस गये कृपित करार ।

किर गये बरिह जो, विविधति कही म काम ॥—९०

१. इका १ (का 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (वर्षी ५० १९६६) में देखिए । सन् १८७६ ई० में इनका देहान्त हुआ था । इनके पुत्र राजा लीलानन्द सिंह (१० १९०२-१९०३ ई०) के दरबार में भी आप रहे । इस प्रकार पर अनुमान होता है कि आपका जन्म सन् १८०० ई० के आसपास हुआ होगा ।—९०

२. 'मरतवाडी' (मासिक, मई सन् १९२९ ई०) भाग ३७ पृष्ठ २ संस्का ४) पृ १२२ २० ।

३. इनका जन्म सन् १८५० ई० में है । इनके पिता के दरबार में भी आप रह चुके थे । दरबारी कवि के आपकी अवस्था जबके समय काशीत वर्ष की रही होती । इसी प्रकार पर आपका जन्म-काल अनुमान है । इनके अन्तर्गत के समय में आप बनेली रह रहे थे ।—९१

उदाहरण

(१)

पिचकी मति मारो पैयां पकै ।

नाहक ही बदनाम होऊँगी, गाँव खबाई हाय ठकै ॥

गहो न सास गँन में बहियाँ, एसी झरज कर जोरि ककै ।

'सिवक स्याम' गुलाल मलो अनि, सखि तँहें कोठ छाख मकै ॥^१

(२)

काहे री दाहति माखिन घोट प्रधीर ।

देखि होख पूनो दुख बीरी उठति करेजे पीर ।

जे यह झरर डारि होरो में सगत हिये ज्यों सीर ॥

'सिवक स्याम' बिना नहिं भावठ वार सुरैंग रँग सीर ॥^२

शिवप्रसाद

आप 'कपीश्वर' के नाम से प्रसिद्ध थे ।^१

आप महा निवासी श्रीवास्तव-कायस्थ थे । आपका पुत्र कपीश्वरजी मी हिन्दी के कवि हैं। आपने बहुआर-चौरा (गया)-निवासी बाबू मंगलचन्द्र कायस्थ के लिए, राममछि-सम्बन्धी अनेक ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ तैयार की थीं ।^२ सन् १८८४ ई० के लगभग आप दरमंगा-राज के शीवान हुए और बीकन के अन्त तक वहीं रहे ।

आपकी गणना प्रसिद्ध राममछी में होती थी । राममछि-सम्बन्धी कई मौखिक ग्रंथ आपन लिखे हैं जिनमें (१) 'सप्त-रूपै-रामायण' (२) 'नन्दमदन-हरचंद्र-रामायण', (३) 'सप्त-साहिनी-चंद्र-रामायण' (४) 'संक्षिप्त बोदावली-रामायण' (५) 'यत्तहारि-गीत चंद्र रामायण', (६) 'सप्त सोरठा-रामायण', (७) 'अगुप्त-रामायण', (८) 'चंपवहावली रामायण' (९) 'हरिहरात्मक हरिचंद्रपुराण' आदि प्रमुख हैं ।^३ स्मृत रचना का काम में आपकी बहुत-सी कामस्या-सूचियाँ मी मिलती हैं ।

१ व कपीश्वर गुप्त (१९१) के द्वारा

२ वही ।

३ अनुयायक हैं कि अनेक अन्य सन् १८४६-६० ई० के लगभग हुआ था । हिन्दी-साहित्य और विहार की एक (बाबेश्वर दास) प्रथम सं०, सं २ (२ वि) पृ० १६ ।

४ ये सभी ग्रंथ कन्नूवाक-बुल्लुआवर (गया) में मुद्रित हैं ।

५ इन ग्रंथों के विस्तारपूर्वक परिचय का लिए देखिए, 'साहित्य' (मैथिलिक, वर्ष ४, अंक १ और २) अक्टूबर और मार्च/ सन् १९३६ ई०), अगस्त १ १७-१९ तथा ८०-८१ ।

६ बाबू शिवरामजी महाराज ने कायस्थान्तरी में विहार में हिन्दी की कथा शोधक अन्ने सेठ में 'अकालिन्द-सूत्रय' नामक ग्रंथों के एक और ग्रंथ की भी बर्णना की है ।—देखिए, 'साहित्य-परिचय' (पृष्ठ ८, सं० १० जनवरी, सन् १९१४ ई०) पृ० १४ ।

उदाहरण

(१)

सुनि सुनि बंसी तान सिगरी सिमिटि भाई,
करिकै सुमति रासमंडल भ्रखंड का ।
परम सुआन तान लेतीं गान केतीं,
करि केतिन के छाई छवि मदन प्रचंड की ।
मध्य मंडली में कियो श्यामै अमिरामै,
वामै श्रीसिख सुकयिता की उपमा उदंड की ।
निखिल निखंड घनमंडलहि घेरिलियो,
मानो बाधि मंडल मारीच मारतंड की ।^१

(२)

पावक की सपटें लहरें जे उडावत,
तेई भरीर की भोरा ।
बोरन के तन तें वहै सोनित,
सोई चलै पिखका चहुँ भोरी ।
हाँक सुने रजनीचर माजत,
धूम अमारन की बरजोरी ।
मानहुँ श्री हनुमन्त बली गढ़,
सक के बीच में खेसत होरी ।^२

(३)

धूँष्ट के पट बाहर बैन,
कढ़ैन कपोलन से हँसो जाका ।
भौन के बाहर गौन करै,
नाहि पाँव धरै रुचि राखि पिया की ।

१. अष्टमस्कंध शतश्लो (अनुसंधानक, विहार-राष्ट्रभास-वर्षाद्) प्रायः ।

२. कहीं से प्रायः । वर रचय अच्युत रसिक-सना के मरिचक-पत्र 'रसिकविवेक' (अवध १ पृ ६, पृ १-१३ ई) में भी दृश्ये भी ।

श्रा शिष सोल सुभायन सों,
छवि छाजति मुन्दरि ज्यों रतिया की ।
संभू-तिया का सिया की सिखी,
मति रीति सु याको सखा सुकिया की ।'

(२)

तेरी बात मानत हूँ भोग धौ लुगाई सर्व
कौन दुख तोका भयो शिशिर जवाई मैं ।
सुतनु भ्ररोग फछू रोग न दिखत होय,
रोग जो संजोग करों सुरत दवाई मैं ।
'श्राशिव' सुकवि रूप लखि-लखि तेरो,
प्राजु पाई लघुसाई कजकली समताई मैं ।
बंत को निरन्तर सिहार पास वास रहे,
तऊ तू उदास क्या यसंत का प्रवाई मैं ।'



शिववल्श मिश्र

आप गया जिले क भेगखरा नामक स्थान के निवासी थे ।^१ आपका आठप्युत्र बालागोविन्द मिश्र^२ कमलेश संस्कृत और हिन्दी क प्रसिद्ध कवि तथा भारत-कुशी क सहपाठी मिश्र थे ।

आपके घर से काशी क स्वनामकल्प विद्वान् धीरामनिरंजन स्वामी । आप टिकारी-राज (गया) के प्रधान राज पंडित थे । आपकी गणना अपने समय के पुरंजर विद्वाना में होती थी। कहत हैं चर्मशास्त्र-संबंधी लगभग पन्द्रह हजार पाणिनी लिख लिपिका कर आपने अपने संप्रदाय में एकत्र की थीं । संस्कृत हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू भाषा का भी आपको अचक्षा ज्ञान था । श्शौतिषशास्त्र और चर्मशास्त्र के आप प्रकाण्ड पण्डित माने जात थे । एक हीनो भाषाओं में आपकी रचनाएँ हैं । हिन्दी में आपने क्युट कविताएँ लिखी थीं, जो आग उपलब्ध नहीं होतीं । आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिल ।



१ लखनऊ सं (पाना अदीन सन् १८१७ ई) पृ ३ ।
२ वही (अवधती सन् १८३५ ई०) पृ ३ ।

३ गया के लेखक और क. व. (वही) पृ १०२ ।
४ इन्द्र चरित्र हनी पुण्डरीक चरित्र नामक । इनके चरित्र की पर लिपि में भी आपका उल्लेख है । ये चरित्र-कालीन थे । इनके विपुत्र (पुत्र) इनसे कुछ बड़े ही होते । इन दिशाएँ के लक्ष्य आप सन् १८३५ ई० के लगभग अनुचित हैं।—सं०

५ इन्द्र चरित्र हनी पुण्डरीक चरित्र नामक । इनके चरित्र की पर लिपि में भी आपका उल्लेख है । ये चरित्र-कालीन थे । इनके विपुत्र (पुत्र) इनसे कुछ बड़े ही होते । इन दिशाएँ के लक्ष्य आप सन् १८३५ ई० के लगभग अनुचित हैं।—सं०

सोहनलाल

आपको अँगरेजों की ओर से 'रायसाहब' की उपाधि प्राप्त थी।

आप पटना के निवासी थे। जब आप पटना-नामल स्कूल के हेडमास्टर थे, तब सरकारी 'हिन्दी-गजट' का सम्पादन करते थे। पीछे जब गजट का कार्यालय पटना से कलकत्ता चला गया, तब आप भी वहाँ चले गये। कुछ काल के अनन्तर जब एक गजट का प्रकाशन बन्द हो गया, तब आप अनुवादक के पद पर काम करने लगे। सन् १८८७ ई० में आप उसी पद पर काम कर रहे थे।^१

आपकी गवना अष्टो विद्वानों में होती थी। अँगरेजों पर आपका पर्याप्त अविचार था, हिन्दी के लो आप श्रेष्ठक ही थे। आपकी हिन्दी धरल होन के कारण बहुत लोकप्रिय हुई। अपनी कृतियों की सरल बनाने की धुन में आप प्रायः नय शब्दों की रचना कर डालते थे।^२

सङ्गीबोली के उच्चारक श्रीअयोध्याप्रसाद शर्मा ने आपको निर्दिष्ट हिन्दी की 'मुंशी-शैली' का जनक बतलाया है। उनके मतानुसार आपने विज्ञान के लोकप्रिय पारिभाषिक शब्दों का निर्माण संस्कृत, अरबी या अन्य पुरानी भाषाओं के मूल से न करके स्वतंत्र रूप से मुंशी-शैली में किया था।^३ हिन्दी में आपको विज्ञान-सम्बन्धी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं—(१) शैल विमली-वस्तु^४ (२) रम्य विमली-वस्तु^५ और (३) वासुविद्या^६।

उद्धारण

(१)

थी एक पतङ्ग चाँद वासी,
सज्ज-घज वह रखतो थी घस निरासी।

- १ 'पुस्तक-संस्कार रचितकालीनस्य-प्रथम (परी) ५ १०२।
- २ सन् १८८० ई में सरकारी नौकरी करते समय आप कम-से-कम बत्तस वर्ष के रहे होंगे। अतः अनुमान है कि आपका जन्म सन् १८१०-४ ई के मध्य हुआ होगा।—
- ३ —'देखिए, राज् शिवमन्त्र सहाय लिखित पाठ प्रकाश कर्तो में बिहार में हिन्दी की दशा' शब्दक लेख —'साहित्य-विमल' (परी) ५० २-२१।
- ४ Popular Scientific terms, independent of Arabic Sanskrit or any classic origin have also been coined in the Munshi's style by Rai Sohan Lal the late very able Headmaster of Patna Normal School and now translator to the Government of Bengal, who may without opposition be styled as the father of the Munshi Style. Thus the style is becoming complete Language in itself
—'सङ्गी बोली का पद्य (प्रस्ता-मूल) की भूमिका—देखिए, बसोष्वावसाय उद्यो-समारोह ग्रंथ (शिवभूषकसहाय तथा जलन दत्तचन शर्मा प्रथम सं सन् १९१० ई) ५ १२२।
- ५ सज्ज-घज सन् १८८१ ई में प्रथम लेखक ने किया था।
- ६ सज्ज-घज सन् १८८१ ई में ही स्वयं लेखक ने किया था।
- ७ —'देखिए, राज् शिवमन्त्र सहाय का साहित्य-विमल का मन्थन।

कुछ कर्त्री मुझके झोंके खाके,
 ऊपर को उठी वह सिर हिसाके ।
 ले हास बहुत सा शह जो पाई,
 धामाथ बढ़ी वह सिर पं भाई ।
 रख अपना उड़ना उठान भूली,
 उड़ने की जो होर था सो भूली ।
 वह ऊँचा जगह जो हाथ भाई,
 यह बात वह अपने मन में लाई ।
 हे भाज जहान में कौन ऐसा,
 ऊँचा जो चढ़ा हो मेरे जैसा ।
 जो कुछ है वस मेर तले है,
 घालम है कि मेरा मुँह सके है ।
 यों कहती हुई वह सिर पं चढ़के,
 भो, ऊँचा उठा हवा में भरके ।
 हूँती जा कहीं वह होर जाके,
 नीचे को चली वह सिर मुझके ।
 थकराती, तहपती, फिरफिराती,
 गैरस में चली वह गाते खाती ।
 पहुँची वह यही जमान पी जाके,
 शारस हुई दम में मुट-मुटाके ।
 पूरे हैं जो भारी हैं भरे हैं,
 हिसते नहीं, एक जा गड़े हैं ।
 हसते को हवा सगो उडेगा,
 उड़ता है सो जानिये गिरेगा ।^१

(२)

वहो चाँद पेड़ों के पोंछे उगा,
ठठा सास सा जगमगाता हुआ।
वह फिरने जो पूटीं भजव सास सास,
था पेड़ों में एक जगमगाहट का आस।
ठठा चाँद कुछ एक मनोवा-सा ठंग,
वह दम दम में उसका बदसता था रंग।
गुलाबी-सा जाहा वह ठंठा ठवा।
वह नीसम-सा भाकास निहरा हुआ।
वह चढ़ता था चाँद भीर खिलता था नूर,
हुआ जगमगाहट के जोवन का चूर।
हर एक तरफ नूर एक बरसने लगा,
हर एक फूल पत्ता चमकने लगा।
कनी रत्न का वह दमकता हुई,
वह चाँदी-सी मट्टी चमकता हुई।
जमी पर विद्या नूर का चाँदना
मनोखी भवा एक जमी की वनी।'



हरनाथ सहाय

आप सारन जिले के निवासी थे। आपका क ठाकुर-कवि आपके अन्तर्गत निधी में था।^१ आपका हिन्दी में 'काशीखण्ड' नामक एक पुस्तक भी रचना की थी। आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिल।



१. 'काशीखण्ड' काशी-खण्डक द्वय (वही) पृ० १२८-२९।

२. 'निवा-दरप' (वही) पृ० ११६। ठाकुर कवि का जन्म सं० १८११ वि० (सन् १०३६) के फाल्गु-मास में हुआ था। आप जबक समयकाव्य में थे। आप, भारतका जन्म भी कनी समय के लगभग हुआ होगा। उक्त परिचय समय देखें।—सं०

हरिचरणदास

आप पूर्विया जिले के 'कसना' नामक स्थान के निवासी अमहरि-चैरय थे ।^१ आपके पिता का नाम था बेजू साह । आपको शिक्षा मिर्ज़ा-कहा तक हुई थी । मिर्ज़ा पास करने के परचात् आप पुस्तक विभागमें हवलदार नियुक्त हुए । किन्तु, इस पर को असंतुष्ट करे आप मधुवनी के एक ग्राहमरी स्कूल में अध्यापन-कार्य करन लगे । इस पद पर भी आप बहुत दिनों तक रहे । कुछ ही दिनों में आपको संसार से स्वभावतः विरक्त हो गई ।^२

आपका विवाह फारबिसगंज-सबइन्द्रियन (पूर्विया) क 'हरिपुर' नामक ग्राम में हुआ था । एक ग्राम के दक्षिण 'सुसहरि' नामक ग्राम में एक मईत गंगादास का अखाड़ा था, जिसमें आप निरन्तर जाया करते थे । आगे चलकर आप महन्त गंगादासजी से ऐसे प्रभावित हुए कि आपने लष्ठी से शीघ्रा से ही और स्वयं भी कबीरपंथी मठाधीश हो गये ।

आपने अपने जीवन-काल में कई बार कबीर-पंथियों की समा-याचोजित की थी । वर्ष में एक दिन 'अनन्त-चतुदशी' को, एक समारोह 'आरती चौक' होता था, जिसमें नये लोग शीघ्र होतें थे । आपके संबंध को अनन्त-पारम्परिक घटनाएँ सुनी जाती हैं ।

आपकी दो काव्य-रचनाएँ थीं—(१) हरिचरणामृत सतसई^३ और (२) चिंतामणि । इनमें दूसरी का आगकल कोई पता नहीं चलता । आप सन् १९४३ ई० की २३वीं दिसम्बर को, १०० वर्ष की आयु में, परमधाम सिंघारे ।^४

उदाहरण

(१)

माग उदय दिन मिले नहि, सतगुरु से सत नाम ।

नाम मिलावत रूप हों, तब पावहि विश्राम ॥

१ इस नाम के एक और साहित्यकार (१९वीं शता) में हो पड़े हैं । का सारक-बिसे के बेलपुर नामक ग्राम क निवासी थे । वे एक सफल कवि थे और बहोते दिनों में कई प्रथोथी रचना की थी थी । इनके परिचय के लिए देखिए, 'दिग्दी-साहित्य और विचार (पृथी) ३ १७१-७३।—स

२ श्रीतारामोदक प्रकाश (कलकत्ता, पृथिवी) द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर । इसके अनुसार आपका जन्म सन् १८४३ ई. के लगभग हुआ था ।—स

३ कुछ लोगों के मतानुसार आपने किसी से कुछ सचें बर्तें लिखे थे जिसे सुनने का कोई बटव न देखकर आपने लम्बास ले लिया । किन्तु धारण कुछ रोगविग्राम से इस बात का संभव विदा है । उनका करना है कि कल्पुत्र, इस समय आगक दास हो ली थीं कभी कभी थी । यदि आपकी बर्तें होता तो बर्तन देखकर आप कतने मुक्त हो सकते थे । इनके कल्पानुसार आपकी प्रशुति ही विरक्त थी और की जिसके शरणागतक आप लम्बसी हुए ।—स

४ सन् १९५१ सि (सन् १९३४ ई.) में श्रीविद्यपी सारकामासजी ने आपका परिचय दिया था ।

५ इनके अनुसार सतसई सतसई आपके बहोते में ही बनाई गई, जो आज भी वर्तमान है ।

(२)

अर्थ धर्म अरु काम सुख, पापिहु के घर होय ।
सत्स-समागम नाम-धन, दुरसभ नर को दौय ॥^६

(३)

चतुराई चूल्हे पड़े, वाहि न मिलिह राम ।
सत्य नाम रटता रहे, सब सरिहैं सब काम ॥^७

(४)

जो घट प्रेम न संघरे, नही नाम का ध्यान ।
साधुन सेवा नाहिं घर, जीवत जानु मसान ॥^८

(५)

रटत-रटत रसना धके, व्यास बरठ सुलाय ।
प्रेम न छाडे पपिहरा, नित नब भदे सवाय ॥^९

(६)

सुमिरन स सुधि यो करो, जैस जस अरु मोन ।
एक पसक विछुरे नहीं, रात्रि दिवस सौं लीन ॥^{१०}

(७)

गुप्त जाप सुमिरन करे, बाहर लखी न कोय ।
घोठ न करकत दक्षिमे, अन्दर राखी गोय ॥^{११}

(८)

सुमिरन सेवन विना नर, हान चाहे भव पार ।
हरिचरण । मस ऊवर, बूडे मांभे धार ॥^{१२}

(९)

मन मासा जो नर जपे, नि अक्षर निज नाम ।
साहेब से परिचय करे सब पाव वह ठाम ॥^{१३}

(१०)

सन्तन दरस प्रताप से, महा पुन्यफल होय ।
दर्शति जौ वह करि कृपा, पाप न राखे कोय ॥^१



हरिराज द्विवेदी

आप चम्पारन जिले के 'भैकुंठवा' नामक ग्राम के निवासी थे ।^१ आपका जन्म एक पंडित-परिवार में हुआ था । आपके पूर्वजों में गणेशरत्न द्विवेदी, भीषति द्विवेदी रमापति द्विवेदी आदि संस्कृत के मान्य विद्वान् हुए थे । आप भी संस्कृत के एक अच्छे विद्वान् थे ।^२ आपको बतिया राय-बरेबर से सम्मान प्राप्त था । कहते हैं, पिछ्मीबाग (बतिया) के शिव-मन्दिर पर जो प्रशस्ति अंकित है, उसका लेखक आप ही हैं । हिन्दी में आपने महारानी किशोरिया की प्रशस्ति लिखी थी ।^३ अपने जीवन के अंतिम दिनों में आप काश्मीरि रामायण का हिन्दी-पद्यानुवाद कर रहे थे, जिसे अपूर्ण ही छोड़कर स्वर्गवासी हो गये ।^४ आपकी रचनाओं के स्याहरण नहीं मिले ।



१ 'हरिकरणाष्टक-सप्तसर्ष' (बही) पृ २८ ।

२ बही पृ० २७ ।

३. आपने संस्कृत में कई पुराणों लिखी थी जिनमें दो 'मुनिवंश-पञ्चति' और 'नाटकसत्तरती' प्रमुख हैं । बतिया की रचना आपने अपने किसी पूर्वज की स्मृति में की थी । इसमें प्रथमवर्त आपने अपनी बंदा-परमपदा का भी उल्लेख कर दिया है । द्वितीय की इस्तान्बिन्द-दीवी आपके एक बंधवर पर रत्नरत्न द्विवेदी के पास है ।—सं०

४ महारानी किशोरिया की शेरक-बर्तनी सन् १८७७ ई. में विहार में बनाई गई थी । इसी समय पर यह प्रशस्ति लिखी गई होगी । इसकी रचना के समय आप कम-स-कम ५ वर्ष के रहे होंगे । यह अनुमान होता है कि सन् १८३० ई. के लगभग अठारह जन्म हुआ होगा ।—सं०

५ यह अनुवाद का कुछ अंश आपके एक बंधवर ४० सरस्वती द्विवेदी के पास सुरक्षित है ।

उदाहरण

एहो वृन्द विद्वज्जन तो ते का वताऊँ हाय
 मुख ते निकारे उर-ज्वाला-सी जगत है ।
 आज नगराज त्याज भवनि समाज पद
 पगन पघारे बाते फेर ना डगत है ।
 भ्रम्विका यखाने हेरि भ्रम्वर ते देवगन
 विकल वेहास याहि बँन न पगत है ।
 कंचन-कलित वसुधा ना ये भ्रंगूठी हाय
 नग के प्रकास विनु सूना-सी लगत है ।^१



ईनरराम

आप कम्पारन त्रिलो क सरमंग-सम्प्रदायी कवि थे । आपकी रचना में मोगपुरी भाषा का भी पुट है ।

उदाहरण

भव घर जाए द ए सखिया, राम सुरतिया लागल मोर ।
 छन-छन पल-पल कल ना परत है, गृह भांगन भइले मोर ।
 सुरति सुहागिनि विरहे ब्याकुल, पलको ना लावे मोर ।
 भव घर जाए द ए सखिया, राम सुरतिया लागल मोर ।
 निरखत परखत रहस गगन में, निसिदिन लागत डोर ।
 भविघल नाम जपो भमिभंतर, भव गवनदां होइहें मोर ।
 भव घर जाए द ए सखिया, राम सुरतिया लागल मोर ।
 भवजल-नदिया भगम वहे सखिया, चहुँदिसि उठत हिसार ।
 जय 'ईनर' पलक मे उतरी, सत साहेब का मोर ॥^२



१ विहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् के इत्यदिखित-संघ भद्रसंवात-विभाष में सुरतिय इत्यदिखित संघ 'सुगमिभरमिषी' से । इस शब्दित को रचना करने करने भाववराता का नामागतप सिंह के स्वर्णनाम होने पर भी भी ।

२ 'कम्पारन की साहित्य-साधना' (परी), पृ ४० ।

उमानाथ वाजपेयी

आप विहोरवा (गोकुण्डगंज, प्रम्वारन) के निवासी थे।^१ आपकी कुल स्मृति रचनाएँ ही कबीरवादी में मिलती हैं।

उदाहरण

सावन मास निरास भये बरखा निशिवासर होत ना देखा ।
धामिन से जरि जात भनाज समाज छुटे सब बंधु विसखा ।
वेद-पुरान षोई नहीं जानत लोग कहे सब झूठ के लेखा ।
उमानाथ विचारि कहे जग जातहि राखि लिये भसलेखा ॥^२



करताराम

आप पहले मुवासरपुर मिल्हे के 'काँटी' नामक स्थान के निवासी थे, पीछे माता का देहान्त हो जाने पर गंडकी (नारायणी) के किनारे केसरिया (प्रम्वारन) से चार मील दक्खिन 'डिक्का' (सत्गढाट) नामक स्थान में जा बसे।^३ आपके पिता का नाम था बीरसिंह और माता का फुलेश्वरी।^४

'डिक्का' में राम-नाम का स्मरण करते हुए आप अपनी जीविका के लिए कठोर परिश्रम करते थे। मूँब की रस्ती बटकर बाजार में बेचते और स्वाध्यायी जीवन म्नीत करते थे। आपके छोटे भाई धवलराम^५ भी ईश्वर भक्त-कवि थे। आपकी पंथ-परम्परा में मुवासराम और सनेहीराम भी कवि ही गने हैं, किन्तु उनकी रचनाएँ दुष्प्राप्त हैं।

आप सरसंगी संत-कवि थे। आपकी रचनाओं का एक संग्रह 'करताराम क पद' के नाम से, पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब दुर्लभ है।^६

१ 'प्रम्वारन की साहित्य-साधना' (पृ०) १०-११।

२. पृ० १०-११।

३. पृ० १०-११।

४. आपकी माता-पिता कजर-जैरा के 'करटी' ग्राम (दक्षिण) के निवासी थे। कहते हैं आपका पिता के देहान्त के पश्चात् ही कुछ दिनों में बीरों का अन्त पड़ा। अतः, जीविका खोजने के उद्देश से आप अपने भाई धवलराम के साथ 'काँटी' चले गये।—सं

५. दलका कवि-पत्र इसी पुस्तक में धवलराम प्रकृत। धवलराम को धारणा पदा भाई भी बताया गया है।—देखिए, संतमठ का सरभंग-सम्प्राप्त (डॉ० कर्णेश्वर प्रकाशरी द्वारा प्रकृत सं० १९२१ ई०), पृ० १४६।

६. श्रीविमलेश्वर मिश्र (सं-दलकेश्वर आँक स्मृत, कैसरिया, प्रम्वारन) ने अपने दिनांक १९-२० के पत्र में आपकी इन पुस्तक की खोज की है। किन्तु वे इनमें संगृहीत रचनाओं की आपकी रचनाएँ नहीं मानते। जल्द ही इन पुस्तक की खोज के लिए पुनः प्रयास नहीं किया है। डॉ० संतमठ का सरभंग-सम्प्राप्त नामक ग्रन्थ में करताराम-धवलराम परिलक्ष्य नामक पुराण का बल्लेश्वर ही और कवि हैं कविों के बरबर ही उल्लिखित है। संतमठ, जब दोनों भाइयों की रचनाओं का यह सम्ग्रह संकलित है।—सं०

उदाहरण

(१)

गहै गरीबा झूठ न बोले जधा-साभ संतापा है ।
 स्तन-मन से उपकार पराया 'करता' सत अनोपा है ॥
 बिना परिश्रम धीव शक्कर को दुनिया से सेइ खाता है ।
 'करता' नाम-भेद नहि जानत झूठा संत कहाता है ॥
 पर-घन घूर नारि नागिनि सम मेहनत करके खाता है ।
 घाठो पहर नाम-रस पीवे 'करता' संत कहाता है ॥^१

(०)

जग में बैठे संत न होखे पञ्चागिनि नहि ताप त ।
 वह 'करता' जो संत होत है रामनाम सब सावे ते ॥
 पूजा व्रत तो करम-काख है सन्तन को नहि दुनिया को ।
 'करताराम' कहतु है साधा राम-नाम का रसिया को ॥
 तिलक-छाप से राम-मिलन नहि नहि कपडा रंगवावे त ।
 'करताराम' कहत है सुन लो सत राम-गुन गावे ते ॥
 सन्त न करता टोपी बनगी योगी भलख जगावे के ।
 जटा भभूति भवर मृगछाना 'करता' जग देखसावे के ॥^२

(१)

बडे सरकार से लोग कहे कोई तारथ चलिए महाराजू ।
 मुसुफाई कहे हरिनाम गहे हिय सत्य घरे घर तीरथराजू ॥
 चाहैं खूट मही बिधरे न घर हिय सत्य कहो सोहि का जग काजू ।
 'करतार' कहे गुन सत्य गहे मन खुद भय तन तीरथराजू ॥^३

१ संतकव का संस्कृत-साम्प्रदाय (बही) ५० १२२ ।

२ बही, ५ १२१ । बसन्ती इन्द्रो-त्तरीय पंक्तियों का लक्ष 'कर्मराम की सप्रतिष्ठा-साधना में सत प्रयत्न है—

तिलक-छाप से राम मिले यदि यदि कपडा रंगवावे ते ।

करताराम नाम सोर बनौ भावने सुरति बनारो ते ॥

३ संतकव का संस्कृत-साम्प्रदाय (बही) ५० १२२ ।

(५)

साधेउ न छन साधु कहाँ यह क्रोध किए पुनि बोध कहाँ है ।
मन नाहि मरे जिव मारिके छाहु करो कर मासि सहै गति नाहीं ॥
क्रोध रहे जिन्हके मन में अस बोध करो सब पाप तहाहीं ।
'करता' यह नेम कियो हठ की मनसा मुख मानु स बेसे धनाही ॥'

✽

कवीन्द्र

आप मिथिला के बिछौली नामक स्थान के निवासी थे ।^१ आपका बंशधर आराज्यकर जयप्रवेश में जाकर बस गये । आपका पिता का नाम 'हरिन्द्र' और पितामह का 'रत्नपति' था । आपके पुत्र 'तुनीन्द्र' भी हिन्दी के कवि हुए । आपने हिन्दी में कुछ सुष्ठु कवियों की रचना की थी । आपकी कोई पुस्तकाकार रचना नहीं मिलती ।

उदाहरण

तूहो लङ्गधारा निराधारा की अधारा मातु
तू हा आराधर की सुधार छँ धरतु है ।
सुमट ह्जारन में जाने जन आपने को
जहाँ रम रहू की बद्रह प्रगटतु है ॥
भनत कवीन्द्र तेरी मूरति त्रिभक्तमयी
ठोर-ठोर सूरति में पूरन पठतु है ।
जहाँ देव-वृन्दन पै परम निरारी भीर
तहाँ अम्ब तेरी ही निपारी निपटतु है ॥'

✽

कवरीराम

आप अम्बरन-निवासी सरमंगी-सम्प्रदाय के एक संत-कवि थे । आपने हिन्दी में कुछ सुष्ठु कवियों की रचना की थी । आपका कोई अखड़ा पद नहीं मिला ।^२

✽

१ 'संतमठ का संरक्षण-सम्प्रदाय' (पृ. १) पृ. १२२ ।

२ 'सरमंगी' (पृ. १) पृ. २६ पं. २ संख्या २, मं. सं. १८१८ ई.), पृ. २२७ ।

३. पृ. १ ।

४ 'अम्बरन की साहित्य-साधना' में आप का एक पद उद्धृत है किन्तु बलकृष्ण पाठ अत्यन्त अलभ्य है ।

—देखिए पृ. १० पं. ४६ ।

केशवदास

आप चम्पारन जिले के बिकबारा स्टेशन के समीप बेतवसिया मठ में निवास करते थे।^१ आप एक प्रसिद्ध इकीरपणी निगुणिया छत थे। आपके गुरु थे छपरवासा^२, जिनकी गद्दी पंडितपुर (चम्पारन) में थी। आपके शिष्यों में प्रमुख थे रसासदास और सामबिहारी दास।^३ आपने निगुण मक्ति-परम्परा में कुछ पदों की रचना मोक्षपुरी मिश्रित भाषा में की थी, जिनमें से कुछ उपलब्ध हैं।

उदाहरण

(१)

भाजू मोरा हरि के भवनवाँ, जय हम सुनसों हरि के भवनवाँ ।
चन्दन सिपसो हो भवनवाँ, सिरि पडितपुरवा में मेरो गुरु गदिया ।
उतर बहे हो लखनवाँ, गगन-मडल से गुरु मोरा भइले ।
'किसो' सोटे हो चरनवाँ, भाज मोरा हरि के भवनवाँ ॥

(२)

सुधि कर बालेपन के वतिया ।

दसो दिसा के गम जय नाहीं सकट रहे दिन रतिया ।

वार-वार हरि से कौन कियो है वसुधा में करव भगतिया ।

बालेपन वाले में बीते तस्नी कहके छतिया ।

काम शोध दसो इन्द्री जागे ना सूझ जतिया से पँतिया ।

अन्तकाल मे समुक्ति परेगा जब जम्हु घेरे दुअरिया ।

देवा देई समे कोई हार भूठ भइले जड़ा-बुटिया ।

केसोदास समुक्ति के गावेल हरिजी से करेले मिनतिया ।

सामबिहारी सबेरे चेतो अंत में कोई न संघतिया ॥^४



१ 'चम्पारन की छात्रालय-साधना' (वही), पृ. १०। 'अन्तकाल का सरसंग-सम्पराज' के अनुसार बेतवसिया-मठ को आपने ही स्थापित किया था। यह स्थान मोतीहारी बजारे में है। —देखिए, वही पृ. ११८।

२ इलाहा अरिफ़ इत दुल्हाक क प्रथम गुरुव में इत्यर्थ।

३ संतमान का सरसंग-सम्पराज' (वही) पृ. १११।

४ 'चम्पारन की साहित्य साधना' (वही) पृ. ४। दूसरे उदाहरण की पद्यों की वृत्तियाँ अन्तकाल का सरसंग-सम्पराज में किये गये हैं के अनुसार हैं। —देखिए, वही पृ. १८।

५. वही।

कोलेसर वावा

आप धारन मिसे के निवासी एक रामभागी लव से।^१ जीवन-भर आप रमता योगी बने प्रमथ ही करते रहे। आपके अनक शिष्य आज भी वर्तमान हैं। भीहुमान्त्री आपके सिद्ध हएवेन से। आपकी सिद्धि के चमत्कारों की अनक कहानियाँ लोक-प्रचलित हैं। कहत हैं कि बंगल में गाप धराते-धराते मूख लगन पर रोते समय एक दिन आपकी हनुमानजी ने दर्शन दिये से और उसके बाद प्रायः आपकी पुकार सुनकर प्रकट हो आया करते थे। राम-नाम की रट लगी रहने का यह फल हुआ। आपकी उपदेश प्रबान रचनार्थ मोक्षपुरी भाषा में हैं।

उदाहरण

जेकर घर महस, तेकर घर गइस । जेकर घर साफ, तेकर घर आप ॥
मुठमुट खेले सचमुच होय । सचमुच खेले बिरले कोय ॥
ओ कोई खेल मन-चित्तसाय । होते होते होइए आय ॥^२



कृपानारायण

आपका जन्म नयागाँव (धारन) में हुआ था।^३ आपके पिता का नाम था ठाकुर संतोष नारायण। बीसवीं शता के प्रथम-चरण के अंगरेजी, हिन्दी और मोक्षपुरी के पशुकी कवि श्रीरसुनीर नारायणजी आपके ही प्रयोग से। आप स्वयं मोतीहारी (बम्भारन) में छिरिहदार थे। लवू फारसी क आप कई अच्छे विद्वान् थे। इन भाषाओं में आपकी कुछ रचनार्थें भी मिलती हैं। करते हैं आपन मोक्षपुरी में भी कुछ रचनार्थें की थीं। हिन्दी में आपन एक कविता-मुस्तक 'आशिक-गदा' के नाम से लिखी थी, जिसमें इस्लाम की शार्हानिकता के साथ-साथ ही प्रेम विह्वल प्राणों की मर्मस्पर्शिनो कथा है।^४

१. हिन्दी-साहित्य और बिहार की रीत (पृ. १६२)।

२. वही।

३. श्रीमन्मोक्षपुरी मालविक (हरिद्वार, बरन) द्वारा पाठ लूकना के आधार पर। वे भी आपके बंशपर्यंत में एक मसिनाताली मुद्रक कवि हैं।

४. लव बुलक अप्पर पञ्चालि की हुई थी। इनके अरम्य में आपने अ(सत सुती में प्रकता बंश-परिचय दिया है। संयोग-प्रकार का अरम्य अरम्यक वर्तन लव पुस्तक की विरोधक है।

५. 'मुक्षुरी काण्वक—जीवनी तथा कविता' (श्रीर-अखिलर काव्येव द्वारा लव १९५६ ई. में प्रस्तुत पृ. ५ की संश्लि) पृ. १०।

उदाहरण

झोरन को छाड़ि मोहि रोकत ही बार-बार
 कहीं हों पुकारि नारि रारि मचि जायगो ।
 धाय-धाय भंचल को मोरो भुकभोरो ना
 सारी मोरो फाटिहै सो कामरि विकायगो ॥
 जोवन-चल पाके ही भंगो पर हाथ धरत
 एको सर मोतिन की दृष्टि जो हेरायगो ।
 एक-एक मोतिन के मोलन के पाछे 'कृपा'
 नन्द वो असोदा कान्ह तीनहु विकायगो ॥'



कृष्णप्रताप शाही

आप छारन जिले के हयुआ-नाबर्ग में जन्मे थे।^१ आपका पिघानुराग प्रशंसनीय था। आपकी अमिदधि विचकता की ओर भी थी। आपने अनेक प्रामाणिक पौराणिक चित्रों का निर्माण कराया था, जिनमें से एक 'अग्निदेव' के चित्र को आपाचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' में प्रकाशित कराया था।

आपके दरबार में कवियों का सङ्घा बमपट था। आप स्वयं भी कविता करके अपने दरबारियों को सुनाया करते थे। आपने मजन और बोहे के बिमा होली, चैती आदि गीतों की भी रचना की थी। आपकी रचनाओं का एक संग्रह 'शोक मुद्रण' के नाम से काशी में छपकर प्रकाशित हुआ था। उदाहरण नहीं मिले।



खनखन मियाँ

आप अम्पारन जिले के 'ममरका' नामक स्थान के रहनेवाले थे।^१ 'खेनसिंह का पैंबारा' नाम से आपकी एक करम-वीर-रस प्रधान पद्यात्मक रचना आपके वंशियों के कंठ में बसी सुनने में आती है। आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



१. विहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के द्वांके अधिवेशन (२ बरगवर सन् १९२४ ई०) के सभापति राजावराजुर श्रीरामचन्द्र सिंह बहादुर के अधिकावण से।—दोखर 'विहार की साहित्यिक मर्दि' (वही) पृ० ११७।

२. बरगवर सारन-बिना-सहित्य-सम्मेलन (हयुआ सन् १९२१ ई०) के सभापत्यक श्रीदुमार लुटोलेखर टारी के मन्त्र से।

३. अम्पारन की साहित्य-सभा (वही) पृ० १।

गगादत्त उपाध्याय

आप सम्मान निवासी थे।^१ आपके द्वारा रचे एक श्योतिष-ग्रन्थ की हस्तलिखित-प्रति आपका बचपन श्रीलक्ष्मीरत्न उपाध्याय के हाथ सुरक्षित है। आपकी रचनाओं का कोई उदाहरण नहीं मिला।



गुलाबचन्द

आपकी रचनाओं में आपका उपनाम 'भानन्द'^२ मिलता है।

आप शाहजहाँ विजे क निवासी^३ और उल्लूक जवनारायणजी^४ क शिष्य थे। आपकी एक पुस्तकाकार रचना 'भानन्द मण्डार'^५ नाम से प्रकाशित हुई थी।^६ इसमें आपके द्वारा रचित मोक्षपुरी क अनेक मन्त्र संग्रहित हैं। आपकी रचनाओं में कबीर क निगूणवाद की स्पष्ट मस्तक है और कहीं-कहीं धर्मग्रन्थ-संग्रह का भी प्रमाण परिलक्षित होता है तथा इनमें माया की सरलता, मान की स्पष्टता, पर-व्यक्तियों की समरसता आदि भी हैं।

उदाहरण

(१)

देख चुनरी में सागे न दाग सखी,
ई चुनरी पिया आप बनाए,
तानि करमदा के तग सखी,
पतिवरत रंग में रँगल चुनरिया,
प्रेम-किनरिया के साग सखी,
ई चुनरी जिन जतन से भाड़े,
'भानन्द' सेहि के जाने माग सखी।^७

१. 'कन्दरव श्री साहित्य-साधना' (वही) पृ० ३४।

२. इस नाम के एक और कवि १६वीं शताब्दी में जिये थे। वे दिल्ली का मन्तव्य साधक-विद्वान् (सन् १५७१-१६०० ई.) के दरबारी कवि थे।—शुद्ध, 'हिन्दी-साहित्य और विहार' (वही), पृ० १०१।

३. 'काद-नर (मोक्षपुरी-नाटक, वर्ष १ अंक ११ मार्च, सन् १९३२ ई.) पृ० १७।

४. जे काशी के प्रसिद्ध शैव उल्लूक जवनारायणजी की परम्परा के संत थे।

५. इस पुस्तक की एक मुद्रित प्रति श्रीवत्सेधर प्रसाद (धर्मशास्त्री कोठीवाली) से प्राप्त है परन्तु वर्तमान उदाहरण विजे के कौड़ी कवि से देखी थी।—शुद्ध, 'काद-नर (वही), पृ० १७।

६. वही।

(२)

भजन तजि जिमरा बइसे सुख पइवे
 जोग विहाय मोग-रस चाखत,
 वार-वार भव-रूप में अइवे,
 नाता-नेह-गेह में फौमि-फौसि,
 अपनो सरखस मून गँवइवे,
 काम-करोध-सोभ में रत नित,
 अपना रामजी से कव खव सइवे,
 मोह निसा में निसि दिन सोधत,
 घन्तहूँ जाइ चित्त पर सोइवे,
 भजु नारायण जय नारायण,
 'मानन्द' पइवे अइवे न जइवे।'



गोविन्द मिश्र

आपका उपनाम 'कृषीरवर' था ।

आप हरमंगा निवासी महामहोपाध्याय पं. किन्नर मिश्र के पुत्र थे।^१ आपन हिन्दी में मो. काश्यप-रघना की थी, किन्तु इनके सहाहरण नहीं मिले ।



गौरीदत्त

आप चम्पारन जिल के निवासी थे । हरमंग-सम्प्रदाय में सदानन्दजी की शिष्य-परम्परा में परपन्तबाबा के बाद आपका ही नाम आता है।^२ आपन भी निगुण मन्त्रि-परम्परा में कुछ पर लिखे थे किन्तु वे अब उपलब्ध नहीं होत ।



१. बँद-बन (१९१) पृ. २०।

२. श्रीमान-वशातुर श्रीधरमेतानाउपकृष्ट सिद्ध (वराह्य हरमंगा) के दिनांक २४-२-२६ के पत्र के आधार पर ।

३. चम्पारन की 'साहित्य-साधना' (१९१), पृ. १०।

जगन्नाथ सहाय

आप बड़ाबाजार मुहल्ला, इकारीबाग (छोटानागपुर) के निवासी^१ और हिन्दी के काव्याभिरुची लेखक थे। आपकी निम्नलिखित हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं— (१) आनन्द-सागर^२, (२) प्रमदसामुद्र (३) मधुरसामुद्र, (४) ममनाबन्दी, (५) कृष्णबासलीला, (६) मनोरंजन, (७) चौदहरत्न^३ और (८) योपासकहस्तनाम। इनके अतिरिक्त आपकी स्फुट-कविताओं के दो संग्रह अभी तक प्रकाशित हैं। आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



जनेश्वरी बहुआसिन

आप बड़हथौड़िया (बरभंगा) के महाराज-कुमार भीतेबेरबर सिंह (जनमासी बाबू) के द्वितीय पुत्र बाबू नरयनजी की पत्नी थीं।^४ आपन वैश्विनी में अनेक गीतों की रचना की थीं जिनमें से कुछ आज भी लोककण्ठ पर जीवित हैं।

उदाहरण

(१)

जय जय तारा सब दुख हारा, जय अगदम्बा नाम तोहारा ।
जय काली जय त्रिपुर सुन्दरी, जय तारिन महि हारा ॥
तोहुर अन्त केभो नहि पावए, महिमा अगम अपारा ।
धारि भुजा तिन नयन विराजित, परिहन वर बघछासा ॥
फनि भूपन मुसडमास विराजए, प्रत्यालीङ्ग अघारा ।
दासि जनेश्वरि देवि दिसि हेरिअ, घएस चरन गहि तारा ॥^५

१ 'विश्वम्भु-विश्वेश' (वही लुटिक-नाम) पृ १२७१ ।

२. यह पुस्तक मधुराधिकार प्रेस (मधुरा) से प्रकाशित हुई थी ।

३ 'दियो-सेरी-मंता' (मधुरा) में एक पुस्तक का नाम 'चौदहरत्न' दिया है पर विश्वम्भुओं से इस पुस्तक का नाम 'चौदहरत्न' ही लाना पड़ा है।—देखिए, वही पृ १२७१ । देव भन्नुमान ही हैं विश्वम्भुओं का पिता हुआ बाप जोक है। पितावर के प्रत्येक होने से देवी रूप हो जाना बहुत संभव है।—सं० ।

४ ओ० ईशान का (कन्नडाटी-विश्विनी-विशेष, बरभंगा) द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर ।

५ वही से प्रकृत ।

(२)

जागिअ कृष्ण कमलदल-सोचन, दुखमोचन सुखदाइ ।
 मोर भेल पह फाटए लागल, पक्षिक शब्द सुनाइ ॥
 अथहु जागु खिन्तामनि मोहन, तुभ विनु चित मकुलाइ ।
 ब्रह्मादिक सुर नर मुनि सम जन, दरस हेतु समचाइ ॥
 दए दरसन करु सब दुख भञ्जन, अमूमति-पुत्र कन्हाइ ।
 सुनि बरुलामय जागि चठल मट, दयाधाम हरखाइ ॥
 मुरलि मुकुट बनमास सम्हारधि, सम मिति दरसन पाइ ।
 माखन मिसरी दही मलाई, बहुविधि भाग बनाइ ।
 मुदित जनेश्वरि करतो भारति, जनम सुफल बनि जाइ ॥^१

❖

जयगोविन्द महाराज

आप पूर्णियाँ सिधे के बहोरा-भाम निवासी मध्यमह घं ।^१ आपका जन्म सन् १८२० ई० के कुछ पहले हुआ था ।^२

आप भीनगराधीश राजा कमलानन्द सिंह 'साहित्य-सरोज' (सन् १८३५ १९०३ ई) के दरबारी कवि घं ।^३ रामाठाहम आपको माहवारी कुछ नकद रुपये ठी देठ ही घे, सचक अतिरिक्त उन्हीम मागलपुर के नवहटा-भाम (सहाय) में आपको खेती-बारी क योग्य जमीन भी दी थी । जब राजासाहब का निधन हो गया, तब आप गंगातटस्थ 'महारीचक' चला आये और वही स्थायी रूप से रहकर बुद्धावस्था में मगबद्धमजन करने लगे । उन दिनों भीनगर छोड़ने से आप बहुत दुःखी रहा करत घं । उस समय आपको अबस्था ३५ वर्ष की थी ।^४

१ श्री० ईशानचन्द्र (वही) से प्राप्त ।

२ अन्धकार श्रीरामनाथस्य सिंह 'अनन्द' (बहारा बहो पूर्णियाँ) से प्राप्त सुचना के आधार पर ।

३ निम्नलिखित में आपका नाम सं १९१० ति (सन् १८२१ ई) के जन्मका थाका है । —देविचन्द्र, 'निम्नलिखित-विजो' (वही पृष्ठा ४, प्रथम सं सं १९१६ ति) पृ १११ ।

४ निम्नलिखित में आपको हुँवर कश्मिआनन्द सिंह (भीनगर) का अग्रिम कवि बतयाया है । —देविचन्द्र वही । हुँवर कश्मिआनन्द सिंह राजा कमलानन्द सिंह के लगे भाई घे ।

५ बहारा बहो (पूर्णियाँ) के अन्धकार श्रीरामनाथस्य सिंह 'अनन्द' ने दिनांक १० १ २६ को प्रेषित सुचनाओं में बतयाया है कि "उस समय में (एक प्रेषण) महारीचक में अन्धकार था । अन्धका अर्थमें पाकर बहारा आरब खाँ बाने लया । आपने मुझे कविता पढ़ाया अन्धकार किया । आपकी सिखाए २५ सपुता का सुधार बना अन्धकार पड़ा ।"

आप परम वैभव और 'गीता' के अनन्य मऊ तथा स्यासक थे। दोनों बूट गंगा-स्नान और संध्या-पूजा करते साधु-जीवन व्यतीत करते थे। प्रायः समस्त गीता आपको कष्टम्प थी। इसी कारण पूर्वियों के समाज में सभी कनो-जानी सबकन आपका आदर करते थे। आपको एक पुत्र श्रीअयोध्याप्रसाद राम है, जो बड़े सज्जन तथा साहित्यप्रेमी हैं।

आप रीतिकालीन-परम्परा के कवि थे। विंगल, अलंकार, नायिका-भेद, रस, गुण आदि पर आपका पूरा अधिकार था। आपकी रचनाएँ प्रायः सरस और प्रसाद-गुण-युक्त प्रजमापा में हैं। आपने निम्नांकित पुस्तकों की रचना की थी, जो सुमोक्षवश अमीठक प्रकाशित हो गईं—(१) साहित्य-पवोनिधि, (२) अलंकार-भाण्डर, (३) कविता-कौमुदी, (४) समन्वापूर्ति और (५) हुय्याठक। इनके अतिरिक्त और भी कई छोटी-मोटी स्फुट रचनाएँ आपने की थी। आपकी अनेक समन्वापूर्तिवाँ, सन् १८८८ ई० में, ज्ञानपुर से प्रकाशित 'रठिक-मिष' नामक मासिक-पत्रिका में छपी थीं। आप सन् १९१५ ई० के नवम्बर में मदारीचक के गंगा-उट पर परलोक विधारे।^१

उदाहरण

(१)

विकसित कज-सं धरन अरुनारे मजु,
 करिअर मन्द-से गमन सुहाये है।
 खपसा अर्ध-अल-अमा से गोर गास जाकी,
 उर-आरत श्रीफल-से गोस दरसावे है।
 पल्लव-स कोमल सुपानि 'अयगोविन्द' कवि,
 मुक्ता विसद-स दसन-पौति भाये है।
 सफरी-से लोचन खपस मन-भाषन है,
 चन्द से वदन-तिय दिव्य दरसाये है।^२

१. यह पुस्तक अयोध्या-मठ (बुधियाँ) के मंडी सारिखरतन श्रीरुक्मावती के नाम सुपकित है।

२. मित्रागुरुओं के अयोध्या सुनु-अल सं० १२० वि (सन् १९१४ ई) नामक है। —देखिए, विजयानु-दिशीर (वही) पृ १२५।

३. अयोध्याक रामनाथनाथ सिंह 'अयोध्या' (वही) से आत।

(०)

जंघ को उठाय घँठी लकिया सहारे बाल,
निषिद्ध नितम्ब ताकी सोभा दरसाती है ।
चम्पक-कली के हार कुच पँ समोर लागे,
चषल पटंचल की छवि छहराती है ।
कवि 'जयगोविन्द' भ्रमिपेक-मनसिञ्ज हित,
वेदी पर रम्भा दुह तरु दरसाती है ।
वंदन-निवार-जुत तीरथ के तोय भरे,
कंचन के घट वी पताका फहराती है ।

(१)

जगत मैकार द्विजराज सों बखाना जात,
जाक भागे विबुध-समाज को न लेखो मैं ।
रह्यो सँपूरन भ्रमल गुन जोतिन सों,
कियो उदास ताको सविधि परेखो मैं ।
सनमुख होत माँहि कवि 'जयगोविन्द' कहँ,
हेरत में काहे मुख फेरत निरेखो मैं ।
चन्द्र सों लजात जलजात सदा जानो जात,
भाज जलजात सो लजात चन्द्र देखो मैं ।

(४)

कुसुमित विविध विसाल तरु-राजिन वी,
क्यँलियाँ मधुर-मृदु वोलियाँ सुनावेंगी ।
सोसल वयार 'जयगोविन्द' दिसि दक्षिण से,
घोरे घोरे भौर-भौर सग सिये भावेंगी ।
होरी के उमग मे सजोगिनँ सिँगार साजि,
उछरि-उछरि रगरेलियाँ मषावगी ।
तोहि दिग भाये विना नायक वसंत माँहि,
तव भाप ही सों भाप मान को मिटावेंगी ।

१ कम्पारक की रामनरकच सिद्ध 'कल्पवृक्ष' (वरी) म प्राप्त ।

२ कन्धी से प्राप्त ।

३ वही ।

(५)

कनकसता मे जुगस कम, तारं सोम सखाय ।
तेहि मे कोकिल कीर भर, धनुष धान दरसाम ॥^१

(६)

सोह वानि 'जैगोविन्द' लोकनि में,
स्फुटि-स्वाद-सुधा सरसावती है ।
जोह धान के धानन मे निकसी,
धसुधा में सुकीरति छावती है ।
पर धापने धानन से निकसी,
विक्का हो कहीं नहि भावती है ।
कुच धापन धापहि से ज्यों तिया,
मरद मे कहीं सुख पावती है ॥^२

(७)

कुमुदिनि साज-उलमोषन धमन्द धन्द,
स्वकर पसारि निशि उवित सखार्वेगे ।
जब कुसुमित तरु-ऊपर उर्मग-भरे सग,
कोकिलादि स्वर मधुर सुनावेगे ॥
कवि जयगोविन्द मसमाचल-मिसित पौन,
धीरे धीरे सग भौर भीर भिये आवेगे ।
सायक-कुसुम गाढ़ मान को मिटाये विना,
मेरे ठिग धाये विना नायक रिझावेगे ॥^३

१ अन्तर्गत श्री राजबाराजसहित 'कनक' (करी) से प्राप्त ।

२ पन्नी से प्राप्त ।

३ कवी । यह कविता सन् १८६६ ई में, 'अन्तर्गत' में प्रकाशित की गयी थी ।

(८)

गगन नखत-समाज में द्विजराज सुखमा रासि ।
 विसद चाँदनि सो सुशोभित रहेउ दिसि की भासि ॥
 चितै रहत चकोर जेहि भुद कुमुद मन में साय ।
 हाय ! तिनको आय मोषक राहु सान्हेउ खाय ॥^१



जयनाथ झा

आपको 'कबीर' की उपाधि प्राप्त थी ।^२

आप दरभंगा जिले के 'हरिपुर' नामक ग्राम के निवासी थे ।^३ आपके पिता का नाम बा सनाथ झा । आप अपने पिता के चतुर्थ पुत्र थे । आपने महाराज सूरसिंह (सन् १८३६-५० ई०) के आभय में रहकर काव्य-रचना की थी । आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



जवाहर प्रसाद

आपका निवास-स्थान या शाहाबाद जिले का 'अम्दा जखौरी' (या गमराज गंज) नामक ग्राम ।^४ आप उर्दू के अतिरिक्त हिन्दी के भी कवि थे । आपकी कोई रचना पुस्तकाकार प्रकाशित नहीं मिलती । आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले ।



१. इसकी रचना करने वाला कवचानन्द सिंह की बहू हाने पर की थी ।

२. 'अग्नि उपाधि' करना पहिले से ही सुनात किन्तु वे—'सोमनाथ मिश्र २ के अपने कवि पटोका देवाङ्क हेतु आमतु जागरूक । श्रीमान् श्रीकेशव विवेक आशान कवच । ई. अन्तर्य रसैय अग्नि गहि राकसे २ वा रोहा अनुसोम-निम्नोम जमै (सन्दी संस्कृतोत्तरमासाय्य के बडान लिखल से—'मों एव (बीहा पना देवि हँ 'कबीर'—'अपिरी' कृषि कवच आदि । अयोधरी पयावद (टीक २) कविर्षी 'कवि कवच' से गहि लखन 'उद्य' । रोहा पना—

मात्र कवचिा ठैरीकी पना राजमचामते ।

मौ विनोदममा सीधी लिया आनजै कप ।"

—'देखर 'विदिभाषाभाष्य-वर्तमान' (प म० ६० श्रीमुमुक्षुभा बहरी प्रथम छं) १ ५०६ (पद टिप्पणी) ।

३. वही ।

४. कवच-जखौरी, या कवचगंज नि० इलाहाबाद के पिलाठी श्रीमुकुन्दरामदाय्य श्रीवालय 'बासु' (महादेश आठ) से प्राप्त सूचना के अनुसार पर ।

तोफाराय^१

‘आप सारन जिला के निवासी थे। जीवान सब इन्वीजन के ‘जादिर’ परगने का ‘पतारि’ गाँव आपका जन्म-स्थान है।^२ आपका जन्म-काल अज्ञात है; किन्तु सन् १८५७ ई० के सैनिक विद्रोह के समय आप बचपान थे। आपने गीतपुरी भाषा में ‘कुँवर-पन्नावा नामक एक कविता-पुस्तक रची थी, जिसमें विष्णुजी मेता नाम् कुँवरसिंह और अंगरेजी फौज की उच्च अधिकारी का वर्णन है, जो भीषीगंज (शाहाबाद) में हुई थी।^३

कहते हैं, आपके पूर्वज गौड़ जाति थे, पर मुगल-सम्राट औरंगजेब के समय में मुसलमान बना लिये गये थे। जब मी आपकी बंश-परम्परा में हिन्दू धर्म के अनुचार आचार विचार देखा जाता है। आपके कुल में कई कवि हो चुके हैं—कविता, मिर्झ, जन्देश्वरी, नाटक, रामकृत, विठ्ठली, ममठी (मयूह), दया, मोह, सबावत^४ आदि। आपके पिता का नाम समराय राय, पितामह का इरिराय और प्रपितामह का हिराय था। आपके एकमात्र पुत्र का नाम धनपाल राय था, जिनकी एकमात्र सम्तान एक कन्या थी।

आप सगवम्बा दुर्गा के उपासक थे। कहा जाता है कि एकबार कविता रचते समय आपको जन्मा-छा ड़ाठ हुआ। ऐसा अनुभव होते ही आप किन्चान्तल पाम चले गये और भगवती किन्चमासिनी की स्तुति स्वरचित छंदों में की। वहाँ से घर लौटने पर आपका देहात्त हुआ। प्रसिद्ध हिन्दी-कवि ‘पजनैस’ से आपका परिचय परिचय था। मित्रकण्ठों ने ‘पजनैस’ का जन्म-काल स० १८७२ वि० (सन् १८१५ ई०) और कविता काल स० १६०० वि० (सन् १८५६ ई०) माना है। अतः आप ‘पजनैस’ के समकालीन थे। ‘पजनैस’ के छोटे भाई ‘सुबनेस’ अपनी एक प्रियठी के प्रेम-सम्बन्ध से छपरा (सारन) में ही रहते थे और स्वयं ‘पजनैस’ भी इधुआ राज्य (सारन) और बैतिया (सम्भारन) के दरबारों में जाते-आते थे। इस तरह इनका-आपका पारस्परिक सम्पर्क संभव प्रतीत होता है। इधुआ बैतिया-दरबारों के अतिरिक्त आप मझौली-नरेश (गौरखपुर) के दरबार में भी जाते थे। ‘ममथेरी विद्याह वर्णन’ नामक एक कविता-पुस्तक भी आपने लिखी थी, जिसमें राजबंश के एक विवाहोत्सव^५ का दृश्य वर्णित है। इसमें आपन स० १६०२ वि० (सन् १८५५ ई०)

१. अरघ्य हरिकम श्रीदुर्गादेवप्रसाद सिंह (वही) द्वारा प्राप्त कायदी के आधार पर तैयार किया गया है। —सं०

२. कवी के (वही) द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर।

३. इससे बाव बहता है कि उस समय आपकी उमरमा छोट यादीत वर्ष की रही होगी। इस प्रकार आपका जन्म-काल कवीसही-सही की दृष्टि परागरी में बाव बहता है। —सं०

४. इनका परिचय सभी पुस्तक में बरतवतन रूपमें।

५. ‘हिन्दी के प्रसिद्ध कवि ‘पजनैस’ को एक कवि के लिए वैदिक के एक महाकाव्य में कीत हमार कवि दिने से।’—देविप ‘कवित्तम की इतिहास-सावका (वही) पृ १८।

६. मझौली (गौरखपुर) के मजागब देवप्रसाद के पुत्र बरप्रसाद का विवाह दुर्गादेव (शाहाबाद) के मजारा मदेवरसक्त सिंह के वहाँ हुआ था। —सं०

का विशेष क्रिया है। उसकी कविता मटेठी भाषा है। तीसरी पुस्तक 'विन्ध्यवासिनी स्तोत्र' की रचनाएँ भी साधारण शैली की हैं। बसुन्दा आप एक अच्छी कथकथन प्रारम्भ हैं। केवल एक बानगी काही है, जिसमें गण के लोगो का विश्व प्रकृत है।

उदाहरण

सत्य के स्वरूप खडा करिके करत पाप,
पाप से न हरे सत्य मन से उतारे है।
कीविद बखिन्दन क नकु नहि प्राप्त मानै,
पुन्य को न जानै बैन भविद उचारे है ॥
कहै लोकाराय साँख बोले रिसियाय उठे,
भूठन सो नहवान हृद को विगार है।
करिके निसंक पाप भासमा उठाये धूम
देखि देखि रोम रोम डहकत हमारे है ॥^१



दरसनदास

आप अम्पारन निवासो सरमम-सम्प्राय क एक संत हैं।^१ निर्गुणियों कवि कबीर में आपकी अपार भक्ता-भक्ति थी। आपकी स्फुट रचनाएँ भोजपुरी में लिखी हैं।

उदाहरण

जब सग मन मोरा रहल बहैठवा,
तब सग पिया नइखे पास हो।
एक दिल मन मोरा सागस पिया स,
छुटि गइले जग संसार हो।
जगमग जगमग भइल धरिभतिया
भइले भैठइया बीच ठाढ़ हो।

१ श्रीदुर्गादेवकीरतार किर (१११) से आता।

२ "कथकथन की साहित्य-साधना" (१११), ४६।

केकरा के परिच्छी हूँ केकरा के छाहीं,
के होइहैं कत हमार हो ।
समता के परिच्छव केहू के ना छाइव,
निरगुन ब्रह्म अपार हो ।
काम क्रोध के मारि नसावों,
छुटि गइले जग्युभा के पास हो ।
साहेब कबीर इहो मंगल गावेले
गावेले दरसन दास हो ।^१



दीनदयालु

आप सम्भारन बिल क निवासी और बेविषा (सम्भारन) क महाराज महादुर
आनन्द किशोर सिंह (सन् १८१५-१८ ई०) और नवलकिशोर सिंह^२ (सन् १८१८-५५ ई०)
क बरबारी कवि थे ।^३ आपकी रचनाओं के ब्राह्मण नहीं मिले ।



दीहसराम

आपका जन्म पटुहा (पटना) में हुआ था ।^४ आप कसरा (इटेरा) जाति के थे ।
बचपन में ही आप मुजफ्फरपुर चले गये । जन्मान्ध होने पर भी आप अपना
जातीय सम्बन्ध स्वीकार करते थे । आप एक कण्ठे बच्चा थे । धार्मिक और सामाजिक
विषयों पर प्रभावशाली भाषण किया करते थे । ब्रह्मा के अतिरिक्त आप एक कवि भी थे ।
आपकी कविता के मुख्य विषय थे ईश्वरभक्ति तथा पारस्परिक प्रेम । आपकी एक

१ 'सम्भारन की उद्दिष्ट-शावका (वही) १ ४१ ४० ।

२ के सन् १८१५ ई में बरबारीवासी हुए थे । उनका जन्म-काल अज्ञात है । उन की अनुमान है कि
सन् १८१५ ई और सन् १८५५ ई का सम्भवतः ही आपका जन्म-काल रहा होगा ।—सं०

३ — वैदिक, विचार-वैज्ञानिक हिन्दी-साहित्य-सम्बन्ध के द्वितीय अविर्भूत (वैदिक) के लक्ष्मणदास
सेठ राजाहत्यायी का अक्षर और 'सम्भारन की उद्दिष्ट-शावका' (वही), १ ११ ।

४ श्रीकेशदुर्गाजी 'परदा' (बनारस-संस्कृत-संस्कृत) द्वारा वैदिक मूल्या के आधार पर ।

मछिपूष पंछि लोककण्ड में मिलती है—'कवि शीहस है मन चेत करो, मनु राम लिया जिन
कम्म दिया।' आपको रक्षनाओं का एक समूह (अनुभवप्रकाश) भी सुना या, जो अन्न
आपाम्य है।^१

उदाहरण

(१)

फाटा जो दूध ताहि बनत रसगूसा,
अति उत्तम होंत स्वाद भोग ठाकुर को लगावत है ।
फूटा जो मोता ताहि भसमी बनाय करि,
रोगी को खवाय केत रोग को नसावत है ।
टूटा जो कनक वस्तु मोल से विक्रय जात,
याही से भोग याको जतन करावत है ।
कहै रामदीहस व्यवहार मे बिचारि देखो,
फाटा फूटा टूटा तीन तौन काम आवत है ॥^२

(२)

फाटा जो टाट ताको कागज बनाय जात,
पोधी पुरान सिखत वही करे गौर है ।
फूटा जो कपास ता सो बसन विचित्र होत,
सुख और शोभा अति देत ठौर-ठौर है ।

१ इस श्लोक पुस्तक की रचना अतिरिक्त अति सुबोधपूर्ण और अत्युत्कृष्ट-सज्जि के शीघ्र के मात कुरे दे
विद्यमान कवि, लक्ष्मी, शोभा, सोरठा कुम्हलिया ज्ञान, ज्ञानी बनावती अति प्रशस्त है। कुछ
अस्तीन रचनाओं में है। वही रचनाओं में भोगपुरी याथा का पुर भी है। इसकी शो-पार अतिरिक्तों
में अने अने अने अने है। अत्यन्त और अत्यन्त के अने अने अने ही है अतः रचना-रत्न
कारि के अनुमान का भी अन्त नहीं है।

अपुन है अत्यन्त अति अतिरिक्तों में रहते है।

शोकपुर अने के शोक में रीत अत्यन्त की रहते है ॥

शोकों अने अने अतिरिक्तों अने अने अने है।

इस अने अने अने अने अने अने अने है ॥

इस अने अने अने अने अने अने अने है।

का अने अने अने अने अने अने अने है।

— अनुभवप्रकाश (श्रीरत्नम विद्ये विद्ये अनुभवप्रकाश) १० २१-१ ।

टूटा है पिनाक सिया राम से विमाही गई,
 भानंद उछाह बहुत होत पौर-पौर है।
 कहै राम दीहस व्यग्रहार में बिचारि देखो,
 फाटा फूटा टूटा तीन ऐसे सिरमौर है ॥'

(३)

सुन्दर भारि तजे गृह में वस वेस्या के होय दुखारत है।
 भूपन बस्त्र सिंगार करावत खोवत मास भ्रमारत है।
 धन नाहि मिलै गनिका को जवै गनि कै पनही दस मारत है।
 तवहूँ ना तजे अह दास बने यहि कारन भारत गारत है ॥'

(४)

को भेटे विछुरे बवन, नाम रूप के नास।
 रामदिहल कह जो लखे, तिनको ससुर न सास ॥'

*

द्वारकाप्रसाद मिश्र

आप 'कविरंग' के नाम से प्रसिद्ध थे।

आप शाहाबाद जिले के पंचकसिवा-ग्राम के निवासी शाकशीपीय ब्राह्मण थे।^४
 आपका सम्बन्ध हुमरौल के राज-दरबार से था। संभवतः, आप वहाँ के दरबारी
 कवि थे।^५

१-२. 'अनुभवप्रकाश' (बही) १ ४४ और ४६।

३. वही, पृ. ६४।

४. —देखिए, श्रीपेशाररबसिंह का 'मिश्र' का कुछ कवि शैलीक लेख—'संस्कृत दर्शन'। (बही,
 भाग २४ अंक २ स. १९५३ ई.) पृ. ३४।

५. राजपुर (बिहारी पटना) निवासी मिश्र भक्तवत्सलाय शर्मा काव्यशैली अनुभवप्रकाश (देखें पृष्ठ
 रेखा-सूचक, सम्यक् शाहाबाद दरवाजा) द्वारा प्रेषित ३ १०-१५ के पत्र के आधार पर। श्रीशर्माजी का
 अनुमान है कि आप सन् १८४३ ई. के अन्तर्गत रहे होंगे। अतः आपका जन्म सन् १८१० की
 बन्नीसर्षी शब्दी के प्रथम अर्ध में हुआ होगा।—सं०

आप सिंहासकोकन सिंघने में विद्यहस्त थे। श्रीगंगाशरण सिंह^१ को काशी के किसी शिला प्रेस में मुद्रित आपकी एक छोटी सी कविता पुस्तिका मिली थी, जिसमें मात्र २८ छंद हैं।^२ इसके अतिरिक्त आपकी और कोई कृति नहीं मिलती।

उदाहरण

(१)

पीके बिना कवि रंग सो कादर कीन सो बादर आकरि नीके ।
नीके मुक्के म्मम्के म्भरि नीर गौमीर म्भकोरन म्भोरन जीके ॥
जीके कहा डरपावन पावन सावन काम-सुधारस पीके ।
पीके विके कर जीनो मसो पै व जीन न वे घुनि वादुग पी के ॥^३

(२)

मास असाढ़ चढ्यो कवि रंग सजो घन वाढ़ चहूँ दिशि भारी ।
बाना घटा चपला की छटा लखि हाव लटा मन मोद सुधा री ॥
आ मोहि कादर कोन सो बादर साधर लाज को सादर फारी ।
ई बरसात न मोहि सोहास भयावन रात बिना गिरिधारी ॥^४

(३)

सावन में सजनी जो सोहात सो बात नहीं बिछुरे मनभावन ।
भावन है पिय भावन की ननदी दुख दे कहि बात सजावन ॥
जावन ही बन देखन को कवि रंग सखी सब धूम मचावन ।
चाव नहीं चुनरी पहिरो बरसा बरसे मोर प्रान नसावन ॥^५

(४)

सारी सोहात नहीं तन में कर ककन कुडस बानन यारी ।
वारिद घेरि लियो कवि रंग मुदामिन जोति बरेज निबारी ॥
कारि घटा कहकै सजनी रजनी जनु जानि परे है कटारी ।
टारी बसन्त न मारी सखी यह भादव घोरज स्यास बिसारी ॥^६

१. इस इतिहास के लिए श्रीम जीव का काम करनेवाले साहित्यिक व्यक्तियों में से अन्यतम हैं। वे परबान-विजे के निवासी और वर्तमान काल में केन्द्रीय संसद-सदस्य तथा प्रबन्ध-समाजवादी नेता हैं।—सं

२. 'सम्प्रेत-पत्रिका' (वरी) पृ० ५४ ।

३. वही ।

४. पिन मन्चकसार रम्य (वरी) काण्ड प्रेरित ।

५. वही के द्वारा प्रेरित ।

६. वही ।

(५)

छतिमा में खिली नवरंग-कली कवि रंग मसगज का गतिमा ।
 गतिमा है मनो मनभावन को मन भावन सावन की रतिमा ॥
 रतिया नैद कद कली विकसी निकसी रस-भेदन की वतिमा ।
 वतिमा करिके मुख फेरि लियो तव काहे लगावत हो छतिमा ॥^१

✽

धवलराम

आप पहले मुजफ्फरपुर जिले में 'कौटी' नामक स्थान में निवासी थे। पीछे माता का देहावत हो जाने पर आप अपने भाई 'करठाराम' के साथ रंझकी (नारायणी) तट के 'ठेकड़ा' (सत्तरपाट) में जा बसे।^१ आपका पिता का नाम बीरसिंह और माता का नाम कुलेश्वरी था। 'ठेकड़ा' में करठाराम के साथ आप भी रामनाम धुमिरत हुए भूंग की रस्ती बटकर बामार में बेचते और स्वाध्याय के सहारे जीवन बिताते थे।

आप एक सरमगी संत-कवि थे। 'करठाराम-धवलराम-चरित्र' नामक ग्रन्थ में आप दोनों सगे भाइयों की रचनाएँ संकलित हैं।^२

उदाहरण

अग में बहुत पंथ बहु भेषा, बहु मन बहु उपाय उपदेसा ।
 मोह तपसी तप करे भक्तयथा, कोइ पूजा श्रत नेम प्रचरणा ।
 कोइ धैराग कोइ सन्यासी, कोइ पघाई भ्रमख उदासी ।
 जटा भसूति तिलक मृगछासा, छापा भयठी कपडा सासा ।
 यहि सब है सन्तन के लक्षण, की मछु भंव^३ ये कहिय विघक्षण ।
 भवरो सन्त रहस्य भनका, कहिये कृपा कर होइ विवेका ।^४

✽

१ किन्नर-भक्त-राम रामा (बही) द्वारा में लिखे।

२ कल्याण की साहित्य-साधना (बही) पृ ३५।

३ आकृष्टी रत्नार्द्र आपदे काई करठाराम की रचनाओं के साथ पुस्तकालय प्रकाशित हुई थी किन्तु अब वे दुर्लभ हैं।—सं०

४ वहाँ 'भंव' के बदले 'भन्व' नाम पढ़ता है संभव है कि लिखावट या कृपा की भूल हो गई हो।—सं०

५ 'सन्तान्त का सरभ-सम्भाराम (बही) पृ १२२। इन पंक्तियों में आपने 'करठाराम' के स्थानों के लक्षण दूजे हैं। लक्षण करठाराम के लक्षणों में देकर।—सं०

ध्रुवदास

आप छपरा (घारन) के निवासी थे। डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह के छेकामुछार आप १९३१ ई० (पूर्वाह्न) में वर्तमान थे।^१ आपने हिन्दी में तीन पुस्तकों की रचना की थी— (१) भाषी, (२) सिद्धान्त विचार और (३) मऊ-नामावली। आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले।



नवरंगी सिंह

आप मुजफ्फरपुर जिले के 'रीगा' नामक स्थान के निवासी थे।^२ आपने एक नवीन प्रवासी से 'मुजफ्फरपुर' नामक एक ग्रंथ की रचना की थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।^३



परपन्तवावा

आप मैथिली-ग्राम (गोविन्दगंज, कम्पारन) के निवासी और^४ गद्यानन्दजी के शिष्य थे। सरमंग-सम्प्रदाय के एक संत तो आप थे ही, संस्कृत और स्वीटिप के अच्छे छात्र तथा शकुन विचारक भी थे। मैथिली में एक पोखरे पर आपकी समाधि अब भी वर्तमान है। इन दिनों उक्त ग्राम में आपके नाम पर 'परपन्त-सेवा-समिति' नामक एक संस्था भी स्थापित है। आपने हिन्दी की निर्गुण भक्ति-परम्परा में कुछ पद्यों की भी रचना की थी, जो अब अनुपलब्ध हैं।^५ आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले।



१. 'साहित्यिक विचार-सम्प्रदाय', (पृ०) १ ५४२।

२. विहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के एजीन अधिवेशन (सीतामढ़ी) के स्वामिदास्य और सम्प्रदायवादी के भाष्य से।

३. 'श्रीरंग' नामक एक कवि की रचना बरकत-निवाह श्रीमन्मूलान पुराणग्रन्थ (पृ०) के इत्यदिपिठ-विषय में सुसंदिग्ध है (कथा १६), जिसमें श्रीरंग कवि की ब्रह्मवाच-वर्णनाएँ संश्लेषित हैं। कविता कथित है कि वे श्रीरंग कवि आपकी थे या आपने मिन्य और दूसरे व्यक्ति।—सं

४. 'कम्पारन की साहित्य-रचना' (पृ०) १ १६।

५. बात कुछ है कि आपके एक संतपर (श्रीमहेतु मिश्र) के पद्य आपके कुछ पर सुसंदिग्ध हैं।

भेषनाथ भू

आप रंगौली (मनीगाली, दरभंगा) के निवासी एक अच्छे नाटककार थे। आपका लिखा 'नारद भ्रम-भय' नामक एक नाटक प्रकाशित है। किन्तु, आपकी रचना के उदाहरण मिले नहीं।



मनसाराम^१

आप पहले 'साठी' (बम्बारन) के समीप 'हुसहरना' नामक ग्राम में रहते थे, पीछे 'मटवसिया' (बेहरिया, बम्बारन) में रहने लगे।^२ ज्ञात होता है कि मृत्यु के कुछ दिन पहले आप पुनः अपने पूर्व निवास-स्थान पर चले गये; क्योंकि आपकी समाधि वहीं स्थित है। आप पहले शाक्य थे, पीछे सरमंगी हुए। आपकी कुछ रचनाएँ उपलब्ध होती हैं।

उदाहरण

मूढ़ महिपासुर के मद्दिनी हैं महामाता
महिर्मा महान महो मंडल मा मठी है।
बूढ़ खंग सप्पर खसक-खसक खोपड़ी ले
खसा का खसो का खला की खाल खंडी है।
उज्वल उर्मठी नव खंडो में अखंडी कृत
पापिन को प्रचंडी जाको विमुता विहडा है।
'मनसा' बखानी वेदवानी अगराना जान
संत-सुखदानी जा भवानी मातु चंडा है ॥'



१ इस नाम के दो उल्लेखी संत हो सके हैं जिनमें एक सरला-सम्पदाय के प्रसिद्ध चक्रवर्त (कन्दारन) निवासी संत उदाकर्षी के शिष्य थे और दूसरे चक्रवर्त (कन्दारन)-निवासी सरमंगी संत, उदाकर्षी के पुत्र।—संक्षिप्त, हिन्दी-साहित्य और विहार (वही) १ ११६ और १०३।

२ कन्दारन की 'वार्त्तिक-उपनिषद्' (वही), १ १००।

३ वही।

पूरनराम

आपका निवास-स्थान बम्बारन जिल्ल के 'भादापुर' नामक स्थान में 'पुरवारी घाट' पर था।^१ आप शीतलरामजी के शिष्य थे। आपकी जो स्तुत रचनाएँ मिली हैं, उनमें हिन्दी के साथ भाजपुरी का भी सम्मिश्रण है।

उदाहरण

भव भए भार मन जागु-सवेरा ।
 भजन करन के इहे है बेरा ह्य ॥
 माया-माह म रहले सब दिन बेरा ।
 भत मे कोई ना प्रायगा काम तेरा ह्यो ॥
 भइस विहान धुष फाटे के बेरा ।
 वाइस फाटे मरमक कुल के तेरा ह्यो ॥
 श्रीमीनकराम दया दीजे सतगुरु
 आसीतलराम का कीरपा स
 भादापुर पुरवारी घाट पर
 पूरनराम क परि गइल बेरा ह्यो ॥^२



प्यारेलाल

आप बम्बारन जिल्ल के निवासी कायस्थ और बठिया (बम्बारन) के महाराज आनन्दाक्षयोर सिंह (सन् १८१३-३८ ई.) और नवलक्षयोर सिंह (सन् १८१८-५५ ई०) के दरबारी कवि थे।^१ आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिले।



१ बम्बारन की साहित्य-साधना (वही), पृ० ४१।

२ वही।

३ द्वितीय विहार मन्वीर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन (दिल्ली) के स्थापनापत्र में छेठ उपाध्यक्षों के भाषण थे। अन्त में आनन्दराज दासो महाराजों के उक्त के आधार पर अनुमान है कि आपका लिखित-काल इनो आरवि के अन्तर्गत होगा। उल्लेख, आपका नाम सन् १९३३ की समीक्षाओं में के आधिकारिक तौरों में हुआ जान पड़ता है।—सं०

भैपनाथ मन्त्र

आप गंगौली (मनीयाखी, दरभंगा) के निवासी एक सिखा 'नारद भ्रम-भग' नामक एक नाटक प्रकाशित है उदाहरण भिसे नहीं।



मनसाराम^१

आप पहले 'साठी' (बम्बारन) के समीप 'दुसहर' 'मटबलिया' (किसरिया, बम्बारन) में रहने लगे।^२ अब पहले आप पुनः अपने पूर्व निवास-स्थान पर चले गए, स्थित है। आप पहले शाक थे, पीछे सरभंगी हुए होती हैं।

उदाहरण

मूढ़ महिपासुर के मद्दिनी
महिमा महान मही-मंडल मा
सूष खंग क्षप्पर खसक-खसक
खसों का खसो की खसो की खा
उज्वस उमठी नव खंडों मे ३
पापिन को प्रखंडी जाको विभुता ।
'मनसा' दखानी वेदयानी जगरा
सत-सुखदानी आ भवानी मातु ४



१ इस नाम के दो सरभंगी संत हो गये हैं जिनमें एक सरभंग-सम्बराज के १ निवासी संत सरभंगी के स्थान में और दूसरे बम्बराज (बम्बारन)-निवासी के हुए। — ईशिय, हिन्दो-साहित्य और विद्या' (बरी) ४ ११४ और ।

२ 'बम्बाराज की साहित्य-साधना' (बरी), १० १७० ।

३ बरी ।

मित्रनाथ

आप हरमंगला जिसे के 'गंगोत्री' नामक स्थान के निवासी मैथिल ब्राह्मण (भोत्रिय) थे।^१ एक ग्राम के प्रसिद्ध नैपायिक लोकनायक का आपके ही पौत्र थे। मैथिली में आपके कुछ पर उपसम्भ होते हैं।

उदाहरण

भाज देखल हम भोगे सजनी । मुख-छवि चन्द उदित हो रजनी ॥
 नयन-कमल युग प्रति भनिरामे । मुखछित युवजन हनि विसरामे ॥
 कुम्हल-चिकुर कपोल सोहाए । भमिभ-तूषा नागिनि चलि आए ।
 श्रुति-साटङ्क अनूप बनाए । जनु दुइ चक्र मदन-रथ भाए ॥
 रूप अनूप सकल भङ्ग ताही । कधि सज्जित उपमा देव काही ॥
 तेहि छवि निरखि सपट्टु यदुराई । जनु नवघन तर विजुरि समाई ॥
 'मित्रनाथ' कधि मन दए गाई । ह्वय साए ब्रज-युवती कहाई ॥^२



मिसरीदास

आप चम्पारन निवासी सरमंग-सम्प्रदाय के एक संत थे।^३ आपके गुरु थे वीरहरामजी। आपकी स्फुट-रचनाएँ यम-तत्र उपसम्भ होती हैं, जो संतों की अटपटी भाषा में हैं और उनमें मोक्षपुरी भाषा का पुठ अधिक है।

उदाहरण

संभा भारती निसुदिन सुमिरा हो, सुमिरन करत दिन दिन भिनऽ हो ।
 धीरज ध्यान दीढ़ कइ वासी
 गुरुजी के नाम भषल कर पाती
 ग्यान ध्रित सुरति धुव बीच ब्रह्म भगिन तनु लेसहु दीप हो ।
 दया के थारी सारा घर चउर प्रेम पुहुप सह परिच्छहु पाठ हो ।
 सुकरित भारती साजि के भीन्हा
 घरम पुख्य परमात्म चीन्हा,
 अनह्व नाद जहाँ हुआ गाजे
 श्रीपूरनराम का चरन मे मिसरीराम संभा भारती गावे हो।^४

१ 'मैथिली-गीत-संग्रह' (वही) पृ. ८२ ।

२ वही पर-संख्या ८१ पृ. ४६२ ।

३ 'चम्पारन की साहित्य-साधना' (वही) पृ. २१ ।

४ वही ।

पाय प्रिय प्रीतम को सपटि सगाय सिन्हीं,
कर दसकाय सिन्ही माघव छवियान म ॥
काम भूल उर में उरोजन में दाम भूले,
स्याम भूले प्यारो के अन्यारो श्रैखियान म ॥'

(२)

जास रही जमुना जल को, दुखि-दहन धामिनि सो दरस ।
मुख भन्वुज कोमल चन्द्रप्रभा, दुइ नैनन खंजन सो सरस ॥
कटि-किकिनि मास प्रवास ससै, मानो बोलनि वैन भमी वरसै ।
उत धूँघट माघव टारि दई तम तोम में चन्द्र कुरै दरसै ॥'

*

मायाराम चौवे

आप चम्पारन बिस्ते के 'सुवहरवा' नामक स्थान के निवासी थे ।^१ आप कवि
दुखाराम के समकालीन माने गये हैं । आप बेतिया (चम्पारन) के महाराज आनन्दकिशोर
विह (सन् १८१५ ई०) और नवलकिशोर विह (सन् १८३८-४५ ई) के दरबारी
कवि थे ।^२ आपने किशोपरा: स्युट रचनाएँ ही की थीं । आपकी रचना क छाहरन
नहीं मिले ।

*

- १ श्रीरामनगर पुठ (बबुल, धरम) से प्राप्त ।
२. जहाँ से प्राप्त ।
३. श्रीपबेठ पीरे (श्रीपट पिपराबेठो चम्पारन) से प्राप्त सूचना क आधार पर ।
४. इन दोनों देविया-परीयों के उल्लेख के अन्वय ही आपका स्थिति-ज्ञान रहा होगा ।—सं०

मित्रनाथ

आप दरमंगा जिले के 'गंगौली' नामक स्थान के निवासी मैथिल ब्राह्मण (भोजपति) थे।^१ उक्त ग्राम के प्रसिद्ध नैवायिक लोकनायक का आपके ही पौत्र थे। मैथिली में आपके कुछ पद्य उपलब्ध होते हैं।

उदाहरण

आज देखल हम अगो सजनी । मुख-छवि चन्द उदित हो रजनी ॥
 नयन-कमल युग प्रति अभिरामे । मुग्धित युवजन हनि विसरामे ॥
 कुण्डल-चिकुर कपोल सोहाए । भूमिभ-तृपा नागिनि चलि आए ।
 श्रुति-ताठकू भनूप बनाए । जनु कुइ चक्र मदन-रष आए ॥
 रूप भनूप सकल भङ्ग ताहा । कवि लज्जित उपमा देव काहा ॥
 वेहि छवि निरखि लपटु यदुराई । जनु नवधन तर विजुरि समाई ॥
 'मित्रनाथ' कवि मन दए गाई । हृदय साए ब्रज-युवता कहाई ॥^२



मिसरीदास

आप अम्भारन निवासी वरधर्म-कर्मदास के एक संत थे।^३ आपके गुरु थे शंकरारामजी। आपकी स्फुट-रचनाएँ यत्र-तत्र उपलब्ध होती हैं, जो संतों की अटपटी भाषा में हैं और उनमें मोजपुरी भाषा का पुट अधिक है।

उदाहरण

संझा भारती निसुदिन सुमिरो हो, सुमिरन करत दिन दिन भिनऽ हो ।
 धोरज ध्यान दीड़ करु वाता
 गुरुजी के नाम भचल कर धाता
 ग्यान छित सुरति बुध बीच ब्रह्म भगिन तनु लेसहु वीप हो ।
 दया के धारो सारा भर चउर प्रेम पुहुप नइ परिछहु पाठ हो ।
 सुकरित भारती साजि के लोन्हा
 धरम पुष्य परमात्म चोन्हा,
 भनहृद नाद जहाँ हसा गाजे
 श्रीपूरनराम का धरन म मिसरीराम संझा भारती गावे हो।^४

१. मैथिली-दीक-पत्र-सूची (वरी) १ पृ. ८५ ।

२. वरी, पद्य-संज्ञा पृ. १ पृ. ५ ।

३. अम्भारन की साहित्य-साधना (वरी), १० पृ. ४१ ।

४. वरी ।

युगलकिशोर

आप गया जिले के दाऊदनगर गाने के छुट्टा नामक स्थान के निवासी थे और^१ राजभाया के एक अच्छे पुर्तिकाकार थे। सुष्ठु काव्य-रचनाओं के अतिरिक्त आपकी कोई पुस्तकाकार रचना नहीं मिलती। आपका रचना-काल^२ शं० १८२७ वि० (सन् १८४० ई०) कतलाया गया है। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



योगेश्वरराम

आप 'परमहंस बाना' के नाम से प्रसिद्ध थे।

आपका निवास-स्थान घम्भारन का रूपवसिधामठ था।^३ आपने पद्मस्थात्रम में ही रहकर भक्ति और योग-साधना में सिद्धि प्राप्त की थी। हिन्दी में आपने कुछ पद्यों की भी रचना की थी, जिनपर भोजपुरी का प्रमाण इष्टिगान्तर होता है। आपके पद्यों का एक संग्रह स्वल्प प्रकाश नाम से प्रकाशित भी हुआ था, जो अब अप्राप्य है।^४

उदाहरण

टूटे पँचरंगी पिंजड़वा हो सुगना उड़ि जाय ।
सुगन्नु रहले पिंजड़वा में सामा वरनि न जाय ।
उड़त पिंजड़वा झाली हो सब बेनि डेराय ।
दसो दरवजवा जकिरिया हो भयले रहि जाय ।
कवन दुभार होइ गइले हो कनको ना बुझाय ।
समना भइल निरदहमा हो भयघट ले जाय ।
सारा रवि धरत पिंजड़वा हो भामे भगिन लगाय ।
सिरि जागेसर दास काया पिंजड़ा हो नित चनन लगाय ।
सहू परसे मरघटिया हो भास भगिन धहाय ॥^५



१ गया के सेठक और कपि (पृ०) पृ० १४० ।

२. आपका रचना-काल परे सन् १८४० ई० था, जो परमहंस स्वल्प प्रकाश नामक पुस्तक में ही हुआ होगा।

३. 'घम्भारन की साहित्य-साधना' (पृ०) पृ० ३३ ।

४. १९६५ प्रकाशित 'भक्ति का इतिहास' के अध्याय-विष्णु-विद्याजी जीवैश्वरय नामक किसी व्यक्ति ने किया था।

५. 'घम्भारन की साहित्य-साधना' (पृ०), पृ० ३३ ।

रमाकान्त

डॉ० प्रियसन का अनुमान है कि आप मिथिला के निवासी थे। आपन प्रथमाप में कुछ गीतों की रचना की थी, डॉ० प्रियर्धन ने जिनका संग्रह किया था। पर, आपकी रचनाओं के उदाहरण मिले नहीं।



रमापति^२

डॉ० प्रियर्धन ने आपको मैथिल कवि बतसाया है।^१ आपके जीवन का विवरण और आपकी रचना का उदाहरण न मिला।



राजेन्द्रकिशोर सिंह

आप बेठिया (बम्भारन) के महाराज थे। आपका राज्य काल सन् १८५५ से ८३ ई तक था।^४ आप अपनी उदारता एवं दानशीलता के लिए बड़े प्रसिद्ध थे।^५ अतः, प्रजा ने आपको 'कलि-कव' की उपाधि दी थी। आपका दरबार कवियों, पंडितों, चित्रकारों और गुणज्ञों से घटा मरा रहता था। पं० छोटक पाठक पं० जगन्नाथ तिवारी, बाबू शैलदास मुंशी प्यारेलाल, पं० नारायणदास उपाध्याय, पं० कालीचरण कुन, पं० महाशोर चौधे, मंगनीराम आदि आपके ही आभित दरबारी पंडित और कवि थे। इन लोगों की साहित्य-सर्वा से मनोविनोद करन के अतिरिक्त आप स्वयं भी कविताएँ रचते थे, पर आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।^६



- १ डॉ० राजेंद्र प्रियर्धन-कृत 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही), पृ ३२२।
- २ इतिहास-काल के तृतीय अध्याय-निवासी उदाहरण गयी के प्रसिद्ध संत-कवि परमहंस विष्णुपुरी का सम्बन्ध के पूर्व भी वही काया था। वही सम्बन्ध के पूर्व आपके दो और नामों (विष्णुपुरी और देवचन्द्रपुरी) को कर्णों कुछ उदाहरणों में भी है।—देखिए, 'हिन्दी-साहित्य और विहार' (वही) पृ ३२३।
- ३.—देखिए डॉ० राजेंद्र प्रियर्धन-कृत 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही) पृ ३२२ और Journal of Asiatic Society of Bengal (Vol. 53) P 83
- ४ 'वर्ष १८६० (सम्पन्न-मंत्र) सन् १८६१-६२ ई ७ पृ ३६। आपको वही सन् १८५५ ई में मिला भी। उस समय आपको किन्नरी प्रत्यक्षा भी रसक प्राप्त वही मिला। अतः आपका कव्य-काल का अनुमान करना कठिन है।—सं
- ५ आपने 'अधुनिक हिन्दी के सम्प्रदाय' भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्र को उनके पुरिच में, पत्र दकर पोष्य दिया था तथा राजा टिबनसार 'सिधारे दिग्' को भूमि देकर कर्मचारी राजा बनवाया था। कदम है उदाहरण कर्णों के अतिरिक्त कर्णों को कर्मक एक कविच पर प्रसन्न होकर २ हजार रुपये पुरस्कार दिये थे। कर्णों-मंत्रों महाराज ईस्वीनकारकात्मक सिद्ध के दरवाजे एवं उदाहरण को भी आपने वही धार सम्प्रदाय दिया था।—वही।
- ६ विहार-साहित्यक हिन्दी-साहित्य-सम्बन्ध के द्वितीयविधेय (बेठिया) के राजकाव्यक लठ उदाहरणों के अन्वय के अन्वय पर।

राजेन्द्रप्रसाद सिंह

आप संभवतः सारन जिला निवासी और उक्त जिले के ही 'पटेवी' नामक स्थान के साहित्यिक रसि नानू नगनारायणसिंह के दरबारी कवि थे।^१ हिन्दी के अतिरिक्त आप उर्दू और फारसी के भी विद्वान् थे। हिन्दी में आपकी कोई पुस्तकाकार कवि रचना नहीं मिलती, केवल कुछ स्फुट रचनाएँ ही उपलब्ध हैं।

उदाहरण

(१)

गोर वदन भ्रमरन जड़ित घूँघट-पट धर भ्रान ।
बिनु नभ धन छाया सलिल, देख परत छस-हीन ॥
धनल गैल चितवति पलटि, याका नैनन कोर ।
रसिकन मन को बाँधती, निज सट छूटे छोर ॥
गोरी नाइन पातरी, नधकि लक गति मोन ।
नैनन चित को धारती, उरज उचकि भजि मोन ॥
अधर लाम कुचित भसक, दीरघ धस वर वाम ।
दसन दाबि हँसि सँभ करि, बसो जात निज घाम ॥^२

(२)

तेरे हग देखे हरि भवतरे हैं मीन-रूप
भृकुटी के देखे हर आप को सँवारे हैं ।
पकज-से वदन लखि विधि को भवतार भयो
वेना को पेखि सेस धरनी को धारे हैं ।
नासा विलाकि सुक भीन्हा वीराग-पध
अधरन को देखि अधर कृष्ण मोन वारे हैं ।
विहसनि ते इन्दू 'राजेन्द्र' कहे चितवन त
सौवह भुवन मुक्ति चार पद वारे हैं ॥^३

१ 'सुर्पावेमजुह्विणी' (वरी) के अन्तर्गत वर। वानू नगनारायणसिंह का परिचय इसी पुस्तक में अन्वय रूपमें। इनका लिखित-काल सन् १६१८ से ७१ ई तक है। अतः, इसी अवधि के अन्तर्गत आपका लिखित-काल भी मान्य रहता है।

२ विद्वान्-साम्प्रदाय-परिचय के दस्तावेजिक-पत्र अनुसंधान-विभाग में मुद्रित दस्तावेजिक पुस्तक सुर्पावेमजुह्विणी से।

३ वरी।

(३)

बोकिसा कलापी कीर खंजन कपोत सास
नोसग्रीव चातक नभ बोलत है ए दर्ई ।
वैसे ही चमेसी घीन घम्पा श्रीखंड चाच
हिमकर समीर मार विरहृ ताप ते तई ।
जब ही सिखि मूरत सम्मुकेतु काग पन्नग की
वाही छत भावन मन-भावन का खबर भई ।
भस्मासुर विष्णु राम कृष्ण रूप बाल धापि
हृषित राजेन्द्र मजु मगस सज कर लई ॥^१

(४)

कनक-सिंहासन पर राजे सियाराम सास
गौर-स्याम मंजु रूप बंसहूँ नवीना हैं ।
क्रीट मुकुट चन्द्रिका विराजे मनि-भूषण पट
लाजे रति काम दक्ष सर वनुष भुज लीना हैं ।
अरजी की मरजी मन मुदित विहंग वेत
दोच प्रभा के बिलोकि भानु इन्दू हूँ मलीना हैं ।
जोरे राजेन्द्र हाथ रानी सुर विहंसि कहे
सिया सोन की भंगूठी राम साँवरो नगीना हैं ॥^२

(५)

जनक-नूप-मंठप में दुसह-दुसहिया सजे
राम धनस्याम सिया दामिनी नमूना है ।
महामनिन मोर लसे जरकसा के वागा पट
भूषण ऋषाव मनिगुन हूँ से ऊना हैं ।
बदन बिलोकि दुति भानु इन्दु मन्द लागे
मोर भई उमरे जग मोद बड़ी दूना हैं ।
कह नरनारी सुररानी श्री राजेन्द्र
सिया सोन की भंगूठी राम साँवरो नगीना हैं ॥^३

१ सिंहास-राज्य-धर-परिषद् के दस्तावेजित-म न-मजुसंघ-व-विभाग में मुद्रित दस्तावेजित पुस्तक 'दुर्गाप्रेमवर्णिका' से ।

२ वही ।

३ वही ।

रामधनराम

आप चम्पारन जिले के निवासी^१ और शीतलरामजी^२ के शिष्य थे। पूनराम और मिसरीदास आपके मी दुब-भाई थे। आपकी कुछ स्मृत रचनाएँ मोरपुरी में मिलती हैं।

उदाहरण

जागहु हो मोर सुरति-सोहागिन राम-नाम-रस पागहु हो ।
जगइत जागे सबद उर लागे देखइत जम्ह उठि मागहु हो ।
जीवन जन्म सुफल कं लेहु सतगुरु सत चरन चित देहु हो ।
सुरनर मुनि सब भाषी कहतु है ये राम नाम कं लेहु हो ।
श्रीभानकराम प्रभु श्रीसीतल जो रामधन नाम चरन चित राखहु हो ।^३



रामनेवाजमिश्र

आप चम्पारन जिले के माधोपुर-ग्राम के निवासी एक तरंगी संत थे। आपके पिता का नाम था मीरामिश्र।^४ आप अपने पिता के एकमात्र पुत्र थे। आपकी स्मृत रचनाएँ मोरपुरी में कहीं-कहीं मिलती हैं।

उदाहरण

गुरुजी स करव भरजिया हो राम धुमरि-धुमरि ।
मन दरियाव पाहुन एक भइले पाँच पचिस सँग सधिया ॥
पाँच पचिस मिमिके दिँजन बनाइले जेँवे वइठे मन-रसिया ।
रामनवाज दया कँसी सतगुरु सहजे छुटस कुल जसिया ॥^५



१ 'चम्पारन का साहित्य-साधना' (वही), पृ० ४०-४१ ।

२ ये रामजी-संत श्रीधरराम के वार हुए थे। श्रीधरराम का परिचय 'हिन्दी-साहित्य और विचार' (पृ० १४२) में देखिए ।

३ 'चम्पारन का साहित्य-साधना' (वही), पृ० ४१ ।

४ संतमत के तरंग-सम्प्रदाय में ये ही श्रीधरराम के मातृ से प्रसिद्ध हुए। इनके विरुद्ध परिचय के लिए—देखिए 'हिन्दी-साहित्य और विचार' (वही) पृ० १४१-४० ।

५ 'चम्पारन का साहित्य-साधना' (वही), पृ० ४१ ।

रामस्वरूपराम

आप कन्नडा-मठ (अम्पारन) के निवासी और कविकारों थे। आपके बहुत-से हिन्दी-पदों में मोक्षपुरी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। 'मञ्जनरत्नमाला' नाम से आपने एक पुस्तिका भी प्रकाशित की थी। उसमें अनेक सरमंगी संत-कवियों की रचनाएँ हैं। आपकी रचना सरमंगी संतों की अष्टपटी वाली स मिस्रिठी-शुद्धी है, जिसपर मोक्षपुरी भाषा की आप स्पष्ट है।

उदाहरण

अरध-उरध मे रहना सतो, अरध-उरध मे रहना ।
 सोईंग शब्द विचारि क ओह मे मन माई ।
 त्रिकुटी-महल में बैठ के गगन-महल मे जाई ।
 गगन-महल में अमृत टपके पीकर हसा अघाई ।
 श्रुटेकमतराम^१ दया सतगुरु के टहलराम कहाई ।
 जन स्वल्प यह अरज करतु हे सत्त जेहु विचार ।^२



रामेश्वरप्रसाद नारायण सिंह

आप मधुसूदरपुर-नाम्न (गया) के राजवंश के 'महाराज बहादुर' थे। अँगरेजों की ओर से आपको 'सर' की उपाधि भी प्राप्त थी। कविता में आप अपना नाम 'केशव' रखते थे।

आपका जन्म गया जिले के एक मधुसूदरपुर नामक ग्राम में ही हुआ था।^३ आप भीमजाधरप्रसादनारायण सिंह के प्रथम पुत्र थे। ग्राम-मीठों के प्रति आपका असीम अनुराग था। आपने ऐसे गीतों का एक संग्रह भी प्रकाशित कराया था। आपने जिन पदों की रचना की थी उनमें भी ग्राम-मीठों के उच्च ही सुन्दर रूप से पाय जाते थे। यापक समुदाय में आपके पदों का बहुत अच्छा प्रचार था। कहते हैं, आपके दरबार में बिजवा दरामी, होखी आदि महोत्सवों के अवसर पर जो भी संगीतज्ञ आते थे, वे प्रायः आपके पनाप हुए पर ही गाते थे। उत्कालीन नवकी-समाज में भी आपके पदों का बहुत प्रचार था। ग्रामीण नविकर्षी में आज भी आपके पद बहुत प्रचलित हैं, पर उदाहरण मिल नहीं।



१ अम्पारन की संस्कृत-भाषणा (१९१) पृ. ४६ ।

२. इन्द्रोपनिषद् एक पुस्तक के प्रथम अध्याय में उदाहरण ।—दृष्टिप, १९११ पृ. २२६ ।

३ वही ।

४ 'कथा के लेखक और कवि' (१९१) पृ. १४ ।

सहवरदास

आप चम्पारन निवासी एक सरमगो संत थे।^१ आपका एक से मिनकरामजी।^२ आपकी जो स्फुट रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनमें मोजपुरी का पुठ अधिक है।

उदाहरण

दक्षिन जगिरहा, उत्तर पुरनहिया
बीच में सहवरदास कं कुटी।
श्रीभीनकराम दया सतगुरु जी के
हरिदम निरसो गगन त्रिकुटी।^३



वासुदेवदास

आप कपरा (सारन) के निवासी थे। डॉ. मंगलवीप्रसाद सिंह के लोकाजुष
आप मन् १८६२ ई० में वर्तमान थे।^४ हिन्दी में आपकी एक पुस्तक 'रथिक-प्रकार
(मछमाल की मुवाकिनी टीका) मिलती है। आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले।



शत्रुघ्न मिश्र

आप चम्पारन जिले के बधमटिया' (मुगौली) नामक स्थान के निवासी थे।^५
हिन्दी में आपने 'मजदवीपिका' नामक पुस्तक रची थी, जिसमें क्षेत्र संज्ञा की व्याख्या के
साथ कुछ तांत्रिक प्रयोग भी हैं। आपकी रचना क उदाहरण नहीं मिले।



१. चम्पारन की साहित्य-साधना' (वही) पृ ४२।
२. इसका संरक्षक एक पुस्तक के प्रथम पत्रक में इच्छक।—देखिए, वही पृ १५२।
३. चम्पारन की साहित्य-साधना' (वही), पृ ४२।
४. 'उत्तमपत्रि में रथिक-सम्प्राप्त' (वही) पृ ५५४।
५. चम्पारन की साहित्य-साधना' (वही) पृ २२।

शम्भुदत्त भ्रा

आप बरसंगा बिल्ले के उवान-ग्राम के निवासी थे।^१ आपन मफिती में स्फुट पदों की रचना की थी।

उदाहरण

जय-जय आदि शक्ति शुभ-दायिनि । महिधर शायिनि देवी ।
 सुर-नर-मुनिगन सकल सुखित मन, केवल तुभ पद-सेवा ॥
 हमहु शरण षए चरण भराषल, तोहि करुणामय जानी ।
 लइभो रहस दुख सपनहुँ नहि सुख, तकर परम होऊ हानी ॥
 हम सन भषम जगत नहि दोसर, अप-त्प-गति नहि जानी ।
 भव हम मगन भेलहुँ भवसागर, गति एक तोहिँ भवानी ॥
 जन भपराष कएल भरि जावन, कहि न सकिभ तत माता ।
 सुत शरणागत सेवक पामर, समक जननि तोँ श्राता ॥
 दुहु कर जोडि भरज भवनत भए, शम्भुदत्त कवि मान ।
 दिभुवन-तारिणि भषम-उधारिणि, देहु भभय वरदाने ॥^२



शिवकविराय

आप शाहानाद के निवासी और जयवीरपुर (शाहानाद) के इतिहास-प्रसिद्ध विद्वोही और बाबू कबरसिंह के अनुज बाबू अमरसिंह के दरबारी कवि थे।^१ देश की शान पर उन-भन-भन निखावर करनेवाले शत्रुओं के प्रत्येक कर्मियों में आपका नाम भी उल्लेखनीय है। पुस्तकाकार आपकी कोई रचना नहीं मिलती, स्फुट रचनाएँ भी बहुत कम मिलती हैं।

१ 'शैविन्दो-गीत-सम्पादक' (वरी) पृ. १२४।

२. वही पृ. १४।

३ 'आप' (साम्प्रतिक विरोधी, १ करवरी, मन् १११८ ई.) के मन् १२२० ई. के सम्बन्धी कवि और 'जनक-आम्ब' श्रेयक लेखक थे। बाबू कबरसिंह के दरबार में रहते समय आप आशुम वर्ष में घ'क ही घराबा के होते। आप आपका मन् १११० की उन्नीसवीं शती की प्रथम दशाब्दी के प्रथम पद्य होता है।—सं०

उदाहरण

कसिके नुरंग तंग चढ़्यो जव जंग पर
 भंग-भंग आनंद उमंग-रंग भरिगी ।
 सनमुख समर विसोकि रनधीर वीर
 फौज फिरगाना की समेटी सो क्तरिगी ।
 कहै 'शिव' कवि डाँटि-डाँटि कप्तानन कूँ
 काटि-काटि काँकड़ा कुम्हेडो-सौं निकरिगी ।
 हाथ मीचि हाकिम कहत साह सन्दन सौं
 हाय-हाय आफत अमरसिंह करिगी ॥^१



शिवेन्द्र शाही

आपका उपनाम 'लाल साहब' था ।

आप वारन जिले के प्रसिद्ध साँका-राज के राजकुमार और वहीं के निवासी थे ।^२ मिश्रकृत्युष्मी ने आपको पं० जगन्नाथ दोष्टर का बंशज और महाराज बेठिया का जमात प्रस्तावा है ।^३ आपने हिन्दी में स्फुट-पदों की रचना की थी । आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



शीतल उपाध्याय

आपका उपनाम था 'शीतल शिव' ।

आप वारन जिले के शीतलपुर-बरेवा नामक ग्राम के निवासी थे । आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



१. श्रीधरचरणदास सिंह (दलीपपुर, गढ़वाण) के शीक्य थे आप ।

२. 'मिश्रकृत्यु-विनोद' (पृ०, पृ० १११), १ १११ ।

३. वही ।

गीतलराम

आप चम्पारन-जिला के निवासी सरमंगी संत थे।^१ आपका आधिनाम 'मिनकराम'^२ के बाद हुआ था। आपको शिष्यों में प्रमुख थे—पूरनराम, रामधन और मिशरीदास। अन्य सरमंगी संतों की तरह आपने भी कुछ पदों की रचना की थी। आपकी रचना के उदाहरण नहीं मिले।



श्रीधर शाही

आपका जन्म सारन जिला के प्रसिद्ध 'मोक्षा'-राजवंश में हुआ था।^१ हिन्दी में आपने कुछ समस्यापुष्टियों की रचना की थी, जो आज नहीं मिलती।^२



सनाथराम^३

आप चम्पारन निवासी एक सरमंगी संत थे।^१ आपकी कुछ रचनाएँ मोजपुरी में मिलती हैं।

उदाहरण

कहीं गइली सहदनिया राम महरनिया देवी ।
 त्रिकुटी-सगम मेला-अस्तान हरदम धरीले संतन के ध्यान ॥
 हकनी-डकनी भूतनी-पिचसनी सिंहले सैगवा साय ।
 अपन जाक दवा बैठलू सिगासन हमरा के वजलू बगहा मठिया ॥
 थी टेकमनराम^४ का मिलना भियम स्वामा ।
 सनाथा राम के देखलू बचनिया वरदान ॥^५



- १ 'चम्पारन की साहित्य-संश्लेषण' (वही) पृ. ४ ।
- २ इसका परिचय इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में द्रष्टव्य है—देखिए, वही पृ. १४२ ।
- ३ विहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-संश्लेषण के द्वितीय अध्याय अधिधराम (श्रीधरशाही) के सम्बन्ध में अधिधराम का नाम है ।
- ४ समस्यापुष्टि-संश्लेषण का परिचय भी इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में द्रष्टव्य है—देखिए वही पृ. ४५ ।
- ५ वही नाम (सनाथ) के एक और अधिधराम की रचना मैथिली में मिलती है। उनका लिखित-काल भी कन्नौठियों का ही पूर्वार्ध ही अनुमित है—सं०
- ६ चम्पारन की साहित्य-संश्लेषण (वही) पृ. ४५ ।
- ७ इसका परिचय इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में द्रष्टव्य है—देखिए, वही पृ. १२४ । अधिधराम का नाम के शिष्य थे—सं०
- ८ 'चम्पारन की साहित्य-संश्लेषण' (वही) पृ. ४५ ।

सवलराम

आप चम्पारन जिले के निवासी एक सरमंगी संत थे। आपकी स्फुट रचनाएँ मोरपुरी में लिखी हैं।

उदाहरण

जय धरनी देवी दुर्गा भवानी देव यजन वरदानी ।
 भसुरन मारेखू भक्त उबारेखू संतन के प्रागे धावेखू ।
 हरिजन भक्त सहज में उबारेखू, आपु तपे महरानी ।
 भारत में जाके करिके सझाई, पाँचो पाखो यथावखू ।
 पुरमाघन के मरदन करेखू, श्री प्रवेया नाम धरावेखू ।
 सहस्र वदन सहस्र भुजा तूरेखू सहस्रा देवा कहावेखू ।
 रामचन्द्र के मूर्च्छा छोड़ावखू श्री जानकी नाम धरावेखू ।
 राम भियमराम दया कर्मी सतगुरु श्री टेकमनराम' कहाईले ।
 जन 'सवल' धरन म मिथि रहि पावखे भक्ति भजन वरदानी ॥'



हरिनाथ मिश्र

।

आप 'कबीर' के नाम से प्रसिद्ध थे।

आपका निवास-स्थान मुजफ्फरपुर जिले के सीतामढ़ी थाने का 'शहबादपुर' नामक ग्राम था।^१ आपकी नवी पीढ़ी के संशयक कथमान हैं। आपका सम्बन्ध परतौनी-राज (सीतामढ़ी) तथा मकौलिया-बरबाद

१ इनका परिचय इसी पुस्तक के प्रथम अध्याय में द्रष्टव्य।—लेखक, पृ. १२१। भीमबाल्य शशी के शिष्य थे।—सं०

२ 'कामरान की साहित्य-साधना' (पृ. १) पृ. ४८।

३ श्रीमन्मोह निल काम्पतीर्य (सीतामढ़ी मुजफ्फरपुर) द्वारा दिनांक २०-११-२१ को प्रेषित एक पत्र के आधार पर।

(सीतामढ़ी) से था। हिन्दी में 'बैद्यनाथ-निवास'^१ नामक आपकी एक हस्तलिखित पुस्तक तथा मन्मथाभा और मधिसौ में स्फुट कविताएँ उपलब्ध हैं। किन्तु, उदाहरण-योग्य आपकी कोई रचना नहीं मिली।



हीरासाहब

आप सारन जिले के 'मोफा' राजपरान के थे। आप स्वयं तो हिन्दी के कवि थे ही^२ आपकी पुत्र माधवप्रबन्ध प्रताप शाही^३ भी कवि थे। आपकी दरबार में कवियों, कलाकर्मियों और गुणियों का बड़ा आदर था। आपकी रचनाएँ नहीं मिलीं।



१ यह पुस्तक लगभग ६ शब्दों की है। इसमें तीन वाक्यों—संस्कृत, मन्मथाभा और मधिसौ—का प्रयोग हुआ है। इसकी कुछ पंक्तियों को शक्यो पश्चिम। शक्य वाक्य दोस्तान में लंका से जाने के लिए शिवजी को उम्मा से जाता, उस देवताओं के मगधान शंकर से कहा (मोहटापकी में)—

गिरि-शिव कथन कथन

शिव विधि कर देर-बन-द्विपारि।

कथन कहिनु कथन रूपा के देरत कथन चारि।

कहि कथरि ले कथिनु कथि सुखुरि चारि ॥—शिव-शिव ॥

२ पद्मराज सातव-विता हिन्दी-साहित्य-सम्मेजन (इजुमा, सन् १९५३ ई.) के सहायक संपादक श्रीगुम्बर मजुमेस्वरेइ शशी के श्याय से।

३ इनका परिचय शशी पुस्तक में बरतमान है।

परिशिष्ट-१

[ये साहित्यकार, जिनकी रचनाओं के केवल उदाहरण प्राप्त हैं ।]

अग्रदास'

उदाहरण

घाय गोविन्द गजेन्द्र उवारो ।

सौंघत ग्राह-ग्रहीत भपन कै, गज डूवत हरिनाम उचारो ।

मुख नासिका डूवय सागल, धरन-कमल देखत सलचायो ।

फहर-फहर फहराय पोत पट, कमल नयन तें गरुड विसारो ।

काटस फंद प्रभु चक्रधार सों, अघमोचन प्रमुनाम तिहारो ।

'अग्रदास' पद-पकज परसय, इन्द्र-दमन बँकुसुठ सिधारो ॥'



१ (क) इस नाम के एक कवि १६वीं शती के अन्त में उत्तरप्रदेश में राजस्थान में भी हुए थे। रामरसिक के उत्तिक-सम्बन्ध में ये 'अग्रदास' के नाम से विख्यात थे। दिल्ली में उनकी दो रचनाएँ मिलती हैं— 'अग्रदास' (अग्रदास-संगीत) और 'कुंजलिता (शिलोपदेश) उपजाया अपनी कुंजलिता अपनी ना कुंजलिता उपजाय)। इनके अतिरिक्त 'गंगारस-संगीत' का 'अग्रदास' नामक एक विद्यालय उत्तिक-संग भी उनके द्वारा उचित उल्लेख किया है।— अक्षर, रामरसिक में उत्तिक-सम्बन्ध (वरी), १ १७६-७२ तथा 'सम्बन्ध-विकास' (वर्ष १४, भाग १४ सं० ४१ अक्षर-१४ सं० २००२ दि तथा भाग १४ सं० ७-८ विद्यालय अक्षांक सं० १००५६०), अक्षांक १० १ ०००६ तथा १० ०००६।

(ख) तथा क मन्मथानुसंगीत (विद्या) के द्वारा उचित अक्षर-विकास में एक उत्तिक-सम्बन्ध (वरी) संभव (कुंजलिता, अक्षर १७) सुचित है। उसके अतिरिक्त भी 'अग्रदास' अक्षांक १० ०००६ के अक्षांक में है।—५

२. 'अग्रदास-संगीत-संगीत' (वरी) १ १६-१७।

अभिनव

उदाहरण

माइ गे अघरज देखिअ मण्डप विच, एक गोट नयन ललाट विच ।
 माइ गे सहस्र नयन केरि एक जन, छमो मुख देखिअ दुइ जन ॥
 माइ गे तीन धरन भुज छलो गोट, तीन नयन केर एक गोट ।
 माइ ग पसु-पक्षी चढ़ि अमसाह, भूत प्रेत संग नयसाह ॥
 माइ गे साबू नाम एके कहू, गाश्र-प्रवर अपि सहो कहू ।
 माइ गे 'अभिनव' कवि मन अजगुत, ईश्वर तहीं ककरो पूत ॥'



आनन

उदाहरण

(१)

वसुधा चढ़ल शिव छिर सोह्य मौरा, चमल विद्याहय दिखि घर गौरी ।
 देखइत गौरि हिमा उपजल लाजे, पसरल प्रेम उसरि गेल काजे ॥
 बूढ़ेक मिलल सनु अपरुष भांति, राजत गिरिजनि दामिनि पांति ।
 'आनन' कवि सबक परमेशे, माघबेश समुचित गिरिजेशे ॥'

(२)

मुगुधि मनाइनि देखि नगन वर, गाइनि रहलि सजाए ।
 धिक धिक सम कहू कभोने कहलक, निर्दय छटकक ज्ञान ।
 माए बाप नहि, उर फणिपति अहि, सहजहि धिक समसान ।
 घर सम्पति सुन, एकओ ने वर गुन, कोन सुस करति भधानी ।
 'आनन कवि' कहू किय ने जननि सह, बिनति सुनिअ महरानी ।
 तीन साक गति, गौरि उचितपति, माघबेश महराना ॥'



१. मां देहपति अ (वरपति) के माइ । बिदाह में गोप्यअन-अन अ नीत ।

२. कही के माइ ।

३. वही ।

आद्याशरण^१

उदाहरण

(१)

नूतन तमाल पट गमन मराल बाल
सुभग नवीन चम्प बदन गोराई है ।
जानु जुग केदसी मुकुन्द को कसी-सी नख
अधर जपा-सी पद-कमल सोहाई है ।
चरित मयूर पग नूपुर विहंग-ध्वनि
पिक बध देव मना मधुप सोभाई है ।
त्रिविध समीर-सीला लक्षि जन 'आद्या' कहे
छवि-यन-अम्ब में वसन्त-रितु भाई है ।^२

(२)

मानु पितु मोद ते उमा कर दीन्हो विदा
भावत हो मन्दिर फुलाई वृषयान का ।
याकी फँसो सोर चहुँओर तिहुँ सोफन में
चसी सुर नारिन धन छाई विमान की ।
कोलुक निहारि करि मन में विचार करि
जग मे प्रचारि ऐसी नारो पंचवान की ।
देखें धलो जाई ऐसी दूसरी न भाई भाई
जैसी एक भाई जाई गिरि हिमवान की ।^३



१. अथ शोभा (सात्व) के लक्ष्यशिवक रचित श्रीमन्नारायण शिव क दासारी कवि से । संभव है, अथ सर्व
ये शरी के निवासी हो । श्रीमन्नारायण को का परिचय रही में अल्प देखा ।

२. श्रीमन्नारायण शिव कवि 'जुनीयेन्द्ररवि' नामक इच्छा/कवि पुस्तक से, जो श्रीरङ्ग-संस्कृत
में सुपरिचित है ।

३. यही ।

आशादास

उदाहरण

चैत चिन्ता कियो है ग्वालनि, कृष्ण राधा साथ रो ।
 लेहु वान प्रभु भ्रषिक गोरस, करहु जमुना पार रो ॥
 वंशास राधा गेलि मधुपुर, हरि सौ कहस बुझाय रो ।
 गान ताहरा नाज ककरा, सकट प्राण गँवाय रो ॥
 जेठ प्रभुजी सौ भेंट भय गल, भोहि कदम जुड़ि छाँह रो ।
 छानि लियो प्रभु धीर चोनी, ग्वालनि करस कलोल रो ॥
 भापाढ़ राधा रास ठानस, कृष्ण राधा साथ रो ।
 'दास भाधा' इहो पद गाभोल, राधाकृष्ण विलापरी ॥'

✽

ईश्वरपति

उदाहरण

ससि हे शिव क कहु न बुझाय । ध्रु० ।
 चलइक बेरि विहँसि हँसि ताकव, हमरहु नयम जुझाय ॥
 एक बेरि भावि एतए भए रहितथि, दुसहिन दास कहाय ॥
 हमर गौरि केँ भोरि जोग विहृषि, खरखी देव पठाय ॥१॥
 बड रे मनोरथ कयस प्रथम बर, धिमा देस प्रक सगाय ।
 सकर निगाह हृदय बिष रखिहृषि, हमरो भेसाह जमाय ॥२॥
 सासु मनाइनि गाइनि सम मिलि, विनति करथि कर जोड़ि ॥
 एक बेरि भासिक वीरु भेटविहृषि, हमर भाँगन बिष भायि ॥३॥
 सारि सरहोजि मिलि रभसि करेँ धनि, सुनु शिव वयन हमार ।
 'ईश्वरपति' इहो पद गाभोल, शिव कँनास सिवार ॥४॥'

✽

कलानाथ

उदाहरण

(१)

वहसल भ्रूँखण्डि माइ मनाइनि, भ्रूँखण्डि मन अनुमान ।
 मनक मनोरथ करव प्रथम वर, निक वर करव विचारि ॥
 कथा सुनल घटकक मृदु जइ जखन, वहससौ निज मन मारि ।
 पहिन सुनिऐण्हि तिन गुन सुन्दर, भँगाभा यूढ़ भिखारि ॥
 भागिन माय-वाप हारि वहसल, वहसल सोदर भाय ।
 धिम्माक कर्म म जागिभा लिखल छल नहि भ्रछि एकर उपाय ॥
 'कलानाथ' कवि पूर्वी साखल, लिखल भेटल नहि जाय ।
 सुम-सुम कय गौरी विभाहिभ, सखि सव मंगल गाय ॥'

✽

(२)

मयन कोर भरि भ्रूँखण्डि मनाइनि, देखि देखि अपन दुनारिए ।
 हमर कर्म धमवर बाडर, फान लप चुकसि भवानि ॥
 केधो अनु करह पसाइनि नागरि, भूपण घरह उत्तारि ।
 हिन तह कर्मोन विधे हम निवहव, गौरा मोरि राजदुलारि ॥
 निर्धन बूढ़ द्विता वर जनिका, नहि छनि कुल नहि भूल ।
 तनिफो एहन मनोरथ सुन्दरि गौरि मोरि रहति कुमारि ॥
 "कलानाथ कवि" इहो गामोत्त, हर कपिलेश दिनश ।
 सुम-सुम-सुम कए गारि विभाहिभ, भेटत गौरिक कलेस ॥'

✽

१ जे ईश्वरक भय (परधन्य) से पाव ।

२. कपी से पाव ।

कान्हरदास

उदाहरण

जय गंगाजी जय जग जनता, जय सन्तन-सुखदाई ।
 धरन-कमल-अनुराग भाग सौं, जय ब्रह्मा उर साई ।
 धारि पदारथ अछि जगजीवन वेद विमल जस गाई ।
 भक्त भगोरथ उनके कारन, प्रगटि भवनि महै भाई ।
 तेज प्रताप कहाँ धरि वरनद, शंकर सीस चढ़ाई ।
 हेम-सिखर पर ललित मनोहर, उर जयमाले सोहाई ।
 ताकर नाम लेत जम किकर, कखना करि फिरि भाई ।
 राम-नाम गंगा कलि केवल, वास और ने उपाई ।
 'कान्हरदास' भास रघुवर के, हरखि निरखि गुन गाई ॥'



कुँवर

उदाहरण

बलु सखि बलु सखि माँहव ठाम, कुस भए केँ बइसल छधि राम ।
 तिल जस कुस सम करता दान, अपनहि जनक सुनल अछि कान ।
 गारा-पूजा कयलहुँ बेस, तँ प्रति भेला था भवबेस ।
 उठ-उठ आज करै छहु साज, बुझइत छहु जे वतले काज ।
 लज्जित सीता उठनि नजाय, माँहव-दिसि सम पहुँचनि जाय ।
 राम दहिन भए बइसनि जाय, सम सखि मंगल सुम-सुम गाय ।
 जनकक नयन हरख जल भेस, तिल-कुस भए कन्या दए दस ।
 सम अनि गावहु गात उद्याह, जय-जय सीता सीतानाह ।
 कुमर मनय दुहु जग पितु माय, सम छन सम पर रहषु सहाय ॥'



१ 'शिवी-सहित्य-संग्रह' (वही, एहीव भाग) पृष्ठ २७-२८ ।

२ ओ० ईशानचन्द्र (वही) से संग्रह ।

खड्गपाणि

उदाहरण

भाज चतुर्थी करु हर भेल भिनसर ।
 विधिकरि सज उठाए निपाभोल कोवर ।
 कामिनि सिन्दुर भरल धार वेसन्हि धार ।
 भांगुरि भागलि सुकुमारि चलत हर वाहर ।
 पालव जुगुति बैसाभोल नहाभोल हे ।
 कर घए लेल गुलपाणि बलस हर कोवर ।
 कोवर जाए हर होम कएस घोघट देल ।
 कसूण खोलि खिर रान्हि कि जुगुति सराभोल हे ।
 गारिक फुअल पसाहनि हेसु सुलपाणा ।
 गाविम मंगलराग जत छलि गाइनि ।
 "खड्गपाणि" हरिदास इहो घर भास लेल ।
 शिव संग गौरि विवाह इहो घर मांगल ॥'



गुणनाथ

उदाहरण

किछु नहि धिर होय' कान विधि कि करव,
 हृदय कुसुमसर - जरजर कि कहव,
 केवल भवगुन भासपास लागि धरधर र का ॥
 सहजहि उपजल नह परम प्रिय
 वेकत परसवर सुख उर भए हिम,
 परबस दुलभ मिसन धार नहि उर धर रे का ॥
 मुम पव अनुपम छारि सुबुधि मन
 रसिक रहत कहि धनि सैं कहूखन
 प्रसमञ्जस प्रभिलाप नाख कत विधि र का ॥

गहि कर हेरि मुख अकूम भरि-भरि
 चुमि मुख नयन कपोल कोर करि
 निधुवन केसि विनोद मोदमय लागि गर रे की ॥
 सब गुनलानि विवक विहित अघि-
 सोचन-कोर धार चित निरवधि
 कर 'गुणनाथ' कृतारथ अनुचर कवियर रे का ॥^१



चन्द्रनाथ

उदाहरण

(१)

कौतुक बसति भवन केसि-गृह, सजनी गे, संग दस अहुदिसि नारि ।
 विष विष सुन्दरि सोमिस, सजनी ग, जनि घर मिमत मुरारि ॥
 कहि पोडस कहि अमरन, सजनी गे, पहिरत अपक्ष धीर ।
 देखि सनस रस उपजय, सजनी गे, मुनिहुँक मन नहि धार ॥
 दसन नाम दाहिम विष, सजनी गे, धिर लेल भोष्ट सम्हारि ।
 लघु-लघु बस पगु दै, सजनी ग, हेरल बसन उधारि ॥
 सखि सभ लँकर भवन में देखन्हि, सजनी ग, धुरि आएल सम नारि ।
 कर धय पास बइसाभोल, सजनी गे, हेरल बसन उधारि ॥
 चन्द्रनाथ मन मन दय, सजनी ग, ई सम बड विपरीति ।
 वमस युक्त समुचित धिक, सजनी गे, ते नहि मानिय भाति ॥^२

१. गो० वेदनाथ श्या (बही) के श्लोक ।

२. 'सिद्धिना-दीप्त-संघ' (बही प्रथम भाग) पृ० १४१५ ।

(२)

माधव सब विधि थिक मोर दोषे ।
 वयस भलप थिक सनु भति कोमल, तें नहि दरस परोस ॥
 तुम भनिरोप रोस हम चसलहुँ, जाय सहव दुख देहे ।
 सखि सब हेरि घोर कं राखल, एखन एहेन सिनेहे ॥
 काँच कसा जा हरि तोडव, तो पुनि होएत उदास ।
 होयत कसा पुनि रंग सुरंगति, दिन दिन होयत प्रकास ॥
 निकसि सुवास भास तोहि पूरत, वदसि पिवह रस पास ।
 कछु दिन घोर घोर घर मधुकर, जखन होयत सुविकास ॥
 चन्द्रनाथ मन भरज कर कामिनि, न करिय एहेन गमाने ।
 दिन-दिन तोहु प्रेम हम लाएव, पुरत सकल विधि कामे ॥^१

७

चन्द्रमणि

उदाहरण

अनुराज समय वसन्त माधव पदु रहत परदेश भो ।
 मदन छान मलोन मानस, विरह वाढ़ कलेस भो ॥
 सलिल साल कपोल नासा, भ्रमर गुञ्जित केश भो ।
 हृहरि शारि निहारि घटदिसि, भेल योगिनि भेल भा ॥
 भार, परदेशा पदु परवस, पिभ विनु विसरस सब रस ।
 जेठ मास कठार बालमु, नहि रमण-सुख पावहा ॥
 सखी गाए हिँडालना एक, ताहि सखि पदु भूलही ॥

कुलए स सब कुलए रसमय, वसि कएल एहु कामिनी ।
 वीर नारि विचारि मनमह, काल भेल मोहि यामिनी ॥
 धारे, सुनि सब नेह जगाभोल, तकर उचित फल पाभोल ॥
 असाढ़ धन घहराए चउदिसि, वरसि धन हुन वृन्द आ,
 पवन जोर म्मकोर म्मिगुर, कन्त विनु घर सुन भो ।
 कठिन हृदय कठोर यानमु, कठिन नेह न जान भो,
 सुमरि नेह अनङ्ग जागल, भव न वाँचत प्रान भो ॥
 धारे, धुरि-धुरि जै पहु भ्रमोताह, जिवइत नहि जिव पभोताह ॥
 साभोन सगुन विचारि मनमहै, वायस मधुरस वोस भो,
 नयन अछनि नागिनी पर, करकि भौचर डोल भो ।
 जसून घर मोहि कन्त भौता, करव रास विनास भो,
 'चन्द्रमणि' मन सुनिभ सुन्दरि, पुरल मन केरि भास भो ॥
 धारे भास, पुरल मोर सब दिन, ककरहु हो नहि दुरदिन ॥^१

चिरजीव

उदाहरण
(१)

मन ! घर चित साय, गिरिजा-ईस-चरन सुखदाय ।
 धुम्र जटिल पीवर सुम काय, चारि वाहु सुन्दर छवि छाय ॥
 सूत्र सिखर हिमगिरि भल धान, गौरीशंकर करु भवस्थान ।
 दया दृष्टि सँ भक्तक मान, राखधि सदा करि भ्रमय-प्रदान ॥
 नन्दी कार्तिक निगम वखान, गनपति भ्रगनिष्ठ करु गुनगान ।
 मिहिर छायाकर सप सुजान, भरव धरधि अनुक्षण ध्यान ॥
 सम सौ नारद वीन वजाय 'चिरजीव' चलु निरखू धाय ॥^२

^१ ओ इतनाथ भद्र (वरी) ४ अक्ष ।

^२ 'त्रिभिला-वीर-संमद (वरी द्वितीय अध्याय) १ १२ ।

(२)

जय काली जय तारा भुवना, षोडशा मन भावै ।
 धूमावति भजु वगसा छिन्ना, भैरवी सुख पार्वै ॥
 मार्तण्डो भजु कमला माता, सक्तीरूप कर्हावै ।
 दुर्गा दुर्गति-नाशिनि गिरिजा, चण्डी रूप जनावै ॥
 चामुण्डा भजु कौशिकी दयानी, महामोह भेटि जावै ।
 कामारूपा भजु विन्ध्य-निवासिनी, ज्वालामुखि जग गावै ॥
 गुह्य कालि मीनाक्षी विमला, मंगल गौरि देखावै ।
 राजेश्वरी सिद्धेश्वरि सीता, गंगा गङ्गकि रावै ।
 कौशिकि कमला वाग्धति भजि ले, 'चिरजीव' द्विज गावै ॥'



जयदेवस्वामी

उदाहरण

की सुनि कान्हू गमन कियो मदन दहत सन जोर ।
 चंचल नयन विसम्बित पय धित्खहु पिय तोर ॥
 पंथ विपाव हे सखि, स्याम गेल परदेस यो ।
 सून्य सज निकन्त देखल कास भेजव सन्देश यो ॥
 दादुर घन घनहि रोयै ऋग ऋगुर वाज यो ।
 नव नह प्रकम हृदय सालं प्रथम मास भपाइ यो ॥

सावन सर्व सोहावन कानन बोले मीर ।
 तापर दक्षिन पवन वही कठिन हृदय पिया तोर ॥

कठिन और कठोर बालम दद किछु नहि जान यो ।
 वह पढायल विरह-दुख सँ काम देल अनेक यो ॥
 काम देल अनेक हहरत प्रान अतिसय मोर यो ।
 विरह-प्रीति समुद्र-जल में दुखित रँनि गमाव या ॥

भादव-रनि भयावनि कारि रँनि अन्हियारि ।

चित्र-विचित्र हिठोला मूलें सोहागिनि नारि ॥

गाधि गावि मुलार्थ सुखी सब अधर भरि भरि पान यो ।

हीन छान मसीन पिय विनु कटकै पाँखो खान यो ॥

दसय चाहत कारि नागिनि प्रान पापर मोर यो ।

विकलि कामिनि पहु दरस विनु नयन अहरत नीर यो ॥

शरद समय जल भासिन पन्थुक सचर मन डोल ।

सूतति धनि उठि वइससि काग कदम पर घोम ॥

बोलु काग कदम भयोला पास कव हरि भाव यो ।

उर्ध्व धानु निवास ससि सब करहि मंगल गान यो ॥

राधिका-मुख-कमल विकसित सप सुरमुनि गाव यो ।

अपदेव-स्वामी धरन बन्दहि सरन राक्षु गोविन्द यो ॥'

✽

जयानाथ

उदाहरण

नवयौवन नवनागरि, सजना ग, नव सत नव अनुराग ।

पहु दखि मोर मन वाइल, सजनी ग, जेहन गोपा चन्द्राव ॥

वाइल विरह-पयोनिधि, सजनी ग, कँलन्हि जीवक भादि ।

कत दिन हेरव हुनक पप, सजनी ग, भाव वइसलहुँ जिय हारि ॥

हम पड़लहुँ दुख सागर, सजनी गे, नागर हमर कठोर ।
जानि नहि पडल एहन सन, सजना गे, दग्ध करत जिय मार ॥
धम 'जयानाथ' गाम्बोल, सजनी गे, मधो जनु करै कुरीति ।
धैरज घरहु कलावति, सजनी गे, भाज करत पहु रीति ॥^१



जलधर

उदाहरण

सजन अरज कत द्वन्द रे, तहँ अक्सर न करिय मन्द रे ।
इहो थिक सजनक राति रे, हठहु ने तेजय पिरीति रे ॥
नारिक जा थिक दोष रे, नागर के हँस साक रे ।
छमिय हमर अपराध रे, वचन कहत नहि भाष र ॥
सत क्षणित कुसिभार रे, निकसल रसल पेमार रे ।
स जलधर कवि गाव रे, जलधर जलनिधि पाव रे ॥^२



जलपादत्त

उदाहरण

जननि ! अज जनु होइअ मोरि ।
पूजा ध्यान एकधो नहि जानिम, तोहर चरण गति मोरि ॥
सुत अपराध कोटि जँ करइछ, माता होए न कठोर ।
जमा मोर शोष लिखल वसुधा भरि, उदधि करिअ मसिघोरि ॥
सब विधि भास राखल दवि तोहर, सुनु सुनु हेमंत-किसोरि ।
जलपादत्त विनति नरु भगवति, तोहे देवी अघम उघोरि ॥^३



१ 'सिधिराज-गीत-संग्रह' (बरी, प्रथम भाग), पृ० १४ ।

२ बरी पृ ३२ ३३ ।

३ ओ ईशानाथ भा (बरी) से शब्द । ठोठरी अरि शोरो कछि में शोरीय लोको अ मयंठ ३—
'कुमुद अदेव कविचरि कुमाठा न भवति अरि 'कविचरिचरित्र' रत्नकरकल सिन्धुदेवे मुण्डनर-
राम्या लेखनी पत्रपुर्वी.....

जानकीशरण

उदाहरण

(१)

झाँकी भाँसि भाँसि का बना है महि-मडल में,
 वाला बलराम विष्णु बगसा बनवारी की ।
 राम की रमा की भारतो की त्रिपुर-सुन्दरी की,
 भुवना भीरवी की और सारा त्रिपुरारी की ।
 'जानका' बलाने बहु भाँसि की निहारा वारी,
 राषिका रसीली छवि और सिय प्यारा की ।
 छकित सुरेश सेस अक्षय अनूप रूप,
 देखि-देखि झाँका साँकी सँल की कुमारा का ॥'

(२)

कोसल-फिसोर चित्तोर अक्षय, जू के,
 प्राये रंगभूमि छवि बूझ का दुति दाना है ।
 लखन-सखा के साथ धनुष भर वान हाथ,
 क्रीट-मुकुट धर माम नवरस रस भीना है ।
 'जानकी' सहेट हेरी मान की बसा चहेट,
 मन में बिचारो यह उपमा नवाना है ।
 स्याम-गौर जाड़ि दोट निरखि मन भुझो,
 सिपा सोने की भँसूठा राम साँवरो नगोना है ।'

१. प्रसिद्ध वं इत्यभिहित मंत्र-धनुसंशान-रिक्त्यन में सुपबद्ध इत्यभिहित मंत्र 'दुर्गाभिरभिरिणी' से ।
 इसी अक्षर पर अथ श्रीकन्याशरण्य सिद्ध (पदेही शरण) के समकालीन मंत्रे मन्त्रे हैं ।

(३)

स्याम सखा सौंग राधा सोहाग सिंगार सर्व सुकुमारी सँवारी ।
मोक्षित माँग भरी सजनी भर भूषन को चुनि वार वगारी ।
सारी पेन्हायो जगो जरतारा सा कृष्णहैं छाडि निमेष निहारी ।
काहि न भावत ऐसा समय ठकुगइनियाँ हरि यारी विहारी ॥^१



दत्त^२

उदाहरण

गिरिजापति सुनु विनती मोर, सम सुर तेजि सरन षण्ण ठोर ।
दीनबन्धु सम देवक देव, समक पुरल मन जे तुम सेव ॥
प्रथम धन्य ह्यम दुर्मति मूढ़, मोर कृति-कर्मक न करिअ दूढ़ ।
'दत्त'भनय शिव सुनु मन ज्ञाय, मोर मिषिलेसक रहिअ सहाय ॥



दत्तगणक

उदाहरण

नगर नारि विचारि एहि विधि वारि नेसन्हि कर दोष हे ।
धनह देखय गौरि दुलसह परिछि नय समीप हे ॥
निरालि सबल समाप सौं हर-रूप शकर साँच हे ।
वाघदास उषारि ताफल उगस वर-भुक्त पाँच हे ॥
जखन हर एक भाँखि तकलन्हि भागि घघकल ताहि हे ।
नाग ऊपर जागु अचरज समहि पडाइलि नारि हे ॥

- १ कविपदक इत्यन्तिष्ठित प्रक-भक्तुसंगान-विषया ये सुवर्णय इत्यन्तिष्ठित प्रक सुवाग्निमत्तारिण्यो से ।
इसी प्रकार इत एत संवचनात्मक विष (१३३) छात्र) के समकालीन कव्ये गये है ।
२ इत्यन्तिष्ठित के इत्यन्तिष्ठित-विषयो १००० रात्री क देवीरत्न भा की इली नाम से जैविली में प्र-रचना
करते थे ।— टोखिय, पंजाबी-भाषित्व और विद्या (१३) १०१२-१३ दे० ।
३ भा ईशनाम भा (२३) के भाष ।

लखन जनि-जनि प्राप्ति ताकल भाँकि बइसलि ताहि हे ।
 *चन्द्रकला सौं चुइत अमारस तँ जितत मृगराज हे ॥
 एहेन बर के नग्न धानल जनिक वाघ समाज हे ।
 ठाम भाव इहो गाम उजरत रहत अपि केर राज हे ॥
 देखय चलनि लजाए शक्ति केहेन उमत जमाम हे ।
 *बसन सन सँ विवसन भय गेल हँसपि हर मुसकाम हे ॥
 फेंकल शीप समीप स हर सर्वाहि पडाइल भाडि हे ।
 गंग उमरि तरंग फेंकल मानु वर्षा-धन फाडि हे ॥
 'दत्तगणक' इहो गामोल हर लाएल एहि ठाम हे ।
 शुभ-शुभ कहि कय गौरि-विवाह पुरत समक मनकाम हे ॥^१

✽

दास

उदाहरण

जन के पार हरे, सुरसरि हे ।
 देश-देश केर यात्रो भाएल दर्दर-क्षेप भरे ॥
 सरयू भावि मिलाति संगम भय, त्रिभुटी स्थान धरे ॥
 ब्रह्म-कमस्त्रु जटाशंकरी, विष्णुक चरण परे ॥
 शंका कय भागारथ भायल, पक्ति अनेक तरे ॥
 धम्मक देना पापक छेती, सन्तक चरण परे ॥
 सकल पक्ति केँ तारल गंगा, 'दास' कियक ने धरे ॥^२

✽

१. विन्दी-वर्षित्व (वही एवम् अथ) १ ४ १ ।

*ब्रह्म-कमस्त्रु जटाशंकर-विष्णुक चरण परे ।

सकल पक्ति केँ तारल गंगा, 'दास' कियक ने धरे ॥

(सुभाषित-संग्रह)

२. विन्दी-वर्षित्व (वही एवम् अथ) १ ४ १ ।

दिनकर

उदाहरण

हरिभर तरु वन, कुसुमित उपवन, पद्ममन परसन, मनुधन रे की ।
 सब स्तन दुरजन, सनमन परिजन, कुवचन दह तन, छन-छन रे की ॥
 मनिल सरस वह, चित नहि थिर रह, मदन दहन दह, शिब कह रे का ।
 सब जन शशि कह, मोर मन वृत्तवह, लहरत लहसह, तन दह रे का ॥
 धकधक हिम कर, तन दह हिमकर, कुसुम सुमास उर, विपघर रे की ।
 उर दह कर पर, जनि थिक विपचुड़, हरि-हरि जाएव, सुर पुर रे की ॥
 हिम कमनिनि वन, सकस दहन सन, जत करपुर गन, छन-छन रे का ।
 'दिनकर' कवि मन, तिरडुति-पति मन, रमहु सतत छन, गुणि जन रे की ॥'

*

दीनानाथ

उदाहरण

भाजु सुदिन दिन पाभोल रे, प्रसन भेल बजरजे ।
 सुदिन दीन नयन मोर रे, फडकै पहुक समादे ॥
 सानन्द हृदय पुलक भर रे, दीन दुख दुरि गेस ।
 कतेक दिवस हरि पाहुन रे, जम कृतारथ भेल ॥
 सँ फुल-सज्ज भाछाभोल रे, वासल करपूर तमोल ।
 नाव भरम किछु राखव रे, वाजव बचन भमोल ॥
 प्रेम-हार लँ वान्हव रे, कौशल करत उपाए ।
 पस भरि सगो ने छाडव रे, राखथ हृदय सगाए ॥
 नागरि सन गुन भागरि रे, पढ़ु बिनु करिए समधान ।
 'दानानाथ' मोहि पाहुन रे, सम विधि भेलहुँ सनाथे ॥'

*

१. जो ईशानाथ अथ (बहो) से पद्य ।

२. 'शिवलला-पौठ-संघ' (बही नृ-पौठ भाष) पृ २२-२३ ।

दुस्तरन

उदाहरण

सखि रे तेजल कुलविहारा ॥

भाएल भपाढ़ विरह-भद माठन, नहि देखिय गिरिधारी ॥

भाव केहि संग भुलव हिठोल, साधोन तजल मुरारी ॥

भादव-यामिनि यम सम वीतल, दिवस नागय अश्रियारी ॥

भासिन भिनति करय कवि 'दुस्तरन', गोपिअहि भेटन मुरारी ॥^१

दुरमिल

उदाहरण

दशम राशि घो अँ उपगत भेस । पाय एकादश परदश गेल ॥

वाहर चारि जेहन जस मीन । ताहि समान हमर तन खीन ॥

भाठम राशिक वदन मूल । छठहि पाय वसरहि समसूल ॥

नव समान हम पिय बान । भाठम रहि सकुलिए नव मान ॥

मधुपुर नागरि अतिगुण जान । दोसर मति पहु पहिल समान ॥

'दुरमिल' सुकमि गणक इहो भान । राशि विचार पहिलत पुणवान ॥^२

धनपति

उदाहरण

जखन चलल हृदि मधुपुर रे, ब्रज भेल मनाथ ।

भिन यदुपति नहि जीठव र, कर धूनव माथे ॥

इग चित वदन मलिन भेल रे, सिर फूजल केस ।

नागरि नयन बरसि गेल रे, अति जस असरेसे ॥

१. विभिन्न-मौल-संज्ञा (बही, द्वितीय भाग), पृ. १ ।

२. बही (प्रथम भाग) पृ. २१-२२ ।

प्रेम-भरसमनि छुटि गल र, म्रचम्हित गेल चोरा ।
 भाव निवन नहि आउव रे, विष पीउव घारा ॥
 घनपति मन धरज धर रे, तोहि भेटत सोहागे ।
 माचव मधुपुर धाम्यास रे, पुनि जागत भागे ॥*



धनुपधारी सिंह

उदाहरण

सवन सराहें वल यपु में सुनि है नग,
 कान ते सुनो है वस छमा मे घरा-स है ।
 गुनिन गुनाहें नाहें ना है नू माहे क्षम,
 ऐगुन गुनाहैं बुद्धि भाजन भए-स है ।
 देसहैं मई फँले छाते धर्म की ध्वजा-से निस,
 धम्ब मन घासे धंस नर धमरा-स है ।
 चन्द्र का प्रभा-स यश दिनकर प्रकास तेज,
 वापन तम नास गुन ज्ञानहू के रासे हैं ॥*



धर्मदास

उदाहरण

भाव कि कर्गछ वनि, वैसू श्रवण तुनि ममृत नाम ममोल,
 स घोरि घोरि पोविम रे की ॥
 एक तें घन्धार राति, दोसर न सङ्गसाधि, यम सें पडल भरारि,
 कमान विधि वाचव रे का ॥

१ 'मिथिला-बोस-संग्रह' (वरी, द्वितीय खण्ड), पृ. २२, २४ ।

२ विशार-नाइकावा-रीबट्ट के इत्येतिविश्व-म-क-अनुसंगान-विशय मे मुरविष इपमिषर(विषो) याम्ब इत्येतिविश्व प्रकृति । एम कर्गस की रचना कर्ग मे वारु मपनाएवक सिद्ध की श्रुत्यु क सोल मे की की । ये कर्ग के उल्लेखनीय और अतिशय की वे । यमका परिचय रसी पुस्तक मे मन्वत है :—४

अन्तर ध्यान धर, गुह पर सुरति राखु, ज्ञान कोठलिया हड़ कह,
 यम सँ वाँचव रे की ॥
 'धमदास' ई भारजि करति छपि, गुहक धरण गहि रहवे,
 यम सँ वाँचव रे की ॥'



धर्मेश्वर

उदाहरण

मादव परम मयाधोन, भेस सोहाभान रे । लसना ।
 उपगत त्रिभुवननाथ, परम सुख पाधोल रे ॥
 भरजही उरजस गाधोल, वसन भोड़ाधोल रे । लसना ।
 जलधर पुष्पक धृष्टि, कर धन उर खानन रे ॥
 परिजन सखट्ट सुमति कर, बलट्ट नन्द गृह रे । लसना ।
 सैय सुधारस देवकी, दव वदसि लिम रे ॥
 अनमस यदुकुल-नन्दन, कस-निकंदन रे । लसना ।
 यखोमति हरपि हृदय गहि, कसठ लगाधोल रे ॥
 कह 'धर्मेश्वर' बालक, भति सुख पाधोल रे । लसना ।
 गोकुल सकल छकित भेस, धरि-उर सामक रे ॥'



धैरजपति

उदाहरण

भासलता ह्म लगाधोल सजनि गे, नैनक नीर पटाय ।
 म फल भव तल्लत भेस सजनि ग, धाँधर उर ने समाम ॥
 काँच साँच पिमा तजि गल सजनि गे, तसु मन भठै स मान ।
 दिन-दिन फल तल्लत भेस सजनि गे, पिया मन करि न ग्यान ॥

१. यो ईतबाब अर (पदी) छ बाब ।

२. त्रिभुवन-नाथ-संघ (पदी, पृथीव अम) १० १०-१० ।

समक पिया परदेश वसु सजनि गे, भाएल सुमरि सनेह ।
हमर नन्त निरदय भेस सजनि गे, मन नहि वाढ़य विवेक ॥
'घँरजपति' कहू घँरज घर सजनि गे, मन नहि करिय उदास ।
ऋतुपति भाय मिलत तोहि सजनि गे, पुरत सकल मन भास ॥'

✽

नन्दलाल

उदाहरण

हेरि यदुनाथ यशोमति भ्रुकम साभोल रे ।
लक्ष्मणा, जनि पथ पडल परशमणि, निरघन घन पाभोल रे ॥
निरघन घन पावि मगन मन भ्रानन्द उर ने समाय यो ।
कह्यि हरपि गंधव भवतए पिकाहू यदुबर राय-यो ॥
पहिलहि तुरित यशोमति तनय नहाभोल रे ।
लक्ष्मणा, सुनि नन्द दगरिनि सहित धाय गृहि भाएल रे ॥
धाय गृहि मह भाय दगरिनि, भ्रानन्द भेल सुत मोर यो ।
यदुवंश क्षीर-समुद्र सम जनि प्रगट दोसर चन्द्र यो ॥
नार छेदाभोन मोहर दगरिनि पाभोल रे ।
लक्ष्मणा, कस-निकुन्तन-हेतु नन्द - गृह भायल रे ॥
'नन्दलाल' कवि कैल नेहास, गोकुल भेल सनाथ यो ।
धन्य यशोदा भाग तोहर, प्रगट आयदुनाथ यो ॥'

✽

१ 'भिक्षु-भौत-संघ' (वही मयम भाग), पृ १२११। वही अध्याय का एक पर विचार्यति का मिलता है। हम पर भी कुछ भिक्षुओं की वसुते मिलती है।—सं०

२ वही (द्वितीय भाग) पृ २-२१।

नरसिंह दत्त

उदाहरण

दुर्गा लेखा दय दय तोर ।

तोनि तानि कय दय दय दुर्गा, लक्षा दय दय तोर ॥

नन्द तरो सात यशोदा, गुरुजन तेरो भ्राता ।

एक सराहिय तेरो भगवति, कर्ता घर्ता घात्ता ॥

झोर पद छाड़ि तुष पद सकिय, तापर ऊपर मोती ।

भङ्ग-भङ्ग जे ज्योति विराजय, सोतो मोती माती ॥

कुण्डल डोलय वेसरि लोलय, कटि किंकिणियाँ बोलय ।

दत्त नरसिंह भवाना तरो, डोलय लोलय बोलय ॥^१

✽

नाथ^२

उदाहरण

सरस सुभाकर देखि मनाहर रे, जनि जगमग चानन रासा ।

समगि उठल भानन्द हरि सौं रे, जानि गई मदन मदमाती ॥

यट-वंसा-तट आय यंत्र भूषण रे, जहँ मोहन मुरली बजाई ।

सुर-नर-मुनि सम कान शश धुनि रे, जनि सुवहु रहनि मुरछाई ॥

घर गुरुजन पुर परिजन तेजल रे, नाज तेजल ब्रजमाना ।

साजि घमसि जहँ अन्द्रमुखी सब रे, रास करै नन्दनामा ॥

फंकण-किंकिण-नूपुर के धुनि रे, सुनि मन डोली ।

मलिन करै दुति-दाभिनि रे, छवि बचन सुधाकर दोस ॥

कनक-जडित तन रतन-भूषण रे, विमुख बसन वर सोहे ।

एकसँ एक विविध यने हँ रे, यिमुवन की छवि मोहे ॥

भनहि 'नाथ' सनाथ भयो है रे, देखि-देखि मुरारी ।

कुंज-कुंज हरि रोकि लिया है रे, एक पुरुष तुष्ट नारी ॥^३

✽

^१ 'विश्वनाथ-मौल' समाप्त (१९१०, अनुबं भाग), पृष्ठ-सं० २ ।

^२ इस नाम से अज्ञात कवि के कवि-कर्म 'नाथनाथ' की रचनाएँ भी मिलती हैं।—देखिए, 'हिन्दो-प्राचिन और विहार' (पृ०), पृ० १२ ।

^३ 'विश्वनाथ-मौल-समाप्त' (१९१०, अनुबं भाग), पृष्ठ-सं० १० ।

परसमनि

उदाहरण

पहिरन पाट पटम्बर, कनक-जता सन देह ।
 चम्पक-दल्लि घनि भ्रूपल्लि, दामिनि अनुपम गेह ॥
 कर पर के लेल ढाकन, ताहि भरिघ्न लेल मासु ।
 ननदि गहिम लेल कर धय, जतन सिखाओल सासु ॥
 ससुर मैसुर गुरु मागिन, दिभा सहोदर भाय ।
 सम के सब विधि परसम, मल विधि रहस्य जमाय ॥
 पातो फिरथि सोहागिनि, धयल ननदि कर सएह ।
 कवि 'परसमनि' मंगल गाओल, युग-युग ई रहू नेह ॥^१



प्रेमलाल

उदाहरण

भवध-नगर लागु रतन-पालना, मूलय राम-लछन सँग म ॥
 चैत-घकोर समान सखि हे, मातलि भास लेल कर मे ॥
 निज-निज सुरति निरखि रघुवर के, पसको ने लागै मोर नयन मे ॥
 भाएल वैसाख सकस पुर-परिजन, बाल-युवा तरुणा-सन मे ॥
 धानन भतर-गुलाब बासि कै, सींचय प्रमुजाक गातन मे ॥
 जेठ। मास भरि कनक-कटारी, लय मिसरी पकवानन मे ॥
 खिच-खिच भोजन कर रघुनन्दन, विजुला छिटकि रहू दाँसन मे ॥
 भायस भपाड़ घेरि घन-वादरि, पवन वई पुरिवाहन मे ॥
 दान देहु रनवास रजा भिल्लि, 'प्रेमलाल' हरप मन म ॥^२



१. प्रे. रीतनाथ मय (बही) से छय ।

२. 'प्रेमलाल-पञ्च-संग्रह' (बही दुयीव अङ्क) १ ६ १० ।

वदरीविष्णु

उदाहरण

साजि सकल सिंगार-मासा गौरि पूज्य चललि वाला,
 प्रिय सखी सब सज्ज मिलि कत, रङ्ग करइत रे ॥
 साजि चानन फूल-डाला, ताहि उपर सिन्दूर मासा,
 भगरु-गुग्गुल-धूप दय कत, दीप चौमुख रे ॥
 दछिन चिर लय मयइप झारल, ताहि उपर कलस राखल,
 लागल बन्दनवार पांती, भाँति-भाँतिक रे ॥
 कतहुँ वीणा-वेणु बाजय, कतहुँ भाँसि मृदङ्ग वाजय,
 कतहुँ किन्नर गात गायय, भाव नावय रे ॥
 'वदरिविष्णु' विचारि गाम्भोल, गौरि-पणपति पूजि पायोस,
 जेहन मन छल तेहन पायोस, दुःख भेटल रे ॥'

भैरवि देवी

उदाहरण

(१)

सुन्दर स्याम सिर सोमय मोरी, कर जोड़ि जानकि पूजल गौरी ।
 चानन फूल अछत लेल हाथ, गौरी पुज चलली पट्टक समाज ।
 नाना विधि नैवेद्य बनाय, सब सखिगन मिलि मंगल गाय ।
 दस-पाँच सखि मिलि वदसखि घेरि, धूप-दाप लय झारति फेरि ।
 'भैरवि देवि' यशोगुण गाइ, देहु भ्रमय वर दशरथ-सुत राइ ॥^१

(२)

जय जय दुर्गे भ्रनुपम-रूपे, नाम उदित जगदम्बे ।
 तुम पदपङ्कज सवि चरण मन, दोसर नहि भवलम्बे ।
 तुम गुणवाद करय के पाबय, लिखि नहि सकथि महेशे ।
 निर्गुण भए सगुण कस धारण, विहरथि भगन भ्रकाशे ।
 'भैरवि देवा' गहल चरण गुग हूँ न हमर दुख भारे ॥'

*

१ ओ ईशनाथ का (११वीं) से प्रथम ।

२ कहीं से प्रथम ।

३ ११वीं ।

मंगलाप्रसादसिंह -

उदाहरण

बानी तू श्यानी सम्मुराना कस्तना का खानि,
वेदतू न जानी और देव बरने को हैं।
सुर मुनि ग्यानी नित जोर जुग पाना,
तोहि सीस को नवाय ठाढ़े भूमि पग एको हैं।
जो तू महूरानो कर कृपा-दृष्टि मो पै आजु,
प्यावत जो तोहि दुख टरत अनेको हैं।
मंगला भवाना नाम अपस कृपा निधानि,
और कौन श्रास भास चरन हमे को हैं ॥^१



मतिमाल

उदाहरण

भाज गोकुल एक अषममित सुनिय भ्रानन्दित ए।
सलना, नगर जतेक छल शोक समक भेल छपिठत रे ॥
गृह-गृह नारि उताहुलि कखन देखव हरि ए।
लसना, परस हैठ एक वेरि सुफल कय लेखव रे ॥
तेस-उवटन सय हाथहि चमलि सभ नागरि ए।
सलना, पहिरन अनुपम चार सकल गुन-भागरि ए ॥
जाय सर्वाहि नृप भांगन पुछल जसुमति सौं ए।
सलना, अघ-भोचन जाहि नाम ताहि दिष दखन ए ॥
भानि यशोमति मोहन कोर कय बलन्हि ए।
सलना, कवि 'मतिमाल' विचारि चरण गहि घयलन्हि ए ॥^२



१ विद्या-राज-सूत्र-परिचय के इत्यधिकृत अथ अथ-अनुसंधान-विषया मे सुप्रसिद्ध इत्यधिकृत-य च 'दुर्गा-देव-उपनिषद्' च। एते अथार पर अनेकनतरस्य सिद्ध (श्रेष्ठी शास्त्र) के समकालीन माने गये है। अथार परिचय इत्ये पुस्तक मे अन्वय इत्यम्।

२ 'द्विज-सूत्र-परिचय' (वही पृष्ठीय पान) पृ० १६।

मधुकर

उदाहरण

पलटि ने आयल गोपाल माई ॥घृ०॥

हरि मधुपुर गेल कुबरिक बस भेल, दै गेल विरह-खेजाल ॥
विधि विपरित्त भेल हरि मोहि तेजि गेल, दिन दिन फिरत बेहाल ॥
चहुँ दिसि हेरि-हेरि मुछछि-मुछछि लसु, कौन पय गेनाह नँदसाल ॥
'मधुकर' जौ हरि देख नयन भरि, वँसिया शब्द हिया सास ॥'



मुक्तिराम

उदाहरण

मधुकर आय रहल हरि भोतही, फिरिने आयल हरि ब्रज-नागरी ॥घृ०॥
जेठमास भरिभाय सखी री, घुमि-घुमि बन घेरी सई री ।
विकल राधिका हेरि भिष्याम-पथ, कब हरि आभोत मोरि भोरी री ॥
अपाइ मास भरिभाय सखा री, चहुँदिसि दादुर शब्द करी री ।
हरि विनु मूठ जावन मेरो सखिया, रात-दिना पछतास रही री ॥
साबन अधिक सोहावन सखी री, उमकि-कुमकि सब भुसन चढ़ा री ।
भवके भास लगाभोत हरि विनु, मुछछि नयन सौं नार बहा री ॥
भादव भवन भरम तेजु सखी री, सममिति बलहु वँराग करा री ।
मसम सगाय ससम के हेरिय, विछडि गेल हरि कौन नगरी री ॥
घासिन भवधि विलल दिन छोड़े, भव हरि आभोत कौन घड़ी री ।
सब सखियन मिति गौर कियो है, चलु अमुना-बल घसिके मरी री ॥
कातिक कंत बुरत सौं आयल, सम मिति मंगल गाय रहो री ।
'मुक्तिराम' धामपद देखल, ब्रज के सखी सब साय सही री ॥'



१ 'दिल्ली-स्यरित्त-संग्रह (बही अमृत नाम), पद-सं ४१ ।

२ वहा (अमृत नाम) पद सं० ११ ।

मोदनाथ

उदाहरण

उत्तरि साम्प्रत षट् भादव चतुर्दशिसि कादव र ।
 सलना, दामिनि दमक सुनावय दादुर हृषित रे ॥
 पहिल पहर जब वीतल पहरू सूतल रे ।
 सलना, सूतल नगरक सोक कयी नहि जागल रे ॥
 दोसर पहर केर वित्तिहिं पहरू जागल रे ।
 सलना, देवकी वेदने ध्याकुलि की इगरिनि धानिय रे ॥
 एतम कल इगरिनि पाविम विधि सौ मनाविम रे ।
 सलना, पुरविल जनम तप चुकमहू ते दुख पाभोल र ॥
 जब जनमल यदुनन्दन बंधन छूटल रे ।
 ललना, जनमल त्रिभुवननाथ मनाथक पासक र ॥
 बालक हाथ हृम देखल शख-चक्र-गदा-पंकज र ।
 ललना, गर वैजन्ता-माल कान सोभै कुण्डल र ॥
 जखन कृष्ण भेल गोविन्द वसुदध लय सिधारल र ।
 सलना, यमुना-नीर मयाह माह नहि पाविम र ॥
 तखन कृष्ण भेल कोपित यमुना डराइलि रे ।
 ललना, छमिम मोर मपराध पार निकै जाह र ॥
 'मोदनाथ' कवि गाम्भोल गावि सुनामाल रे ।
 सलना, धनि देवकि तार भाग प्रभु पाभोल रे ॥'



यदुनाथ

उदाहरण

साहरे दरस मुख छूटस सजनि गे, जखन जायव हम गामे ।
 उखन मयन जिव महरस सजनि गे, को देखि करव गयान ॥
 विसरि वेव नहि विसरत सजनि गे, तुम मुख पंकज पाने ।
 बिरह-विकस मन तलफस सजनि गे, दिन दिन भूर भमाने ॥
 जों हम जनितहुँ एहन सजनि ग, हैत भान सो भाने ।
 कथी लै नेह सगाभोल सजनि ग, भाव नहि वांचत पराने ॥
 मन 'यदुनाथ' सुनहु सखि सजनिगे, गुजरि हुनकर नामे ।
 हमर कहस वुक्ति राखव सजनि गे, विधि पुराओत कामे ॥'



यदुवरदास

उदाहरण

भागवत गोविन्द-पद को याद करना चाहिए ।
 घुन्घकारी-से अघम तर गये धैकुण्ठ-घाम ॥
 और बहुत ऐसे तर गये संशम न करना चाहिए ।
 तर गये क्षद्वाङ्गना पलक मे एक घेरि ।
 कथा प्रेम स सुनकर पन्थ-जग में तरना चाहिए ॥
 ए राजा परीक्षित अपने मन में सोच छोड़ दे ।
 अब है तरो सात-दिन हरगिज न डरना चाहिए ॥
 सुन के राजा परीक्षित बहुत कृताप हो गये ।
 दास यदुवर मुक्ति पावा ध्यान धरना चाहिए ॥'



१. भिषना-गोत्र-संघट (वरी, प्रथम पाठ) १ १ ।

२. वरी (अनुपं पाठ), पच सं १० ।

रंकमणि

उदाहरण

केलि भवन नहीं जायव सजनि गे, भानुर छवि मोर कन्त ।
हम नागरि प्रति नाजुक सजनि ग, होएत जोवक भन्त ।
तिस मरि पल नहीं सागय सजनि गे, सपथ करिय हम तोर ।
काच कसो मोर सोडल सजनि ग, तौ राखय मन रोपे ।
नागरि प्राति नहीं मानय सजनि ग, पुरुषक इयेह वड दोपे ।
'रंकमणि' मन गाभाल सजनि ग, इ सुनि रहि मन गाइ ।
हरि सौ नह भगाभाल सजनि ग, दिन-दिन प्रति सुख हाइ ॥'

रघुवीरनारायणसिंह

उदाहरण

(१)

भाँकी बनी बहु मांतिन का वर देव की देवी की समु उमा का ।
मा की विदेह-सुता की बनी ब्रजराज की श्री वृषभानु-सुधा की ।
ताकी गिरा जब वा छवि-भाधुरी मोन भई भति जानिक वाँकी ।
वाँकी बना दुर्गा की छटा 'रघुवार' कहूँ भस भाँका न भाँका ॥'

(२)

रसना रसाला पदरस ही सोमानी रही,
नाम के रटै विनु होश्यहीं तोहि बस ना ।
केतिक सिखाय हार्या पाक्यो बहु नांतिन चा,
बृथा ही बक तु रहे कनू मेर बस ना ।
मानु-मानु भजौ 'रघुवीर' कहे वार-वार,
काहे क सहत तू सब लोगन क हँसना ।
पावन जो हान चहे मानि ले सिखाव यह,
दुर्गे रटु दुर्गे रटु दुर्गे रटु कस ना ॥'

१ 'द्विषसा-नीड-संभव' (शरी प्रथम भाग) पृ० ११ १४ ।
२. विहार-राहुभाष-परिषद के इत्यति-विश्व-प्रकाश-प्रकाश-विभाग में मुद्रित इत्यति-विश्व-प्रकाश-दुर्गा-
प्रेमप्रकाशक से ।
३. रानी पदवार पर श्रुत श्रीमद्भागवतस्य विह (प्रेमी, धारक) के समकालीन यन्त्रे मने है ।
बनस्य परीक्ष्य सम्पन्न देश्वर ।

रत्नलाल

उदाहरण

कखन कहव इहो वसिया हे अघो ।

सगरो रहनि हम बहसि वेतात कयल, फटय लागल मोर छतिया ।

परसर देखि मनहि म वेतिस कयल, नयन पडल कुलफतिया ॥

ककरा से हम करव मनोरष, जानि न पडल विवेसिया ।

कतेक नह छल एहि निसि-वासर, परगट भेल सिनेहिया ॥

भास भ्रष्टाढ़ समय ई भायल, रसहिं भिजल मोर सरिभा ।

धरस न भेल परम दुख पाभोल, 'रत्नलाल' कुलफतिया ॥^१



रुद्रनाथ

उदाहरण

पुरविल प्रीति भयलहुँ हम हेरि, हमरा भवइत बहसल मुख फेरि ।

दहिनाहि बहसलि घनि उतरा न देल, नयन-कटास जाव हरि लल ।

कमल-बदन छल मन दुइ ठाम, कोन भवगति मोर रहस जान ।

भास धरिय नहि करिय निरास, होहु प्रसन्न पुरावहु भास ।

भ्रूल-उदय निसि रहय धोर, भाव दुम्भ घनि स्वारष सोर ।

'रुद्रनाथ' कवि मन दय भान, तँइओ न करि पुष्पक मान ॥^२



लोकनाथ

उदाहरण

निसि निसि पतिया विप्रहि दौज तुरन्त द्वारिका जाहु यो ।

देवहु हे ब्राह्मण भन घन लक्ष्मी और सहस्र धेनु गाय यो ॥

१ अ० देरनाथ अ० (ब०) से मध्य ।

२ 'दिल्ली-सहित्य-संग्रह' (१६६, प्रथम पाल) पृ ३१-३४ ।

वेवहु हे ब्राह्मण पैरक नूपुर गाराक मुक्ताहार यो ।
एक दिवस विप्र अनर्ताह रहिहह दासरे सागर-गार यो ॥
कृप्य लेवाय तुरंत तो भविहह जब होयव दास तोहार यो ।

× × × ×

दै पतिया सब बात अनामोल ब्राह्मण ठाढ़ दुम्मारि यो ॥
खन वांचिय खन हृदय लगावयि खन पूछयि निज वास यो ।
पाछा सँ वल्लभद्रहि भायल भगधन क्यल गोहारि यो ॥

× × × ×

बल्ललि खसी सब गोरि पूजावय खनिमनि मन पडि भाव यो ।
हमरा लै कृप्य कत भयोताह हम धनि परम भभाग यो ॥^१

✽

वंशीधर

उदाहरण

जखन चलल गोपीपति रे, गोकुल भेल सूनै ।
विलपति नारि बधू-ब्रज र, क्यलन्हि हरि खून ॥
घुठमि घुठमि घन घहरय रे, हहरय मोर छाती ।
धमकत धपल चहुँदिसि र, कत लाखव पाँता ॥

चानन हृदय दगव करु र, आभोर वनमाला ।
उछल्लि-उछल्लि मन्मय मोहि रे, मारय उर नाला ॥
धनल धनिल धन्तक अनि रे, जिय करय धनिघात ।

कोंकिल कुहुकि-कुहुकि कत रे, मारय मिठ बात ॥
कर सँ ससरि-ससरि मसु रे, वासावालि भूमा ।
हरि-हरि कहयि छसयि महि रे, वाला धुमि-धूमा ॥

नन 'बघाधर' विरह तजु र, विरहनि ब्रजनारी ।
मन जनु करिय वेयाकुल र, तोहि नेंदत मुरारी ॥^२

✽

१. धे ईशवास भ्य (बरी) १ अण्ड ।

२. 'निबन्ध-गोविन्द-धर' (बरी 'द्वितीय अण्ड'), १ २४-२२ ।

उदयप्रकाश सिंह^१

'रजत-जयन्ती-स्मारक-ग्रन्थ' (वही, पृ० ६३०) में उल्लेख है कि आपने 'विनय पत्रिका' की टीका छपवाकर, पश्चिम-पश्चिम ध्येने दक्षिणा के साथ पाँच सौ रामानुरागियों में विवरित की थी।^२

केशव^३

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही, पृ० २०८) में डॉ० प्रियदर्शन ने आपको मिथिला-नरेश महाराज प्रतापसिंह (सन् १७६१—१७६६ ई०) का रचयारी कवि बतलाया है।

कृष्णपति

आप मिथिला का 'सजान' नामक ग्राम के निवासी थे।^४ आपके दो पुत्र रमापति^५ एवं नम्बोपति^६ मैथिली के बड़े अच्छे कवि थे। आप स्वयं भी एक मुकवि थे। मैथिली में आपकी कुछ सुदृढ़ रचनाएँ उपलब्ध होती हैं।

उदाहरण

कि कहव ओरे पहु परवेस गेल परिहार
 ओकि हरिहरि जीव घरव सखि कोन् परि।
 उपवन ओरे मोर सोकर देखि घन,
 ओकि धनुषन, मार-भगन भेल मोर मन।
 सुनु सखि ओरे सुन शयन देखि होम भय,
 ओकि निरदय, विभरि रहस पहु रसमय।
 सुनु धनि ! ओरे सुमति 'कृष्णपति' कवि-वाना,
 ओकि धनुमानो, अचिरें आओत पिभ्र गुन जाना ॥^७

१ 'हिन्दी-साहित्य और विशार' (वही) पृ १४।

२ अन्वये किना तथा योपकाररारु सिद्ध ने यो 'उपन्यासग्रामस ओ योस ओ योस हो योसो नयोस योस योसो के साथ उपन्यास सन्तो में योसो यो।—देखिए, वही पृ १२२।

३ वही पृ० १२०-१२१।

४ 'मैथिली-गीत-उपन्यास' (वही) पृ १२४।

५ रजत परिषद 'हिन्दी-साहित्य और विशार' (वही पृ० १२२) में उल्लेख।

६ रजत परिषद उक्त ग्रन्थ के पृ० १२६ में उल्लेख।

७ 'मैथिली-गीत-उपन्यास' (वही), पृ-सं २१ पृ २२। पं० नरदीनाथ शर्मा ने अपनी इस पुस्तक में उदाहरण के तौर पर मैथिली पर उद्धृत किया है—'संघरि राएव यन्त्र इन ठोर'। डॉ० जयशंकर मिश्र ने अपने A History of Maithili Literature (वही p 426-27) में कही पर का उदाहरण-विशेष के परस्पर-ग्राम-विवाही और तीन तथा हेम कवि के द्वारा कृष्णपति (श्रीगुरु) का उचित बतलाया है।—सं०

चक्रपाणि^१

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही, पृ० ११४) में डॉ० प्रियदर्शन ने भी आपकी चर्चा की है।

'जनक ऑफ़् र एथिनाटिक सोसाइटी ऑफ़् बंगाल' (खण्ड ५३, पृ० ११) में आपकी रचना का एक उदाहरण भी मिलता है।



चतुर्भुज^२

आपकी रचना के उदाहरण 'जनक ऑफ़् र एथिनाटिक सोसाइटी ऑफ़् बंगाल' (खण्ड ५३, पृ० ८०) में प्रकाशित है। आपकी चर्चा डॉ० प्रियदर्शन ने अपने 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही, पृ० ११४) में भी की है।



छत्रनाथ^३

'शिबसिंह-सरोज' (वही, पृ० १४८) में नामकवि^४ (कृष्णक ३) के नाम से निम्नांकित रचना मिलती है—

उदाहरण

शुभ-निशुभ-विनासिनि पासिनि वासिनि विन्ध्य गिरीश की रानी ।
शकर-संग विलासिनि अग-नुसासिनि श्रीकमलासिनि दानी ॥
आहि सदाशिव ध्यान धरें भ्रम मान करे मुनि चातुर ज्ञानी ।
नाथ नहै सोई शैसकुमारी हमारी करे रखवारी भवानी ॥^५



१ 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (वही), पृ ११४-१५ ।

२ आपका परिचय (भ्रमण से लाने पर) प्रकाशित हो चुका है।—देखिए, वही पृ ४५ तथा पृ ११८ ।

३ 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (वही) पृ १९०-२२ ।

४ इस नाम से २५ आर्यों रचनाओं का संकलन मिलता है।—देखिए, वही, पृ १२ ।

५ जनमुक्त है कि आप बिहार के और महारिष के बरतन से कवि बने थे। इसी व्यापार पर यह अनुमान है कि बहुशुभ कविता आपका ही होना। ये निम्न विषय होने के कारण व्याख्या प्राप्त होना भी संभव है। शिबसिंह-सरोज में अन्य पूर्व प्राचीनकविताओं कवियों के संक्षिप्त परिचय से पता चलता है कि वे अन्य ग्रन्थ के थे, पर कृते नाम कवि के परिचय में किसी स्थाप-विरोध का उल्लेख नहीं है। अतः, आपकी शिव-विष्णु-शक्ति के व्यापार पर ही प्रयुक्त उदाहरण संकलित किया गया है।—१९

डोडराम^१

आप बाँकीपुर (पटना) के निवासी थे।^२ आपको एक गद्य-रचना 'रामकथा' का नाम से हिन्दी में पुस्तकाकार छपी थी। आपकी रचना के स्फाहरण नहीं मिले।



जयानन्द^३

'मिथवन्धु विनोद' (बही, पृथीय भाग, पृ० १७३) में मिथवन्धुओं ने और 'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ० ३१४) में डॉ० प्रियर्सन ने भी आपको कर्ष कापस्थ बतलाया है।



जॉन क्रिश्चियन^४

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ० २१४) में डॉ० प्रियर्सन ने लिखा है कि 'आपकी भाषा की कविता अनन्त ठक पहुँची है और तिरहुत का प्रत्येक गानेवाला आपकी रचना का मूल अर्थ समझे बिना ही गाता है।'



जीवनराम^५

भीसमाशुकरजी ने अपने लेख 'राममऊ कवि जीवनराम रमुनायकवि' (नवराष्ट्र दैनिक, २ जुलाई, सन् १९६१ ई०, पृ० २४) में लिखा है कि (१) आपकी रचना उस समय के एक प्रमुख राममऊ के रूप में थी। (२) आपने वैष्णव धर्म के आरण को सामने रखकर सेष्प-सेष्क भाव की उपासना-प्रवृत्ति पर काफ़ी खोर दिया था। (३) आपने अपने अन्त-स्थान (शिबदाहा, मुजफ्फरपुर) में भगवान् राम का एक मन्दिर भी बनवाया था। (४) आपके पुत्र का नाम रामवल्लभ था, जो ईस्ट-इण्डिया कम्पनी की पटना शाखा में हिन्दी-मुन्शी थे। (५) आपकी मृत्यु ८५ वर्ष की आयु में हुई थी। (६) आपके वंशज आज भी वर्तमान हैं।



१. निरादे-निहार* (१० अधिकरणप ख्यात) की मूलिका में एसी नाम के किसी अर्धक शब्द उचित एक वैयक्त-योग्य शब्द मिलती है। कहा बही का उक्त कि वे आप ही थे वा अन्य से कोई अन्य व्यक्ति।—छ०

—द्वेषित 'वापदे-बवादीली-पवित्र' (भाग ६ अंक १, अर्धिक, स० ११५५(६०) १ ३४१।

२. 'मिथवन्धु-विनोद' (बही, पृथीय भाग), पृ० १७३।

३. —द्वेषित, 'हिन्दी-साहित्य और निहार' (बही) १ १२६।

४. बही १ १२६-२७।

५. बही, पृ० १२७-२८।

जीवाराम चौवे'

'राममठि में रहिक-सम्प्रदाय' (वही पृ० ४२६-४२) और 'परिपद्-पत्रिका' (वही, वर्ष १, अंक ३, पृ० ४२) में डॉ० मय्यतीप्रसाद सिंह ने लिखा है—(१) आपके पिता की इच्छा थी कि आप विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन कर एक प्रसिद्ध प्रतिष्ठित पण्डित बनें। इसी इच्छि से उन्होंने आपको व्याकरण और स्वोक्ति की शिक्षा दी। किन्तु, आपकी प्रकृति इस ढंग की शिक्षा की ओर न होकर योगिक शिक्षा की ओर थी। फलतः आप खरौब (छपरा)-निवासी मनहाराम नामक साधु से 'अष्टांग-योग' और 'स्वरोदन' की शिखाएँ सीखने लगे। आपके पिता को जब इस बात की सूचना मिली, तब उन्होंने आपको नीम माय के स्थान पर मछि-नार्य का अध्ययन करने की राय दी। कुछ विचार विमर्श के पश्चात् मछि-नार्य का अध्ययन करने का निश्चय कर आप भिरान (छपरा) चले आये। वहाँ पहुँचकर आपने अपने पिता का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। उन्होंने धर्म प्रथम आपको 'अप्रवाचनी की ध्यानमंजरी' दी और कहा कि 'इसके अध्ययन से तुम शीघ्र ही प्रसू-कृपा के अधिकारी हो जाओगे।' (२) 'ध्यानमंजरी' का अध्ययन समाप्त कर लेने पर अपने पिता के आज्ञानुसार आप रामचरनदासजी^१ की शरण में (पानकी घाट) अशोष्या चले गये। वहाँ उनके आश्रम में रहकर आपने नृमार-मठि की विधि सीखी। इस बीच आपको महात्मा रामचरनदासजी-द्वारा 'मानस' की टीका भी पढ़ने का औमाग्य प्राप्त हुआ, जिससे आप बहुत प्रभावित हुए। (३) अशोष्या से लौटकर आप भिरान (छपरा) चले आये और अपने पिता की कुटी में रहने लगे। (४) पिता के देहान्त के पश्चात् आपने टिकारी-राज (गया) की सहायता से वहाँ एक मठ बनवाकर अपनी मही स्थापित की। एक प्रकार से वही अब आपका स्थायी निवास हो गया। यों, बीच-बीच में युक्त-दर्शन एवं सत्यं के लिए आप अशोष्या भी बराबर जाया करते थे। किन्तु वस्ती है कि अशोष्या जान पर आप रहते रामचरनदासजी के आश्रम में (जानकी घाट पर) ही ठहरते थे। किन्तु एक दिन जब आपने रामचरनदासजी का अपनी अङ्गन खात देखा, तो आपको बड़ी ग्लानि हुई और आप किसी दूसरे स्थान पर ठहरने लगे। (५) आपको मृत्यु ब्रह्मण का बड़ा शौक था। इसीलिए, 'युगलसरकार' की सेवा के लिए आपने मूर्धन्य ब्रह्मण का काम ही चुना था। इस कला में आप जानकीजी की मण्डल छोड़ और बहन 'अम्बरकलाजी' की ही अपनी आचार्या मानते थे। इस सम्बन्ध में भी कहत हैं कि एक दिन सन्नाहस्था में आपने देखा कि अम्बरकलाजी मूर्धन्य शिक्षा रखी हैं। साथ ही वह भी देखा कि सभी समय सर्वेद्वरो आदशोक्षाजी आ गइं। उन्हें आतं इस अम्बरकलाजी न चढ़कर उनका स्थायत किया। अम्बरकलाजी, विना विधिपूर्

१ —देखिए, 'हिन्दो-साहित्य और विद्या' (वही) पृ० १२७-२८।

२. आश्रम १० उपकन्द्र द्वारा ने इनके एक ही उचित-सम्प्रदाय का प्रवर्तक माना था। इतर बहोत अन्तःस्थापनों के कारण पर वह अब तुलसीदासजी के समकालीन अध्यापकों को सिद्ध माने गया है। भिरे को, इसका ही निश्चय ही है कि उचित-सम्प्रदाय के अध्ययन और प्रवर्त-प्रसार में इनका बहुत हाथ था।—देखिए, 'हिन्दो-साहित्य और विद्या' (आश्रम १० उपकन्द्र द्वारा, अन्वय सं०, सं० २, ०६ (१०) १, १६१।

विशेष शब्द : इशोवर्षी शब्दी (पूर्वदि')

'सम्बन्ध' सिधे और चाखीछाखी की अनुमति प्राप्त किये, आपको मूर्ख की शिक्षा देने में संकोच करती थीं। कारण कि रामचरणदासजी केनाते 'युगसप्रियाजी' (आप) चाखीछाखी की हो परिकर थीं। चाखीछाखी ने उसी समय चन्द्रकलाजी को, आपको अपने समाज में रखने की, अनुमति दे दी और आपको उन्हें ही अपनी आचार्या मानने का आदेश दिया। निम्ना मंग होने पर आपने रामचरणदासजी से स्वप्न का सारा इत्थान कहा और उनसे चन्द्रकला-रस्य की अनुमति चाही। रामचरणदासजी ने आपका अपनी भाषना के अनुकूल आचाय निम्ना की स्वीकृति दे दी। (१) आपकी गबना राममक्ति में रचिक-सम्प्रदाय के प्रमुख संतों में होती है। आपके द्वारा उत्तर-प्रदेश और बिहार में उक्त सम्प्रदाय का बड़ा व्यापक प्रचार प्रसार हुआ। (२) आपके द्वारा रचित निम्नांकित ग्रन्थ मिलते हैं—(क) परावर्षी, (ख) मृगाररस-रहस्य, और (ग) अष्टयाम वासिक।

'राममक्ति-साहित्य में मधुर ज्वालना' (बही, पृ० २३४) में डॉ० सुबनरुबरनाथ मिश्र 'माधव' ने लिखा है—(१) आपके प्रेम-मरे मीठों का एक संग्रह लक्ष्मीनारायण प्रस (सुराबाबाद) से स० १९५६ वि० में साधन बरी १३ को प्रकाशित हुआ था। उसमें विशेषतः साधन, पागुन क मूला और होली क पद हैं। यत्र-यत्र कुछ छंद और पारसो के भी शब्द आय हैं। उसमें कुछ १६० पद और ५६ छंद हैं। (२) आपकी मृगाररस-रहस्य नाम से प्रचलित पुस्तक का 'नाम मृगाररस-रहस्य-रीषिका' था।

'राममक्ति में रचिक-सम्प्रदाय' (बही, पृ० ४०१-४२) में आपकी रचनाओं क निम्नांकित आहरण मिलते हैं—

उदाहरण

(१)

जय श्री चन्द्रकला प्रलवेनी ।
भ्रति सुकुमारि रूप-गुन-भागरि नागरि गर्व गहेली ॥
निमि-कृत प्रगटि सग सिध प्यारा प्रियकारी रसकला ।
चन्द्रप्रमाजी के सुकृत मल्पठठ उसही सता नवेनी ॥
कंचन-वन ममला-प्रमोद वन सोसा-सहरी मेला ।
मोहन जय वीन स्वर टेरति प्रतिमा चित्त नितेनी ॥
'युगसप्रिया' अनुराग सदा सम्बन्ध राग की उला ॥

(२)

नई लगन लसन तोसे भागो ।

या मिथिला का भावनि मैं तेरी विपुल भसी छवि पागो ॥

सै चम्पु पिय प्रमोद-वन में जहाँ श्रुतु-वसंत अनुरागी ।

भवघ रंगमणि-महल कांक्षमा युगलप्रिया बड़भागी ॥

(१)

जादू भरी राम तुमरी नजरिया ।

जेहि चित्तवस तेहि वसकरि रासत सुन्दर श्याम रामधनु धरिया ॥

जुसफन-युत मुख-चन्द्र प्रकाशित नासामणि सटकन मनहरिया ।

युगलप्रिया मिथिला पुर-वासिन फसी जास-विच मनो मछरिया ॥

‘राममठि-साहित्य में मधुर उपासना’ (बही, पृ० २५५-५६) में आपकी रचनाओं का और भी कई उदाहरण मिलते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(१)

भाजु खेसो रंग होरी सखियाँ भापु खेसो रंग होरी हो ।

दशरथ-राजकुमार छल तुम कासि करा वरजोरी हो ॥

तुम रघुवंश-कुमार नाइले मैं निमि-वंश फिशोरी हो ।

कौन बात में घटा हमारे यूथप सखी करोरी हो ॥

रूप-गुनम मे नागर प्यारे हौ नागरि कछु घोरी हो ।

युगलप्रिया मुस्कात छवीसा रंग-महल की पोरी हो ॥

(२)

उमठि उमठि भाई वादरि कारी ।

दशरथ-नंदन जनक-जनी जू बैठे सखिन संग महल भटारी ॥

कुसुमा बसन युगल तन राजत जगमगात भूपण उजियारी ।

भलक विधुरि रहीं मुख ऊपर मुकुट चद्रिका लटक सँवारी ॥

चन्द्रावता मृदंग टकारति चम्रा छानपूर करतारी ।

षंद्रकभाजू बान बजावत गावत उमग-भरे पिय प्यारी ॥

अधिक प्रवाह बड़यो सरयू का भर प्रमोद विसोक्त वारी ।

युगलप्रिया रसिकन क संपति भगम निरखि रतिपति वसिहारा ॥

(३)

रंग झूलै घवष-विहारी हो सरयू-तट संग लिये सिय प्यारी ।
सावन कुज सुहावन पावन रतन भूमि हरियारी ॥
निज-निज कूजन ते वनि भाई निस्थ सखी भधिकारी ।
गावहि सरसाती बरसातो दरसातो सुख भारी ॥
कवहु झुलावत प्यारी प्रीतम कवहु प्रीतम प्यारी ।
युगलप्रिया रसमास परस्पर दपति लीला-धारी ॥



देवीदास'

गया के मन्सूहाल-पुस्तकालय में आपके 'पाण्डवपरितापन' की जो हस्तलिखित प्रति (काम्य ४०) संरक्षित है, उसमें उसका रचना-काल आशियन-कल्प ११, सं० १८४२ वि० (सन् १७८५ ई०) उल्लिखित है ।



देवीप्रसाद

आप मुजफ्फरपुर निवासी थे ।^१ हिन्दी में 'प्रवीण पणिक' नामक आपकी एक पुस्तकाकार प्रकाशित रचना सुनने में आती है । किन्तु, रचना के उदाहरण नहीं मिले ।



नन्दीपति'

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ १११) में डॉ० मिश्रन भ मी आपकी चर्चा की है ।



१ हिन्दी-साहित्य और विहार (बही) पृ ११५ १७ ।

२ मिश्रपत्र-विचार (बही तृतीय खण्ड) पृ १७७ ।

३ हिन्दी-साहित्य और विहार (बही) पृ १११ १७ ।

नवलकिशोरसिंह'

वार्त्तिकी' (सन् १९६१ ६२ ई०, पृ० ४७) में उल्लेख है कि आप अपने बराब कथाओं में मझाराभा थे। आपका राजत्व-काल सन् १८३८ ई० से सन् १८५५ ई० तक था। आपके शासन-काल में अठित्ति-दरबार संघीत के साथ-साथ काव्य-साहित्य का भी मुख्य वेन्द्र बन गया था। आपके दरबारी कवियों में अमृतनाथ झा और सुवन झा के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आपने १५६ श्रुतियों का एक संग्रह काव्यिक कृष्ण त्रयोरणी (गुस्वार) सं० १९११ वि० को 'दुर्गा-आनन्द-धारा' के नाम से कराया था। एक पत्रिका (पृ० ५२-५३) से आपकी निम्नांकित दो रत्नार्पण श्रुत हैं—

उदाहरण

(१)

सब वन फुलें अमवा दौर मुझे,
हारि मानो तुव पग परसन क हेत ।
कायस कोकिला कूक चात्रिक पुकार करत,
मेरे जान कासा नाम रटत नेत ।
मेरो मन मैवर कहाँ भटकत जम सन,
वार वार सिख देत अजहुँ सा चेत ।
'नवलकिशोर' अब अरुण कमल मन वच कमल,
बहु जो मक्तन भी आनन्द मुख दत ॥

(२)

दयाना संभू परना असरन सरनि,
महिमा अपार तुव जात नहि वरना ।
सस सनकादि आवि अन्त न पावत,
वद कहत तेरो नाम भवसागर तरना ।
जोइ जोइ तुव नाम लेत चारो कस ताहि देत,
विविध विरद तरा घोडर ठरना ।
'नवलकिशोर' चातक तुव कृपा करा,
हूँ सुदिष्ट देहा मातु भक्ति अमै करना ॥

‘शिवविह-सरोज’ (वही पृ० १५०) में संभवतः आपका ही निम्नांकित छन्द संकलित है—

सखी येनि वृन्द के सुख को वसाहक भो
 भाँति भाँति दाहक भो सौतिन को छाती को ।
 नवसकिशोर नेह नाह को निवाहक भो
 गान को उमाहक भो गौरभ गुरजाती को ॥
 एरी पिय वादिनी भ्रमोल बोल तरोस्तो
 एकहा बिलोक्यो रो तज्यो बुद स्वाती को ।
 बालन को विप भा पियूप भा पपीहन को
 सीपिन को मुक्ता कपूर केर-पाती को ॥



प्रतापसिंह^१

‘जनस ऑफ् द एशियाटिक सोसाइटी ऑफ् बंगाल’ (खण्ड ५१, पृष्ठ ८२) में लिखा है कि आप महाराज नरेन्द्रसिंह के पुत्र थे, जिन्होंने ‘कनपीघाट’ (कनपीघाट ?) जीता था ।



बालखंडी^२

‘संभवतः का सरभंग-सम्प्रदाय’ (वही, अध्याय ४ पृ० १७७) में उल्लेख है कि आप अधिकतर पसाही (बरहड़वा) मठ में रहा करते थे । यह मठ संभवतः बतिया (जम्शारन) के पास मिरजापुर में है । एक पुस्तक में आपको अनक रचनाएँ संश्लेषित हैं ।



भंजन कवि^३

‘हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास’ (वही, पृ० ३१६) में डॉ० प्रियठन न भी आपको चर्चा की है । एक पुस्तक में इस नाम के एक और कवि की चर्चा मिलती है, जिसका जन्म सन् १७७४ ई० में नरसाया गया है (—देखिए, वही, पृ० २२४) और जिन्हें ‘शु गार-संग्रह’ नामक पुस्तक का रचयिता भी कहा गया है ।

१ आपका दरिद्र ‘हिन्दी-साहित्य और विहार के प्रथम खण्ड में (अनपठ तो स्वान्तो पर—एक स्थान पर ‘प्रथम सिंह’ और दूसरे स्थान पर ‘ओरनाछयव’ नाम से) प्रकाशित है।—वही पृ० १४० तथा १२० ।

२ —देखिए, ‘हिन्दी-साहित्य और विहार (वही), पृ० १३१ ।

३ वही, पृ० १५२ एवं १५३ ।

'मिथकम्पु विनोद' (परी द्वितीय भाग, पृ० ८८५-४६) में भी इस नाम के एक कवि का उल्लेख है, जिनका जन्म स० १८३० वि० में हुआ था और जिनकी 'शु गार-संग्रह' नामक पुस्तक की भी चर्चा है। मिथकम्पुओं न बतलाया है कि वस्तुतः यह (शु गार-संग्रह) सरदार कवि की रचना है।

'जर्मन ऑफ़ व एशियाटिक सांघाहदी ऑफ़ बंगाल' (खण्ड ५३, पृ० ६०) में आपकी रचनाओं के दो उदाहरण हैं।



भङ्गुर'

आप शाहाबाद जिले के निवासी थे।^१ आपके सम्बन्ध में अनेक जनसूत्रियाँ प्रचलित हैं। कृषि-सम्बन्धी आपकी अनेक उक्तियाँ लोक प्रचलित हैं। आपकी उक्ति का माया में मोनपुरी की बहुलता स्पष्ट शील पड़ती है, अतः आप मोनपुरी-क्षेत्र के प्रतीक होते हैं। आपकी प्रसिद्धि एक स्त्रीविषी के रूप में भी थी। आपके द्वारा रचित 'स्त्रीविषी राजुनाबखो' आज भी मिलती है। संयाकार आपकी एक ही रचना 'भङ्गुरीपुरा सुनने को मिली है, जिसके उदाहरण नहीं मिले।



मिनकराम'

'संतमठ का सरमय-संग्रहाव' (परी, पृ० ११७) में लिखा है कि आप 'निरवानो' (निवासी) मठ के पोषक थे।^२



- १ मिथकम्पुओं में आपका नाम मरुपुरी बतलाया है।—देखिए, 'मिथकम्पु-विनोद' (परी, दूसरे भाग) पृ० ६२२।
२. डॉ० जिनसंग-द्वय 'हिन्दी-सहित्य का प्रथम इतिहास' (परी), पृ० ११६ तथा मिथकम्पु-विनोद (परी) पृ० ६२२। आपके रचना की माया (ग्रामीण जनजी) का उदाहरण पर मिथकम्पुओं में आपने लिखा-
राम का अनुग्रह विद्या के बाहर जो किष्ट है।—देखिए, परी।
- ३.—देखिए, 'हिन्दी सहित्य और बिहार' (परी) पृ० १४२।
४. सरमय-संग्रह, लुधियाना जो खेदि में विरक्त होने का उक्त है— निरवानो और 'परवादी'। प्रथम में कियो के लिए कोई रचना नहीं है। यह खेदि के संतो के (जिन खेदी-मारी निवाहन आदि बरना ब'बल है। ये संत अपने मठों में पुष्पग्रन्थ तक नहीं करते।—सं०

मगधूलाल^१

आपका उपनाम 'मूरत' था, किन्तु आप प्रसिद्ध थे साक्षात् मगधूलाल के नाम से। अपनी रचनाओं में आप अपना यही नाम रखते थे।

आप दरमंगा शहर के 'मिमटोला' सुहस्ते के निवासी भीवास्तव कायस्थ थे। आपके जीवन का अधिकतम मिफिला-नरेश महाराज माधवसिंह के दरबार में व्यतीत हुआ।

आप फारसी के बड़े ज्ञाते थे। प्रथमापा में आपने ही खण्डकाव्यों की रचना की थी—(१) इकिमबी स्वयंवर और (२) पार्वती-स्वयंवर। इन दोनों का प्रकाशन अभी तक नहीं हो सका है। अतः, आपकी रचनाओं के उदाहरण नहीं मिलें।



मनवोध^२

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही पृ० २०८) में डॉ० प्रियदर्शन और 'मिथक्यु विनोद' (वही, द्वितीय भाग, पृ० ७०२ ३ और ७२६) में मिथक्युओं ने भी आपकी खोज की है। डॉ० प्रियदर्शन न लिखा है कि आपका विवाह 'मिथक्युविवाह' नामक स्वच्छि की कन्या से हुआ था, जिससे आपके एक सड़की हुई। मिथक्युओं ने एक स्थान (पृ० ७०३) पर आपका रचना-काल स० १८०७ वि० और छुट्टे स्थान (पृ० ७२६) पर स० १८२० वि० में बतलाया है। उनके ज्ञेयानुसार आपका वास्तविक नाम 'मोहन झा' था और आप एक प्रसिद्ध नाटककार थे।



महावीरप्रसाद

आप भागलपुर निवासी कायस्थ थे।^३ हिन्दी में आपकी एक पुस्तकाकार रचना 'ज्ञानप्रमाकर' नाम से सुनी जाती है। किन्तु, रचना क उदाहरण नहीं मिले।



१ अथवा यह खरिदप डॉ० तिवाराम तिवारी (डॉमर्स कॉलेज प्रयाग) द्वारा प्रथम-विस्तारितात्मक में पी-एच् डी० के लिए प्रस्तुत किने एवे रोच-ग्रन्थ (हिन्दी के मध्यकालीन साहित्य-ग्रन्थ) के आधार पर टीका किया गया है।—स०

२ —द्विज 'हिन्दी-साहित्य और विहार' पृष्ठ १ (वही) पृ० १४०-४८।

३ मिथक्यु-विनोद (वही पृष्ठ ७०३) पृ० ११३।

महीपति^१

हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास (वही, पृ० १९०) में डॉ० प्रियदर्शन और 'मिथकन्धु विनोद' (वही, तृतीय भाग, पृ० ६६४) में मिथकन्धुओं ने भी आपकी खोज की है।



रघुनाथदास^२

गया के मन्हास-पुस्तकालय में आपके नाम के ही किसी व्यक्ति के लिखे 'भाल गोपाल-चरित' नामक काव्य-ग्रंथ (काव्य-५४) की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।



रमापति उपाध्याय^३

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (वही, पृ० ३२१) में डॉ० प्रियदर्शन ने भी आपकी खोज की है।



रामदयाल तिवारी

आप हरमना जिले के मौड़ नामक ग्राम के निवासी थे।^४ संवत् १८६१ वि० (सन् १८३४ ई०) के लगभग आप परछोकनामी हुए।^५ हिन्दी में आपकी कुछ स्फुट रचनाएँ ही उपलब्ध हैं।

उदाहरण

मज्जु राम नाम राम नाम रामा
राम-नाम वेद-मूल, इनके नहीं और तूस,
भजत नसत त्रिविध सूत, छूटत भव-धामा ॥१॥
राम-नाम विमल नीर, संगम सत्संग-तार,
मज्जत निर्मल शरीर, पावन निज धामा ॥२॥

१ —देखिए, हिन्दी-साहित्य और विहार' (वही), पृ० १४०।

२ वही पृ० १३० २१।

३ वही, पृ० १३१ २२।

४ 'मिथकन्धु-विनोद' (वही चतुर्थ भाग) पृ० ६६४।

५ सँ १८६१ वि० (सन् १८३४ ई०) में मिथकन्धुओं ने आपके विषय में लिखा था कि एकदा देखा
हुए ली वर्ष के लगभग हुए हैं। इसी आधार पर आपका जन्मसमय सँ १८६१ वि० (सन् १८३४ ई०)
के आसपास अनुमान होता है। —देखिए, वही।

राम-नाम कमल-फूल, संतन-मन भ्रमर भूल,
 पीवस रस भूमि-भूमि प्रमृत धनुषाना ॥३॥
 राम नाम निराकार, रामछात्र नमस्कार,
 दीजे हरि-भक्ति सार, पय पल मर रामा ॥४॥^१



रामप्रसाद^२

गया के मन्मथान्त-पुस्तकालय में आपके नाम के ही किसी व्यक्ति के लिखे 'उदात्त-सार' नामक रचन-ग्रंथ (दर्शन २२) की एक हस्तलिखित प्रति सुरक्षित है।



रामरूपदास

आप मगध-देश के 'धनौष' नामक किसी ग्राम के निवासी^३ रामाबल्लभिय वैष्णव-ग्रन्थों के मूल थे। हिन्दी में लिखित आपके ग्रन्थों का एक संग्रह 'मोपाससागर' नाम से मुम्बई में छाटा है। विभक्तियों के मतानुसार आप सं० १६११ वि० (सन् १८७४ ई०) में परलोक विधारे।^४ आपकी रचना के उदाहरण यहाँ मिले।



रामेश्वरदास^५

भीष्मारांकरजी ने 'संत साहित्यकार रामेश्वरदास' शीर्षक अपने लेख ('नवराष्ट्र', १३ जुलाई, सन् १९११ ई०, पृ० ३) में लिखा है—१ आप एक रामोपासक घरघुपारीय कारकप गोपीय ब्राह्मण पं० चिन्तामणि के पुत्र थे। २ आपका शरीर लम्बा सगढ़ा था और आप विष्णु-पकार के नामी पहचानों में थे। ३ आप प्रतिदिन पाँच छन्दों की रचना करके ही अथ-बस प्रवृत्त करते थे। इस नियम का पालन आपन आसीस वर्षों तक किया था। ४ आपकी रचनाओं का संग्रह आपके एक पंशपर पं० कस्तुरी रंगनारायणजी से प्रकाशित किया है। उन्हीं के मतानुसार आप सं० १८८३ वि० (सन् १८२८ ई०) की अज्ञेय-कृष्णाष्टमी को एक सौ बस वर्ष की आयु^६ में परलोक विधारे।

१ 'विभक्त्यु-विशेष' (वही अनुसंधान), पृ० ४२।

२ 'विष्णु-साहित्य और विचार' (वही), पृ० १२६।

३ 'विभक्त्यु-विशेष' (वही, पूर्व भाग), पृ० १००।

४ संत लक्ष्मण आशुतोष शर्मा की वही। वही आधार पर आपका जन्म अनुमानित सं० १७११ वि० (सन् १७१२ ई०) में हुआ बात होता है।—देखिए, वही।

५ सं० 'वि० सा० और वि०' (वही प्रथम खण्ड) १ ११८-११९।

६ वही आधार पर यह स्पष्ट है कि आपका जन्म सन् १७१८ ई० में हुआ था। अन्तरही टिप्पणी के कारण में आपका जन्म और शब्दीसर्वोपनी टिप्पणी के पूर्वार्ध में आपका उदात्त हुआ।—सं०

वृन्दावन^१

'ग्रहस्य' (वही, भाग १६, बंक ११) युववार, १४ सुहाएँ, सन् १९१२ ई०, पृ० १८२) में भीहारकाप्रवाह एत ने आपका संक्षिप्त परिचय प्रकाशित कराया था। उन्होंने आपका जन्म-स्थान शाहाबाद का 'बारा' नामक स्थान बतहाया है, जो भ्रामक है। उनके हेल्लानुसार आपका पूरा नाम कुन्दावन जैन, आपके पिता का बर्मचन्द्र जैन और पुत्रों का अभितदास जैन तथा शिखरचन्द्र जैन था। उनका यह भी कहना है कि आपसे अपने पुत्र अभितदास जैन को पढ़ाने के लिए जिस छन्दोग्य की रचना की थी, उसका नाम 'छन्दगतक' था और आपक पुत्र अभितदास आपके झूठे 'जैन रामायण' की ८१ सर्ग तक ही रचना कर, सन् १९१५ ई. में, असमय ही काष्ठ-कनठित हो गये।



शंकरदत्त^१

'शिवसिंह-सरोज' (पृ० १०७८) में शंकर नामक एक कवि की निम्नांकित रचना संकलित है। पता नहीं, यह रचना आपकी ही है या आपसे भिन्न किसी दूसरे शंकर कवि की।

वाटिका विहारी भमिसार को सिधारी भारी
शंकर घँघेरी में उजेरी कँसो बंद है।
नाचों को विपम मेह दीप-सी दुरै न देख
नागर के नेह को सनेह दृष्टि बंद है ॥
शिवा जान्यो नागरि पिशाचिनि कामक्षा जान्यो
मृगनि कलानिधि भौ छनी जान्यो छंद है।
विज्जु जान्यो घनघोर घटापट मोर जान्यो
मोर जान्यो घोरनि बकोर जान्यो छंद है ॥



१ —वेधिय, हिन्दी-साहित्य और विद्या' (वही), पृ. ११३-११४।

भोगुल द्वारा लिखित एक परिचय में आपकी रचनाओं का निम्नांकित पदावली १९१५ की दिना बन्द है, विष्णु की कर्म-कण्ठि मटी वैदकी

एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव
एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव
एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव
एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव

एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव

एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव एव

२. 'शिवसिंह-सरोज और विद्या' (वही) १० १९०।

शिवप्रकाश सिंह^१

आपका जन्म सन् १७८७ ई० में शाहनाह जिले के हुमरौक-रावबंश में हुआ था। आप महाराज जयप्रकाश सिंह के सहोदर भाता थे। अतः, आप भी 'महाराज बहादुर' कहलाते थे।^२

आप जगतक जीवित रहे, सततक परोपकार में ही लगे रहे। अपने जीवन के उत्तरार्ध में बेराम्य का संघार होने पर आप काशी जाकर बस गये। वहाँ आपसे सरकार को १५ हजार रुपये मन हिस्सार्थ बान किया था, जिससे बरक नदी पर एक पुल का निर्माण हुआ।

आप हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत-भाषा के बड़े अध्येता थे। जब आप हुमरौक में थे, तब आपने 'सहस्रगणितशास्त्र', 'श्रीसुखसुखरंगिणी', 'मायवत-उत्सवभास्कर', 'बेहस्तुति की टीका', 'उपदेश-प्रवाह' आदि ग्रंथों की रचना की। काशी में रहकर आपने भीमोत्थामी तुलसीदास-कृत 'विनयपत्रिका' की टीका 'रामतत्वबोधिनी' के नाम से लिखी, जो अपनी मस्तिष्क-माधुरी के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध हुई।^३

आप काशी में ही, सन् १८४६ ई० की फाल्गुन-कृष्णपक्षी (जम्दवार) को, मुक्तिपाम विचारों।



उदाहरण

(१)

गणपति शब्द से ऐश्वर्य सूचित किये जगदम्बन पद करि जगत्-परयत्न जनाए सुमन और नन्दन दोनों पद पुत्रवाचक हैं तहाँ अर्थ की पुनरुक्ति देवे का आशय ऐसो है कि कोऊ की माता श्रेष्ठ होय है कोऊ की पिता इहाँ माता पिता दोऊ की श्रेष्ठता जनायवे निमित्त पुनरुक्ति पद दिये यदा शिवजी के पुत्र भवानी के नन्दन नाम भ्रान्तकर्ता यह

१. डॉ. मंगलदीनसाह सिंह ने आशुभ रिविडिक्शन ११वीं शती कृतकता है। — देखिए, 'रामधर्म से उत्सव-संगणक' (वही), पृ० ६४६।
२. विष्णु-विश्वकोश के अन्वय आशुभक से १८११ ई० (सन् १७४४ ई०) पठनाया है। यह अशुभक है। — देखिए, 'विष्णु-विश्वकोश' (वही, एशिया भाग), पृ० १११६।
३. 'निहार-वर्ण' (वही), पृ० १२०।
४. महापद्म जयप्रकाशसिंह बहादुर सन् १८०२ ई० में पण्डितदासन पर देहे और ईश-विवाह-कृतकी द्वारा 'महापद्म बहादुर' का पर दिया। तब से हुमरौक के राजा कोस 'महापद्म बहादुर' होते आये। — 'आत्म-परिचय-कर्म' (वही) पृ० ६।
५. इस टीका की एक प्राचीन मुद्रित प्रति, जो बनारस, सन् १८८० ई० में अण्णक के बरत/किशोर प्रेस से प्रकाशित हुई थी, निहार-वर्णनाम-परिचय के अनुसंधान-पुस्तकालय में सुरक्षित है। — सं०

हेतु ते कि श्रीगणेश जू को गर्भ तें आविर्भाव नहीं हे सर्वसिद्धिन्ह को गृह अर्पति श्रीगणपति कृपा वितरेक काहू को कोऊ सिद्धिकी प्राप्ति नहीं होति जगवन्दन पद ध्यान के अर्थ जानना विनायक नाम विघ्नन्ह के स्वामी जो कोऊ जीव ध्यान पूजन वितरेक कार्य आरम्भ करे है ताको विघ्न के कर्ता यह भाव है कृपा के समुद्र अर्पति घोघ्र वयालु होवे को सुभाव जाको पूर्वं गजवशन पद दिये छते भयानक कोऊ वून्के यह निमित्त सुन्दर कहे सब शायक पद को यह भाव है कि केवल इहलोक को सुख ऐश्वर्यादि ही के दाता नहीं किन्तु योगिन को परलोक सम्बन्धी सुख के भी दाता यह भाव है मद्दू है प्रिय जाको अर्पति घोघ्री पूजा मो प्रसन्न होवे की स्वभाव जाको मुद नाम अन्तरंग आनन्द मंगल नाम वाह्य उत्सव विवाहादि के दाता अर्पति सेना घोरा देना अन्त सुख विद्या के समुद्र अर्पति जो काहू को विद्या होय है सो इन ही को कृपा-कटाक्ष त बुद्धि के विधाता नाम ब्रह्म अर्पति जाके अनुग्रह वितरेक बुद्धि को प्रकाश नहीं होत ऐस जो आगणपति तेहते तुलसीदास अति नम्र हो करि याचें हैं कि श्रीजानकी रघुनाथजू मेरे अन्तर्करण मा वस याको यह भाव भयो कि भगवत् उपासक को भगवत् वितरेक मोक्षपर्यन्त पासना नहीं होति यह भाव है ।'

(१)

प्रथम पद को ध्यास्या अधिक भयो यह रीति तें सर्वप्रश्न को अर्थ भाव कहत ग्रन्थ बहुत विस्तार होयगो यह हेतु तें सुलभ पदन को अर्थ तो न लिखेंगे जहां जहां कठिन पद हैं तथा अर्थ को कठिन्य है तहका भावाय कहेंगे तथा जैसे सस्कृत को अन्वय उभटा करि होत है तंस अन्वय किये वितरेक बहुत पदन का अर्थ नहीं स्पष्ट होत है एक हेतु जहां तहां नीचे ते कहूं कहू मध्य त अन्वय करि अर्थ लिखेंगे ॥'

(१)

तुलसी प्रसाद हिय तुलसी श्रीरामकृपा
 सोई भवसागर के पुत्र सी ह्वै लसी है ।
 आकी कविताई अनरण-तव टगा सम
 गङ्गा की सी धार मक्तजन मन घसी है ।
 परम धरम मारतह उर व्योम ऊग्यौ
 काम क्रोध लोभ माह तम निसि नसी है ।
 वाही के प्रकाश यम गन मुंह मसि सार्ई
 भसि सुख पाई जिय मेरे भाय वसी है ॥^१

(५)

इं तुलसी को गहि रहौ जो चाहत विश्राम ।
 बाहर भीतर सहज ही होत अधिक भिराम ॥
 तुलसी-भाष धारन किये बाहर होत सुबेप ।
 तुलसीकृत के गहत ही भवल मक्ति की रेख ॥^२

✽

शेखावतराय

आपका पूरा नाम था सुहम्भर शेखावत^३ राय । आपकी रचनाओं में कहीं-कहीं आपके नाम के साथ 'दात' भी आया है ।

आपका जन्म धारन जिले के मयासपुर^४ नामक ग्राम में हुआ था ।^५ कुछ लोगों ने आपका सम्बन्ध महाकवि केशवदास से जोड़ा है, जो ग्रामक शाठ होता है । श्रीदुर्गाशंकर प्रसाद सिंह की खोज के अनुसार आप प्रसिद्ध कवि शौकाराम के चाचा थे । माय जाति के माठ थे और अनेक छंदों में रचनाएँ करते थे । षोड़ी पर बहकर आप हनुमान्, मन्त्रोत्ती, पतार, मनिकावर, बाँसडीह आदि दरबारों में जाकर कविताएँ सुनाया करते थे । अड़ीबोली के अतिरिक्त आपकी रचनाएँ भोजपुरी में भी मिलती हैं । पुस्तकाकार आपकी निर्मांकित रचनाएँ मिलती हैं—१ रावण-संवाद, २ मन्त्रोत्ती तथा ३ हरकिशुन-चौटीसी ।^६

आपकी मृत्यु अस्मृत शूद्रावस्था में हुई ।

१-२. 'विजयचरित्र की रामकृतिकी टीका' (वही), पृ. २ ।

३. श्रीदुर्गाशंकरदास सिंह (वही) पुर. रामदास की खोज के अनुसार अन्तःसंस्कृत के मर के समय एक 'सुभाषित राव' कवि भी हुए हैं जो आपसे भिन्न नहीं थे ।—सं

४. यह ग्राम मन्त्रोत्ती के तीर पर सिलहवा बन्दे में बसता है ।—सं

५. कन्नड विद्वान्महोदय विन्नी-साहित्य-सम्मेलन (द्वितीय) के स्वयंसेवक अन्तःसंस्कृत के मायप थे ।

६. इसकी रचना अरुण प्रकाशिकाधी और मन्त्रोत्ती के मर के समय के अन्तःसंस्कृत के सिलहवापर अन्तःसंस्कृत सिंह पर हुई है ।—सं

उदाहरण

(१)

नाना हैं कृपान कर बाबू कुंवर सिंह
 बाहिनो भ्रमंग बाह फरकत फर-फर ।
 साय के समीपी लिये छिपी मुञ्च जोह रहे
 जितने सिपाही वात पूछत हैं डर-डर ॥
 'सत्तावत' कहत हृषियार की तैयारी देख
 कादर दो कूरन के कपाट लगे घर-घर ।
 चढ़ के तुरङ्ग रङ्गभूमि में उजैन-वंस
 मल्लि के सख्य परि डर कपि घर-घर ॥^१

(२)

इत-उत दोऊ दस चढ़त मैदान बीच
 धारा के समान गोली तोप छूटे भ्रम-भ्रम ।
 चचल घदन मन तुपक तयार करि
 मार गोला भंग म जु बँठि जात गप-गप ॥
 कहत 'सखावत' घाय रहे घूम चहुँ घोर
 गिर लोप लोघन पर बाजत हैं घप घप ।
 गोरा साहवान के जवान भये चटपट
 बाबू कुंवरसिंह के कृपान काटे छप-छप ॥^२

साहवरामदास^३

'मिभक्त्यु विनोद' (बही, चतुर्थ खण्ड, पृ ८२) में आप दरमंगा-जिते के पचाड़ो स्थान' के निपाती बतलाये गये हैं ।



१ श्रीरामेश्वर राव (बलिका-जित्त) के भाए-भयि) से प्राप्त ।

२ ऊही से प्राप्त ।

३ —देखिए हिन्दी-सहित्य और विहार (बही), १ १७४-७५ ।

हरतालिकप्रसाद त्रिवेदी

आप मोबपुर (राहाबाद) के निवासी थे।^१ हिन्दी में आपकी एकमात्र पुस्तक 'हनुमानाष्टक' की खर्चा मिलती है। उदाहरण नहीं मिले।



हरिचरणदास^२

'हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ० ३०५-६) में डॉ० प्रियदर्शन ने लिखा है—(१) आपका नाम 'हरिकवि' भी था। (२) आप 'भाषा-भूषण' की 'अमरकार खण्डिका' नामक और 'कविप्रिया' की 'कर्णभरण' नामक छन्दोबद्ध टीकाओं के रचयिता थे। (३) आपने 'अमरकोष' का एक भाषानुवाद भी तैयार किया था।^३

'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का सक्षिप्त विवरण' (बही, पृ० १५४, १५७ और १६३) में लिखा है—(१) आप जैनपुर-श्याम (जोधा-बरगना, धारन) के निवासी सरपू पारीस ब्राह्मण थे। (२) आपके पितामह का नाम बासुदेव या और आप (राजस्थान) के कृष्णखण्ड-नरेश राजा बहादुरराज के पुत्र विरबन्धु के आश्रित थे जो सं० १८३५ वि० (सन् १७७८ ई०) के लगभग वर्तमान थे।

'हिन्दी हस्तलेखों की खोज की १९२१-२२ की स्मारकपी रिपोर्ट' (बही, सन् १९२६ ई०, पृ० ६६-७०) में उल्लेख है—(१) आपका रचना-काल सन् १७५७ ई० से सन् १७७६ ई० तक है। (२) 'भाषा-भूषण' की टीका का नाम 'अमरकार' भी था तथा सतसई-टीका आपका निम्न के पर्याय 'हरिप्रकाश-टीका' के नाम से प्रसिद्ध हुई और विद्वानों द्वारा प्रसिद्ध भी। (३) आपकी कृतियों का रचना-काल इस प्रकार है—

(क) 'कविप्रिया' की टीका-रचना सं० १८३५ वि० में माघ शुक्ल १५, शुक्रवार, ५ फरवरी, सन् १७७६ ई० को हुई।

(ख) सतसई-टीका की रचना समाप्त हुई— सं० १८३४ वि० की ज्येष्ठशुक्ल (२२ अगस्त, सन् १७७७ ई०, मंगलवार) को।

१. 'विश्वकर्म भूषण' (बही, एवीए भाग), पृ० १०११। विश्वकर्मों के 'भोबपुर' नाम लिखा है। राहाबाद का भोबपुर ही मिलेय प्रसिद्ध है। अनेक स्थलों में विश्वकर्मों के लिखे दो रचनाओं का विशिष्ट पता नहीं दिया है जिससे हम में संक और बिबाधा रह जाती है तथा भ्रम भी होता है। इनका लिखा भोबपुर मध्यप्रदेश का है या बिहार का टीका-टीका बरतक कर्मण है। पर राहाबादी भोबपुर में पता क्या है कि आप (त्रिवेदीजी) राहाबादी भोबपुर के ही थे।—स०

२. —देखिए, हिन्दी-साहित्य और विद्या (बही), १ २०५-२०६।

३. श्रीकेशदेवराज गुप्त के कथपत्रसूत्र 'कलाधारा' का कथपत्रसूत्र संस्कृत अक्षरमाला (पृ० ३०) के लिखे 'हरि' नामक श्लोक में सं० १७६२ वि० में किया था।

(ग) 'समा-प्रकाश' का रचना-काल सं० १८१४ वि०, भाग्य शुक्ल ११, शुक्लवार (२६ जुलाई, सन् १७५७ ई०)।

(घ) बृहत्कविकल्पम का रचना-काल सन् १७७८ ई०।

बिहारप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन (सीतामढ़ी) के समापति भीतिपत्रनम्बन सहायजी ने अपने भाष्य में बतलाया है—(१) आपका निवास-स्थान धारन जिले का प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान 'चिरान' नामक ग्राम था। (२) आपकी बिहारी-सवसई की टीका की, जो 'हरिप्रकाश टीका' के नाम से प्रसिद्ध हुई गणना सवसई को उत्तम एवं प्रामाणिक टीकाओं में होती है।^१



शोभानाथ^१

'शिवसिंह-सरोज' (बही, पृ० १२४) में इसी नाम के एक और कवि की निम्नांकित रचना संकलित है। पता नहीं, दोनों एक ही व्यक्ति हैं या एक दूसरे से मिश्र।

उदाहरण

दिशि विविशान ते उमड़ि मड़ि सीनो
 नम छोरि दिये धुरवा जवासे यूप जरिगे ।
 डठडठे भये ब्रुमरअक हुवा के गुण
 कुहकुह मुरवा पुकारि मोद भरिगे ॥
 रहि गये घातक जहाँ के सहाँ देसत ही
 शोभनाथ कहुँ-कहुँ बूँदहुँ न करिगे ।
 छोर भयो घोर चहुँ छोर नम-मसडल मे
 आये पन आये धन आय कौ उमड़िगे ॥



१ अपने रूप लिखा जो रे—

छेर बिहाटी पदन जो पड़े न काहू घस ।

केरी टीका करत है हरिबनि हरिप्रकाश ॥

—छक्ति, बही अक्षर ।

२. —देखिए 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (बही), पृ० १११ ।

देवदत्त^१

गया क लेखक और कवि' (वही, पृ० ८१) में लिखा है कि (१) आपका नाम 'इत्थमाचीन' भी था। (२) आप गया^२ बिस्ले के निवासी थे और आपका रचना-काल सं० १८०४ वि० (सन् १७४० ई०) था।

'हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का सङ्ग्रहित विवरण' (श्यामसुन्दरदास, पहला भाग, प्रथम सं०, सं० १६८० वि०, पृ० २४) में आप कुँवर फतहसिंह (टिकारी-नरेश के उत्तराधिकारी, सं० १८०४ वि०) के आभित परलयाये गये हैं।

'शिवविह-सरोज' (वही, पृ० १३४) में उदाहरण-स्वरूप आपका निर्माकृत छन्द उद्धृत है—

उदाहरण

सून केलि-मन्दिर मे नायक नवीने साथ

नायिका रसीली रस बात को छुवा गई।

देवदत्त कौनहूँ प्रसंग ते सुने ते नाऊ

सौति सों रिसाइ पिय प्यारी को बिदा दई ॥

ताहि समय पापी पपीहा की घुनि कान परी

भाँसुई अनंग श्रुतु पावस की हूँ गई ॥

छूटे कस छटा देखि-देखि मेघ घटा बात

फिरं भटा-भटा बाजीगर को बटा भई ॥

✽

प्रयागदास^३

आपकी रचनाओं में आपका नाम 'परायदास' और 'प्रागदास' भी मिलते हैं।

आपकी जन्मभूमि का पता नहीं चलता। 'रसिकप्रकाश-मञ्जुसा' में लिखा है कि आप बाङ्गावस्या में हो विरक्त होकर काशी तथा प्रयाग होत हुए जनकपुर पहुँचे,

१ —देखिए, 'हिं-टी-सहित और विवरण' (वही) पृ० १६७।

२. इन पुस्तक के प्रथम अंक में आपका सम्बन्ध बनारस के 'बाबुदास' (उत्तरपरेठ) उद्धृत है। पर आप मधु-बिन्दु के टिकारी-नरेश में ही रहते थे। अतः आप मधु-बिन्दु के निवासी माने गये।—सं०

३. आपका प्रस्तुत परिचय डॉ. मनमोहनदास सिंह द्वारा लिखित कौन्सी के अन्वय पर तैयार किया गया है।—देखिए, 'उत्तर-परेठ में लिखित-सम्बन्ध' (वही) पृ० ३०२ ३ तथा 'परिचय-परिचय' (ऐतिहासिक, वर्ष १, अंक ३, सन् १९९१ ई०) पृ० २८ ३०।

४. 'परिचय-परिचय' में आपने यम का पदो रूप उद्धृत किया है। सं० मनमोहनदास सिंह को आपकी ओर तीन बरस (१९५१-५२) हुए हैं। उनमें भी आपका पदो नाम मिला है।—देखिए, वही।

जहाँ महात्मा छूरकिशोर से आपने श्री गारी उपासना का रहस्य प्राप्त किया। मिथिला के गाँवों में अनेक दिनों तक 'नर्मसखा' के रूप में आप प्रसिद्धा करते रहे। जब बड़े हुए, तब आपके हुए छूरकिशोरजी^१ ने आपको 'करवा' लेकर अपनी पुत्री (सीता) से मिथान के लिए अयोध्या भेजा। अयोध्या पहुँचकर आप सीधे कनक-मनन गये। वहाँ आप अपनी बहन से 'करवा' लेकर एक नीम के पेड़ के नीचे रहने लगे।^२ अयोध्या में कई वर्षों तक इस प्रकार जीवन यापन करने के पश्चात् आप पहले मिथिला और फिर प्रयाग चले आये। प्रयाग में आप त्रिकुली-संगम पर रहते थे। इसी समय कई शैवमतवादात्मियों को, शास्त्रार्थ में पराजित कर, आपने अपना शिष्य बनाया था। कहते हैं, एक दिन संगम पर किसी कथा में राम-बनयमन का प्रसंग सुनकर मातृकता-वश आप व्याकुल हो गये और श्रीम ही तीन बोझे लूँ और तीन चारपाइयों को सिर पर लेकर चित्रकूट की ओर चल पड़े। चित्रकूट में जब श्रीसीताराम और लक्ष्मण के दर्शन आपको न हुए, तब आप पंचवटी गये, जहाँ आपकी साध पूरी हुई। पंचवटी से आप पुनः अयोध्या और फिर मिथिला चले आये।

आपने 'बनकपुर के सखा' नाम से रसिक-साधना में एक नवीन मार्ग का प्रवर्तन किया था। इस दृष्टि से उक्त साधना में आपका विशिष्ट स्थान माना जाता है। आपकी कोई पुस्तकाकार रचना नहीं मिलती, स्पष्ट काव्य-रचनाएँ ही मिलती हैं।

उदाहरण

(१)

दामिनी-सा सिय-संग विराजति
माति हिय बग-पाति छर है।
हेम जनेउ मनी धनु इन्द्र की
पीत पिछोरी के रूप जए हैं ॥

१. इनका परिष्कृत स्ती पुस्तक में सम्मिलित है। इनके शिष्य होने के नाते आप अपने को बालकीजी का छोटा भाई मानते थे। स्ती प्रकार पर श्रीगामी आरके बहनोई होते थे। अपने इस नाते पर आपकी बरा बर्तना। अयोध्या के सखाओं को वे मधुर पण्डितों देते थे। वहाँ वास्तव-व्यवहार के एक ठका अर्थ-वास्तविक उन्हें 'माता' करते थे किन्तु आप 'माता प्रान्तवास' के नाम से विख्यात हुए।

—'दामिनी में रसिक-साधना' (पृ. १०४-११)।

२. अथवा अथवा श्रीराम के सम्मिलन में अथवा में अथवा भी निम्नलिखित पंक्तियाँ प्रसिद्ध हैं—

पीत के नीचे पाद पड़ी है पाद के नीचे करवा।

'अथवा' अथवा श्री रामकथा के लया।

आपने विष्णु-नामना भी पढ़ी ही लीज थी। अयोध्या में मैत्री के लयने पर आप रामकथा के किन्तु पेटों में रहने लगे जाते थे। मैत्री को आपने देवियों का रूप बसा है—

मुझमें वे वरुण रचा है हरे काम का मैत्री में।

'अथवा' एवम् को लेके, पढ़े रहने देती में ॥

बैन कड़ें मुस तें भ्रमाघार-सो

दोनन कौ वरसाइ दए हैं ।

भावें सदा 'प्रागदास'-मयूर कौ

रामलसा घन से उनए हैं ॥'

(२)

स्याहा सिताई ललाई किये

जहाँ जात निछावर भैन घन हैं ।

कुडल लोल लसैं भनकें ढिग

पोन कपोल सुगध-सने हैं ॥

मोती विराजति नासिका में

वरनौ कहा ख्य के तंघु तने हैं ।

सोहैं सदा 'प्रागदास' कौ भावत

रामलसा जू के नैन बने हैं ॥'

(३)

प्राथे प्यार रामजी सला । तुम्हारे बदन पर भनत कसा ॥

मुख मे बारा नैना बिसान । जित चितए तित कर निहाम ॥

जहाँ पड़े भक्तन पर भीर । हरपत भावें सिय-रघुवीर ॥

छोटा-सा घनुम्याँ छोटी-छाटा तार । खेलन निकस सरजू के तीर ॥

'प्रागदास' चल सरयू-तार । बीच मे मिलि गए सिया रघुवार ॥'

(४)

परागदास जो पीपर होते, राधो हात नुस्वा रे ।

प्राठ पहर छाती पर रहते, व दसरथ के पुतवा रे ।

धुनि-धुनि कसवा कहै महेसवा, पार न पारि सेसवा ।

परागदास पहसदवा के कारन, रघवा होइगे वधवा ।'

१ 'परागदास' (११) वरि २ अंक ३) १ ४० ।

२. वरी ।

३. वरी । उक्त तीर्थे (११) वरि ३ अंक ३) वरि ४० ।

४. अम्पति मे टिक-सम्पत्त (११) १० ४ ३ ।

लक्ष्मीनाथ ठाकुर^१

डॉ० प्रियसन ने भी अपने 'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ० २१३) में बतलाया है कि (१) आप सन् १८७० ई० में बसमान एक मैथिल कवि थे। (२) आपने बैसवाड़ी बोली में बहुत-सी रचनाएँ की थीं, जिसके कारण आपको पर्याप्त प्रसंसा हुई।^२



सरसराम^३

'हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास' (बही, पृ० ३२३) में डॉ० प्रियसन ने लिखा है—(१) आप सुम्बर नामक राजा के दरबारी कवि थे। (२) यह सुम्बर तिरहुत के राजा सुम्बर ठाकुर थे, जो सन् १६४१ ई० में गढ़ी पर बैठे और सन् १९६९ ई० में दिवंगत हुए।



१ — देखिए, 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (बही) पृ १४८ ।

२ यदि यह सत्य है कि आपने बैसवाड़ी में ही रचना की थी तो आप ही बैसवाड़ी व प्रथम मैथिल कवि माने जा सकते हैं।—स

३ — देखिए, 'हिन्दी-साहित्य और बिहार' (बही), पृ २०० । १७वीं पृष्ठी में दशभंग-जिले के लोहना-ग्राम में उपरोक्त नामक एक कवि की इसी नाम से काव्य-रचना करते थे। — देखिए बही पृ ४६६ ।

कविताएँ बनाकर आप अक्षर उन्हें स्वयं गाया करते थे। आप आशुक्ति से और बाठ की-बाठ में कठिन-से-कठिन समस्यापूर्तिर्षा कर डालते थे। कहते हैं, आपने अनेक पुस्तकों की रचना की थी। किन्तु, आपको द्वारा रचित 'विद्यावती' नामक एक उपन्यास और गद्य-पद्य में अनेक सुन्दर रचनाएँ ही मिली हैं। आप १२ वर्ष की आयु में सन् १९२७ ई० में परलोक विचारे।

उदाहरण

(१)

चसुषनु सखि मिलि श्याम को
 भूला भुलाभो पालना ।
 क्या खूब गोम कपोल सुन्दर
 धवण मोतिन भासना ।
 श्याम नारज श्याम मुक्त सुठि
 नासिका वर भूषना ।
 नाल नाल सुविन्दु केशर
 हिम धरे सुखि मानना ।
 मन्दार तुलसा कुन्द फल्प
 सुपारिजातक पासना ।
 धाराम शायक विप्रपद उर
 रेख सजनो चाहना ।
 पाठ पट कटि जड़ित ऊपर
 कस मुरली लानना ।
 धाजानुकर उर जानु जंघ
 सुगुल्फ पद 'नन्द' धारना ।'

(२)

कालि कहि हेरत पुनि नीली कहि टेरत
 हरि घरत कहि घुसरी तू
 भाभो सुख पाभो रो ।
 हरित तूण हाथ निज लाभो रो
 जमुना जस पान करि
 दुःख विसराभो रो ।
 चित चेतत नित भाए इत
 हों ए वलैया मिलि
 तेरे गुण गाभो रो ।
 यह घरत पगु
 पाछे 'नन्द' होत भवेरा
 भासकेरा घर जाभो रो ।'

(३)

वरं जस विना वाइ के दीप ॥
 वरं धीर तस चित भसधिर कर
 जस मोसी रह सीप ।
 वरं समाधि लगाए निरन्तर
 जग तेजि ग्रह समीप ॥
 दवा भव रोगन के सतसंग ॥
 इम शम उपरति द्वन्द सहनवा
 समाधान विश्वास ।
 श्यादान व्रत नित्यादिक जेह
 करि सुठि ज्ञान प्रकाश ॥
 नगारा साईं सन में वाज ॥

नहि कोई पुख्य नारि नहि कोई
 भानन भापन सार ।
 नहि कोई कुस प्रकुलीन सखी सख
 एक मिल्यो संसार ।^१

(५)

भव मेरे मन का सुनिये । मैं इन देशवासी श्याम काकातूभा तीर्थों को विमल हृदय जाना तो इनके सुख क सिये दूर-दूर के विपिनो स अनेक भाँति के वृक्ष सतार्यें और मणिमय वस्त्रमय सम्पदों को ऐसे हा अनेके भाँति स दान्ध कर सिखी हुई अनेके इतिहास और काव्य की कविता का कितारें अपने पीठ पर चढ़ा चढ़ा सा ला कर ऐसे ही अपने दश के अनेक पोषार्के भाँ सा दिखाई और सामुदा अपनी विद्या भी पढ़ा कर राजेश चाकू स भाँ बढ़ कर बुद्धि देखकर अनन्तर जलपन पर ले जाने वाले रेल जहाजा के द्वारा देश विखला और अन्य अन्य देश भी घुमा फिरा सब देश की अनेक भाँति ओकीला मजिस्ट्रेट डिपोटी डिपोटी कलक्टर आदि बना बना कर परीक्षित कर उत्तराद स्थापित भाँ कर दिये गये ।^२

*

जनकधारी लाल^३

आप शानापुर (पटना) के निवासी थे ।^४ आपका जन्म सन् १८४५ ई० में २७ तितम्बर को हुआ था ।

१ ५० छन्दोग श्लोक (५१) से आद्य ।

२ ५१ ।

३ आपका परिवार डॉ रामेश्वर मल्ल, सिद्धार (शानापुरशेखर, पटना) द्वारा प्रेरित लून्ना क आचार पर आधार किया गया है । आपका परिवार मरकफियोर मेड (कलकत्ता) से सन् १९१२ ई० में प्रकाशित हुआ है ।^५ में जो कहा था ।—५०

४ ५१ ।

आपके पिता का नाम इन्द्रजीत सिंह था,^१ जो एक सराफारी एवं निष्ठावान कृषक थे। अध्ययन की ओर आपकी विशेष अभिरुचि देखकर उन्होंने आपकी उचित शिक्षा की व्यवस्था कर ली। प्रवेशिका परीक्षा में आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे। आपके सहायियों में बिहार निर्माता डॉ० सच्चिदानन्द सिन्हा भी थे। अपनी शिक्षा समाप्त होते ही आपने भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के रचाय बानापुर में 'भायन ऐन्डो संस्कृत विद्यालय' नाम से एक स्कूल की स्थापना की, जिसके प्रधानाध्यापक-पद पर शानो ने आपको ही प्रतिष्ठित किया। आपके अध्यापन की शैली अत्यन्त सरल एवं हृदयसाहिणी थी।

आपकी गणना इस राज्य के प्रमुख आयसमाजियों में होती थी। वहाँ तक आप आयसमाज के प्रकसक स्वामी बयानम्ब के निकट सम्पर्क में रहे। सन् १८७८ ई० में आपने उन्हें बानापुर में बुलाकर एक आयसमाज मंदिर की स्थापना भी कराई थी।

आपकी प्रसिद्धि एक लोकप्रिय समाजसेवी के रूप में भी थी। जनता ने लगातार छ' बार आपकी बानापुर निजामत-मुनिसिपैलिटी का बाइस-चेयरमैन बनाया। उस समय एम्० बी० ओ० ही चेयरमैन हुआ करते थे। आपने उक्त पद पर रहकर समाज की निष्ठापूर्वक सेवा की। लगभग चौदह वर्षों तक जनता की सेवा करके आप स्वयं हट गये। आपकी सावजनिक सेवाओं से प्रभावित होकर तत्कालीन सरकार ने सन् १९११-१२ ई० के रिट्यूनी-वरवार में आपको 'रायसाहब' की उपाधि से सम्मानित किया था।

आठम्बर से दूर रहकर आपने हिन्दी का प्रचार भी बढ़ी लगन से किया। अपने विधि, बीज्यपित्त, आदि विषयों की कुछ खेगरेजी पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद किया था। आपके द्वारा सम्पादित 'मुनीति-समह' हिन्दी की एक शिक्षामय पुस्तक मानी गई है। आप सन् १९२० ई० की २० मई को परलोक विभारे।^२ आपकी रचना क प्रकाशन नहीं मिले।



१ आपके डीम पुत्र थे—इंदीरवती सिंह भोलापुरमवाली सिंह तथा श्रीवन्धराय सिंह। इनमें द्वितीय श्रीवन्धरायमवाली सिंह ने संवत्सः कुछ हिन्दी-पुस्तकों को भी रचना की है। इन दिनों वे संवत्सः लेकर बड़ोदा के विद्वत् वर्ग-सदर पर निवृत्त कर रहे हैं।—सं

२ जनता ने आपके स्मृति में बरधेय विक्रमण को स्थापना की है और मुनिसिपल बोर्ड ने आपके नाम पर एक सड़क का नामकरण किया है। संवत्समाज ने अपने धन में अरध्र टैरिफण भी बनवाया है।—सं०

दिवाकर भट्ट

आपका जन्म शाहाबाद जिले के शाहपुरपट्टी बान के अन्तर्गत 'गखवार' नामक ग्राम में सन् १८८८ ई० (सं० १९०५ वि०) की कार्तिक शुक्ल छतमी को हुआ था।^१ आपके पिता पं० राजभूपाल भट्ट उक्त ग्राम में, शाहाबाद के ही एक दूसरे ग्राम, 'बासाबाँव' से आकर बस गये थे।^२

आपकी आरम्भिक शिक्षा गाँव की ही एक पाठशाला में हुई। आपने अल्प उमर में ही अरबी और फारसी में अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। तदनन्तर काशी जाकर आप संस्कृत और प्राकृत-साहित्य के अध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए और उसमें भी कुछ हस्त हुए। प्राकृत भाषा के आपके गुरु थे कुमारौष (शाहाबाद) निवासी पं० राधा बल्लभजी। संस्कृत-प्राकृत का अध्ययन करते समय आपने हिन्दी में कविता करने की योग्यता प्राप्त कर ली। आपके काव्यगुरु अछनीबाख्त आचार्य भीरामकवि थे। सं० १९२९ वि० (सन् १८९६ ई०) में, लगभग बीस इक्कीस वर्ष की अवस्था में जब आप काशी रहकर अध्ययन कर रहे थे, तब आपके पिताजी का स्वर्गवास हो गया और आपको अपनी सभूरी पढ़ाई छोड़कर अपनी जमीन्दारी सँभालने के लिए बचन पर छोड़ आना पड़ा। तब से आपने

१. आपका प्रसूत परिचय आपसे बँदाब पं० यशवन्त भट्ट (बासाबाँव उमरौष शाहाबाद) द्वारा प्रेषित विवरण के आधार पर किया गया है। जो आपके ग्रन्थों में ही आपका परिचय तब प्रकाश है—

श्री कविवर्य के पीठा लये, परदेठा सुमन्यु माणव्य देते।
श्री नृसुन्दर्य के हूँ मैं पुत्र सुभट्ट दिवाकर व्यस है मेरे।
राजसी वृत्ति, गुरुवक कविका प्रवचक स्मर में जानी बसेते।
राम्य पुण्यन श्री बर्ष, भवौ तहाँ कविका साँझ भसेते ॥

२. वही। नृसुन्दर्य श्रेष्ठ स्वर्ण प्रमत्ता आपका कव्यकाल सन् १८९० ई० मानते हैं।—सं०

३. बासाबाँव शाहाबाद-जिले के विपरी (धीरे) बाने में एक प्रसिद्ध गाँव है। वहाँ के श्रेष्ठतम अपनी विद्वान् और बुद्धि के लिए विख्यात हैं। वहाँ कविक कवि सेकक और विद्वान् हो गये हैं। वे लोग कुम्हार महापात्र के पूर्वजों के साथ राजपुत्राने से अपने से और कहीं के साथ रहते थे। कुमारौष के प्रथम महापात्रा माणव्यमल्ल के साथ मोरवासी भट्टारक भव्ये थे। मोरवासी भट्टारक प्रथम विद्वान् देवी के परमपुत्र और बुद्धिपरिपोषक थे। १८वीं की संवत् और उत्तर से वेतोरदार-वंश के कुमारौष नरेण श्री बराबर राजा माणव्यमल्ल कुमारौष के महापात्रा बने। कुमारौष-राज की मति में सत्त्व भव्य लेने के कारण मोरवासी भट्टारक को महापात्रा कविक भव्य श्री बृह से देठे में और कहीं की राज से राज का सारा प्रबंध करने में। पुरस्कार-वस्त्र महापात्रा से कहे अपने राज के वस्त्रों भव्य का कमी-दार बना दिया। कहा जाता है कि इनका अहं वाक्यभट्ट के बँदाब बासाबाँव-निवासी एक व्यक्ति के पास हुआ। अत्यन्त से वे बालकौष में रानी वष से वस नये और अपनी कमी-व्यापी को जाव से भोजन-काशन से अतिभक्त हो सारकता को पराजय में अपना समस्त भयं व करने लग। एक बँदा में कटापी भट्ट परम प्रसिद्ध कवि और विद्वान् हुए, जिन्होंने अपनी कव्य-कुशलता और प्रवक्तव्य से दिल्ली-सम्राट् शाहजहाँ न प्रथम वर्ष एक काव्य कव्ये का निर्दिष्ट अनुदान प्राप्त किया।—सं०

द्वितीय खण्ड : उद्गीतनी टीका (सर्वाङ्ग)

पर पर ही रहकर आपने आजीवन साहित्य-सभा की। आपका सम्मान विशेषतः राज-दरबारी में ही था। हुमरौन-राज्य के तो आप दरबारी कवि थे। इस कारण उक्त दरबार में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। कहते हैं, गया जिले के ठिकारी रियासत में भी आपका बड़ा मान था। उक्त दोनों दरबारों की ओर से आपको कई गाँव भी प्राप्त हुए थे।

आपकी प्रमुख पुस्तकाकार रचनाओं के नाम इस प्रकार हैं—(१) नखशिख', (२) ननोद्धारल', (३) बेरया विद्यास', (४) संध्या विनोद, (५) संध्या-सर्वस्व, (६) सर्वभर्म निवृत्तसंहिता तथा (७) भवनियम'। इसके अतिरिक्त केशव की 'कविप्रिया', रसिकप्रिया', बिहारी की 'धतसई' एवं मतिराम क भायानूपक' और रसराज' की टीकाएँ भी आपने लिखी थीं।

अपने जीवन के संध्य काल में आप छत्र-रोग से ग्रस्त हो गये और सं० १९६१ वि० (१ अक्टूबर, सन् १९०६ ई०) क कवार माघ में परलोक विचार गये। आपकी मृत्यु पर आपक एक शिष्य 'शिवमोद' नामक एक कवि ने एक कविता लिखी थी।^६

उदाहरण (१)

धीरधी का छोहरी-सी छाजे छितिपास-समा,
छोन लंक छ्वातू छ्छीले वार छाये ते ।
छवि भरी छोटी-सी छटाक-तौस छूटा छ्छा,
चमकति छरकि छिनक राग गाये त ।
सुकवि 'दिवाकर' जु छाती उचकाय छ्छरा,
छोर छितराय छलछन्द छिप्र छाये ते ।
पौछवि रुमास मुज, परत मसाल मन्द,
वदन छपाकर छ्वीसा छ्वि छाये त ॥^७

१ पर सं० १९४१ वि (सन् १९०६ ई) में भाऊ-जीवन प्रेस काशी से मुद्रित हुआ था ।—छ
२ इसकी रचना सं० १९४४ वि० (सन् १९०८ ई०) में हुई थी ।—छ
३ इसकी रचना सं० १९४४ वि (सन् १९०८ ई) में हुई थी ।—छ
४ इसकी रचना सं० १९४४ वि (सन् १९०८ ई) में हुई थी । यह ग्रन्थ भागकल नक्षिक-जिले के मध्यपुर-निवासी श्री चनेलर महू मारदाय के पास मुद्रित है । मुद्रने में कृपा है कि वे इसकी मध्यम की कृपासा कर रहे हैं ।—छ
५ इसकी रचना सं० १९११ वि० (सन् १९११ ई) में हुई थी ।—छ
६ यह कविता इस प्रकार है—
"मम सख भंक रज्जु संपन्न मुनिव्यस को अरिभन सुकन सिधि कीरही मुपयो है ।
सीमधर वन मायसद धार दुःखि योग, भाग्यको विनाम बयो हारल कथयो है ।
रिउ नख भंक मही हारी गारीउ अरि, मास मरुतूर सु मट्ट उरधयो है ।
बहै 'शिवमोद' मज्जबहू मीरदाकर नू, देवे समन सब मुरतोको को विनायो है ॥"

७. श्रीमज्जिम बोधो १९४४ (वरी) से प्राप्त ।—सं०

(२)

चम्पा ते चमेली तं गुमाव गुमसम्बद्धं ते,
 वेला वेला ऐसा ते रसाल-बीर कञ्चा ते ।
 जाही जूही सेवतो असीर गुमघोनी कन्द,
 गेंदा गुमदाउवी कपूर धीन घञ्चा ते ।
 सन्धस-अतर-कस्तूरी-बू 'दिवाकर' पू,
 दवेस-बनवासी कृष्णसार मृगबञ्चा ते ।
 इतने सुवास ते सुवास है करोर गुन,
 तेज अफराव ते, सुगन्ध मुक्त सञ्चा के ॥'



परिशिष्ट-५

[परिषद-नामिका]

प्रथम अध्याय

क्र.सं. वृ. सं.	अर्हत्वकर्ता के नाम	स्थान	स्थिति वा सम्प-काय	स्वाम	स्वामी के नाम	प्रति
१	अमृतनाथ		सन् १८०१ ई०	मुजीसमरा (बम्बालन)	सुट्ट रचनाएँ	कवि
२	*सुवासिन बारी		"	पदुमकेर (बम्बालन)	" (अनुसम्ब)	"
३	दिवनारायण सिंह		सन् १८०३ ई०	सारनपुर (पटना)	"	"
४	कुम्बरस पाण्डेय		सन् १८०५ ई०	मोबापुर (शाहाबाद)	कुम्भपायली	"
५	यशोदानन्द		सन् १८१३ ई०	अस्तिवारपुर (शाहाबाद)	मारठ का गहर (अनु०) तथा सुट्ट रचनाएँ	"
६	सयस्वीराम (सपत्तीराम)		सन् १८१५ ई०	सुभारकपुर (सारन)	सुट्ट रचनाएँ	"
७	हेमसदा (पुगढानन्दशरन)		सन् १८१८ ई०	इस्थामपुर (पटना)	भीमगणेशसूची	"
८	पनारंग सुय (पनारंग मलिक, पना मलिक)		सन् १८१८ ई०	पनगाई (शाहाबाद)	भीमसोभ्या-म्याहारम्ब कथामाहा प्रेमसागररंग	"
९	नगनारायण सिंह		"	पटेदी (सागन)	भीमसोभ्या-म्याहारम्ब चिह्न प्रिय-च ७५ — रेखिए, प० ६ १० कुम्भरामायण तथा सुट्ट रचनाएँ	"
१०					भोगुगप्रिमतरंगिणी दुर्गानामार्च बोहाबली तथा सुट्ट रचनाएँ	"

प्रिंटेड बयलत : मन्त्रीमन्त्री मन्त्री (पूर्वार्ध)

प्रवृत्ति

प्रयोगों के नाम

स्थान

रिपोर्ट या कार्य-आध

क्र.सं. १०००

सर्विसकारों के काम

१० ३१ मन्त्रा का (मन्त्र, कनीश्वर)

विचारक-डाही
(हरमंगा)

घन् १८३० ई०

१ मैथिली-भाषा रामाबन
२ पुस्तक-परीक्षा का मैथिली गव-
पद्यानुपाद
३ अन्वयपद्यावली
४ मौर्यावली श्रीसिद्धा
५ अहिंसाचरित नाटक
६ वातानुकास्य तथा
७ भीष्मपरीचर विलास
८ अज्योत्सवान मंत्ररी
९ युवाभारतमन्त्र तथा
१० संसार विद्वान्-नारायणी
११ रविक-रंजन-रामायण
१२ रविकोशास भागवत
१३ अंगरत्नाकर
१४ विजयोत्सव
१५ कुम्हारसामुद्र ध्वनि
१६ अमृतसिद्धिका
१७ गंगासुत शरंगिणी
१८ अस्वामभुवमोष
१९ अस्वाम विनोद
२० अस्वामीस्वाह
२१ अपुर बहल
२२ अहंगमती

कवि

”

शीतलपुर (छारम)

१८ ३६ मयपठरत्न (मगवती)

हुमरौब (शाहाबाद)

१९ ३८ राधाधाम बोधी (विमलधाम,
वसुधाम विम, बल्लभ, काकाबो)

घन् १८३१ ई०

क्र.सं. पृ.सं.	छात्रित्वकारों के नाम	स्मृति वा छन्द-आद्य	स्थान	ग्रन्थों के नाम	प्रकृति
२०	४३ इतनाचमकार जमी	सन् १८३१ ई	बिहारखरीफ (पटना)	ध्याकरब-भाटिका पुस्तक-सर्वत्र बास विनोद कन्या-सर्वत्र मानव विनोद तथा बनबोध	कवि एवं यशकार
२१	४५ गणेशानन्द शर्मा	सन् १८३१ ई०	सुरार (गया)	पुस्तक-बन जोर नायक-नायिका-सम्ब तथा सुष्ठु रत्नार्द्र	कवि
२२	४५ रामकुमार सिंह (कुमार)	"	सर्वपुरा (शाहाबाद)	सुष्ठु रत्नार्द्र	"
२३	४८ रामकृष्ण साहू (गुलशार)	सन् १८३४ ई०	इमरौल (शाहाबाद)	"	"
२४	५० बैबनाथ द्विवेदी	सन् १८३८ ई०	रकसी (गया)	१ भीरीशारामामरबर्मन्वी २ नर-शुद्ध ३ रामरहस्य ४ वृत्त-निवोध-कदम्ब ५ नाम बिहास ६ खड़ीपन-शुभार संकरी ७ कनुमन-सम्बोध ८ विद्यामरुत ९ पंचदेवता-बंजन-बासीसा तथा १० मूल-वर्जिका १ शिवाशिवकण्ठ २ शुभार-संपन्न ३ बर्मन्वरीनी ४ पंचरत्न एवं सुष्ठु रत्नार्द्र	"
२५	५१ नमदेवप्रसाद सिंह (सिंह)	सन् १८३९ ई०	बन्सीगपुर (शाहाबाद)		कवि एवं यशकार

क्र.सं. पु.सं.	सर्वाङ्गिकारों के नाम	निवृत्ति का वर्ष-काल	स्थान	प्रणियों के नाम	प्रकृति
२६	* जयप्रकाश शाह	सन् १८४० ई०	झापर (घारन)	जगोपकारक	गद्यकार
२७	मगवान प्रसाद (भीखीचाराप्रसाद, स्वकथा)	"	सुवारकपुर (घारन)	ठन-गन की स्फुटवा शरीर-पाहन मगसत-पुटका भीषीपाखी की कथा भीमगवदूषणामृत मच्छमास की टीका भीखीचारास-मानसपूजा मगवतनाम-कीर्तन भीखीचारासीय प्रथम पुस्तक भीराबाई तथा स्फुट रचनाएँ	कवि एवं गद्यकार
२८	रामबिहारी ठहाव (बिहारी)	"	नवागौध (घारन)	स्फुट रचनाएँ	कवि
२९	रामसोचन मिश्र (मच्छपूषक)	सन् १८४१ ई०	मन्मथी (घारन)	भीखनारायण-कथा का हिन्दी पद्यात्मक अनुवाद बहुसाहित-कथर का हिन्दी पद्यात्मक अनुवाद चर्पटी-मंजरी (मोहसुगर) का हिन्दी-पद्यात्मक अनुवाद रामायण-महत्त्व रामनाम-सहिता शुशु-संगीतावली पुष्पवध-वर्णन राममन्त्रि-मन्मथवली मिमांसा-नीस	कवि एवं गद्यकार

क्र.सं०	वृ.सं०	सम्पादक	विषय	स्थान	प्रबन्धों के नाम	व्यक्ति
३०	७१	आशुबकुमार	सन् १८४३ ई०	बाप (मुकससपुर)	१० गंगा सरयू अहिमा ११ समस्यापूर्ति १२ पशु-पदावली १३ आत्मकीर्तनी १४ स्फुट-कवितावली १५ हनुमत्धार्यना १६ प्राथमिक कवितावली १७ पिङ्गल-सुवर्णनाष्टक-बचन तथा १८ शाकटायनीपञ्चिक-वर्णन	
३१	७४	* गिबनकार शास	"	अपहर (घारम)	१ रसिकविशास-रामायण २ बर्तव्य तथा स्फुट रत्नार्थ	कवि
३२	७४	* हरिनाथ पाठक	"	पाठकबिम्बा (गया)	१ मंगल-रघुमूलावली २ क्लिप्तपत्रिका-टीका ४ गीतावली-टीका ५ रामगीता-टीका तथा ६ इतिहास-सहरी	कवि एवं राजकार
३३	७५	वासुदेव मिश्र (कमलेश कुमारपति, वासुदेव और गोविन्द)	सन् १८४४ ई०	पेसहरा (गया)	१ क्लिप्त-रामायण २ क्लिप्त भागवत ३ सत्यनारायण विनोद तथा स्फुट रत्नार्थ स्फुट रत्नार्थ	कवि "

क्र० सं०	संस्कृतकर्तृ के नाम	स्मिृति वा ग्रन्थ-संख्या	स्थान	ग्रन्थों के नाम	प्रकृत
१४	रामकृष्ण राय	सन् १८४४ ई०	शम्भुपुर (बाल)	विश्वविद्यालय	कवि
१५	मन्मथराय श्याम	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि, गद्यकार एवं नाटककार
१६	जमानाथ मिश्र	सन् १८४५ ई०	समकुटा (पटना)	विश्वविद्यालय	गद्यकार
१७	जमानाथ श्याम	"	शम्भुपुर (पटना)	विश्वविद्यालय	कवि
१८	ठाकुर मिश्र	"	शम्भुपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
१९	मन्मथराय श्याम	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२०	विश्वविद्यालय	सन् १८४४ ई०	शम्भुपुर (बाल)	विश्वविद्यालय	कवि
२१	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२२	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२३	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२४	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२५	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२६	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२७	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२८	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
२९	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३०	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३१	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३२	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३३	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३४	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३५	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३६	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३७	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३८	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
३९	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि
४०	विश्वविद्यालय	"	मन्मथपुर (शाहाबाद)	विश्वविद्यालय	कवि

क्र०सं० पृ०सं०	अर्थलक्षणों के नाम	स्थान	व्यंजना	व्यंजना के नाम	प्रकृति
४०	पुस्तक	सं० १८४६ ई०	नादिरा (गवा)	नाटक, प्रहसन तथा स्फुट रचनाएँ	कवि एवं नाटककार
४१	वस्तुसूचि	"	हुमरिया (गवा)	सुखान्न विलास निर्वाणप्रवचनम् भीषणमविलास भीषणसिन्धुवर्णिका वस्तुसूचि अनुभव प्रमादर सुन्दर-गन-छन्दो पाठकृत योगदर्शन भीषणप्रवचन मानस अमिराम तथा परवर-अभिधानम् आस्था-रामायण गंगावासी-रामायण गंगावासी-भागवत सदोष-रामायण वर्ण-व्यङ्ग्य-कस्तुरीसिन्धी सुखोप-सूचि मनीहर-रामायण सुखोप-अमृतोदय गीताचार तथा विरह-वर्णिका स्फुट रचनाएँ	कवि एवं गणकार
४२	सेवा शक्ति महम्मद (शाह)	"	पटनासिटी (पटना)		"

क्र.सं०	संस्कृतकारों के नाम	विविधि या कार्य-कार	स्थल	प्रयोग के नाम	महति
४१	इत्याय का	घनू १८७० ई०	उजान (हरमंगा)	१ उपाहरण २ मायबान्धव ३ राधाकृष्ण भिखन-सीता तथा सुन्दर रचनार्थे	कवि और नाटककार
४२	दिवकर मठ	घनू १८८८ ई०	मऊद्वार (शाहाबाद)	१ नखशिख २ नवोदारल ३ शेरयो-पिशाच ४ संख्याचिनोर ५ संख्यासंयम ६ बलधर्मविकेक-संहिता ७ धर्मनिर्णय एवं कुछ टीकाएँ १ महाभारती निम्नारज-स्तोत्र २ अक्षिफुल्लामा ३ शोहायकी ४ कविता-कृत्य ५ मञ्जनामसी ६ ज्ञानमोवाबसी ७ राठ शिष्या-विचार ८ आत्माराम की माधिय ९ मच्छि-विनोद १० संकीर्ण माहारम्य ११ विशुद्ध माणा महिमा तथा १२ विचार-पत्रिका	कवि
४३	संवात्नाथ पाठक (बाबा रामायणदास)	घनू १८९० ई०	बभुका दुमरा (शाहाबाद)	१ यश-सहरी एक सुन्दर रचनार्थे	कवि एवं गणकार
४४	यद्वरघ पिपाडी (बठ, जयमोहन)	घनू १८९० ई०	समुझा (घरान)		कवि

द्वितीय अध्याय

क्र.सं०	दृ.सं०	सर्वद्वन्द्वकारों के नाम	स्थान	सम्बन्धों के नाम	वर्णन
१	१०७	* आकितदास	बारा (शाहाबाद)	स्फुट रचनाएँ	कवि
२	१०७	* कम्ठापर मिश्र	रत्नमाणा (बम्बाल)	"	"
३	१०८	* रत्नरत्न	मिथिला	"	"
४	१०६	* काइकी सहाय (कम्बैया)	भार (शाहाबाद)	कन्हारजी की बर्बाई एवं स्फुट रचनाएँ	"
५	१११	* लालदासदास	मिथिला	गोपी-स्वयंवर	नाटककार और कवि
६	११२	* कामन्दकि	गया	पंचमहि-रघो क परबद्ध पत्र और कृशक कवि न थाय का कवि	कवि
७	११४	* कासिकासदास	रिमहर (खार)	विद्या-स्वयंवर	!
८	११४	* कासीपरम	मौजपुर (शाहाबाद)	सुखावन-भकरण	कवि
९	११४	* कासीचरण बुढे	धेविना (बम्बाल)	स्फुट रचनाएँ	,
१०	११५	* कुंजन्दास	फरना	सुखाना पिनौर	!
११	११५	* कदारनाथ सपाध्याय	बम्बाल	भीमन्दासजठ	गद्यकार एवं कवि
१२	११५	* यजपठ सिंहर	पटना	हृत्कचरिष	
१३	११६	* कुम्भार सिंहर	गिद्धौर (मुंयेर)	रामारत्नमेष-रामासक सभा	गद्यकार
१४	११७	* गुलरकश साह	सकसका (गया)	नरसिंह चरिष	कवि एवं गद्यकार
				भूयोस-वधन	कवि
				राबनीवि-रत्नमाणा	
				मार-संगीत सभा	
				पुरकुवा	
				कुंजविद्या-रामासक	

क्र.सं. पु.सं.	समकालिकों के नाम	रचना	प्रश्नों के क्रम	प्रवृत्ति
१७	* महादुरदास	हुमरौब (शाहाजहाँ)	निहन्द-रामायण	!
१८	* बिहारी सिंह	छातन	बिहारी नकाशिक-मुपन	कवि
१९	* सुहृदाम	खोदानागपुर	मास्ती-संजरी तथा	"
२०	* गोपदास	पटना	बुद्धी-वर्षण	!
२१	* मयकानप्रसाद वर्मा	इचाक (बकारीबाग)	सुष्ट रत्ननायक	
			मऊ बिरुह	
			गोपाल-बाहलीछा-सार	
			करुण-करुण सुठक	
			मीनारत-कृत्व मऊ-पुष्प-भाषा	
			अवध-माहात्म्य और हरिवृत्त	कवि एवं
			माहात्म्य	गणकार
			खतरकोकी गोवा	
			सुन्दरगोवाबली या कविताबली	
			बंगाली	
			भीष्मभगवद्गीता-माहात्म्य तथा	
			मऊ निवेदन एवं अन्य प्रम	
२२	* मजनेप स्वामी (पयशीबाबा, निमर्षाबाबा)	सेरा (गवा)	गुरु पुन-पुष्ट	कवि
			श्रीशेष ज्ञान	
			अद्वैतकर्म स्मक तथा	
			ज्ञानसरोवर	
			सुष्ट रत्ननायक	गणकार एवं
२३	* मयानीचरण मुखोपाध्याय	कटरा (छपरा)		सम्पादक
२४	* भायकठनारायण सिंह (मयकठ)	कपठ (पटना)	१ रामलीला-संवाह	कवि
			२ बरबाबली-बोहा	
			३ प्रनोसर-बोहा	

- १० ११७ सासनापूर
गोपासपुर
(मागसपुर)
करकिवा-नट्ट
(पूर्विका)
बनेसी (पूर्विका)
यसपुर (याहाबाद)
गवा
- ११ ११८ *विजयगोविन्द सिंह
रवामपुर
रवामसंबक मिश्र
७ विजयवाह (ककोरपुर)

* गुरुबन्धु मिश्र
नरनाथ (रायवाहब)

हरनाथ महाशय
* हरनारायण शाह
देवखरा (यवा)
पटना
घान
इस्कामपुर (पटना)

- २ अमर-कहानी
अमर विज्ञान
५ अमर-करास तथा सुट्ट रचनाएँ
सुट्ट रचनाएँ
- विस्वीनामा तथा सुट्ट रचनाएँ
सुट्ट रचनाएँ
- १ सप्त-धूपे-रामायण
२ नन्दमन हरछंद-रामायण
३ सप्त-साहनी छंद-रामायण
५ चंद्रिष होहावली-रामायण
५ सप्तहरि-गीत-छंद-रामायण
६ सप्त सोरठा-रामायण
७ अनुष्टुप् रामायण
८ पंचपदावली-रामायण
९ हरिहरात्मक-हरिचंद्रपुराण
तथा सुट्ट रचनाएँ
सुट्ट रचनाएँ
१ शैव विजली-सप्त
२ रमाई विजली-सप्त तथा
३ भागुविद्या
काशीसूच्य
सुट्ट रचनाएँ

विन्धी-सहित्य क्षेत्र विद्वान

११ गयकार, कवि
एवं सम्पादक

! कवि

क्र. सं०	दृ० सं०	समर्पितकर्ता के नाम	स्वर	ग्रन्थों के नाम	प्रभुधि
१७	१८८	*मोटीरस	अम्भारन	स्फुट रचनार्थे	कवि
१८	१९	*अग्रभाष्य सहाय	इबारीबाग (बोडानागपुर)	आत्मन्व-सागर प्रेमरसामृत मच्छरसनस्मृत मयनाथली कृष्णवासस्तीका मनोरंजन चौरहरन गोपाल सहस्रनाम तथा स्फुट रचनार्थे	११
१९	१९०	अम्भवती यदुष्माधिन	बड़हगोड़िया (हरम्भा)	स्फुट रचनार्थे	"
२०	१९१	अययोधिन महाराज	बाहोरा (धुबिया)	साहित्य-पञ्चोनिषि अक्षकार-आकर कविता-कोमुदी समस्यापूचि दुर्गाष्टक तथा स्फुट रचनार्थे	"
२१	१९५	*अपनाथ झा (कौरवर)	हरिहरपुर (हरमंगा)	स्फुट रचनार्थे	"
२२	१९५	*बबाहर प्रसाद	चम्बा झकरी (शाह बाह)	"	"
२३	१९६	*जानकी प्रसाद	पटना	मानव अग्निप्रायशीपक पर बार्दिक- टीका	टीकाकार
२४	१९६	*ठाकुर प्रसाद (अग्नीशपुरी)	अग्नीशपुर (शाहानार)	स्फुट रचनार्थे	कवि
२५	१९६	*बीहूराम	अम्भारन	"	"

२१ १९७ टोकाराव

- २७ १९८ इरुत्तवास
- २८ १९९ *दीनरवाड
- २९ १९९ शोहराम
- ३० २०१ शारकाप्रसाद मिश्र (कविरत्न)
- ३१ २०१ अशराम
- ३२ २०४ *सुनवास

- ३३ २ ४ *नरसी सिंह
- ३४ २ ४ *सकसबाबा
- ३५ २०५ पूरनराम
- ३६ २०५ *व्याधाम
- ३७ २०६ माधपुराय
- ३८ २०६ सुनसीबाबू
- ३९ २०७ सुबन का

- ४० २०८ *मयनाथ का
- ४१ २०८ म्नागराम
- ४२ २०९ *महाशयप्रसाद (मदनय)

स्थान

धरारि (गारन)

बम्बान
भविषा (बम्बान)
प्रवहा (पटना)
पचकसिया (शाहाबाद)
कौटी (सकसपुर)
धररा (गारन)

रोमा (सकसपुर)
मधुवाहा (बम्बान)
शाहापुर (बम्बान)
भेविषा (बम्बान)
बम्बान
मोठीहारी (बम्बान)
पुसकर (बम्बान)

गंगोत्री (हरममा)
सुवहवा (बम्बान)
काज्याम (पटना कटिा)

- १ कृपर पचाठा
- २. मफोली-विवाह-मनन तथा
- ३ विन्ध्यवाहिनी-स्त्रीप
- स्युट रचनाएँ

"
" अनुभव प्रकाश तथा स्युट रचनाएँ
स्युट रचनाएँ

- १ बाबी
- २ विद्याद विचार और
- ३ मछि नामावली

सुखयागर
स्युट रचनाएँ

कवि

"

"

"

"

नाटककार

कवि

"

सृष्टि

कवि

"

"

,

"

कवि एवं गद्यकार

विश्व कव्य कवीश्वरी एषी (पूर्वदि)

प्रति

ग्रन्थों के नाम

स्वाम

ग्रन्थिष्ठों के नाम

क्र.सं. पृ.सं.

५. संकटमोचन-धारणी
६. मन्त्रेश-कोष
७. धनदोष-शाखा की सरस्वती कुंजी तथा
८. शैवाष्टक
माधव-सुखावली तथा
सुष्ट रत्नार्णव

कवि

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

"

- मौफा (धाल)
सुखरत्ना (बम्बाल)
श्रीमती (हरमया)
बम्बाल
सुख्या (गया)
स्वयं-श्रीवा-भठ (बम्बाल)
मिथिला

- वेदिया (बम्बाल)
पट्टी (धाल)
बम्बाल
माधुर (बम्बाल)
रत्न-रत्न (बम्बाल)
मन्त्रपुर (गया)

- बम्बाल
छपरा (धाल)
सप्तदिया (बम्बाल)
सबान (हरमया)

- ५१ २०६ माधवशरद्वत्त प्रथाप छापी
(भाषक)
५४ २१० *माधुराज बोधि
मिथिलाय
५५ २११ मिथिलीशाय
५६ २१२ *सुख्या-किशोर
५७ २१३ श्रीमन्तर राम (परमहंस बाबा)
५८ २१४ *रत्नारण्य
५९ २१५ *रत्नारण्य
६० २१६ *राकन्त्रकिशोर सिंह
६१ २१७ राकन्त्रप्रसाद सिंह
६२ २१८ रामराम राम
६३ २१९ रामराम मिथ
६४ २२० रामराम राम
६५ २२१ *रामरामशिवरामराज सिंह
(महाराज महारुद्र, केरल)
६६ २२२ शिवराम
६७ २२३ *महाराजराज

- ६८ २२४ *शुभ मिथ
६९ २२५ शुभराम का

- रत्नप्रकाश (मन्त्राल की
सुशोचनी टीका)
मन्त्रदीपिका
सुष्ट रत्नार्णव

टीकाकार

स्यकार

कवि

क्र.सं. पु.सं.	सद्विषयकृतों के नाम	स्थान	ग्रन्थों के नाम	प्रकृति
६१	शिवकविराज	अण्डीसपुर (शाहबाद)	स्रुष्ट रचनाएँ	कवि
६२	*विश्वेन्द्र शारी (शास शाहब)	मौका (घारन)	"	"
६३	*शुविष कपाम्नाय (शोवल कवि)	श्रीवङ्गपुर-बरेबा (घारन)	"	"
६४	*शिवकविराज	वम्पारन	"	"
६५	*भीमर शारी	मौका (घारन)	"	"
६६	सनापराम	वम्पारन	"	"
६७	धनसुराम	"	"	"
६८	*हरिनाथ मिश्र (कपीशबर)	शाहबादपुर (सुअफरपुर)	बैयनाथ-निवास एवं स्रुष्ट रचनाएँ	"
६९	*हीरा शाहब	मौका (घारन)	स्रुष्ट रचनाएँ	"

१ *शाहबाद-बरेबा सद्विषयकृतों के रचना के अन्तर्गत नहीं लिखे हैं ।

परिशिष्ट-६

[मूल पुस्तक में संकलित उदाहरणों की प्रथम पंक्ति की
अक्षरादिक्रम से सूची]

- अंग अंग में अंग अजीब अछो (मारकण्डेय काल)—२७६
 अति अक्षमेष्टी नारि सलोनी (कान्हवी सहाय)—१०९
 अस्वस्त सुन्दर स्वाम रूप कण्ठ में (विहारोत्ताल चौदे)—२७०
 अन्न घर जाय ब ए सखिया (इनरराम)—१८१
 अब मय मोर मन बाधु सकेरा (पूनराम)—२०५
 अम मेरे मन की मुनिये (मिश्रक मिश्र)—१४०
 अब सागल ए सखि (लक्ष्मीवती)—१६६
 अखिरल बलपर मरजत (हर्षनाथ का)—१६
 अक्षुष अधीर छिन्न (ठग मिश्र)—८०
 अमल अकास क्षी (यक्षुष त्रिपाठी)—१०५
 अमुत सखि रवि-चन्द्रि बेहछवि (रत्नपाणि)—१५३
 अरज-स्तरण में रहना (रामस्वरूपराम)—२१०
 अय धर्म अब काम मुख (हरिचरनदास)—१७८
 अवतुन जी प्रसु हेरो हमारो (रामलोकन मिश्र)—७१
 अवध-नगर साधु रतन-वाकना (प्रेमसाध)—२४७
 अबधि मास लल माधव (सनाय)—१५९
 आई करि गौल पथ (बालमोक्षिम्य मिश्र)—७८
 बासे प्यारे रामजी सदा (प्रयागदास)—१३५
 बाब देखल पय कामिनि रे (भाना का)—२२
 बाज दबल हम अंग सजनी (मिश्रनाथ)—२११
 बाज भेल सखि दिन बर (गोपीश्वर सिंह)—१२०
 बास खेतो रंग होरी सहराँ (बीनाराम चौब)—३१६
 बाहु भोकुष्ट एक अचम्भित (मतिहास)—२४९
 बाहु चतुपी कब हर (बह्यपाणि)—२३१
 बाहु मोरा हरि क अबनबाँ (केशवदास)—१८५
 बास मुदिन दिन पाओछ रे (बीनानाथ)—२४१
 बापे मापे भक्ति अरापे (अनन्तरास)—२९६
 बाब कि करेछि पनि (धमदास)—२४३
 बायल हैमैठ नगर हर (गोपीश्वर सिंह)— १२०

- आये पूस क मास (परमानन्ददास)—१३५
 आये मिथिलेश के बगिया हो (रामशरण)—२८३
 आषो जेठ अति ही (प्रबलशाह)—३ १
 आषो छच्छि धामन (")—३०१
 आरस में रस नीरस में (नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह)—५४
 आसपास सहचरी (सुरकिशोर)—३०७
 आस लगाय गौरी हम पोसस (हैमकर)—२६४
 आस लता हम लगाओस (धैरवपति)—२४४
 इत-उत दोऊ बल चकुर (शेखानव राय)—३३०
 ईस तुम्हारे अंग में (नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह)—५६
 उखम बिखम गेल (सुकवि)—२६०
 उदु छच्छि उदु चणु (सप्तमीसखी)—१६७
 उतरि साओन पंठ मादव (मोदनाथ)—२३१
 उरवि मयैया (राधानन्दलाल शोशी)—४२
 उमड़ि उमड़ि भाई बाहरि कारी (जीवाराम चौबे)—३१६
 अतुराज समय बल्लभ माधव (चन्द्रमणि)—२३३
 ए अछि, अकेली चाक (बासुगोविन्द मिश्र)—७८
 एक टक इत न (यशरस त्रिपाठी)—१०४
 एरे मन मरो में (")—१०६
 एहो कृष्ण विहगमन (अम्बिकाशरण)—१८१
 ऐसी कविताई हिन्दी-कारखी (रामानन्द)—२८४
 ऐसो हीठ सुपस बुजराज (रामचरित त्रिबारी)—६८२
 ओढ़े मृगछाला (रामबिहारी तहाप)—६८
 ओरन को छाड़ि मोहि (हृषानारायण)—१८७
 कंधन की परी कैपौं (फनारंग बुने)—१४
 कसन कहव इहो बरिवा (रत्नलाल)—२५४
 कइ प्रन मरो अकरा (यशरस त्रिपाठी)—१०५
 कतक दिन मरव जमुना गहरो (माधपुराज)—२ ६
 कनक-सवा में युगल फल—(जयगाविन्द महाराज)—१६४
 कनक-विहासन पर राज (राजश्रमदास सिंह)—११५
 कन लगि सवने अग्निनिर्षी (सप्तमीसखी)—१६५
 कमलिनि सज्जे रज्जे दिवस गमाओस (जनापति छपाप्याय)—१६२
 करत न पक कूप (चन्द्रेश्वरी राय)—१२३
 करम को मरो नामे (अनन्प कवि)—२६८
 करिकै मृगार कली (हैमकवि)—२६५

- कर्म अरकह्न मीम युधिष्ठिर (राधावल्लभ जोशी)—५२
 कर्मा कर्म सुनल सम लोक (रत्नपाणि)—१५२
 कर्म सुभाव के पाप-प्रभाव (यशोदानन्द)—४
 कलि के बल खेसत हारी (ठाकुर)—१३१
 कल्प-भृगु मारिचे को (घनारंग पुजे)—१५
 कसिके सुरंग तंग जखौ (शिवकविराय)—२२०
 कह केमठ क्यों अनरीत करो (अक्षयकुमार)—७३
 कहाँ गइली सहदनिया (घनाशराय)—२२१
 कहिअ नाम मुनि बात (कान्हा रामदास)—१११
 कानन कौलिया कूँडे कयो (मारकण्डेय लाल)—२७७
 * काम (अप्राप्त का चाहना) क्रोध और लोभ (अयोध्याप्रसाद मिश्र)—३०
 कामिनी को सैन आज (अक्षयकुमार)—७३
 काया नीच में बरकर बैठा (मनबारीलाल मिश्र)—८ ६
 कासिकी के कुलनि (राधावल्लभ जोशी)—५१
 कासि कहि हेरत पुनि (मिम्वक मिश्र)—३३६
 * कारी किरदेश्वर की वया (रामेश्वर शास्त्री घग्ने)—२३७
 काहे अइसन इरबाई हो रामा (सेवक अली सुहम्मर)—६४
 काहे री दाहति आँखिन ओट नवीर (श्यामसेवक मिश्र)—१७०
 कि कहव ओरे पदु (कृष्णपति)—३०६
 किहु नहि पिर होअ (गुणनाथ)—२३१
 कीक्य दश पुनीत कहैं (टिम्बल बोझा)—१३
 की मुमि कान्ह गमन कियो (जगदेव स्वामी)—२३५
 कुमुदिनी-लाज जनमोचन अमल्य चन्द (जयगोविन्द महाराज)—१६४
 कुमुमित विविध निवाला (")—१६३
 कलि मयन नहि जाबस सजनि गो (रंकमणि)—२५३
 कहरि कीर कपोत मस मति (मुकुटलाल मिश्र)—१४७
 कैषा लोक-लोक में कपूर (नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह)—५४
 कैस ध्यावै साँचो कहो (सुमेरसिंह साहबजादे)—२८३
 कोइ नाम रूप भजि शाळ पुए (हैमलता)—११
 कोऊ निरयो भिके छाया अड (सुमेरसिंह साहबजादे)—२८६
 कोकिला कलापी कोर (राजेश्वरप्रसाद सिंह)—२१५
 का भेंटे बिहुरे कवन (रोहसराम)—२०१
 कोसल कियोर चितकार (जानकीशरण)—२३८
 कोसल चलति मयन कलि-पह (चन्द्रनाथ)—२३२
 कार री कुमर सर (प्रबलसाह)—१०२

- खासे खसखाने में (रामबिहारी उदाय)—६८
 खोपा सुधा मरि चन्द्रकला यह (प्रबलशाह)—३०२
 खंगी भी की विपयता लखि (गुरुप्रसाद सिंह)—११७
 यग्न नरवत-भमात्र में (जयमानिन्द महाराज)—१६५
 यमचम को बुकूल (रामफलराय)—८१
 *यजपति शम्भु ते पेश्यम सुखित किय (शिवप्रसाद सिंह)—३२७
 गई गतीनो मूठ न बाणे (करताराम)—१८,
 गाहक जा गुन को निबाहक (शीतलप्रसाद)—१८५
 गिरिजापति को नर भजे (कन्हू बुध)—२८
 गिरिजापति छुनु किनती नोर (बल)—२३६
 गुंभत ई बेनी (रामफलराय)—८१
 गुप्त बाप सुमिरन करे (हरिचरणदास)—१७८
 गुदबी छे करब अरजिया (रामनवाज मिश्र)—२१६
 गोर बदन अमरन-अद्वित (राजेन्द्रप्रसाद सिंह)—२१५
 भट समुद्र लख ना पड़े (हरनाथप्रसाद खत्री)—४४
 मन मन स्वामा (भानुविक्रमशोर सिंह)—३०८
 पूर्णत क पद (शिवप्रसाद)—१७१
 पंचल अक्षाक सब कला क (मनारंग बुधे)—१४
 चतुराई चूले पड़े (हरिचरणदास)—१७८
 अन्न आदनी अमक की (वैजनाथ त्रिपाठी)—५१
 अन्न सलाह मभूति लखे (पराशरानन्द)—५
 अम्बक अमेरिन पै (यदुवत त्रिपाठी)—१०५
 अम्बा अमली त (रिवाकर मह)—३८४
 अरन-अरन जन गहत ससत मन (चन्द्रशेखरी राय)—१२४
 अक्षय शपन-एह मनमथ रे (भाता का)—२२
 अलह गोरिबर परिधि आनह (मुर्छालाल)—२१२
 अलु अलु अखि मिलि रूपान को (मिश्रक मिश्र)—३३८
 अलु अखि अलु अखि नाइव ठाम (कुंवर)—२३०
 अलु विधि भव मन करिया (फट्टेछाल)—१३७
 आरि परारय दन के शैठ (बालगोविन्द मिश्र)—७७
 आरि बर को सार है (मागवतनारायण सिंह)—१४४
 आह ते अमक आह (मुकुन्दछाल मिश्र)—१४७
 *आह बोई केसे ही बड़े मक्तिमान हो (मयवानप्रसाद)—६८
 पैठ चिन्ता किनो है म्यांलनि (आशादास)—२२८
 छतिया में खिली नवरंग बली (द्वारकाप्रसाद मिश्र)—२ ३

- छवीअन बजर-बहार जैवीरा (परमानन्ददास)—११५
 *छल समुना धीर में (पन्ना का)—१५
 *छलि गङ्गातीर में (")—१६
 झाड़ि के सकल मुख साध (मारकण्डेय शास)—१७६
 झीन लगे है कहीं धो हमें (मुकुटशास निम)—१४८
 झीरधो की झोहरी-सी (दिवाकर मठ)—१४३
 झूठि जैसे बाम ग्राम (मारकण्डेय शास)—१७६
 ज्य को छठाय बेठी (जयगोविन्द महाराज)—१९३
 ज्य मानिक नील कदली (रामेश्वरदास)—१२४
 जखन चसल गोपीपति रे (वंशीधर)—२५५
 जखन चसल हरि मधुपुर रे (बनपति)—१४२
 जखन मुधाकर बिहुँसल सखनि गे (सहसराम)—२६०
 जग उपजैया मन मोक्ष सिरजैया (नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह)—५५
 जगत मँकार द्विजराज सो (जयगोविन्द महाराज)—१९३
 जगत में रामनाम छवि धार (रामसनेहीदास)—१६०
 जग में बहुत पर्य बहु मेखा (पबसराम)—२०३
 जय में बेठे संत न होखे (करठाराम)—१८३
 जग में तिन सम (रामकण्ठ शास)—४९
 जदुकुल बंध अखे (रिपुमंजन सिंह)—१६३
 जदुपति बुक्तिअ बिपारी (भाना का)—२३
 जनक नन्दनि बिसोकि (अक्षयकुमार)—७३
 जनक-नृप-मंडप में (राजेन्द्रप्रसाद सिंह)—२१५
 जन के पीर हरे (दास)—२४०
 जननि । जन अनु होइअ मोरि (जलपावत)—२३७
 अनु तिन अनु नापन हित (नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह)—५५
 जब सग मन मोरा (दरसनदास)—१९८
 जय कमल नयनी कमल कुच युग (भवष सिंह)—२५९
 जय कासी जय तारा मुबना (फिरंजीब)—२१५
 जय गंगाजी जय जय अननी (कान्हरदास)—२३०
 जय लकोर जानकि मुख अम्बा (भगवानप्रसाद)—६३
 जय जब आदि-शक्ति शुभदापिनि (शम्भुदास का)—२१९
 जय जय जयति सीतारमन (उपस्वीराम)—७
 जय जय तारा सब शुच हारा (जभरवरी बहुआसिन)—१९
 जय जय दुर्गे अनुपम रूपे (मैदानि देवी)—२४८
 जय जय निगम तयन महाशय (अम्दा का)—१४

- जयसि मिरिकिहोरी भात (रामकुमार सिंह)—४०
 जय देवी दुर्गे अमित रूपिनि (नगनारायण सिंह)—१८
 जय बरनो देवी दुर्गा मशानी (सक्तराम)—१२२
 जय भीष्मद्रकशा अस्तवेष्टी (श्रीनाराम चौबे)—११४
 जय सम्मु नटा जय सम्मु नटा (उमापति उपाध्याय)—२६२
 जहाँ एक ओर जंडो (कमलाकर मिश्र)—१०७
 जाके अम्मुबासन जयासन (सुनीन्द्र)—१५१
 जागहु हो मोर मुरति-सोहागिन (रामधनराम)—२१६
 जागिअ कृष्ण कमलदल-सोजन (बनेश्वरी बहुभासिन)—१६१
 जात रही जसुना जल को (माधवेश्वरप्रताप साही)—२१०
 जाहू मरो राम तुमरो नजरिया (श्रीनाराम चौबे)—११६
 जिनके पुन को हरि नाम समान (मारकण्डेय साह)—२७५
 *जिसका योग अष्ट हो गया है (अयोध्याप्रसाद मिश्र)—३०
 *जिस मापी से लोमों को (")—३०
 *जिसे आत्मसमर्पण नहीं आता (मगवान प्रसाद)—६६
 जगल छपि हो निरखत पाके नैन (रामकुमार सिंह)—४६
 जेकर घर महल (कौलेयर बाना)—१८६
 जेठ मास अभाषस सजनि गे (फरुखसाह)—१३६
 जेठे जगल्लितल मे (ठग मिश्र)—८७
 जेध मूरराज गजराजन के (राम)—१५५
 जोई सीतानाय सोई राधानाय (मन्नु बुब)—२८
 जोमिआ एक देखल गे माह (हरिदत्त सिंह)—२६३
 जो घट प्रेम न संचरे (हरिश्चरपदास)—१७८
 जो जन रामायण को करत (भागवतनारायण सिंह)—१८४
 *जो पुसप कर्मन्दिपा को (अयोध्याप्रसाद मिश्र)—२६
 कमकि मुठाओ रे हिडारे (काम्हजी सहाय)—११०
 कमकि हरि भूषत रंग हिडारे (मुकुटसाह मिश्र)—१४६
 कौंकटि फरोखे लागि जानकी (चन्द्रश्री राय)—१२३
 कौंकी बनी बहु माँतिन की (रघुपीरनारायण सिंह)—२५३
 कौंकी माँति माँति की बनी है (जानकीशरव)—२१८
 कौंके मुझे चितवे जहुँपा (मारकण्डेयसाह)—१७७
 मूलत आज स्वामा स्वाम (सोपीशर सिंह)—११८
 मूल लवशिपा सास सती (काटहरी सहाय)—१०६
 ट्टा है पिनाक सिपा राम स (दोहरराम)—२०१
 ट्टे पंचरंघी पिजहुवा हो (योगेश्वरराम)—२१२

- टेक विवेक विभूति को (संघारनाथ पाठक) — १०९
 ठग पापो कपूत कलंकी ठक (ठग मित्र) — ८८
 बोसे व् अफेसी कहा (सुकुलसाह मित्र) — १४९
 उदित विनिन्द मुन्दर बेस (हर्षनाथ झा) — ९७
 उल्हो को देखा स्त्रोस में (सुबसहाय साह) — ९१
 उन में मन में इन नैनन में (रामकुमार सिंह) — ४७
 ठरके भराह बन्त (रामबिहारी सहाय) — १८
 ठम आयो नैरसाह नू (कुम्भेबाबू) — २०१
 ठम पाबनि की करनी (नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह) — ५४
 दुसली प्रसाद हिय दुसली (शिवप्रकाश सिंह) — ३२६
 दूरी खड्गपारा निरापारा (कबीर) — १८४
 तेरी मात मानस है (शिवप्रसाद) — १७२
 छेरे सात मात छत (बाबुयोगिन्द्र मित्र) — ७८
 छरे हम देखे हरि (राजेश्वरप्रसाद सिंह) — २१४
 वोहो मधु अति महिमान रे (सुजन) — २७९
 छोहरे बरस मुख छूटस (यदुनाथ) — २५९
 यो एक पठक चौदवासी (सीहनसाह) — १७३
 बचिषा को बास हो (सुनीन्द्र) — १५०
 बखिन जमिरहा छतर पुरनहिया (लखवरबास) — २१८
 बयानी शंभु भरनी (नवलकिशोर सिंह) — ३१८
 बयम रायि बो बी (कुरमिस) — २४२
 बानी व् बयानी सम्पुरानी (संग्रहाप्रसाद सिंह) — २४९
 बामिनी-सी सिय संम बिराजति (प्रयागदास) — ३३४
 बरु सम या बेस में (हितनारायण सिंह) — ३
 बिन रात जहाँ हरि कीरति है (रामबिहारी सहाय) — ६७
 बिस्फी सुलतान लड़े (अतिराज) — ३१
 बिचि बिदिरान वे (शोमानाथ) — ३३९
 बीखत बीखत आई शै (मारकण्डेय साह) — २७४
 बुनियाँ साबू घराय में (संघारनाथ पाठक) — १०२
 बुयाँ लेखा बय बय तोर (नरसिंह बस) — २४६
 बंध पुनरी में साग न (गुलाबफर) — १८८
 बणलनि एक जनि जगल कुमार (जन्दा झा) — ३५
 बोरि गये पर कंठनी (परमानन्ददास) — १३६
 इ दुसली को यहि रही (शिवप्रकाश सिंह) — ३२९
 बाय योबिन्द यज्ञर उबारो (अमरास) — २२५

द्वितीय अक्षर : उच्चीयन्ती एकी (वर्णाभि)

- पुँष करि वाकुर बरेरा देव (चन्द्रदेवरी राय)—११४
 प्वावहि मुनिन्द्र छिप पर कंज (वपस्वीराम)—०
 नई लगन लछल वोसे सागो (जोबाराय चौबे)—११६
 नगर नारि विचारि एहि विधि (बच गणक)—११६
 नचव निर्मग ए (बनारंग बुबे)—१५
 नन्दी ओ खेठानी करे (ठग मित्र)—८७
 नवन कोर मरि कौकषि मनाइनि (कल्याणाय)—१२६
 नव-गुण निपल नग (छालबाबू)—१६७
 नव यौवन नव नागरि (अयानाय)—२६६
 नहिं भाये कंठ हमारा (मजबिहारी साह)—८४
 नायर अटक रहस परवेय (बबुजन झा)—११८
 नागानन नाजिर छो (मुनीन्द्र)—१५१
 निराकार सब में बसत (हेमलता)—११
 नूतन समास पट (आद्यायरण)—२२७
 नूप के गूढ बास बिहार करै (सुरकिशोर)—१०६
 मोह नेह सब कोठ करै (मगवान प्रसाद)—६२
 पंकज चम्पक बेलि गुलाब को (रामोदरदास)—१००
 पपटना जिसे अजोमायाह भी कहते हैं (गणपत सिंह)—११५
 परमात्मा को देखना क्यों कठिन है ! (मगवान प्रसाद)—६५
 परागदास जो पीपर होते (प्रयागदास)—११५
 परिहक मानिनि असमय मान (चम्पा का)—१४
 पलठि ने आयस गोपाल माई (मधुकर)—१५०
 पद्मपति परम बेयाकुल (करनराम)—१०८
 पहिरन पाट पटम्बर (परसमनि)—२४७
 पायके अकेसो नम्बनक (मारकण्डेय साह)—२७५
 पावक की लपटे (शिवप्रसाद)—१७१
 पिचकी मति मारो पैसों परै (इयामसेवक मित्र)—१७०
 पिठा यहि शीजे छो (रामछोचन मित्र)—७०
 पितृ गूढ विखनो चाहिये (इरनाथप्रसाद खत्री)—४४
 पीक बिना कधि रंग छो काहर (दारकाप्रसाद मित्र)—१०२
 पीठ पटा छाजव छटा (रामफल राय)—८२
 पीठ बचन प्यारे पहिरि (")—८२
 पुनि-पुनि करत पविष सराई (टिम्बल भोक्ता)—१२६
 पुरबिल मोति अपलहुँ हम शरि (इरनाथ)—२६४
 पूरव मुहल-कल मनुज-सरीर होव (बभू बुब)—२७

- *प्रथम पद्य को व्याख्या अधिक (शिष्यकाश सिंह)—१२८
- *प्रेम का इतरा पड़खू है विरह (भगवान प्रसाद)—६६
- फाटा जो टाट चाको (लोहसराम)—२००
- फाटा जो रूज चाहि (,,)—२००
- भंगला बहार नामे सोवा (चन्द्रेश्वरी राय)—१२३
- महसल कौबयि माह मनाइनि (कस्तानाय)—२२६
- बने हैं अखारी काई (भागवतनारायण सिंह)—१४३
- क्यों बानी बुद्धिबर (भगवतशरण)—३७
- बड़े सरकार से छोय कहे (करताराम)—१८३
- बरिसेला मगन मिजेला मोरा छारी (लक्ष्मीधर)—१६६
- बरे बस बिना बाह के बीप (मिश्रक मिश्र)—३३६
- बसहा बसहा शिब छिर (आनन्द)—२२६
- बसहा भिरल पछान रे (रत्नपाणि)—१५३
- बाबहि बहु बिधि रंग-रंग (कान्हूजी सहाय)—१११
- बाढिका बिहारी अमिछार को (शंकरदास)—३२६
- बानी महारानी मति बीबिय (जयदम्नसाह बरुणी)—१२७
- बासोपन से हौं यहाँ (ब्रजबिहारी साह)—८४
- बिनही सुनहु भीरसुनाय (मोपीश्वर सिंह)—११६
- बिन मेरन मेर न जाने कसू (अनन्प कवि)—२६६
- बीरन के नामन पे (भारकृष्ण साह)—२७७
- बुज नारिन नारि बनाई (रामचरित ठिबारी)—२८१
- बैठे कुसावन पे सावन करि (जगदेवनारायण सिंह)—१२८
- *भगवत के बितने अवतार हैं (भगवान प्रसाद)—६४
- *भगवान जिसमें प्रसन्न हो (,,)—६६
- *भगवान मनुष्य को (,,)—६६
- भजन लखि बिपरा करसे (गुलाबकमल)—१८६
- भक्ति दिगम्बर शत्रु बुढ़ा (मुकवि)—२६१
- मठ मन राम छिपा मुखरातो (रामसोपन मिश्र)—७१
- मठ राम नाम राम नाम (रामदास विबारी)—३२२
- माय परब बिन मिले नहि (हरिधरदास)—१७७
- मायबत गोविन्द-धर को (यदुधरदास)—२३२
- मादब परम मयाओन (धर्मेश्वर)—२४४
- मारो पन प्रसन्न कडोर (प्रसन्नदास)—३०२
- माद, महाभाव, वष प्रेम (भगवान प्रसाद)—६६
- मोरे आज चाये कित (बालमोविन्द मिश्र)—७६

- मरिच मर्याक-सुख नखत (सुकुडलास मिश्र)—१४७
 मदन कदन करि सहर को (कामदमणि)—११३
 मन्द मन्द बूँद भरसाये (बाछगोविन्द मिश्र)—७६
 मधुकर जाय रहल हरि ओतही (मुक्तिराम)—२५०
 मन । पर चित लाय (चिरंजीव)—२३४
 मन मतह को चाहिये (नगनारायण सिंह)—२०
 मन माता जो नर लपे (हरिचरणदास)—१७८
 मनुष्य को चक्षिष है कि (हरनाथप्रसाद लक्ष्मी)—४५
 महावेश बिसुवन के ठाकुर (अमृतनाथ)—१
 माह मे अचरज देखिअ (अमिनथ)—१२६
 मातु पितु गौर से (आद्याशरण)—२२७
 माषण । कि कहव उनिक विद्येये (माना का)—२३
 माषण सब बिधि पिक (चन्द्रनाथ)—२३३
 मानिक मुछा नाहि सब (रामचनहीदास)—१६०
 मास असाढ़ षड् यो कवि रग (झारकाप्रसाद मिश्र)—२०२
 सुगुधि मनाहनि देखि नयन वर (आनन)—२२६
 मूढ़ मन करत कठिन कठिनाई (रामकृष्ण लाल)—४६
 मूढ़ महिसामुर क महिनी (मनसाराय)—२०८
 मंटे मवबाधा हरहु (सुमेरसिंह साहबबाबे)—२६०
 मैं बहुत दिन तक रोया (नमदेवरप्रसाद सिंह)—२५६
 मैं हरि पापिन कर सरदार (संसारनाथ पाठक)—१०१
 माह औषिपारी रैन (रामबिहारी सहाय)—६७
 ममुना-तट रंशी बाज रही (रामकृष्णदास)—१५८
 यावत मन परिचय नहीं (अनन्तदास)—२६७
 ये दोनो रसिक झुलन पर (रामशरण)—२८३
 रंम मूल्ये अकषविहारी हो (जीवाराम चौबे)—३१७
 रघुवर द्रवत दास पर येसे (गोपीशंकर सिंह)—११६
 रबनी बरस बरस जा कहो (बन्धू बुबे)—२७
 रट-रट रसना पक (हरिचरणदास)—१७८
 रदन-रत्न-रसिया बिरले देखे (इमलता)—११
 रसना रसीली पररु हो (रघुबीरनारायण सिंह)—२५३
 रापाओ अनुअ-सहित (अक्षयकुमार)—७२
 राजतोष पुत्रा दिय (जयदेवनारायण सिंह)—१२६
 रामेश्वर जानकी-वर-चरन ध्यावो (राजेश्वरशरण)—१५४
 रापा जो बापा हरे (बिहारीलाल चौबे)—२००

- रामनाम कहा करो (रामलोकन मिश्र)—७०
 राम रटन रू लाओ (मदनमोहन स्वामी)—१४१
 राम-रस पीवत बौन सुमागी (हैमलता)—११
 राम राम राम जपे (शंकर जीवे)—३०४
 राम-मुपश मुठि याहए (भागवतनारायण सिंह)—१४३
 रत फिरी सारी हरी बालों में (सैयद अलीसुहम्मद)—१५
 रूप न देख न मेख कोई (यशोदानन्द)—५
 रे मन निशिदिन नाम (हैमलता)—१
 सता लाने सय में (रामकृष्णराय)—८०
 सन्मोदर की मातु के (कृष्णदत्त पाण्डेय)—३
 ससन कैसे निबहैगी (हैमलता)—१२
 सागेला हिरोसबा रे अमरपुर में (लक्ष्मीसखी)—१६५
 सिद्धि सिद्धि पतिया बिप्रदि दीजे (सोहननाथ)—२५४
 सीनो है कृपान कर (शेखावतराय)—३३०
 छोटती परबंक पै (सुकन झा)—१०७
 नहीं चाँच पेड़ों के पीछे उगा (सोहनसाह)—१७५
 विकसित कंब से चरन (जयगोविन्द महाराज)—११२
 बंद पुरान शास्त्र संग्रह से (शंकर जीवे)—३०४
 वैष्णव कहत विष्णु (अनन्प कवि)—२१८
 *वैष्णव कं क्या लक्षण हैं ? (भगवान प्रघार)—६५
 शंकर कुतारबिन्द शोभानन (जगदम्नसाह बफ्फो)—१२७
 शिव मोर करिअ सराने (रत्नपाणि)—१५२
 शुभ निशुभ बिनाधिनि पाणिनि (छत्रनाथ)—३१२
 शोभित मामिनि सुकुसित कण (गोपालशरण सिंह)—३११
 भीगनराज कृपा मुख साज (जगदम्नसाह बफ्फो)—१२७
 संका आरती निसुदिन सुमिरो हो (मिशरोबाब)—२११
 संवन खो माव नीको (रामबिहारी सहाय)—३१
 सखि ओएह मठी (हरीश्वर)—२६४
 सखि रो लखु अद्भुत चरित (पृथ्वानन निहारीसाहशरण सिंह)—२५७
 सखि रे सजल कुम्भनिहारी (पुष्पहरन)—२४१
 सखि सखि । सखित समय (हयनाथ झा)—१८
 सखि है शिव के कहु न बुझाय (ईश्वरपति)—१२८
 सखी बसि-बुन्दन क (नवलकिशोर सिंह)—३११
 सखी रो दत्त अक्षरज बाव (नगनारायण सिंह)—११
 सपन बन दुम बेलि (आनन्दकिशोर सिंह)—३०८

- सभी सिर डारै चौर (सुरकिशोर)—१०६
 सजन अरस कत इन्द्र रे (जलधर)—२३७
 सजन सराई कल बपु में (वनुपचारी सिंह)—२४३
 सखगुद बिना कोई ना हमारा (मयनदेव स्वामी)—१४१
 सखनाम जती बर संत सती (परमानन्ददास)—१३४
 सख के घरूप छाड़ा करिके (वोकाराम)—१२७
 सखना कसाई कौन (सुमेरसिंह साहनभादे)—२८२
 सखन दरस प्रताप से (हरिहरदास)—१७२
 सब बन फुलै (नवलकिशोर सिंह)—३१८
 समय को पावकर कहुआ (चतुमज मिश्र)—२२
 समय बसत पिया परदेस (इपनाथ झा)—२८
 सरर पटा के सँग (नमदेवप्रसाद सिंह)—५३
 सरस सुपाकर देखि मनोहर रे (नाथ)—२४६
 सहज सुवासकों के संग (वासुगोविन्दमिश्र)—७२
 साग और सखु मिले सखरी (संसारनाथ पाठक)—१०२
 साजि कै कबच वन (मुकुटलाल मिश्र)—१४८
 साजि होली भूपन (भगवान प्रसाद)—२३
 साजि सकल तिगार-भाहा (बदरी बिन्दु)—२४८
 साबच न वन साधु (करताराम)—१८४
 साखरस-सखत पै बिचार (धनारंग बुने)—१५
 सारी सोहास नहीं तन में (हारकाप्रसाद मिश्र)—२०२
 सावन की बावन में (माधकप्रताप साहो)—२०२
 सावन मास निरास मय (समानाथ बात्रपवी)—१८२
 सावन मास सोहावन (परमानन्ददास)—१३५
 सावन में सखनी जो सोहात (हारकाप्रसाद मिश्र)—२०२
 सीता अरपल रामक हाथ (अम्बा झा)—३५
 सीता को लोच मारी (चतुमज मिश्र)—२३
 सीतापति रामचन्द्र कोरस खुराई (रानसनेहीदास)—१५२
 सुद समय सकल निरास (विन्देवप्रसाद)—२५६
 सुपर सखनी सुभ (मुकुटलाल मिश्र)—१४८
 सुपिकर बाहोपन की बतिया (अश्वदास)—१८५
 सुधि न सोम्ह पिय (भगवान प्रसाद)—६२
 सुनि साका इंकार राय (भगवतशरण)—३८
 मुनि-मुनि बंसी वान (शिखरदास)—१७१
 मुन्दर नाहि तज गृह में (बीहलराम)—२०१

- सुन्दर सुरंग सुधि घारी (नगनारायण सिंह)—१९
 सुन्दर स्वामि सिर सोमय मोरी (मैत्रानि वेदी)—२४८
 सुन्दर स्वामि सुमेरु सो गात (राधावल्लभ जोशी)—४३
 सुन्दरि करिअ लीरिअ अमिचारे (बयबेण)—२६३
 सुमिरन सेवन बिना नर (हरिहरदास)—१७८
 सुमिरन से सुधि यों करो (,)—१७८
 सुरधरि कठान है (रामकृष्णदास)—८१
 सुकत आर न पार कहीं (सुवन का)—२०७
 सुल केसि मरि में (बेबरच)—१३३
 सुख भवन मेस मोर (सुकविदास)—२६२
 सेइ उमाफर पंकज को बस (रामकुमार सिंह)—४८
 सोइ बानि 'जैगोविन्द' (जगदीश्वर महाराज)—१६४
 सोमा केस करे सुंदरारे (नमनारायण सिंह)—१९
 सोवत अटा ये इक (राधावल्लभ जोशी)—४२
 सोहावनी स्वामि रैय की पटा (कामेश्वरी सहाय)—११
 स्वामि निकट नै जायक (सुकविदास)—२३१
 स्वामि सखी रैय राधा सोहाग (जानकीशरण)—२३६
 स्वाही सिठाई ससाई किये (प्रतापदास)—३३५
 स्वस्ति सखा भी सहित भी (कामरामि)—११३
 हफ्त सुन्दर सुन्दर है नहीं (रामानन्द)—२८४
 हम अति निकस निपय-रस मातल (रामोदर का)—२१
 हम न करन बर बूड़ (शिवरच)—२५८
 हम न जितव यिनु राम जननि (सेवकजन)—२६३
 हरये हनुमंत सुन्दर बानी (अक्षयकुमार)—७४
 हरिअर उर बन, कुमुमिठ छपवन (दिनकर)—२४१
 हरिअ हिडोरना माई (मुरलीमनोहर)—७८
 हरि से न सुदो हर से न मिदो (रामकुमार सिंह)—४८
 हरि मोहि सवरी-सेयक कीजै (डाकुर)—१३१
 हरि हम मूढ मन्त्र अमिमामी (रामकृष्णदास)—१५८
 हरि हीरा हररम हिय धारो (संसारनाथ पाठक)—१०१
 हायिन क ज्ञाने बन समाजे (नाम्दक)—११२
 हिडोरे मू-कृत मन्त्रकिशोर (मारकण्डेय साह)—२७७
 है मनाइनि देवद जमाय (विप्र)—२५३
 है मनाइनि देवु जमाय (स्वामि)—२५८
 है सुनाय विरदम्बर स्वामो (रामुदास)—२५७
 * है राजन् एक मरे ही में (बयोप्यामिषाद मिश्र)—१०

- हरि यजुनाथ यशामति धरुम (नन्वलास)—२४५
 ॐ सङ्क और सङ्कियां (हरनाथप्रसाद खत्री)—४५
 हे हरि सो सुधि (रामचन्द्र साह)—४६
 होरी क रंग जम में (हैमलता)—१२
 हौ विष्टदार यार कब पेहो (कामदरुष)—११३
 हरे कर प्रचड वग (मन्वू कुब)—२७
 चरीकुल ने जनम छै (हितनारायण सिंह)—२
 ज्ञान योग, मक्ति बाम्तरव में (भगवान प्रसाद)—१५



व्यक्तिनामानुक्रमणी

- मंयनिमन्वन शरण—८८ (टि), १२५ (टि),
 १२६, १२६ (टि)
 लंभकवि—११७
 अक्षयकुमार—१३६ (टि)
 अक्षयवट मिश्र विप्रबन्ध—२४ (टि),
 २६ (टि) ३६ (टि), ८५ (टि)
 अक्षौरी कुम्भबिहारी शास्त्र—११५ (टि)
 अक्षौरी वासुदेव नारायण—१०६ (टि)
 अममल्लो—२२५ (टि)
 अमदास—२२५, ३१४
 अमपुत्र—१५२ (टि)
 अमयदास—३ ७
 अमानकवि—४०
 अजितदास—१०७
 अजितदास जैन—३२६
 अनपर सिंह—३२४
 अनन्तदास—२६६
 अनन्तानन्द—३६६
 अनन्यकवि—२६८
 अनूपधर सुयं—३०७
 अपुत्रदास—१५६
 अनुसूरीम खानखाना—१६३ (टि)
 अमिनब—२२६
 अमिनब अयदेव—२६३ (टि)
 अमरदास—२८६
 अमरनाथ झा—३३ (टि), ६६ (टि)
 अमरसिंह—१६२ (टि), २१६, ३००
 अमरनाथ सिन्हा—५० (टि)
 अमृतनाथ झा—१ २, ३१८
 अम्बालिका देवी—१८
- अम्बिकादेव व्यास—४०, १४२, १४३
 २६२, २७२
 अम्बिकाप्रसाद व्याख्याय—१८०
 अम्बिकाशरण—१८
 अयोध्यानाथ—१२६
 अयोध्याप्रसाद खत्री—१७३, १८१ (टि)
 अयोध्याप्रसाद मिश्र—२८, २६ (टि)
 अयोध्याप्रसाद राम—१६२
 अशिराज—३
 अक्षयबिहारी शास्त्र—५० (टि०)
 अक्षयबिहारी शरण—५ (टि)
 अक्षयदेव नारायण—६७ (टि), ६६ (टि)
 १८६ (टि)
 अशरफ अली—५८
 अश्वमेध कुँवरि—५०
 आत्मस्वरूप—२६८
 आदिनाथ—२०
 आशाशरण—२२७
 आनन्द—२२६
 आनन्द—१८८
 आनन्दकिशोर सिंह—११४, १३३, १६६,
 २०५, २१०, ३०८
 आनन्दीप्रसाद मिश्र—२८, २६ (टि)
 आशादास—२२८
 आशाकन्द—२६६
 इन्द्रजीत सिंह—३४१
 इन्द्रदेव द्विवेदी—१७६ (टि)
 ईशराम—१८१
 ईश—५१

द्वितीय खण्ड अक्षरबोली (सूचक)

- अनाप का—१२० (टि), १६० (टि)
 १६१ (टि) २२६ (टि), २२८ (टि),
 २२९ (टि) २३० (टि), २३१ (टि),
 २३२ (टि), २३४ (टि), २३७ (टि),
 २३९ (टि), २४१ (टि), २४४ (टि),
 २४७ (टि), २४८ (टि), २४९ (टि),
 २५५ (टि), २५६ (टि), २५७ (टि),
 २५९ (टि) २६१ (टि), २६२ (टि),
 २६३, २६४ (टि)
 अक्षरवच मिश्र—८५
 अक्षरवचि—२२८
 अक्षरप्रकाश—३१ (टि)
 अक्षरप्रकाश विपाठी—२८१
 अक्षरप्रकाश नारायण सिंह—१२६ (टि),
 २१३ (टि) २८२ (टि), २८३ (टि)
 अक्षरप्रकाश श्री शम्भू—२९ (टि), ६१ (टि)
 अक्षरप्रकाश सिंह—३०६
 अक्षरप्रकाश—१६७
 अक्षरप्रकाश सिंह—४६ (टि)
 अनराज राय—१६७
 अननाथ पाठक—७४ (टि)
 अननाथ मिश्र—८४, ८५ (टि)
 अननाथ बाबूजी—१८२
 अननारंभ—८
 अननारंभ उपाध्याय—२६२
 अननारंभ उपाध्याय—३६ (टि)
 अननारंभकर—२७६ (टि), ३०५, ३११,
 ३१२,
 अननारंभ—३१ (टि)
 अक्षरनाथ का—२१ (टि)
 अक्षरवचर सिंह—२६ (टि)
 अक्षरवचर मदन—१६२ (टि)
 अक्षरवचर—१६३
 अक्षरवचर—१०६
 अक्षरवचर—४ (टि), ७५ (टि), २०६
 अक्षरवचर—४४ (टि) ११४, १८८, २६६,
 १६८
 अक्षरवचर मह—७६ (टि)
 अक्षरवचर मिश्र—१०७
 अक्षरवचर सिंह—१६१, १६५ (टि), २८२
 अक्षरवचर—७५
 अक्षरवचर पाठक—२०७ (टि)
 अक्षरवचर—७५, ७७ (टि)
 अक्षरवचर—१८२, २०३
 अक्षरवचर—१०८
 अक्षरवचर सिंह—१६
 अक्षरवचर—२२६
 अक्षरवचर सिंह—३१०
 अक्षरवचर—२०१
 अक्षरवचर—१५०, १८४
 अक्षरवचर—३१, १७, १८२, १६५, २२२
 अक्षरवचर रंगनारायणजी—३२३
 अक्षरवचर—१८
 अक्षरवचर साधुजी—६
 अक्षरवचर साहाय—१३ (टि), १०६
 अक्षरवचर दास—२३०
 अक्षरवचर नारायण—१११
 अक्षरवचर—७२
 अक्षरवचर सखी—१६४
 अक्षरवचर मिश्र—११२
 अक्षरवचर नारायण सिंह—१८२
 अक्षरवचर—१८४
 अक्षरवचर सुखोपाध्याय—१४२ (टि)
 अक्षरवचर साहाय 'रामपुरी'—१६२ (टि)
 अक्षरवचर मिश्र—१६१ (टि)
 अक्षरवचर साहाय—५२ (टि), २१४
 अक्षरवचर—१११
 अक्षरवचर सुख—११४, २१३
 अक्षरवचर मिश्र—२५
 अक्षरवचर पाठक—६६

- काशीप्रसादजी—८२
 काशीराम—३६
 काशीराम जोशी—३८
 काष्ठबिहारी स्वामी—१९५
 कियारीछात्र गुप्त—३१, ३३१ (टि)
 किसोर सर—३०५ (टि)
 कीनारामजी—१८८ (टि)
 कीर्त्यानन्द सिंह—६८ (टि), १८७ (टि)
 कुंजनदास—११५
 कुंजलाल—२७६
 कुंजर—२३०
 कुपरसिंह—५१, २६ (टि), ३१ (टि),
 १५५, १६१, १६२, १६७, २१६,
 २१० (टि) ३२६ (टि)
 कुपेरनाथ शुक्ल—३३ (टि)
 कुमार—४५
 कुमार नकुलेन्द्रचन्द्र शाही—१८७ (टि),
 २०६ (टि०)
 कुरानारायण—१८६
 कुप्य—८, ३०६ (टि)
 कुप्यकिसोर मट्ट—३६ (टि)
 कुप्यवच पाण्डेय—३
 कुप्यपति—३०६
 कुप्यकुमार गोस्वामी—२७८ (टि)
 कुप्यप्रताप शाही—१८७
 कुप्यलाल—३१०
 कुप्यानन्द—१३०
 करारनाथ त्रिपाठ्याय—११५
 करारी मट्ट—३१२ (टि)
 कबलकुप्य—५, ५७
 कश्यप—५० (टि) ५१ (टि), २१७, १ ६
 कश्यपदास—१८५, ३२६
 कश्यप द्विवेदी—५०
 कश्यपप्रसाद सिंह—२६ (टि)
 कश्यपराम मट्ट—६१ (टि), २६५ (टि)
- कोसेर बाबा—१८६
 खकखन मियाँ—१८७
 खड्गपाणि—२३१
 खड्गबहादुर मल्ल—१०४ २७३ (टि)
 खेमराज श्रीकृष्णदास—१४० (टि)
 गंगा मोक्षिन्—३०४
 गंगामहाद—८२ (टि), ८४ (टि)
 गंगाबच त्रिपाठ्याय—१८८
 गंगादास—१७७
 गंगानाथ झा—२० (टि) ३३ (टि)
 गंगाधर शास्त्री—७६
 गंगाफूल मिश्र—८५
 गंगालक्ष्मी—१६६ (टि)
 गंगाविष्णु कायस्थ—१७
 गंगाशरण सिंह—२०१ (टि) २०२
 यज्जानप्रसाद नारायण सिंह—२१७
 यज्जान शुक्ल—५०
 यदाधर सिंह—२
 गणपति सिंह—११५
 यवेश चौधरी—११४ (टि) २१ (टि)
 गवेशवच द्विवेदी—१७६
 यवेश पाठक—१०७ (टि)
 यवेशानन्द शर्मा—४५
 गवाधर मट्ट—३४२ (टि), ३४४ (टि)
 ग्रियर्सन—६ (टि) २६, ३३, ६१ (टि),
 ७४ (टि) ७७ (टि) ६६, १३६ (टि),
 १५७ (टि) २१३, २६६ (टि),
 २७२ (टि), २८०, २८७ (टि),
 २६३, ३०६, ३०६ ३१० ३१२
 ३१६ ३१७, ३१६, ३२० (टि),
 ३२१, ३२२, ३२५, ३३१, ३३६
 गुनहयार—४८
 गुमानमंथन सिंह—१६१, १६२ (टि)
 गुमानो त्रिगारी—३१०
 गुफनाथ—२३१

द्वितीय खण्ड : कवीसूची शतौ (पूर्वार्द्ध)

गुरवकस शास—११७
 गुरुभाविन्द सिंह—२८३ २८८
 गुरुदयाल शर्मा—४५
 गुरुदयाल—११३ (टि)
 गुरुदयाल पाण्डेय—८२
 गुरुदयाल सिंह—११३
 गुरुनरसिंहशास—५१ (टि)
 गुरुशरण—६१ (टि)
 गुरुसहाय शास—८६
 गुलाबकन्द—१८८
 गुलाबकन्द शास—११७
 गोपाल—३१०
 गोपाल प्राचीन—३१
 गोपालशरण सिंह—३०६ (टि)
 गोपीनाथ—३११
 गोपी महाराज—११८, १३८
 गोपीश—११८
 गोबरबीन अहोर—१३१ (टि)
 गोविन्द देव—३६ १२१
 गोविन्द मिश्र—१८६
 गोपाल ठाकुर—६५
 गोपालशरण सिंह—३११
 गोपीनाथ पाठक—२८० (टि)
 गोपीनाथ मिश्र—२८
 गोपी महाराज—१३६ (टि)
 गोपीनाथ शाह—१३०
 गोपीशरण सिंह—११८
 गोस्वामी महाराज—३४२ (टि)
 गोरीदत्त—१८६
 गोरीप्रसाद सिंह—११३ (टि)
 गोरीशकरशास—३७ (टि)
 गुरुदास—२३६
 पनामसिक—१२ २५
 पनारंग कुये—१२ ३५
 चक्रवर्ति—३१२

चण्डी गोस्वामी—१५६
 चण्डीप्रसाद सिंह—१३७ (टि)
 चतुर्भुज—३१२
 चतुर्भुज मिश्र—६२
 चतुर्भुज सहाय—१२१
 चन्दा का—३१, ३६, ६६ (टि)
 चन्द्रशर्मा—१६७
 चन्द्र—३१
 चन्द्रकला—३१४ ३१५
 चन्द्रनाथ—२३२
 चन्द्रमणि—२३३
 चन्द्रमौलि मिश्र—३०
 चन्द्रशर्मा—१२१
 चन्द्रशेखरपर मिश्र—१०७
 चन्द्रशर्मा—८०
 चन्द्रशर्मा राय—१२२
 चाकशिखा—३१५
 चित्रपर मिश्र—१८६
 चित्रामणि—१७७, ३२३
 चिरंजीव—२३४, २८७
 चिरंजीवी मिश्र—२४
 चिरंजीवी—२७४
 चुन्दाई का—१
 छकनशास—१२५
 छतरनाथ—१८५ २०८ (टि)
 छत्रनाथ—२४६ (टि) ३१२
 छत्रपति—२६२ (टि)
 छत्रपति शिवाजी—१५५, २७५
 छत्रसिंह—१०८, १५२
 छोटक पाठक—१२६ २१३
 छोटाराम—३१३
 छोटाराम त्रिपाठी—४८५ (टि)
 छोटाराम त्रिपाठी—२७१
 जगन्नाथशास बण्डी—१२६
 जगदीशपुरी—१६६

- जगदीश मिश्र—२२२ (टि)
 जगदीश शुक्ल—१२ (टि) २४ (टि),
 २६ (टि), ४५ (टि), १६९ (टि),
 १७० (टि), २८१ (टि), २८२ (टि)
 जगदीश्वर प्रसाद—१३ (टि), २६
 जगद्वनारायण सिंह—१२८
 जगदेवराज भगवत—१६५ (टि)
 जयन कुंभे—२५
 जगन्नाथ तिवारी—१२९, २११
 जगन्नाथ दीक्षित—२२०
 जगन्नाथप्रसाद बहुवैवी—११६(टि), ११७(टि)
 जगन्नाथ सहाय—१९०
 जयमोहन—१०४
 जयमोहनदास—१६४
 जयसुवामी—११०
 जनसंबन्ध—१५६ (टि)
 जनकपारी शास्त्र—३४
 जनादन झा—३३ (टि), ९५ (टि)
 जनेश्वरी बहुआसिन—१९०
 जयकान्त मिश्र—३०९ (टि)
 जयगोविन्द महाराज—१९१
 जयदेव—२९३
 जयदेव स्वामी—२१५
 जयनाथ झा—१९५
 जयनारायण—१८८
 जयप्रकाशशास्त्र—५७, ७४ ३००
 जयप्रकाश सिंह—२६, ८५, (टि), १६१(टि)
 ३२७
 जयमाह—३९ (टि)
 जयानन्द—३१३
 जयानाथ—२१६
 जसपर—२३७
 जलराज—२३७
 जगद्वनारायण—१९५
 जहाँगीरबख्श शाहपुरी—५८
 जॉन—३२४
 जानकीप्रमन—१५४
 जानकीप्रसाद—१९६
 जानकीप्रसाद सिंह—२६
 जानकीबख्शराज—२८२ (टि)
 जानकी मिश्र—८५
 जानकीशरण—२३८
 जानकी सखी—१६४ (टि)
 जॉन क्रिश्चियन—३१३
 जी० एफ० बाहसिंह साहब—१४१ (टि)
 जीरकान झा—२६१ (टि)
 जीमनदास—१७६
 जीमनराम—३१३
 जीवाराम—३०४
 जीवाराम जीवे—३१४
 जूहाशास्त्र सिंह—१६
 जोह—१९७
 ज्ञानीदास—१६४
 कपली—१९७
 दिम्पल श्रीका—१९९
 टंकमनराम—१९६ (टि)
 ठगमिश्र—४०, ८५
 ठाकुर—१३० १३१, १७५
 ठाकुरदास—९
 ठाकुरदास सिंह—२
 ठाकुर प्रसाद—५८, १९६
 ठाकुरप्रसाद 'जयश्रीशपुरी'—५३
 ठाकुर मलिक—२५
 ठाकुर संतोष नारायण—१८५
 तु दिराज शास्त्री—२६५
 तपस्वीराम—५, ५८
 तालसेन—२५
 ठारकेश्वर प्रसाद—१३६ (टि), १८८ (टि)
 ठारप्रसाद—८३
 ठारामोहन प्रसाद—१७७(टि)

- वाखेर सिंह—२
 वल्लभीबास—१४ (दि), ४४ (दि), ११२ (दि),
 १४२, २६६, २७० (दि), ३१४ (दि),
 ३२७
 वल्लभीप्रसाद सिंह—५२
 वल्लभीराम—५, ५८
 वल्लभाराम—२१०
 वेम्बहाबुर सिंह—५२
 वेम्बमहल—१६७ (दि)
 वोठाराम शुक्ल—१५०
 वोठाराय—१२२, १५५ (दि), १६७ ३२६
 वोठो—२५
 विशुवननाथ सिंह 'जाय'—८८ (दि), १००
 वध—२३६
 बचमलक—२३६
 बछ्मप्राचीन—३३३
 बघडी—२६६
 बघा—१६७
 बवानम्ब—३४१
 बघाण्ड सिंह—१६१, १६२ (दि)
 बरसनवास—१६८
 बरसर्जन सिंह—१६१ (दि)
 बरसेल सिंह—२६६
 बामोदर—२६६
 बामोदर मा—२०
 बामोदरबास—२६६
 बामोदरलक्ष्मण सिंह 'कविकिंकर'—३६ (दि),
 ३७ (दि) ६६ (दि) १००, १०१,
 (दि), १०३ (दि)
 बामोदरशास्त्री छमे—२६५
 बास—२४०
 बिनकर—२४१
 बिलेय—३००
 बिलेय द्विबरी—५०
 बिबाकर भट्ट—३४२
 बीनवयास—२१३
 बीनवयास मिश्र—८४
 बीनवयास सिंह—१४२
 बीनवयास—१६६
 बीनवयास गुप्त—२६४
 बीनमन्धु उपाध्याय—१३८
 बीनमन्धु मा—२१
 बीनानाय—२४१
 बीहसराम—१६६
 बुबहरन—२४२
 बुरमिल—२४२
 बुर्गावस—४० (दि)
 बुर्गाप्रसाद मिश्र—२७३
 बुर्गाशंकरप्रसाद सिंह—५२ (दि), ८० (दि)
 ८१ (दि) ६५ (दि) १२२ (दि) १२३
 (दि) १२४ (दि) १२२ (दि), १६७ (दि)
 २२० (दि), ३२६
 बुर्गाशंकर शुक्ल—१३०
 बुल्लारसिंह चौधरी—३३५
 बेमठीर्य—१२५
 बेददस—३३३
 बेमपारी सिंह—३४१ (दि)
 बेमनाथ—७५ (दि)
 बेमराज पाठक—६६
 बेमराज मिश्र—६२
 बेचोबास—३१७
 बेचोप्रसाद—३१७
 बेचोराय—१७
 बेचोसिंह—३ ३
 ब्यारकाप्रसाद गुप्त—२४ (दि), ३० (दि)
 ३८ (दि), ४१ (दि) ८५ (दि), २८३
 (दि), ३००, ३२६
 ब्यारकाप्रसाद मिश्र—२०१
 बर्नवय पाठक—५२ (दि), ५३ (दि)
 बनपति—२४३

धनपाल राम—१९७
 धनराज सिंह—३४१ (टि)
 धनुषधारी सिंह—२४३
 धनेश्वर मठ 'मारवाज'—३४३ (टि)
 धमन्ध्व जैन—३२६
 धमदास—२४३ (टि)
 धमनाथ शास्त्री—३९ (टि)
 धमराज कुँवरि—५२
 धर्मेश्वर—२४४
 धवलराम—१८२ (टि), २०३
 धैरजपति—२४४
 ध्रुवबी—१२ (टि)
 ध्रुपदाय—२०४
 नकुलेश्वरी तिवारी—५२, ५३ (टि)
 नकी ब्रह्मन्—९५ (टि)
 नकुलेश्वरेश्वर शाही—२२३ (टि)
 नगनारायण—१८०
 नगनारायण सिंह—१३ १३७ १३८ (टि),
 १८१ (टि) २ ३, २१४ २२७ (टि),
 २३८ (टि) २३९ (टि) २४३ (टि),
 २४९ (टि), २५३ (टि), २५७ (टि)
 नगभद्रनाथ एव—३३
 नन्द—३३७
 नन्दन—१९०
 नन्दनदास—२९६ (टि)
 नन्दन सिंह—३२५
 नन्दसाल—२४५
 नम्बसाल सिंह—७२
 नन्दोपति—३०९, ३१७
 नरसिंहदत्त—२४६
 नरेन्द्रनारायण सिंह—७५ (टि)
 नरेन्द्र सिंह—५१ (टि), ३१९
 नर्मदेसरमभार सिंह—५१, १९६
 नररंगी सिंह—२ ४

नवलकिशोर सिंह—११४ १३२ २०५,
 २१० ३१८
 नागराज—४० (टि)
 नागा पाठक—१५६
 नागेश्वर प्रसाद—१६३
 नाथ—२४६, ३१२
 नाम्दह—१३२ १९७
 नामाधी—३१ (टि)
 नारायण—१३३
 नारायणदत्त उपाध्याय—१३३, २१३
 नारायणमन्त्र—३४२ (टि)
 नारायणसाल—२७९
 नारायणस्वामी—१७६
 निष्ठाचार्य रामसखे—३०७ (टि)
 निर्जन सिंह—१६१
 निरबोध सिंह—१४२
 नियाज फतहपुरी—९४ (टि)
 नीमबाँ बाबा—१४०, १४१ (टि)
 नूरनारायण साह—८
 नेत्रेश्वर सिंह—१९
 नेनन का—३१ (टि)
 नीरंग—२०४ (टि)
 नृपतिदत्त साही—२९९
 नृसिंहदत्त शास्त्री—७६
 नृसिंह शास्त्री—९५
 पंथमदास—१५९
 पञ्जनेस—१२६ (टि), १३०, १३१, १९७,
 २१३ (टि)
 पञ्चसाल—२७३ (टि)
 पदारथ घुसे—२५
 पद्मनदास—३००
 पद्माकर—८०
 पनबाँस कुँवरि—५२
 पपहारि बाबा—१४०, २१२
 परमश विष्णुपुरी—२१३ (टि)
 परपंत बाबा—१८९, २०४

द्वितीय खण्ड : दशमोपदी सभा (पूर्वार्ध)

- परमानन्दबाब—१३३
- परमानन्द सिंह—१४३
- परमेश्वर का—३३ (टि)
- परसमधि—२४७
- परायबाब—३३३
- पाण्डेय कपिल—६७ (टि), ६८ (टि), ८० (टि), ८२ (टि), ८२ (टि) १२२ (टि), १२४ (टि)
- पाण्डेय यशपतराब—१३६
- पामर—१६८ (टि)
- पारतनाथ सिंह—८४ (टि)
- पीताम्बरबाब—१०३
- पीपाजी—६१ (टि)
- पुष्कृशास—४३
- पुष्पात्मा विशारद—८२ (टि)
- पुष्पोत्तमबाब—१०७ (टि)
- पुष्करराम—१६ (टि)
- पुष्करराम बोयी—१८
- पूरनराम—२०५, २१६, २२१
- प्वारेशास—२०५, २१३
- प्रकाश—२४
- प्रकाश मलिक—१३, २४
- प्रतापनारायण मिश्र—२८६
- प्रतापनारायण सिंह—४०
- प्रतापसिंह—२८८, ३०६, ३१६
- प्रदीपसखी—१३४
- प्रबल—३००
- प्रबलयाह—३००
- प्रबलसिंह—३००
- प्रक्लेश—३००
- प्रमाकर—१३ (टि)
- प्रपामदल—१
- प्रपामदास—३३३
- प्रहलारदल—५ (टि)
- प्रहलारदल पाण्डेय—५८
- प्रायबाब—३३३
- प्राणपति शास—४८
- प्राणपुङ्गव—२०६
- प्रियादास—६१ (टि)
- प्रमदास—२६७
- प्रमशास—२४७
- फतहसिंह—३३३
- फरूशास—१३६
- फरूरीशास—१३६
- फुलेश्वरी—१८२, २०३
- फुल्लोबाबू—२०६
- फलन साहब—५६, २६६ २७६ २
- फूलनचन्द्र बुन्दे—२५
- फूलचन्द्र मलिक—१३ (टि) २६
- फुलुरीराम मिश्र—७६
- फुलुरीराम—५
- बबबा का—१३८
- बबचूमी—२६ (टि)
- बबचुबुन्दे—२४
- बबचु मलिक—१४ (टि), ८४
- बजरंग बर्मा—२६२
- बबरीनाथ—१३७
- बबरीनाथ का—२१ (टि) ३०६ (टि)
- बबरीनाथ श्रीपरी—२८६ (टि)
- बबरीविष्णु—२४८
- बनवारीशास मिश्र—८८
- बबुजन का—२१, १३८
- बबुरैपा का—१५२
- बलदहनारायण—५६
- बलदेव मिश्र—३१ (टि)
- बलदेवनारायण सिंह—६१ (टि)
- बलवीर—२६४
- बल्लम—३८
- बल्लम पिय—३८
- बहापुरदास—१३८

बाबमद—१४२ (टि)
 बालकृष्णराम—१२२
 बालखण्डी—११६
 बालगोविन्द—७५
 बालगोविन्द मिश्र—७५
 बालगोविन्द मिश्र 'कमलेश'—१७२
 बालमुकुन्द पाण्डेय 'कुन्द'—१०४ (टि)
 बालराम स्वामी—१६८
 बालशास्त्री—६५
 बिन्दाप्रसाद—७२
 बिन्देश्वरीराव—१२२ (टि)
 बिमुनी—१६७
 बिहारी—६७, १४७ (टि), १४८ (टि)
 २७० (टि), ३४३
 बिहारीलाल—४ (टि)
 बिहारीलाल चौधे—२६८
 बिहारी सिंह—१३६
 बुद्धराम—१३६
 बुद्धायाह—१३४
 बेचन—१६६ (टि)
 बेचूषाह—१७७
 बेनीप्रसाद कुँवर—२६,
 बैजनाथ द्विवेदी—५० (टि)
 बेयडोब—२१२ (टि)
 बोपहृष्य मारती—६०
 बोपिदास—१३६
 मंजन—३१६
 मछमूषण—६६
 मछमासी—८ (टि), १६६ (टि)
 मयसू तिवारी—८८
 मयसू मिश्र—८८ (टि)
 मयतजी—३६
 मयवंत—१४२
 मयवतशरण—३६
 मयवतीदास—३०३

मयवतीप्रसाद सिंह—८ (टि), २०४, २१८,
 २८२ (टि), ३०३ ३ ५ टि), ३०७
 (टि) ३१४, ३२७ (टि), ३३३ टि),
 ३३३ (टि)
 मयवतीलाल—२७६
 मयवानप्रसाद—५७, २८, २७३
 मयवानप्रसाद चौधे—१६६ (टि)
 मयवानप्रसाद वर्मा—१४०
 मजनदेव स्वामी—१४०
 मङ्गुर—३२०
 मङ्गुरी—३२० (टि)
 मयनाथ—७५ (टि)
 मवानी—१२२
 मवानीशरण सुबोपाध्याय—१४२
 माई गरीबसिंह—२८७
 माई निहालसिंह—२८७
 माई साक्यसिंह—२८७
 मागधनारायण सिंह—१४२
 माना का—२१
 मामुनाथ—२१
 मामुनाथ का—१३८
 माखेन्दु—८ (टि) ७६, ७७ (टि), २८५
 (टि), २८६ (टि)
 माखेन्दुमूषण 'दिनहास'—१५७ (टि)
 भारतेंदु हरिश्चन्द्र—६ (टि) २५, ३६
 (टि), ५३ (टि), ५७, ६०, ८२, १०४,
 १२६ (टि), २१३ (टि), २६५,
 २६७ (टि) २८०, २८७
 मास्करानन्द सरस्वती—२७१
 मिश्रादीदास—३२१
 मिनकराम—२१६ (टि०), २१८, २२१,
 ३२
 मिमिक मिश्र—३३७
 भीष्मराम—१६६ (टि), २१६ (टि),
 २२१ (टि), २२२ (टि)

टीप्य कवच : उद्योगसर्वो गयी (पूर्वार्ध)

ब्रह्मदास—५९

ब्रामिभ—२१४

राव—८० (टि)

का—२०७, ३१८

उपनिषद्नाय मित्र 'मायव'—३१५

मुक्तेरवप्रसाद श्रीवास्तव 'मातु'—१९५(टि)

मुक्तेरवप्रसाद सिंह—५२

मुक्तेरवप्रसाद सिंह मुक्ते'—३३(टि) ५२

मुक्तेरव—१३० १९७

मुक्तेरव—१८२

मुक्तेरव—२९१

मूरेव बाबू—२७३ (टि)

मूरेव सुखायाप्पाय—२७१, २८० (टि)

भूपतिविह—२९४

भूपव—१५५

भूपनाथ राय—८०

भूपनाथ का—२०८

भूषनि देवी—२४८

भैपाजी—१६८

भोबराव कर्नोरकर—१६९ (टि)

भोक्तन का—३२१

भोला का—३२

भैयनोराम—२१३

भंगलप्रसाद सिंह—२४९

भंगलाल—३२१

भनिकर्मा—७२ (टि)

भनिराम—९० ३४३

भनिसाल—२४९

भपुराप्रसाद—३९

भवनमाहन मट—२६५

भवनमोहन माधवजी—७७

भदनय—२०९

भपुरा—२५०

भपुराचार्य—८

भपुराजन श्रीका 'स्वतन्त्र'—३४२ (टि), ३४३ (टि)

भपुराजन रामानुजवास—१४४

भनबोध—३२१

भनवा राम—२०८, ३१४

भनियार सिंह—३७

भनीहर का—२०

भन्ननजी—२७४ (टि)

भन्ननलाल—३९ (टि)

भहाव सिंह—७२

भहावैव चौबे—१४५, २१३

भहावैव वल—१९३ (टि)

भहावैवप्रसाद साही—२ ९

भहावैव प्रसाद—२०९

भहावैव शर्मा—१३९ (टि)

भहावीर प्रसाद—३२१

भहावीरप्रसाद द्विवेदी—१८७

भहीपति—३२२

भहेन्द्र बहादुर—२८८

भहेन्द्र राव—१२२

भहेय का—२१

भहेयबाबू—१४५

भहेयकरवलय सिंह—१३, १४, २६, ३८, ३९ (टि), ८५(टि), १६१ (टि) १६२, १९७ (टि)

भहेयकर सिंह—२१

भहेयकर भपुराजन वल—२७१

भाषव—२०९

भाषव सिंह—२० १८८ (टि), ३२१

भाषकेन्द्र—१६९ (टि)

भाषकेन्द्रप्रसाद साही—२०९, २२३ (टि)

भाषी प्रसाद—४ (टि)

भाषीबदन पाठक—१२५

भाषीकर विधियम्य—२६९

मायाराम बोन—२१०
 मारकण्डेय काल—२७४
 मिहू—१९७
 मिट्टूराय—१२२
 मिश्रजीव सिंह—३१०
 मिश्रनाथ—२११
 मिश्र अक्षयप्रसाद शर्मा—२०१ (टि),
 २०२ (टि), २०३ (टि)
 मिश्रबन्धु—७४ (टि), ८५ (टि) ८८ (टि),
 १०७ (टि), १२१ १२५ (टि), १९
 (टि), १९१ (टि), १९२ (टि) १९७,
 २२० २६६ (टि), २९३ २९६ (टि),
 ३१३ ३१०, ३२१ ३२२, ३२३,
 ३२५, ३२७ (टि) ३३१ (टि)
 मोर्यदक्षिणा—१०७ (टि)
 मोरानाई—६१ (टि)
 मुद्योत्सास—९०
 मुकुन्दसास मिश्र—१४५
 मुक्तिराम—२५०
 मुनीन्द्र—१५० १८४
 सुब्रीसास—१०७
 मुबारक—५२ (टि)
 मुबारकशाह—५ (टि)
 मुरखो मनोहर—२७८
 मुरारोत्सास शर्मा 'मुरख'—२६३
 मूरठ—३२१
 मधनाथ—७५ (टि)
 मैना—२५
 मोहननाथ—२५१
 मोहननाथ झा—९५
 मोहनारायण—३१९ (टि),
 मोहनारायण सिंह—३१० (टि)
 मोहोनारायण सिंह—५०
 मोहनदास—१५९

माहन मिश्र—३३७
 मोहनसास महतो 'भियागी'—२८४ (टि)
 मोहनशरण मिश्र—७७ (टि), ७८, ७९ (टि)
 मोक्षजी अम्बुल सखी—२७१
 यम—१०४
 यदुवच विपादो—१०४
 यदुनाथ—२५२
 यदुनाथ राय—८
 यदुपति सिंह—१४०
 यदुराज मिश्र—९२
 यदुशरदास—२५२
 यद्योदानन्द—४
 यद्योदानन्द अखौरी—८९ (टि)
 युगलक्ष्मिार—२१२
 युगलक्ष्मिपा—८, ३१५
 युगलानन्ध शरण—८
 युगलानन्ध स्वामी—३७
 योगेश्वरप्रसाद सिंह—१५८ (टि)
 योगेश्वर राम—२१२
 रंकरमणि—२५३
 रंग—१४५
 रघुपास चौधे—२६८
 रघुनन्दन विपादो—८५
 रघुनन्दनप्रसाद शर्मा—३२४
 रघुनाथदास—३२२
 रघुनाथप्रसाद 'विश्व'—७१ (टि)
 रघुनाथ मिश्र—७७
 रघुनाथ सखी—१३४
 रघुनाथनन्दन सखी—१६५ (टि)
 रघुराज सिंह—८ (टि), ९ (टि)
 रघुवंश सहाय—४, १५०
 रघुबीर नारायण—३७, ११७, १८८
 रघुबीर नारायण सिंह—२५३
 रघुबीर सिंह—२८८
 रघुबीर सिंह—२८८

रत्नपट्टि—१८४
 रत्नपात्रि—१५०
 रत्नशास्त्र—२५४
 रत्नाकर—२८०
 रमण कुन्ने—३०४
 रमाकाण्ड—२१३
 रमापति—२१३, ३०६
 रमापति उपाध्याय—३१२
 रमापति द्विवेदी—१७६
 रमेश्वर सिंह—३२ ११८, ३३७
 रसरंज—१८१
 रघुस्य—१५७ (टि)
 रवासदास—१८५
 राजकुमारी—१३
 राजगुप्त मठ—३४२
 राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह—१३, १०६ (टि)
 १६६, २७४ २८१, २८८
 राजराजेश्वरीप्रसाद सिंह 'प्यारे'—२३ (टि) ४३
 राजाराम शास्त्री—१५, ३२५
 राजाराम शास्त्री कालेकर—२३५
 राजाराम शास्त्री खरे—२३५
 राजाराम शास्त्री बोडस—२३५
 राजेश्वरकिशोर सिंह—१२६, १२८, १४५,
 २१३
 राजेश्वरप्रसाद—१३३ (टि)
 राजेश्वरप्रसाद सिंह—२१४
 राजेश्वरराय—३३० (टि)
 राजेश्वरशरण—१५४
 राजेश्वर मिश्र—३६ (टि)
 राजेश्वरराम—१४० (टि) ४४१ (टि),
 १४२ (टि)
 राजेश्वरीप्रसाद उपाध्याय—१८० (टि)
 राधाकृष्ण—१३६ (टि)
 राधाप्रसाद सिंह—१३ २५ (टि), २३
 २७ (टि) ४, ५७, ८३, १४ (टि)
 १६२ (टि), २८१, ३००

राधारमण का—२०७ (टि)
 राधादास माधुर—२७३, २७६
 राधावस्त्रम—३४२
 राधावस्त्रम बोधी—१३ (टि), ६८
 राधावस्त्रम बोधी—४० (टि), ८५
 राधिकारमणप्रसाद सिंह—४३
 राधेदास—२८० (टि)
 राम—१५५
 रामचंद्र सिंह—२८२ (टि)
 रामकिशोर—३०४
 रामकिशोर मठ—३६ (टि), ४०
 रामकुमार—१२५ (टि), १२३
 रामकुमार सिंह—१३ ४५
 रामकृष्ण मिश्री—८० (टि)
 रामकृष्ण मुखोपाध्याय—२७३
 रामकृष्ण सिंह—१२८
 रामपति न्यायरत्न—२७३
 रामगुलाम द्विवेदी—१२५
 रामचन्द्र—१३०
 रामचन्द्रदास—४८
 रामचन्द्रशाला—४८
 रामचन्द्र शुक्ल—८ (टि), ३१४ (टि)
 रामचन्द्रदास—६, ५८, १५६, ३०३,
 ३१४, ३१५
 रामचरण छाडू—५८ (टि)
 रामचरण दास 'इंसकला'—५८
 रामचरण सिंह—२
 रामचरित तिवारी—१३ (टि), २८१
 रामदत्त—२८२
 रामदत्त तिवारी—३२२
 रामदास—६, ५८, ३३६ (टि)
 रामदास 'नृत्यकला'—१५६
 रामदीन—५८ (टि)
 रामदीन सिंह—६१ (टि) १०४ (टि),
 १३१ १७६ २३६, २६८, २७२,
 ३७३ २८५ ३१० (टि)

- रामधन—२२१
 रामधनराम—२१६
 रामनारायण शास्त्री—१६६ (टि), १७१,
 (टि), २७५ (टि)
 रामनारायण सिंह 'आनन्द'—१६१ (टि)
 १६२ (टि), १६३ (टि), १६४ (टि),
 रामनिर्बजन स्वामी—७६ (टि), १७२
 रामनेषाम मिश्र—२१६
 रामपूजाजी महाराज 'दिव्यकला'—६
 रामप्रकाश साहू—२७३
 रामप्रसाद—३२३
 रामप्रसादशरण—५८ (टि)
 रामप्रोथ शर्मा 'प्रियतम'—५१ (टि)
 रामकल—१६७
 रामकलराय—८०, १२२
 रामबकश मिश्र—७६
 रामबिहारी सहाय—६७
 रामचन्द्र सिंह—१४२ (टि), १४३ (टि),
 १४४ (टि)
 रामरत्नाबसो—१७६
 रामरूपदास—१५७, १५६ (टि), ३२३
 रामसाह उपाध्याय—१३ (टि)
 रामशोचन मिश्र—६६
 रामबल्लभ—३१३
 रामविद्या—२०४ (टि)
 रामशरण—२८२
 रामशरण साहू—६०
 रामशरण सिंह—५३ (टि)
 रामचन्द्रदीवान—१५८, १५६ (टि)
 रामशहाय साहू—८८
 रामसिंह—३०५
 रामसिंहचन्द साहू—३६
 रामस्वका—१८२
 रामस्वकाय—२१७
 रामायी—१००
 रामायीन महतो—१५६ (टि)
 रामानन्द—२८४, २६६ (टि)
 रामायणदास—६६
 रामेश्वरदास—३२३
 रामेश्वर प्रसाद—३४० (टि)
 रामेश्वरप्रसाद नारायण सिंह—२१७
 रामेश्वर सिंह—११४, २८८
 राय खोहनसाह—१७३ (टि)
 रायकेश्वर सिंह—११६ (टि)
 रिपुमंजन सिंह—१६१, १६२ (टि)
 यदुनाथ—२५४
 यदुसिंह—६६ (टि), ११८, १५२, १६५
 यदुनाथ सिंह—३२५
 यदुनाथ—५ (टि), ५७, ५८ (टि) ६१
 (टि), १२५ (टि), १३७ (टि),
 १५४ (टि)
 यदुनारायण पाण्डेय—२७१ (टि)
 यदुसाह—१६३ (टि)
 यदुसाह मंडल—२८५ (टि)
 रेवाह—२६६ (टि)
 रोशनदास—१७७ (टि)
 रोहिणी मिश्र—६६
 लैयदू मिश्र—८५
 लक्ष्मीकांत राय—१५७ (टि)
 लक्ष्मीदास—१६४
 लक्ष्मीधर मिश्र—१०७
 लक्ष्मीनाथ—७५ (टि)
 लक्ष्मीनाथ ठाकुर—३३६
 लक्ष्मीनाथ परमहंस—३२४
 लक्ष्मीनारायण—४ (टि), १७३, २६५
 लक्ष्मीपति परमहंस—३२४
 लक्ष्मीप्रसाद—४३, ३२४, ३२६ (टि)
 लक्ष्मीसखी—१६४

लक्ष्मीशंकर सिंह—२१, ३२, ३३ (टि)
 ७६, ७७, ८३, ९६, ११८, २७४
 ३३७
 लक्ष्मणकुमार सिंह 'नटवर'—१९९ (टि)
 लक्ष्मिा देवी—३९
 लक्ष्मणराज गंधर्व—१४५ (टि), १४७ (टि),
 १४९ (टि)
 लक्ष्मणदास—२१८
 लक्ष्मणदास—२०९
 लक्ष्मणदास—२९३
 लक्ष्मण का—३२५
 लक्ष्मणदास—२९३
 लक्ष्मणदास—१६७
 लक्ष्मणदास—५
 लक्ष्मणदास—२०९, २२०
 लक्ष्मणदास—१३१
 लक्ष्मणदास—२६ (टि)
 लक्ष्मणदास—११८, १३८, १६९ (टि)
 लक्ष्मणदास—२५४
 लक्ष्मणदास का—२११
 लक्ष्मणदास—३९, २५५
 लक्ष्मणदास—३१० (टि)
 लक्ष्मणदास मिश्र—२६८
 लक्ष्मणदास—३३१
 लक्ष्मणदास—२१८
 लक्ष्मणदास—८३, १७९, २७४ (टि)
 लक्ष्मणदास सिंह—२८८
 लक्ष्मणदास सिंह—१६८
 लक्ष्मणदास—३९ (टि)
 लक्ष्मणदास किशोर—१८२ (टि)
 लक्ष्मणदास—३३१
 लक्ष्मणदास—३३ (टि), १५१ (टि), २७५ (टि)
 २९३
 लक्ष्मणदास—८५

लक्ष्मणदास सिंह—२६८
 लक्ष्मणदास—५८
 लक्ष्मणदास—२५६
 लक्ष्मणदास—२५६
 लक्ष्मणदास—१८, १२१
 लक्ष्मणदास—३३१
 लक्ष्मणदास—३०८
 लक्ष्मणदास—२७७
 लक्ष्मणदास मिश्र—८५
 लक्ष्मणदास—५२ (टि)
 लक्ष्मणदास सिंह—८
 लक्ष्मणदास—९०
 लक्ष्मणदास—३९ (टि)
 लक्ष्मणदास—२७९
 लक्ष्मणदास सिंह—१६१ (टि)
 लक्ष्मणदास—१८२ २ ३
 लक्ष्मणदास—३२६
 लक्ष्मणदास—१०७
 लक्ष्मणदास—१६५ (टि)
 लक्ष्मणदास—२५७
 लक्ष्मणदास—१६८, १६९ (टि), ३२५
 लक्ष्मणदास का—२३९ (टि)
 लक्ष्मणदास मिश्र—१
 लक्ष्मणदास—४० (टि)
 लक्ष्मणदास 'नटवार'—१८
 लक्ष्मणदास 'प्रबलदास'—२८७
 लक्ष्मणदास का—९५
 लक्ष्मणदास—८२
 लक्ष्मणदास—२७९
 लक्ष्मणदास—२६७ (टि)
 लक्ष्मणदास—३२६
 लक्ष्मणदास—३ ३
 लक्ष्मणदास—३२६
 लक्ष्मणदास—२९१
 लक्ष्मणदास—२१८

- यम्मुसुख का—२१६
 यम्मुहास—२५७
 यम्मुहारव—६६ (टि)
 यथिनाथ चौबरी—३३७(टि), ३३८(टि),
 ३३९ (टि), ३४० (टि)
 यथिनाथ प्रसाद—४३
 याद—६४
 याम्भुश्याह—१२ (टि)
 याम्भिवेक शास्त्री—१६ (टि)
 यारवान्द प्रसाद—१२२ (टि)
 यारवामसाद मिश्र—३३७ (टि)
 यादवहर्षी—३४२ (टि)
 यिन्दरचन्द्र खैन—३२६
 यिन्दकविराय—२१६
 यिन्दकरव—५ (टि)
 यिन्दकरव मंगल—५८
 यिन्दरव—२५८
 यिन्दहास—१३८ (टि)
 यिन्दहीन द्विवेदी—५० (टि)
 यिन्दवुसारे मिश्र—८८
 यिन्दनन्दन सहाय—४ (टि), ५ (टि)
 २४ (टि) ४८ (टि), ४९ (टि),
 ११६ (टि), १३० (टि), १३३ (टि),
 १६६, १७० (टि), १७३ (टि), १९६
 (टि) २२१ (टि), २७४, २८५ (टि)
 २८६ (टि), २८७ (टि), २९५, ३३२
 यिन्दनारायण शास्त्री—२७३
 यिन्दप्रकाशसाल—५७ ७४
 यिन्दप्रकाश सिंह—७४ (टि), ३२७
 यिन्दप्रसाद—१७०
 यिन्दप्रसाद गुप्त—२१ (टि)
 यिन्दप्रसाद मितारेहिन्द—१२६ (टि),
 २१३ (टि)
 यिन्दकव्य मिश्र—७६ (टि), १७२
 यिन्दमाद—३४३
 यिन्दरत्न मिश्र—८८
 यिन्दराम पाठक—७५
 यिन्दसाल पाठक—१९६
 यिन्दमती देवी—५७
 यिन्दशरण साह—२६५ (टि)
 यिन्दसिंह—१५२ (टि) २९३
 यिन्दसिंह सेगर—३०५ (टि)
 यिन्देन्द्र शाही—२२०
 यीशस उपाध्याय—२२०
 यीशस द्विवेदी—२२०
 यीशस प्रसाद—२८५
 यीशसराम—२०५, २२१
 यीशसप्रसाद त्रिपाठी २८५ २८६ (टि)
 यीशसमणि—८
 यीशसमती देवी—६५
 युक्तबननारायण—१६५ (टि)
 युआरहीन साहय—५८ (टि)
 युजायत अक्षी—६०
 योक्तपिबर—२६९
 योक्तपतराय—३२९
 योक्तवच—१९६
 योमानाय—३३२
 योमानाय पाठक—७५
 योमान—२५८ (टि)
 योमाननन्दनशाह—४३ (टि)
 योमाननन्दन सहाय—७२(टि), २६५ (टि)
 योमाननायिका—५८
 योमानसालनन्द—३९ (टि)
 योमानसखा—२५, ३ ७
 योमानसुन्दर—११८(टि) १६८, १६९(टि)
 योमानसेवक मिश्र—१६९
 भक्तसिंह—२९९
 भीष्म मलिक—२५
 भीष्म सिंह—२९

- भीरर शाही—२२१
 भीनिवासप्रसाद सिंह—२६
 भीपति द्विवेदी—१७६
 भीरामकवि—१४२
 भीषीवारासजी 'सुगमप्रिया'—६
 भीषीवारासजी हरिहरप्रसाद—२८२ (टि)
 संगम मित्र—८५ (टि)
 संग्राम शाह—५२ (टि)
 संतसिंह—२८८
 संसारनाथ पाठक—६६
 सक्तनारायण शर्मा—२८७
 सखाराम मह—७६
 सखावत—१६७
 सखाकराय—४२६ (टि)
 सखिबानन्य सिन्हा—३४१
 सत्सनामदास—१७७ (टि)
 सदानन्द—१८६, २०४, २०८ (टि)
 सनाथ—२५६
 सनाथ झा—१६५
 सनाथराम—२२१
 सनेहीराम—१८२
 सप्तम पदबद्ध—५१ (टि)
 सप्तहराम—१२२
 सनाथवन्धुजी खो—११० (टि)
 सखार—२६, १२६ (टि), १२०
 सख्युषका मोड़—१६३ (टि)
 सखराम—१३६
 सखरामजी द्विवेदी—१७६ (टि)
 सखरामसिंह—१२५
 सखरामजी आच्छोला—११४
 सखिता—१२२, १६७
 सखराम कुड़े—१३ (टि), १६ (टि)
 सखराम—२६०
 साधुजनबाबो सिंह—१४१ (टि)

- साधुसिंह—२८५
 साधोराम मह—२६५ (टि)
 सामबिहारीदास—१८५
 साहबजावा सिंह—१६१ (टि) ११० (टि)
 साहबप्रसाद सिंह—१३७ (टि), १४१ (टि),
 २५६ (टि)
 साहबरामदास—१३०
 सिद्धनाथ सहाय—४१ (टि), ४४ (टि),
 ४५ (टि)
 तिकाराम तिवारी—१०५, १११ (टि)
 तीरछराम—२११, २१६
 तीताराम—५०, ११७
 तीतारामचन्द्र प्रसाद—५
 तीतारामशरण—५८ (टि)
 तीतारामशरण भगवानप्रसाद 'कपकपा'—
 ५, ५७, १००, १३७ (टि), १५७
 मुकवि—२६०
 मुकविदास—२६१
 मुकबेकराम—१६ (टि)
 मुजन—२६२
 मुदरामदास—१५६
 मुपाकर प्रसाद—७२ (टि)
 मुम्बरठाकुर—१३६
 मुन्दरदास—१०७ (टि)
 मुमरहरि—१८६
 मुमेरसिंह—२८६
 मुमेरसिंह साहबजादे—२८६
 मुमेरस—२८६
 मुमेरसजीनारायण सिंह—१६ (टि)
 मुर्खदास—८०, २६२
 मुवाकिनदाई—२
 मुर्खदादेवी—१६
 मुर्खियोर—१०५ १३४
 मुर्खमल—५७ (टि), २७६
 मुपनारायण मन्हाटी—१२६ (टि), १४० (टि)

सेठ राधाकृष्ण—१२६ (टि), १२९ (टि),
१४५ (टि), १९९ (टि), २०५ (टि),
२१३ (टि)

सेवकजन—२६३

सेवक अजीतसुहृद्—९४

सेनकवि—२५८ (टि)

सेम—३०९ (टि)

सेहनदास 'रामजी'—९०

सेहनदास—१७३, २७३

सेहस्ता—१२५ (टि), १९३ (टि)

सेरामि का—२०७

सेवामी रामानुजदास—२६७ (टि)

सेविका—१५३

सेमानदास का—१५८

सेमानदास—२९६ (टि),

सेमान सहाय—४

सेमान सिंह—१३०

सेरामी मित्र—१

सेरामिकाप्रसाद मिश्री—३३१

सेराम—३३१ (टि)

सेरामप्रसाद खत्री—४३

सेराम सहाय—१७५

सेरामदासदास—१७६

सेरामदास यात्री—२९१

सेरामदास भट्ट—१७६

सेरामी—२८७

सेरामि—३३१

सेराम सिंह—३२९ (टि)

सेरामदास—१७७, ३३१,

सेराम सिंह—२६३

सेराम—१०७ (टि)

सेराम—७५ (टि)

सेराम पाठक—७४

सेराम मित्र—२२२

सेरामदास चार्ममौल—२७१

सेराम मिश्री—१७९

सेराम—१९७

सेराम प्रसाद—१२५

सेरामेन्द्रप्रसाद साहू—२०९

सेराम—१५० १८४

सेराम—२६४

सेराम—२९१

सेराम का—९५

सेरामदास—१११, ३०५

सेरामदास सिंह—१ ३१० (टि)

सेरामदास—२६७ (टि)

सेराम—१९७

सेराम—१५८ (टि)

सेरामदास—२०९, २२३

सेरामदास—१३ (टि)

सेराम—२९५, ३०९ (टि)

सेराम—२६४

सेराम—८

ग्रन्थ एवं पत्र-पत्रिकाओं की नामानुक्रमणी

- अक्षरनाकर—४१
 अक्षरागर—२१५ (टि)
 अभ्यात्मज्ञान-संक्षरी—१७
 अनन्त-परिचय—२६६
 अनन्त-परिचय और अनन्तसागर—२६६
 (टि), २६७(टि)
 अनन्त-सागर—२६६
 अनन्त-समौह—२, १०
 अनुकला—१५६ (टि)
 अनुभव-संज्ञा—५१
 अनुभव-प्रकाश—१० (टि), २०१ (टि)
 अनुभव-प्रमाकर—६१
 अनुष्टुप्-रामायण—१७०
 अभ्यास-प्रकाश—२
 अमरकहानी—१६४, १६५ (टि)
 अमरकोश—५२, १११
 अमरहराज—१६५
 अमरविज्ञान—१६४, १६७ (टि)
 अमरलीङ्गी—१६४
 अमृत-संज्ञिका—४१
 अनीम्यामसादक्षत्री-स्मारक ग्रंथ—१७१ (टि),
 १७४ (टि), १७५ (टि)
 अर्यपंचक—१०
 अलंकार आकर—१६२
 अलंकारतक—५२ (टि)
 अलिनामा—१००
 अक्षय विहार—६
 अक्षयवाणी-विरस—६
 अविजय मय-माहात्म्य—६८८
 अष्टवाम—१११
 अष्टवाम ककहरा—१०
 अष्टवाम-वासिक—११५
 अष्टादश राहस्य—१०
 अष्टस्यापरिठ-नाटक—१३
 आच—१२५ (टि), २१६ (टि)
 आद्यपरिठ-जम्पू—१५ (टि), १६ (टि),
 ४०(टि), ४२(टि), ५७(टि), ८५(टि),
 ८६ (टि), ८७ (टि), २८१ (टि),
 ३२७ (टि)
 आत्मबीजनी—७०
 आस्माराम श्री नासिण—१०१
 आरिवाणी—११६ (टि)
 आभ्यात्मरामायण—२०
 आनन्द-मण्डार—१८८
 आनन्द-रघुनन्दन—८ (टि)
 आनन्दसागर—१६०
 आसुर्दे-संग्रह—२१
 आरोग्य शिष्या—२६
 आर्यमत-मासंग्रह—८३
 आर्षोक्त्ये—१२ (टि) १५८ (टि)
 १५६ (टि), १६० (टि)
 आर्यारामायण—६२
 आर्यिक-गदा—१८६
 इतिहास-सहरी—७४
 इष्टियन पंथिछेरी—११०
 इष्टियन मेस—१८६ (टि)
 ईश्वर क रघावतार—२७० (टि)
 उग्रवत्-उत्कंठा विज्ञान—६
 उग्रवत्-उग्रवेद्य-संज्ञिका—६

उपदेशनीति-शतक—९
 उपदेश प्रवाह—१२७
 उमापति उपाध्याय और नव पारिव्रात-संगस
 —२९२
 उन्नतपरिष्कारनोत्तरो—९
 उद्देश्य-आनन्द-कस्तोतिनी—९२
 उद्दीपन-शु गार-संभरी—५१
 उर्ध्व शतक—२८४
 उर्ध्व शायरी और विहार—९४ (टि), ९५ (टि)
 उषा-हरण—९६, १५९
 एकावली-माहात्म्य—१४५
 ऐन इन्द्रोदकयान दू व मैथिली लैंगिकेन आँसू
 नारी विहार कथेनिय प्रामर, फिन्टी
 मैथी ऐण्ड मौकाभ्युत्तरी—९८ (टि)
 अग्नेह-संहिता—२६५
 अतु-वचन—४५
 अतु-संगीतावली—६९
 अजसो-कल्याण—८३
 अपामासा—६
 अप्या-वर्षण—४४
 अम्हाईजो की बधाई—१०९
 अम्पाण—१२५ (टि), १२६ (टि)
 अमीर-मानु प्रकाश—१३३ (टि), १३४
 अमलेश विद्यासा—७७ (टि)
 अरताराम के पद—१८२
 अरताराम-धरतराम-परिण—१८२ (टि)
 अक्षयम्बन-शतक—१४०
 अर्धामरण—३३१
 अक्षमशिल्पी—२८० (टि)
 अम्पाण—८९ (टि), ९० (टि), १९६ (टि)
 अवि—१०४ (टि), १०५ (टि) १०६ (टि)
 अविता-कुल—१००
 अविता कुमुमांशु—७७ (टि)
 अविता-कौतुहो—८ (टि), १९३

अवितावली—१४०
 अविचक्रकासी—१३६
 अविमिवा—२०, ३३१, ३४३
 अविचक्रन-सुभा—५३ (टि) २६६ २६९
 अविमिनोव—११६ (टि)
 कामदर्पण—२०
 काम्यसंजरी—३००
 काम्यसुपाकर—१९४ (टि),
 काशीकण्ड—१३१, १७५
 किरोर—७३ (टि)
 कुँभरसिंह-अमरसिंह—३१ (टि)
 कुँभर-पञ्चासा—१५५, १९७
 कुम्भर-इवारा—११
 कुम्भसिपा—२२५ (टि),
 कुम्भसिपा-रामापण—११७
 कुमारसंभव—२०
 कृष्णकुराहण—२०
 कृष्णपरिण—११५
 कृष्णपथावली—३
 कृष्ण-वासलीसा—१९०
 कृष्ण-सीतामृतप्लवि—४१
 केशव कहिन नान का कहिए—११२
 कड़ीबोसो का पद—१७३ (टि)
 सङ्गवली—४१
 खासता-शतक विन्तामवि—२८८
 खासिफ्तारी—९९
 खेतनाप विद्या—१८०
 खतो-बापी—८५
 गंगा—१६ (टि), २४ (टि) ३३ (टि)
 ३६ (टि), ३७ (टि) ३८ (टि),
 ११८ (टि), ३२५ (टि)
 गंगासाहसी—४१ (टि), २०९
 गंगा सरबु-महिमा—७०
 गणिका-सायु-संवाद—१४६

गणितसूत्रोपनिषद्—८५
 गणितकवीश्री—८५
 गणितसार—८५
 गणा क लेखक और कवि—२४ (टि),
 २८ (टि), ४५ (टि) ६१ (टि),
 ११ (टि) १७२ (टि) २१२ (टि),
 २१७ (टि), ३३३
 गणा-व्याख्यान-प्रकार—५०
 गणापद्धति—२०
 गणाबाधो-मानवत्व—६२, ६३ (टि)
 गणाबाधो-रामायण—६२
 गण्डपुराण—२०
 गांधीपर—१३३ (टि), १३४ (टि), १३६ (टि)
 १८८ (टि), १८९ (टि),
 गीतगोविन्द—२६३
 गीतसप्तशती—३३ (टि),
 गीता—१६१
 गीताश्लो—२१
 गीताश्लो-टीका—७४
 गीताधार—६२
 गुह्यगुह्य—१४१
 गुह्यचरित्र-वर्षण—२८८
 गुह्यश्रीश्री—३२४
 गुह्यप्रमेय-महाशय पुराण—२८८
 गुह्यमन्त्र-वर्षण—४४
 गुह्य-महिमा—१०
 गुह्यसूत्र—२८६
 गुह्यविज्ञान—१८९
 गुह्य—२४ (टि), २७ (टि), १० (टि),
 ११ (टि), ३८ (टि), ४१ (टि),
 ८५ (टि), ८७ (टि) ८८ (टि),
 २८६ (टि), २८६ (टि), ३००, ३२६
 गुह्यश्रीश्री—२६७ (टि)
 गोपाल-बालश्रीश्री-वार—१४०

गोपाल-सहस्रनाम—१६०
 गोपालसागर—१५७ ३२३
 गोपीश्वर विनोद—११८ ११६ (टि)
 गोरी-स्वर्णकर—१११
 गन्धिका—१२६
 गन्धपद्याश्लो—३३, ३४ (टि)
 गन्धप्रभा मनस्वी—२०६ (टि)
 गन्धालोकालकार—८५
 गन्धकार-गन्धिका—३३१
 चम्पारन की साहित्य साधना—१, २ (टि)
 १०७ (टि), १०८ (टि), ११५ (टि),
 १२६ (टि) १८० (टि), १८१ (टि),
 १८२ (टि), १८३ (टि), १८४ (टि),
 १८५ (टि), १८७ (टि), १८८ (टि),
 १८९ (टि), १९६ (टि), १९७ (टि)
 १९८ (टि), १९९ (टि) २०३ (टि),
 २०४ (टि), २०५ (टि), २०६ (टि),
 २०७ (टि), २०८ (टि) २११ (टि),
 २१२ (टि), २१६ (टि), २१७ (टि),
 २१८ (टि), २२१ (टि), २२२ (टि)
 परिविद्या—२७३
 चर्पट-संभरी का हिन्दी-व्याकरण अनुवाद—
 ३६ (टि)
 चौहान—१६० (टि)
 चालचलनबोध—२७०
 चित्तविनोदिनी—५३ (टि)
 चित्रकाम्यम्—१६६ (टि)
 चित्रामरण—५१
 चित्तोरगढ़ का इतिहास—२६६
 चुटकुला—११६ (टि)
 चैतन्य का संवारा—१८०
 चौहान—१६०
 छन्दसतक—१०७, ३२६
 छन्दोसंभरी—२०
 अमल-अपकारी—२८८

अमहिनोद—२०, ४० (टि)
 अयोध्याकारक—५७
 अफरनामा—२८८
 अर्जुन श्रौत व पश्चिमादि
 सांसायणी श्रौत वंगस—२३ (टि),
 ६७ (टि) १३३ (टि), २१३ (टि),
 २६३ (टि) ३१२, ३१६, ३२०, ३२५
 अहूरे रहस्य—६४ (टि)
 आनकी-मंगल—२८५ (टि), २८३ (टि)
 आनकी स्नेह-सुखाग शतक—१
 जीव-जीवन-सिद्धान्त—२६
 जैनरामायण—३२३
 जैपुर शूल—११
 जैमिनीपुराण—२३७ (टि)
 ज्ञानयोथावली—१००
 ज्ञानप्रभाकर—३२१
 ज्ञानविनोद—८८
 ज्ञानधरोदा—१४१
 ज्योतिष शकुनावली—३२०
 भूषण क पद—२७८ (टि)
 भूषण-कारकी-शुक्र—१०
 भूषण हिन्दी-पत्र—१०
 उगध-पर्व—२६४
 तत्त्वप्रदेशप्रश्न—१०
 तत्त्वतरंगिणी ६१
 तत्त्ववैशारदी—२३८
 तनवीनवाला की तरदार कुंजी—२ ६
 तन-भन की स्वच्छता—३१
 तारोसे सुख-द विहार—६४ (टि)
 तारिसि ज्ञानप्रिया - १३१ (टि), १३२ (टि)
 तहारत जाहिर बो पाठिन—३१ (टि)
 तिस-शतक—५२ (टि)
 तिसक-भासा-भविमा—१०१
 दसवी-सतसई—८८, १६३ (टि)
 दसवी-सतसई की टीका—२७०

व टेम्प रिपोर्ट श्रौत व हिन्दी
 मैमिस्ट्रिय फॉर व इन्टर—१६१६, १८
 देवद १६—३०३ (टि)
 वदन्तन रोहावली—२८८
 वराकर्मपत्र—२०
 वराकुमारचरित—२३६
 वराकुमारचरित का अनुवाद—२७०
 वराकवार—२७०
 वारिव-शुक्र-दंडन-वोहावली—२८६
 वारोगा-वस्तर—१४२
 विलोनामा—१६८
 विद्या-वर्ष—८३
 विद्याव्याप्त प्रकाशिका—६
 दुर्गा-आनन्द-सागर—३१८
 दुर्गानामार्थ-वोहावली—१८
 दुर्गाप्रतिपत्ति—१८ (टि) १३८ (टि),
 १८१ (टि), २१४ (टि), २१५ (टि),
 २३७ (टि), २३८ (टि), २३६ (टि),
 २४३ (टि), २४६ (टि), २५३ (टि),
 २५७ (टि)
 दुर्गाप्रतिपत्ति—१६ (टि), २० (टि),
 २०३ (टि)
 दुर्गाविषय—१४३
 दुर्गावसुधाली—८३
 दुर्गावृत्त—१६२
 दुर्गा-वर्ष—१३६
 देवनागर—२४ (टि), २५ (टि), २७ (टि),
 ३८ (टि), ३६ (टि), ४० (टि),
 ४२ (टि), ४३ (टि) १२१ (टि),
 देवनाली—२३३ (टि)
 देवीयौतशतक—२०
 देवी मायवत—२०
 रोहावली—१००
 दौत विद्याली-वस—१७३
 इन्द्रगुण-वप—२६

बसनिर्णय—३४३
 बसप्रदार्शनी—५३, ५६ (टि)
 प्लान-संबन्धी—२२५ (टि), ३१४
 प्रुवचरित्र—२३६
 मईबारा—१२ (टि), १४ (टि), १५ (टि)
 २४ (टि) २६ (टि), २७ (टि),
 २८ (टि), ४५ (टि) ४६ (टि)
 नक्षत्रिण—५० ३४३
 नक्षत्रिण रामचन्द्रजी—१०६
 नम्बन का—२१ (टि)
 नम्बनहररुद्र रामायण—१७०
 मरेन्द्र विजय—५१ (टि)
 नवपारिजात-संग्रह—२६२
 नवरंग विलङ्क—२०४ (टि),
 नवरात्र—२७६ (टि)
 मक्षल-नाम चिन्तामणि—६
 मन्वायेकसन—६४ (टि)
 मन्वोद्धारल—३४३
 नायडी - प्रधारिणी - पत्रिका—३२ (टि),
 २६० (टि), ३१३ (टि)
 मामपरल पंचाशिका—१०
 नाममय-एकाक्षरबोध—६
 माम विनोद-वसान-धरवै—१०
 नायिका-नायक-सङ्ग—४५
 नारद भ्रम-संग—२०८
 नारायणबन्दी—२३६
 नारायण-सहरी—१७६ (टि)
 नास्वेत को कथा—२६७ (टि)
 नित्य क्रीडन-प्र ४—२२२
 निम्ब-शिक्षा—२६६
 निम्बवल्किष्ठ—७६ (टि)
 निर्द्वारामायण—१३८
 निर्वाणशब्दकम्—६०
 नीद-बडीसी—१०
 नीति-दशान्विता—८३

नीतिदशान्विता रामायण—८३
 नीतिपत्र—२७३
 नृसिंह-चरित्र—११५
 नेपास का इतिहास—१८०
 न्याय-कुसुमाञ्जलि—२०
 पंचरंगी यज्ञ—६
 पंचदेवता-संबन्ध-आलोचा—५१
 पंचपदावली-रामायण—१७०
 पंचभक्तिरत्नों के पद्यबद्ध पत्र—११२
 पंचरंग—२६७ (टि)
 पञ्चरत्न—५३
 पञ्चरत्नगीतावली—३२४
 पञ्चरत्नावली—३२४
 पञ्चासुप-स्तोत्र—१०
 पटना कवि-समाज—१४३
 पत्र-पद्यावली—७०
 पत्र-प्रबोध—२७०
 पदवाक्यबोध—२७०
 पदवाक्यपरलाकर—१०
 पदावली—३१५
 पन्ना पत्र—१०
 पद्माक्ष—१५६
 परतरभूमिभानम्—६१
 परिपद्-पत्रिका—२८२ (टि), ३०५ (टि),
 ३०६ (टि), ३१४, ३३३ (टि)
 ३३५ (टि)
 पञ्चकल्प—७७, २६१
 पाण्डवचरितार्णव—३१७
 पार्श्वलयोगद्वय—६१, २६८
 पार्श्वलयोगद्वय प्रकाश—२६८
 पारस-माय—१०
 पारिजातहरण—३६२
 पार्श्वी-स्वयंवर—३२१
 पावन-बडीसी—८
 पिंगल—२०

पिंगल-छन्दशास्त्रक-वर्णन—७०

पिंगल-गीत—७०

पीपावी की कथा—१३७ (टि)

पीपा-परिचय—१११ (टि)

पुण्यपर्व-वर्णन—११

पुनपुन-माहारम्ब—१२१, १३० (टि)

पुरुष-परीक्षा का मैथिली

गद्य-पद्यानुवाद—३३

पुस्तक-मण्डार रक्तवपन्ती-स्मारक-ग्रंथ—

२१ (टि), ४३ (टि), १३७ (टि),

१३८ (टि) १७३ (टि), २७२ (टि),

२८० (टि), २१५, ३०४, ३०८, ३०९

पुनव्यिष्टहोमी—१२३, १२७ (टि)

प्रकल्प-यजना—३११

प्रबोध—२७०

प्रबोध-संग्रह—८३,

प्रबोधपीपिका-बोहावली—१

प्रभाकर—११३ (टि),

प्रभावतीहरण—२२ (टि), २३

प्रमोददायिका-बोहावली—१

प्रबोध-पत्रिका—३१७

प्रनर्प-चानन—३१ (टि)

प्रनोत्तर-बोहा—१४३

प्रनोत्तरमाता—३२४

प्रनोत्तर-रत्नमणिमाता—३२४

प्राकृत विमल—४० (टि), १२१

प्राचीन हस्तलिखित पोपियों का विवरण—

११३ (टि)

प्राचीन हिन्दी-पोपियों का विवरण—

१३७ (टि)

प्राथमिक कवितावली—७०

प्रियंवदा—७७

प्रोति-पर्यायिका—१०

प्रेम-धर्म—१

प्रेम-गम-तरंग—६

प्रेमतरंगिणी—१३३ (टि)

प्रेम-परस्परप्रभा-बोहावली—१

प्रेम-परिचय—२३७ (टि)

प्रेम-प्रकाश—१, २८

प्रेम-रसामृत—११०

प्रेम-सागर—२३७ (टि)

फकरेकलीगा—१४ (टि)

फतहनामा—१११ (टि)

फारसी दुरुपठहमीवार भूतना—१०

फूलचरित्र—२०

मन्तम विनोद—४१

मन्तम-भ्रतबोध—४१

मन्तमोस्ताह—४१

मनुसाजत-कथा का हिन्दीपद्यारम्भ अनुवाद

—११

मौमुरी—१४२

मारहमासा—१३३, १३५ (टि), १३६ (टि)

३००

मारहरासि सावहार—१०

मासक—५७ (टि), १३८ (टि)

मासकोष—२३६

मासयोपास-चरित—३२२

मासबोध—८३

मास-विनोद—४४

मास-विवाह-दुपक—१३२

माता-बोधिनी—२३६

मातोपहार—१७०

मिथिलपोपिका इंडिया—२६१

मिथिल-सीता—२३७ (टि)

विहार की साहित्यिक प्रगति—२४ (टि),

६८ (टि), ८१ (टि), १७३ (टि),

१८० (टि), २१५ (टि),

विहार-दर्पण—२ (टि), ३ (टि), १२८ (टि)

१२१ (टि), १३० (टि), १३१ (टि),

१३२ (टि) १७५ (टि), २१८ (टि),

२१९ (टि), ३१० (टि), ३२७ (टि)

विहार-बंधु—४४ (दि), ७७, २६५
 विहारी-सुखती-भूषण—२७०
 विहारी-नकाशिक-भूषण—११९
 विहारी-विहार—१११ (दि)
 विहारी-व्याकरणमाला—२७२ (दि)
 विहारी-सतसई—१४६, ११२
 विहारी सतसई के दोहों पर कृत्रिमिर्षा—
 २८८
 बीछापंथ—९
 बृहत्कविचरितम्—११२
 बौधिसर्पावतार—२८१
 ब्रजविद्यास—१४ (दि)
 ब्रह्मरामायण—१२२
 ब्रह्मैवर्षपुराण—२०
 ब्रह्मवक्त्र-कथक—१४१
 ब्रह्माक्षरी ज्ञान-वाणीसा—१ ७
 बृह-नामावली—९, २०४
 बृह-निवेदन—१४०
 बृहन्माल—१ (दि), ११ ६१ (दि)
 बृहन्माल की टीका—६१
 बृहत्तनामृत—१९०
 बृह-विनोद—१०१
 बृह-विवेक—११९
 भगवद्-गोवा—११ (दि), ८८
 भगवद्गुरु-रूपण—८
 भगवद्-धर्म-हीविषय—१४४
 भगवद्-धर्म-कीर्तन—६१
 भगवान् रूपकला पद्य द्विज मिश्र—१० (दि)
 भजनरत्नमाला—११७
 भजन-रत्नामृतमय—७४
 भजन-संग्रह—१११ (टी), ११७ (दि)
 भजनावली—१०० १९०, १२५
 भद्रिकाव्य—९८ (दि)
 भद्रोपुराण—१२०
 भवानी-स्तुति—९२ (दि)

भागलपुर-रूपण—११८ (दि)
 भागवत युद्धका—६१
 भागवततत्त्वमास्कर—१२७
 भागवतरसपुट—७४
 भागवत विहार-सीता—१६७ (दि)
 भारत का यज्ञ—१
 भारत-संगीत—११६
 मापाक्ष्य वाच-व्याकरण—२६६
 मापाबोध—२७०
 मापाबोधिनी—२८०
 मापा-भूषण—४० (दि), १००, १११,
 १४१
 मापाभुवबोध—४१
 मृगोत्तर-रूपण—१११, ११६ (दि)
 मृदेष सुखोपाध्याय—२७२ (दि)
 मृषण-संभावली—२७५
 मृषण-संदिग्धा—५१
 मेरक-यक्षाण—२६
 मेरकाष्टक—२०९
 मोजपुरी के कवि और काव्य—६१ (दि),
 ९४ (दि), ९५ (दि), ९९ (दि),
 १६६ (दि)
 मोजपुरी-व्याकरण—२८० (दि)
 मदनोद चौबोधी—९
 मध्वदीपिका—२१८
 मध्वोत्पी विवाह-रूपण—१९७
 मयिमाला—१०
 मदनश-कथनरूप—२०९
 मदनश-कोष—१०९
 मदनश-मोक्षविका—२०९
 मधुर-मधुमाला—९
 मन-नशील—१०
 मनशास्त्र-उत्तर—९
 मनोरंजन—१९
 मनारमा—८८ (दि)

- मनोहर-रामायण—६२, ६३ (टि)
 मन्दाबरी—३२६
 मराठसखबास—६५ (टि)
 महामारु-शास्त्रिपर्य—२०
 महामारी निवारण-स्त्री—१००
 महिम्नस्त्री—४१ (टि)
 महेशबाबी-गीतिसुधा—३३
 मोक्षमण्डल मोक्षा—२६
 मानस-सुखावली—२०६
 मानवानन्द—६३
 मानसकेन्द्रप्रकाश—१३६ (टि)
 माधुरी—३३ (टि), ५३ (टि) ८५ (टि),
 १००, ३०१ (टि), ३०२ (टि)
 मानस-विनोद—४४
 मानस—१२३, १६३ (टि)
 मानस अमिषाव-रीपक—१६३
 मानस-अमिराम—६१
 मानस की डीका—३१४
 मानस की मानप्रकाश-डीका—२८८
 मानस मर्मक—१६३ (टि)
 माधवि-मंजरी—१३६
 माकण्डेय-पुराण—१४३ (टि)
 मिथिला आसुबेह शब्दकोश—२१
 मिथिला-शोक-संग्रह—१३७(टि), १३८(टि),
 २२५ (टि), २२८ (टि), २३० (टि)
 २३१ (टि), २३३ (टि), २३४ (टि),
 २३५ (टि), २३६ (टि), २३७ (टि),
 २४० (टि), २४१ (टि), २४२ (टि),
 २४३ (टि), २४४ (टि), २४५ (टि)
 २४६ (टि) २४७ (टि), २४८ (टि),
 २५० (टि), २५१ (टि), २५२ (टि)
 २५३ (टि), २५४ (टि), २५५ (टि),
 २५८ (टि), २६० (टि) २६१ (टि),
 २६३ (टि)

- मिथिलावर्ष विमर्श—३३ (टि)
 मिथिलामायामक-इतिहास—१६५ (टि)
 मिथिला विद्यास—१०३
 मिश्रबन्धु विनोद—१, ३(टि), ८(टि), २१
 (टि), ५० (टि), ७४(टि), ८५ (टि),
 ८८ (टि), ८९(टि), १०७ (टि) १२१
 (टि), १३०(टि), १३३(टि), १७५(टि),
 १६० (टि), १६१ (टि) १६२ (टि),
 २०६ (टि), २२० (टि), २३३ (टि),
 २३६ (टि), २७४ (टि), २८१ (टि),
 २६३, २६३ (टि), ३०३ (टि), ३०५,
 ३१ (टि), ३१२, ३१७ (टि), ३२,
 ३२१, ३२२, ३२३ (टि) ३२५, ३२७
 (टि), ३३०, ३३१ (टि)
 मीराबाई—३१
 मुद्राकुलीन—३१०
 मुनिबंश-पद्धति—१७६ (टि)
 सरारका महाविद्यालय (भागलपुर)-पत्रिका—
 १३६ (टि),
 मूलग्राम—३३
 मेघनाद बच—१७१
 मेरी जन्मभूमि-यात्रा—२३३
 मेरी बचिप दिव्यात्रा—२३३
 मेरो पूव दिव्यात्रा—२३३
 मैं बहो हूँ—२३३, २३७ (टि)
 मेखन ए इवहाम—६४ (टि)
 मैथिली-गीत-रत्नावली—२१(टि), २३(टि),
 ६८ (टि), ११८ (टि) १५३ (टि),
 २११ (टि), २१६ (टि), ३०६ (टि)
 मैथिली माया-रामायण—३३
 मैथिली-रहस्य-पदावली—१८३
 मैथिली-रामायण—३५ (टि),
 मैथिली साहित्यक इतिहास—१०८ (टि),
 १५२ (टि), १५३ (टि), २५८ (टि)
 मृच्छकटिक—२३३

यङ्गहाहरी—१ ४
 याङ्गवस्त्वन्-स्मृति माया—११३ (टि)
 युगल-वच विश्वास—१
 युगल-मृ पार-मरण—३७
 योगवासिष्ठ—१३४
 योयसिद्ध-तरंग—१
 रगङ्ग विवहारी-मल—१७३
 रघुवर-गुण-वपुष—१
 रघुवीरनारायण : बीबनी तथा कृतिषी—
 १८३ (टि)
 रत्नसागर—११३ (टि)
 रत्नावली-नाटिका—८३
 रम्मा शुक-संवाद—१४३ (टि)
 रस-कौमुदी—३३
 रस-प्रकाश—२६
 रसराम—३४३
 रसिक-संवाद—१४४, १४५ (टि)
 रसिक-प्रकाश २१८
 रसिक-प्रकाश मञ्जुसा—३३३
 रसिक प्रिया—२०, ३४३
 रसिक मित्र—१७१ (टि), ११२,
 रसिक-रंजन-रामायण—४१
 रसिक-विश्वास-रामायण—७१ (टि), ७२,
 ७३ (टि)
 रसिक-संजीवनी—३००
 रसिकोत्साव-भागवत—४१
 राग प्रकाश—३०७
 रागतरंगिणी—२६६
 राक्षनीति-रत्नमासा—११६
 राजपूत-रम्भो—१८०
 राजराजेश्वरी संपायणी—४७ (टि),
 राजरत्न अमिनन्दन-संघ—२७२ (टि), २७३ (टि)
 राधाकृष्ण मित्र-सौख्य—१६
 राधामायण—२६६
 रामकथा—३१३

रामगीता-टीका—७४
 रामचरित—२७३
 रामचरितमानस—१४ (टि), ३७, १२५
 (टि), १४६ (टि) १४६ (टि) २८८,
 ३०१ (टि),
 रामवस्त्वभौषिणी—३२७,
 रामवस्त्व सिद्धान्त-संग्रह—२८३
 रामनवरत्न—१०
 रामनाम-कलाकोप-मणिमंजुषा—११६ (टि)
 रामनाम-परस्व-पद्माक्षी—१
 रामनाम-महिमा—६१
 राममहि-मज्जनाश्री—७
 राममहि मे रसिक-संग्रहाव—८ (टि),
 ११ (टि), ११२ (टि), ११३ (टि), १५६
 (टि), २०४ (टि), २१८ (टि), २२५
 (टि), २८२ (टि), २८३ (टि), ३०३
 ३०४ (टि), ३०६ (टि), ३०७ (टि),
 ३१४, ३१५, ३३३ (टि) ३३४ (टि),
 ३३५ (टि)
 राममहि-साहित्य मे मधुर उपासना—१ (टि)
 १० (टि), ११, ३१५, ३१६
 राममासा—३०४
 राममाहात्म्य-वर्णिका—१५६
 रामरत्नावण—२११
 रामरहस्य—५१ १७६
 रामसीता—२६६
 रामसीता-संवाद—१४३
 रामायण—१४२, २६१
 रामायण-संपायणी—१०१ (टि),
 रामायण महत्त्व—६६
 रामायण-समय विचार—२६६
 रामायण-संघ-रामायण—११५
 रावण-संवाद—३२१
 रितुरसराव—२८१
 रक्षिमणी-स्वयंवर—३२१

कृष्णकला-संस्मरण—१५ (टि), ६६ (टि)
 कृपदीप—२८७
 कृष्णहस्त-पदावली—६
 कृष्णहस्तानुभव—६
 कृष्ण मेहोपका—६ (टि)
 रेखागणित—८५
 रोमन हिन्दी रीखर—२८०
 लक्ष्मण शतक—१२२ (टि)
 लक्ष्मी—१०३ (टि)
 लक्ष्मीशर-भूषण—१७० (टि)
 लक्ष्मीशर विनोद—२७४
 लखनऊ का इतिहास—२६७
 ललितमायकव—७५
 ललितरामायण—७३
 लीला-रघुवर-गिरी—३३७
 'लैम्ब-टेक्स' का अनुवाद—२७०
 लंछावली—१४०
 लरणावली-दोहा—१४३
 लव-सर्मय—६
 लवणम विवेक संहिता—३४३
 लवणोप—२७०
 लवणोप—६, ४४, ७२
 लव विहार—६
 लव विहार-दोहा—१०
 लव विहारमोद-चौथी—६
 लव विहार—२८०
 लकये रहसी—६ (टि)
 लखनेपोपनिषद्—३२४
 पाठाहान-काव्य—३३
 लक्ष्मी—२०४
 लाम विज्ञाप—५१
 लालु विद्या—१७३
 लारावली आदर—८३
 लालिनी—२१३ (टि), ३०८, ३१८
 लालीकि-रामायण—१७६

विचार-पत्रिका—१०१
 विजय—१४२
 विजय-पत्र—२८८
 विजयवोत्सव—४१
 विद्यावली—३३८
 विद्या विनोद—१३७
 विद्यासुन्दर-नाटक—८३
 विद्यापी—२६६
 विनयपत्रिका—११२ (टि) ३०६
 विनयपत्रिका की टीका—७४, ३२७
 विनयपत्रिका की रामलक्ष्मणोपनिषदी टीका—
 ३२८ (टि), ३२६ (टि)
 विनय विहार—६
 विनोद—१३७ (टि)
 विनोद विज्ञाप—१०
 विष्णुवाहिनी-स्तोत्र—१६८
 विरक्ति-शतक—१०
 विरक्ति-शतक—६
 विरह-वर्षी—६२
 विविधविचार—८
 विरहवस्तु शोभावली—१०
 विष्णुपरी—२६६ (टि)
 विरोधता—४१ (टि)
 वृष-निर्वाण-कवच—५१
 वृष-रत्नाकर—२०
 वृषाभन-कवच—११४
 वेंकट विहारि-दुर्गा-भूषणोप—१७०
 वरह-वृष की टीका—३२७
 वेदान्त-परिभाषा—२०
 वेदी-वर्णन-सहस्रनाम—२८८
 वेदीवर-दोहावली—१८८
 वरुणा विज्ञाप—३४३
 वेदकवच—११६ (टि)
 वेदनाम विज्ञाप—२२३
 वेदोपनिषदीमिनिषव—१०

आकरय-वाटिका—४४
 अमन-यात्रा—१५१
 अकुलता—२०
 अतरल—५० (दि) ५१ (दि)
 अत-शिवा-विचार—१००
 अघोर-पालन—३१
 आकरोपीय द्विज-वपन—७०
 शिवा—३२४
 शिवा-प्रवासा—९७०
 शिवा-समुच्चय—२२१
 शिवपुत्र-रत्न—११५ (दि)
 शिवसागर—२२६
 शिवसिंह-सरोज—२२५, २२६, ३०५ (दि),
 ३११, ३१२, ३१६, ३२६, ३३२,
 ३३३
 शिवस्तोत्र—३०५
 शिवाशिव-अपत्य-सुतीक्ष्ण-संवार—१०
 शिवाशिव अतरल—५३ ५४ (दि), ५५ (दि)
 अमार-वपन—५३, ५५ (दि)
 अघोर-रत्न-रहस्य—३१५
 अघोर-रत्न-रहस्य-बीषिका—३१५
 अघोर रत्न-सागर—२२५ (दि)
 अघोर संमह—३१६
 अघोर-भो-मुक्ता—२४ (दि)
 अघोर-मन-रंजिनी—५३ (दि)
 अघोर-मुद्गर—१०७
 अघोर-भरण—२२६
 अघोर-माहात्म्य—१४०
 अघोर-भो-माहात्म्य—३
 अघोर-महा—८८ (दि)
 अघोर-महा—३३७ (दि)
 अघोर-महा-मन्त्र-मित्री—४१
 अघोर-महा-मन्त्र-मित्री—२०
 अघोर-महा-मन्त्री—३३५

अघोर-मन्त्रान—१४१
 अघोर-मन्त्र-मन्त्रिका—२८८
 अघोर-मन्त्र-मन्त्रिका—१५०
 अघोर-मन्त्री की टीका—२२६
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—२१
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१८
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१४६ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१४६ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१८
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१४०
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३१
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३२ (दि), ३४ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३१
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३०
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१४०
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—२६, ३० (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—७५, ३१५
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३ ५
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—७७ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—४५ (दि),
 ४६ (दि), ४८ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—२३५ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१०७
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—७० (दि) ७१ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—१४३
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३० (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३१ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३० (दि), ३५ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—३३, ३४ (दि)
 अघोर-मन्त्रिका-मन्त्रिका—७५

श्रीसत्यनारायण-कथा का हिन्दीपद्यारम्भक
 अनुवाद—६६
 श्रीसद्गुरुस्त्वराज—६१
 श्रीसीताराम-मानसपूर्वा—६१
 श्रीसीतारामशरण भयवानप्रसादजी की
 जीवनी—७ (टि), ५७ (टि), ६० (टि)
 श्रीसीतारामामरण मंत्रयी—५०
 श्रीसीतारामोंय प्रथम पुस्तक—६१ ६३(टि)
 श्रीहरिश्चन्द्र-कथा—१५६ (टि)
 भुवरोध विगल—४० (टि)
 संकट मोक्षन आरणी—२०६
 संकीर्तन साहाय्य—१०१
 संकीर्तन-संदेश—५८ (टि) ५६ (टि)
 संक्षिप्त-बोधावली-रामायण—१७०
 संक्षेप-रामायण—१६६
 संगीत-प्रकाश—२६
 संगीत-सुधा—८३
 संगीत-हरिश्चन्द्र—८३
 संतमठ का धर्मग-सम्मन्त्राय—१८२ (टि),
 १८३ (टि), १८४, (टि), १८५ (टि),
 २०३ (टि), ३१६, ३२०,
 संत-मनाज्जनी—६१
 संत-वचन विज्ञापिका—६
 संत-वचनावली—१०
 संतविनय शतक—१०
 संतमुख प्रकाशिका—६
 संध्या-सोपन—२६
 संध्या विनोद—३४३
 संध्या-सदस्य—३४३
 संसार-विह्वल नारायणी—३७
 संस्कार-शेषक—२०
 नग्न-विज्ञाप—६०
 सत्यसंग विज्ञाप—३२७
 सत्यसंग-सतवर्ष—६

सतवर्ष—२६६, ३३१ ३४३
 सत्यनारायण विनोद—७५
 सत्यनारायण ऋत-कथा—२०७
 सवारस्य—२६६
 सप्त क्षुब्ध-रामायण—१७०
 सप्तश्लोकी गीता—१४०
 सप्त-साहनी-सर्व-रामायण—१७०
 सप्त-घोरठा-रामायण—१७०
 सप्तहारि-गीत-सर्व-रामायण—१७०
 समा प्रकाश—३३२
 समस्यापूर्ति—४१ (टि), ७०, १४६, १४७
 (टि), १४८ (टि), १४९ (टि), १७२
 (टि), १६२ (टि), २७४ (टि) २७५
 (टि), २७६ (टि), २७७ (टि), २८७
 ससुर में गिरौन्दा—३१०
 सम्मेलन-पत्रिका—७७ (टि) २०१ (टि),
 २०२ (टि), २२६ (टि), २७४ (टि),
 २७६ (टि) २७७ (टि)
 सरस्वती—५७(टि), १३०(टि), १५१(टि),
 १६८ (टि), १६९ (टि), १८४ (टि),
 १८७, २६८ (टि), २६९ (टि),
 २७० (टि), २७१ (टि) २७२ (टि),
 २७३ (टि), २६४
 सरोज-रामायण—६२
 सर्वरस-सागर—१२६, १२७ (टि)
 स्वप्न-विचार—२६
 स्वयंवर—१२२
 स्वल्प-प्रकाश—२१२
 साप्ताहिक साहाय्य—१०७ (टि)
 साम्बपुराण—२०
 सारम-सरोज—१४२
 सारस्य—१२६
 सारस्वत-पत्रिका—३२
 सारस्वत-स्वाकरण—६०

सावन सिंगार—२८१
 सावित्री-चरित्र—२८६
 साहजप्रसादविहारी की बीबनी—२६५ (टि)
 साहित्य—१७ (टि), १८, ५० (टि)
 ५१ (टि), ५४ (टि), १६५ (टि),
 १७० (टि)
 साहित्य-चन्द्रिका—२४, ७७
 साहित्य-पत्रिका—१७० (टि), १७३ (टि),
 २८३ (टि), २८७ (टि), २८८ (टि)
 साहित्य पयोनिधि—१२२
 साहित्य-सरोवर—२४, ७७
 सिकन्दर-सम्प्रदाय की मुख्य-मुख्य घटनाओं का
 संक्षेप-व्याख्यान—२८८
 सिद्धांत-कौतुकी—५२
 सिद्धांत विचार—२०४
 सिद्धांत-सार—३२३
 सिपा-स्वर्णर—११४
 सिरिं अखण्डो—२१ (टि)
 सोता' का अनुवाद—२७०
 सीताराम-वसुध-प्रकाशिका—२
 सीताराम-नामप्रदाय प्रकाश—२
 सीताराम-संह-सामर—२
 सोपसहसरो-हंसकथा—१५३ (टि)
 सुख-सामर—२०४
 सुखसीमा-साहायसी—२
 सुदाना-चरित्र—१११, ३०५
 सुशामा विनोद—११५
 सुधा—३३ (टि), २५ (टि), २२ (टि)
 १०० (टि), १०१ (टि), १०२ (टि)
 सुधा-विष्णु—२२
 सुन्दरी विलक—२८८
 मुनीश-संग्रह—३४१
 सुशोभ-सरोदप—२२
 सुशोभ-सरोदप—२२
 सुमति प्रकाशिका—२

सुमेर-भूषण—२८२
 सुर प्रकाश—२६
 सुष्ठु-कवितावली—७०
 सुष्ठु-गीतावली—१४०
 स्तुत्यर्थ-दीपिका—२६६ (टि)
 हनुमत्प्रार्थना—७०
 हनुमानजी का उमाचा—१६३ (टि)
 हनुमानाष्टक—३२१
 हरकिमुन चौवीसी—३२२
 हरिऔष-अमिनन्दन-संग्रह—५७ (टि), १०४
 (टि) १३७ (टि) १७३ (टि) २६६ (टि),
 २६८ (टि), २७३ (टि), २८३ (टि)
 हरिचरणामृत-सतसई—१७७
 हरिचरणामृत-सतसई—१७८ (टि), १७९
 हरिचरित्र—२२४
 हरिप्रकाश-टीका—३३१, ३३२
 हरिवृत्त-माहात्म्य—१४०
 हरिवृत्त-पत्रिका—८३, २३२, २६६
 हरिहरालोक हरिवंश-पुराण—१७०
 हर्ष-प्रकाश—२
 हपनाय-काम्य-संभावली—६२ (टि)
 हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकों का संक्षिप्त
 विवरण—११४ (टि) १४५ (टि),
 २२६ (टि), २२१, ३३३
 हितहरिवंश-चोरासी—२६७ (टि)
 हितोपदेश—३००
 हिन्दी-अनुशीलन—२२३, २२४ (टि)
 हिन्दी कितान—२८०
 हिन्दी-गणक—१७३
 हिन्दी-पुस्तक-साहित्य—५७ (टि), ८५
 (टि), ११६ (टि), १२२ (टि), १३२
 (टि), १३३ (टि), १३८ (टि) १३९
 (टि), १५१ (टि) १५६ (टि), २०९
 (टि), २८० (टि) २२६ (टि)

भीषमनारायण-कथा का हिन्दीपद्यात्मक

अनुवाद—६६

भीषद्यूकस्वराम—६१

भीषीवाराण-मानसपूजा—६१

भीषीवाराणशरण भगवानप्रसादजी की
जीवनी—७ (टि), ५७ (टि), ६० (टि)

भीषीवाराणामरण मंत्रयी—५०

भीषीवाराणोप प्रथम पुस्तक—६१ ६३(टि)

भीहरिद्यूक-कथा—१५६ (टि)

भुवनेश्वर विंगल—४० (टि)

संका माधन आरवी—२०६

संकोर्षन माहात्म्य—१०१

संकोचन-संका—५८ (टि) ५६ (टि)

संक्षिप्त-बोहाबली-रामायण—१७०

संक्षेप-रामायण—२६६

संगीत प्रकाश—२६

संगीत-सुता—८३

संगीत-मुखा—८३

संगीत-हरिद्यूक—८३

संतमठ का संरक्षण-सम्प्रदाय—१८२ (टि),
१८३ (टि), १८४ (टि), १८५ (टि),
२०३ (टि), ३१६, ३२०,

संत-मनाःकमनी—६१

संत-वचन विशासिका—६

संत-वचनशास्त्री—१०

संतचिन्तन शतक—१०

संतसुख-प्रकाशिका—६

संध्या-बोधन—२६

संध्या विनोद—३४३

संध्या-संका—३४३

संसार विद्वान नारायणी—३७

संस्कार-शोधक—२०

संस्कृत-विज्ञान—६

संतसंग विज्ञान—३२७

संतसंग-संतसंग—६

संतसंग—२६६, ३३१, ३४३

सत्यनारायण-विनोद—७५

सत्यनारायण व्रत-कथा—२०७

सबादर्य—२६६

सत क्षुब्ध-रामायण—१७०

सतसुखी गीता—१४०

सत-साहनी-सुंदर-रामायण—१७०

सत-सोरठा-रामायण—१७०

सत-हारि-गीत-सुंदर-रामायण—१७०

समा-प्रकाश—३३२

समस्यापूर्ति—४१ (टि), ७०, १४५, १४७

(टि), १४८ (टि), १४९ (टि), १७२

(टि), १६२ (टि), २७४ (टि) २७५

(टि), २७६ (टि), २७७ (टि), २८७

समुद्र में गिरिन्द्र—३१०

सम्मेलन-पत्रिका—७७ (टि) २०१ (टि),

२०२ (टि), २२५ (टि), २७४ (टि),

२७५ (टि) २७७ (टि)

सरस्वती—५७(टि), १५०(टि), १५१(टि),

१६८ (टि), १६९ (टि), १७४ (टि),

१८७, २६८ (टि), २६९ (टि),

२७० (टि), २७१ (टि) २७२ (टि),

२७३ (टि), २६४

सरोज-रामायण—६२

संभार-सागर—१२६, १२७ (टि)

स्वप्न-विचार—२६

स्वर्ण-१२२

स्वल्प-प्रकाश—२१२

साप्ताहिक यात्रावाद—१०७ (टि)

साम्प्रदाय—२०

सारन-सरोज—१४२

सारस्वत—१२६

सारस्वत-पत्रिका—५२

सारस्वत-पत्रिका—६०

- साकन-सिमार—२८१
 सावित्री-चरित्र—२८५
 साइब्यशास्त्रिणी की जीवनी—२६५ (टि)
 साहित्य—१७ (टि), १८, ५० (टि)
 ५१ (टि), ५४ (टि), १६५ (टि),
 १७० (टि)
 साहित्य-परिचय—२४, ७७
 साहित्य-परिचय—१७० (टि), १७३ (टि),
 २८३ (टि), २८७ (टि), २८८ (टि)
 साहित्य-परिचय—१२२
 साहित्य-सरोवर—२४, ७७
 विद्या-सम्प्रदाय की मुख्य-मुख्य धटनाओं का
 संक्षिप्त-व्यवधान—२८८
 सिद्धान्त-कौमुदी—५२
 सिद्धान्त-विचार—२०४
 सिद्धान्त-सार—३२३
 विद्या-स्वरूप—११४
 तिरें अक्षर—६१ (टि)
 'घोटा' का अनुवाद—२७०
 सोताराम-सत्य प्रकाशिका—६
 सोताराम-नामप्रदाय प्रकाश—६
 सोताराम-सह-सागर—६
 सोनसहसरो-ईशकला—१५६ (टि)
 सुख-सागर—२०४
 सुखशीमा-बोहाली—६
 सुरामा-चरित्र—१११, ३०५
 सुरामा-विनोद—११५
 सुधा—३३ (टि), ६५ (टि), ६६ (टि)
 १०० (टि), १०१ (टि), १०२ (टि)
 सुधा-विन्दु—२६
 सुन्दरी-विषय—२८८
 सुनीति-संग्रह—१४१
 सुबोध-चन्द्रोदय—६२
 सुबोध-सुबोध—६२
 सुमति-प्रकाशिका—६
 सुमेर-भूषण—२८६
 सुर-प्रकाश—२६
 स्फुट-कवितावली—७०
 स्फुट-गीतावली—१४०
 स्मृत्यर्थ-बोधिका—२६६ (टि)
 हनुमत्यात्मना—७०
 हनुमानजी का समाचा—१६३ (टि)
 हनुमानाष्टक—३३१
 हरकिमुन-धोवीसी—३२६
 हरिऔष-अभिनव-नर्मय—५७ (टि), १०४
 (टि) १३७ (टि) १७६ (टि) २६६ (टि),
 २६८ (टि), २७३ (टि), २८६ (टि)
 हरिचरणामृत-सतसई—१७७
 हरिचरणामृत-सतसई—१७८ (टि) १७९
 हरिचरित्र—२६४
 हरिप्रकाश-टीका—३३१, ३३२
 हरिवृत्त-माहात्म्य—१४०
 हरिश्चन्द्र-परिचय—८३, २६६, २६६
 हरिहरात्मक-हरिवंश-पुराण—१७०
 हर्ष-प्रकाश—६
 हर्षनाथ-काम्य-श्रीयावली—६६ (टि)
 हस्तलिखित हिन्दी-ग्रन्थों का संक्षिप्त
 विवरण—११४ (टि) १५५ (टि),
 २६६ (टि), ३३१, ३३३
 विश्वहरिवंश-बौरासी—२६७ (टि)
 शिवोपदेश—३०
 शिन्दी-अनुशीलन—२६३, २६४ (टि)
 हिन्दी-विद्या—२८०
 हिन्दी-नाम-१७३
 हिन्दी-ग्रन्थ-साहित्य—५७ (टि), ८५
 (टि), ११६ (टि), १२१ (टि), १३२
 (टि), १३३ (टि), १३८ (टि) १३६
 (टि), १५१ (टि) १५६ (टि), २०६
 (टि), २८० (टि), २६६ (टि)

हिन्दी-भाषा और साहित्य का विकास—

२८७ (टि), २८८ (टि)

हिन्दी महाभारत—२८८

हिन्दी शब्दकोष—२८०

हिंदी शब्द-सागर—२८० (टि)

हिन्दी-साहित्य और बिहार—५१ (टि),

५२ (टि), ५५ (टि) १०७ (टि),

११५ (टि), १५६ (टि) १६३ (टि)

१६८ (टि), १७७ (टि), १८८ (टि),

२०८ (टि), २१३ (टि) २१६ (टि),

२३६ (टि), २४६ (टि), २५८ (टि),

२६१ (टि) २६२ (टि), २६३ (टि),

२६४ (टि) २६५ (टि), २६८ (टि),

२६९ (टि), ३०० (टि) ३०३ (टि),

३०५ (टि), ३०७ (टि) ३०८ (टि)

३०९ (टि) ३१० (टि), ३११ (टि),

३१२ (टि) ३१३ (टि) ३१४ (टि)

३१७ (टि), ३१८ (टि), ३१९ (टि),

३२० (टि) ३२१ (टि), ३२२ (टि)

३२३ (टि), ३२४ (टि), ३२५ (टि)

३२६ (टि), ३३० (टि), ३३१ (टि),

३३२ (टि), ३३३ (टि), ३३६ (टि)

हिन्दी-साहित्य का समय इतिहास—

७४ (टि), ८६ (टि), १३६ (टि)

१५७ (टि) २१३ (टि), २१९ (टि),

२८७ (टि), २९३ (टि), ३०६ (टि),

३०९, ३१०, ३१२, ३१३, ३१७, ३१९,

३२० (टि) ३२१, ३२२, ३२५

३३१, ३३६

हिन्दी साहित्य को बिहार को देना—

१५२ (टि), १७० (टि) १८८

हिन्दीसेवी-संसार—१९० (टि)

हिन्दी-हस्तलेखों की खोजवाली समू १९१७

१८ १९ की दसवीं रिपोर्ट—२६४

हिन्दी-हस्तलेखों की खोजवाली समू १९१०

२२ की ग्यारहवीं रिपोर्ट—२६९, ३०७

३३१

हिन्दुत्व—१४२

हिफजे सेहत की उमर तकनीकें—६१ (टि)

हिन्दी भाषा में पद्यों की लिखने-रचना—२१ (टि),

६५ (टि), १११ (टि), ११२ (टि),

३०९ (टि)

हरदयकुशाघिनी—९

सहायक ग्रन्थों की सूची

Biography of Kunwar Singh and Amar Singh—Dr K.K.

Datta

Eighteen-fifty Seven—Dr Surendranath Sen.

बन्धुवन्दन की साहित्य-साधना—रनेशचन्द्र का

बिहार-दर्पण—रामशेन सिंह

मिथकण्डु-धिनोद—मिथकण्डु

श्रीसीतारामशरण भगवाणप्रसादजी की जीवनी ~ रिचमन्थन महाशय

राममणि में रसिक-सम्प्रदाय—डॉ० मयवतीप्रसाद सिंह

कविता-कौमुदी—पं० रामचरण त्रिपाठी

राममणि-साहित्य में मधुर उपासना—डॉ० सुबनेश्वरनाथ मिश्र 'माधव'

दुर्गात्रिसतरंगिणी या दुर्गामच्छिरंगिणी (हस्तलिखित)—नयनारायण सिंह

History of Maithili Literature—Jaikant Mishra

मैथिली-गीत-रत्नावली—पं० बदरीनाथ का

पुस्तकमण्डल-उत्पत्त जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ—सन्मारक-मण्डल

प्रभाशतीहरण—माना का (मालुनाथ)

गया के लेखक और कवि—द्वारकाप्रसाद गुप्त

बिहार की साहित्यिक प्रगति—बिहार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पटना

आत्मपरित-चम्पू—प्रो० अक्षयकान्त मिश्र

श्रीमद्भगवद्गीतायचम्पूका—पं० अयाभ्याप्रसाद मिश्र

कविचर पं० चम्पा म्हा—पं० बलदेव मिश्र

श्रीलक्ष्मीरचरित्रोत्थास—पं० चम्पा का

चम्पूपद्यावली—भैरवदास मिश्र

मैथिली रामायण—पं० चम्पा म्हा

श्रीराजराजेश्वर-सम्भाषणी—राजा राजराजेश्वरप्रसाद सिंह 'प्यारे'

विन्दा कवि और वैजनाथ पदवि का जीवन-परिचय (हस्तलिखित)—

प्रो० अनन्ताय सिन्हा

हिन्दी-साहित्य और बिहार (प्रथम खण्ड)—आचार्य रिचमन्थन महाशय

शिवाशिशयन—पं० नमोदेवप्रसाद सिंह

गुहार-दण्ड—

धर्म प्रदर्शन—

- हिन्दी-पुस्तक-साहित्य—डॉ० माताप्रसाद एत
हरिश्चंद्र-अभिनन्दन-ग्रन्थ—सम्पादक-मण्डल
श्रीरूपकला-परिचामृत—रामसोचनशरण
श्रीरूपकला के संस्मरण—रघुनाथप्रसाद सुक्ता
श्रीरूपकला : एक क्रांती—मखौरी बानुदेवनारायण
श्रीरूपकलाप्रकार—रघुवंशभूषण
Shri Rupkala and His life and teachings—A.B.N Sinha
Bhagwan Rupkala and His Mission—
श्रीमच्छनाल भक्तिमुधास्वाव-विलक—रूपकला
भोजपुरी के कवि और कर्म्य—दुर्गारंजनप्रसाद सिंह
श्रीसीतारामीय प्रथम पुस्तक—भगवानप्रसाद 'रूपकला'
श्रीरामनाममहिमा (हस्तलिखित)—पं० रामसोचन मिश्र
रसिक-विलास-रामायण—अक्षयकुमार
डॉ० प्रियसन्-द्वय हिन्दी-साहित्य का प्रथम इतिहास—किरीटोत्तम एत
कर्मज्ञेयविलासः—पं० मोहनशरण मिश्र
कविता-कुसुमाञ्जलि— " " "
गयावासी-भगवत—पं० चतुर्मुख मिश्र
मनोहर-रामायण— " " "
द्वेज-श्री-सुधन—अयोध्याप्रसाद योषलीव
उच्च शायरी और बिहार—रत्ना नक्षत्री
An Introduction to Maithili Language of North Bihar
Containing Grammer, Chrestomathy and Vocabulary—G A Grierson
महिकाव्यम्—शंकरराज शर्मा
मैथिली साहित्यक इतिहास—पं० कृष्णकान्त मिश्र
हस्तलिखित हिन्दी-पुस्तकें का संक्षिप्त विवरण—स्वामिमुन्दरदास
भूगोल-चणन—गणपत सिंह
प्राचीन हस्तलिखित पाठियों का विवरण—डॉ० धर्मेश्वर लक्ष्मणारी रात्रो
भागलपुर-रूपण—पं० कारखण्डो का
गापीरवर-विनाद—गोपीश्वर सिंह
पुनपुन-माहात्म्य—दिग्भक्त श्रीका
कथीर भानुप्रकाश (हस्तलिखित)—परमानन्दराम
बारहमासा (हस्तलिखित)— " "
मिथिला-नीति-संग्रह—मोत का
हिन्दी-साहित्य का बिहार की देन -पं० कामेश्वर शर्मा

- बाबू कुँवरसिंह—दुर्गाशंकरप्रसाद सिंह
 तबारीखे उद्देशनिपा—सुरी विनायकप्रसाद
 अमर-कहानी—सप्तमोसवी
 अमर-विज्ञान— ” ”
 मजन-संग्रह — , ”
 अयोध्याप्रसाद खत्री-स्मारक ग्रन्थ—शिवपूजनसहाय तथा नक्षत्रविद्योचन शर्मा
 हरिचरणामृत सदसह—भीमहस्त हरिचरणदास
 संवत्सव का सरसंग-सम्प्रदाय—डॉ० बमैन्द्र ब्रह्मचारी शास्त्री
 रघुबीरनारायण—जीवनी तथा कृतियाँ (टीकित)—चन्द्रकिशोर पाण्डेय
 हिन्दी सेवी-संसार—प्रेमनारायण टंडन
 मिथिलाभाषामय इतिहास—पं० सुकुम्ह का कश्यप
 अनुभव-प्रकाश—बीहराम
 सुमापितरत्नमाखण्डागारम्—पं० शिवरत्न कविरत्न
 स्व० बाबू साहवप्रसाद सिंह की जीवनी—बाबू शिवनन्दनप्रसाद
 श्रीपुणेन्द्र अभिनन्दन-ग्रन्थ—सम्पादक-मण्डल
 मैं वहीं हूँ—दामोदर शास्त्री सप्रे
 मूलन क पत्र (हस्तलिखित)—अज्ञात
 हिन्दी-शब्दसागर—सम्पादक-मण्डल
 कथम-प्रिन्सिप—अमरशंकर
 हिन्दी-साहित्य का इतिहास—पं० रामचन्द्र शुक्ल
 हिन्दी-भाषा और साहित्य का विकास—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
 उमापति उपाध्याय और तब पारिजात संग्रह—वज्ररंज बर्मा
 The Tenth Report on the Search of Hindi Manuscripts
 for the years 1917 1918 and 1919—Rai Bahadur Hiralal
 शिवसिंह-सरोज—शिवसिंह सेंगर
 अन्वय-परिचय और अन्वय-सागर—स्वामी इतुमानदास
 The Eleventh Report on the Search of Hindi Manuscript
 for the year 1920 1921 and 1922—Rai Bahadur Hiralal
 हिन्दी के मध्यकालीन कथक-कथक्य (टीकित)—विद्याराम तिवारी
 कुँवरसिंह-अमरसिंह—डॉ० काशीकिशोर दास
 बिहारी-विहार—पं० अश्विकावत व्यास
 पाण्डवचरिताखण्ड (हस्तलिखित)—दधीराज
 विनयपत्रिका की रामवन्दनाभिनी टीका—शिवपकाश सिंह
 रसिक-उद्धार—राजेंद्रराज

सहायक पत्र-पत्रिकाएँ

- नईपारा (मासिक)—पटना
 गंगा (मासिक)—भागलपुर
 साहित्य (त्रैमासिक)—पटना
 Journal of Asiatic Society of
 Bengal (त्रैमासिक)—कलकत्ता
 देवनागर (मासिक)—कलकत्ता
 गृहस्थ (साप्ताहिक)—गया
 नागरी प्रचारिणी-पत्रिका (त्रैमासिक)—
 काशी
 आर्यापथ (दैनिक)—पटना
 सुधा (मासिक)—सखनऊ
 माधुरी (मासिक)—सखनऊ
 समस्यापूर्ति (मासिक)—पटना
 शतद्वय (अठार्षिक)—मया
 याज्ञिक (मासिक)—पटना
 सरस्वती (मासिक)—प्रयाग
 संकीर्तन-सदेश (मासिक)—मरठ
 किशोर (मासिक)—पटना
 सम्प्रेक्षण पत्रिका (त्रैमासिक)—प्रयाग
 मनोमो (मासिक)—प्रयाग
 भास्वती (मासिक)—काशी
 कल्याण (मासिक)—गोरखपुर
 खमी (मासिक)—गया
 कवि (मासिक)—गोरखपुर
 शाहनावा (साप्ताहिक)—आरा
 गाँवघर (साप्ताहिक)—आरा
 भाविवासी (साप्ताहिक)—राँची
 ब्राह्म (दैनिक)—काशी
 भीर्हरिस्वरूप-कला (मासिक)—काशी
 मुरारि महाविद्यालय-पत्रिका (वार्षिक)—
 भागलपुर
 साहित्य-पत्रिका (मासिक)—आरा
 रसिक-मित्र (मासिक)—आनपुर
 प्रभाकर (साप्ताहिक)—मुंगेर
 वार्षिकी (वार्षिक)—मोतीहारी
 नवराष्ट्र (दैनिक)—पटना
 परिपत्र पत्रिका (त्रैमासिक)—पटना
 पाठक्षिपुत्र (साप्ताहिक)—पटना
 हिन्दी-अध्यापन (त्रैमासिक)—प्रयाग
 उत्तर विशार (साप्ताहिक)—पटना
 शिक्षा (साप्ताहिक)—पटना

